

**THE BOOK WAS
DRENCHED**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186247

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81/G72S Accession No. G.H. 529

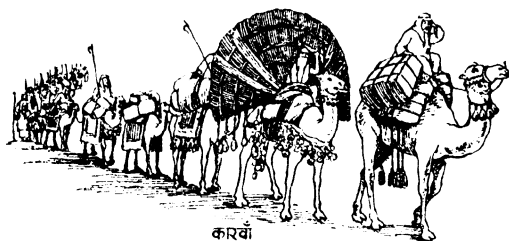
Author गोयलीय, अयोध्याप्रसाद

Title डोर ओ सुखन 1954

This book should be returned on or before the date last marked below.

शेर-डो-मुखन

भाग तीसरा



इन्सानकी बदबस्ती अन्दाज़से बाहर है ।
कम्बख्त खुदा होकर, बन्दा नज़र आता है ॥

—आज़ाद अन्सारी

अयोध्याप्रसाद गोयलीय

ज्ञानपीठ-लोकोदय ग्रन्थमाला-सम्पादक और नियामक
श्री० लक्ष्मीचन्द जैन, एम० ए०

प्रकाशक
मंत्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस

प्रथम संस्करण
१९५४ ई०
मूल्य तीन रुपये

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद ला जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

शेर-ओ-सुखन

[मौजूदा दौरके गज़लगो शायरे-आज़म]

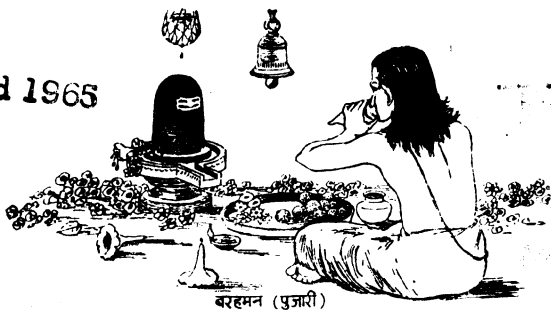
भाग तीसरा

पुरातन शायरीका कायाकल्प और लोकोपयोगी
भावोंका समावेश, पवित्र प्रेमकी आराधना,
नारीका सम्मान और १९०१ से
१९५३ तककी घटनाओंका
गज़लपर प्रभाव



भारतीय ज्ञानपीठ काशी

Checked 1965



बरहमन नाल-ए-नाकूस मस्जिदतक भी पहुँचा दे ।
बुरा क्या है मुअज़्ज़न भी अगर बेदार हो जाये ॥

—हफीज़ जालन्धरी

Checked 1969

साहू-जैन-कुल-दिवाकर
आयुष्मान् प्राणप्रिय अशोककुमार
और
सौभाग्यवती बहूरानी इन्दु-श्री को
अनेक शुभ भावनाओं एवं
शुभाशीर्वादोंके साथ
सस्नेह भेंट



गोयलीय

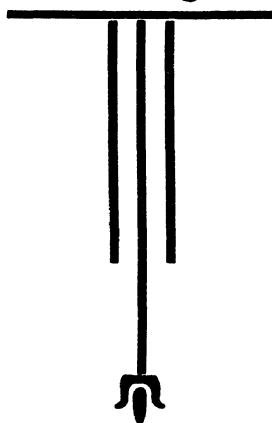
विषय-सूची

	पृष्ठ		पृष्ठ
१—शाद अजीमाबादी	१२	६—फ़ानी बदायूनी	१०८
परिचय	१२	परिचय	१०८
शादके यहाँ रंजो-गम	१२	फ़ानी और ग़ालिब	१११
उच्चभाव	१३	फ़ानी और मीर	११४
पाक इश्क़	१५	फ़ानीके मक्ते	१२२
शराबका तसव्वुर	१६	कलाम	१२२
उद्बू	२१	७—वहशत कलकतवी	१३०
चन्द नैतिक शेर	२३	८—यगाना चंगेज़ी	१३४
चुना हुआ कलाम	२४	परिचय	१३४
तुलनात्मक अशआर	४५	सर्वधर्म समभाव	१३६
२—अमरनाथ साहिर	५६	मजहबी दीवानगी	१३७
३—दत्तात्रिय कैफ़ी	६१	ईश्वरका भरोसा	१३७
४—आज़ाद अन्सारी	६५	विलासी युवक	१३७
५—हसरत मोहानी	७१	सर्व हित सुखाय	१३७
परिचय	७१	भोक न माँग	१३८
हसरतकी शायरी	७५	ख़ुदाके नामपर	१३६
हसरतका शायरीमें मर्तबा	८४	कलाम	१४०
इश्क़की बुलन्दी	८८	९—अमजद हैदराबादी	१४५
रक्बीब	९२	१०—आसी गाज़ीपुरी	१६२
चुना हुआ कलाम	९३		

	पृष्ठ		पृष्ठ
११—असत्तर गोण्डवी	१७१	प्रेयसीकी विवशता	१८८
परिचय	१७१	गमेदौराँ	१८९
ईश्वरीय प्रेम	१७३	ईश्वरीय प्रेम	१९०
पवित्र प्रेम	१७७	रोना-बिसूरना इस्ककी	
रिन्दी	१७८	तौहीन है	१९३
मन्दिर-मसजिद	१७८	रकाबत	१९४
शायराना नसीहतें	१७९	जिगरकी रिन्दी	१९४
रोना-बिसूरना		क्रौमी-दर्द	१९५
पसन्द नहीं	१८१	चुना हुआ कलाम	१९५
चुना हुआ कलाम	१८१	१३—अलीअक़्तर अक़्तर	२०९
१२—जिगर मुरादाबादी	१८७	१४—रज़्म रदोलवी	२११
परिचय	१८७	शब्द कोश	२१७
जिगरकी शायरी	१८८	पारिभाषिक शब्द	२६०

ग़ज़ल-गो शायरे-आज़म

वर्त्तमान युगीन



देहलवी रंगके सर्वश्रेष्ठ शायर

-
-
- १—शाद अजीमाबादी [खाजा मीर 'दर्द' की शिष्य परम्परामें]
 २—अमरनाथ 'साहिर'
 ३—दत्तात्रिय कैफ़ी
 ४—आज़ाद अन्सारी ['शालिब' की शिष्य परम्परामें]
 ५—हसरत मोहानी ['मोमिन' की शिष्य परम्परामें]
 ६—फ़ानी बदायूनी
 ७—बहशत कलकतवी
 ८—यगाना चंगेज़ी ['शाद' अजीमाबादीके शिष्य]
 ९—अमजद हैदराबादी
 १०—आसी राज़ीपुरी ['नासिख' की शिष्य परम्परामें]
 ११—असगर गोण्डवी
 १२—जिगर मुरादाबादी ['असगर' गोण्डवीके शिष्य]
 १३—अली अस्तर् 'अस्तर्'
 १४—रज़म रबोलवी
-
-



'शाद' अजीमाबाद

[१८४६-१९२७ ई०]

खान बहादुर नवाब सैयद अलीमुहम्मद 'शाद' १८४६ ई० में उत्पन्न हुए और १९२७ ई० में समाधि पाई। नियाज़ फ़तेहपुरी के शब्दों में—
“शाद व-लिहाज़ तसज़्जुल बड़े मर्तबे के शायर थे। उनके यहाँ मीर-ओ-दर्द का गुदाज़, मोमिन की नुक्तासंजी, ग़ालिब की बुलन्द परवाज़ी और अमीर-ओ-दाग़ की सलासत सब एक ही वक़्त में ऐसी मिली-जुली नज़र आती हैं कि अब ज़माना मुश्किल से ही कोई दूसरी नज़ीर पेश कर सकेगा।”^१

'शाद' अजीमाबाद (पटना सिटी) के रहनेवाले थे। वे ख़ाजा मीर 'दर्द' की शिष्यपरम्परामें हुए हैं। अतः आपके कलाममें भी वही असर नज़र आता है। कहीं-कहीं तत्कालीन लखनवी रंग की भी झलक मारती है। आप मीर 'अनीस' से भी काफ़ी प्रभावित नज़र आते हैं।

शाद देहली-लखनऊ ज़बान के क़ायल नहीं थे। यही कारण है कि उनके कलाममें यत्र-तत्र मुहावरों और शब्दों का प्रयोग उक्त स्थानों की परम्परा से भिन्न हुआ है।

'शाद' ख़ाजा 'दर्द' स्कूल के स्नातक थे। इसीलिए हमने आपको

मजलिसे-देहलीमें उच्चासन दिया है। आपका कलाम भी ईश्वरीय-प्रेम, आध्यात्मिकता और दार्शनिकतासे ओत-प्रोत है। आपका रंगे-शायरी ख्वाजा 'आतिश' से बहुत कुछ समानता रखता है।

'आतिश' और 'शाद' दोनों ही अपने-अपने युगमें बहुत बुलन्द मर्तबेके शायर हुए हैं। दोनोंके विचार, भाव और अन्दाज़े-वयान मिलते-जुलते हैं। दोनोंकी अक्सर ग़ज़लें हमतरही ऐसी हैं कि अगर उनमेंसे उपनाम निकाल दिये जायें तो कौन ग़ज़ल किसकी है, निश्चयपूर्वक कहना आसान नहीं। जाहिरामें दोनों लखनवी, किन्तु भावों और विचारोंकी दृष्टिसे अंतरंगमें देहलीवा हैं। दोनों ही सूफ़ियाना विचारके हैं।

इतनी समानता होते हुए भी दोनोंका रंग भिन्न-भिन्न है। 'आतिश'के यहाँ व्यंग और तीखापन इस ग़ज़वका है कि कुछ न पूछिये। उनके कलाममें गर्मी, और अन्दाज़ेवयानमें तड़प इस बलाकी है कि कोई भी शायर उनका हमसर नज़र नहीं आता। 'आतिश'के यहाँ दुःख-दर्द, पीड़ा-व्यथामें भी मुसकान भरी होती है। उनके ग़ममें भी एक लहक और चहक होती है—

क्रफ़समें भी है वही चहचहा गुलिस्तांका

शादके यहाँ रंजो-ग़म, दर्दों-अलम, व्यथापूर्ण हैं। 'आतिश' इस विषयमें 'शालिब'के अधिक समीप हैं और 'शाद' 'मीर'के नज़दीक हैं। 'आतिश' रंजो-ग़ममें बिलखते नहीं, यहाँ तक कि वे हृदयकी पीड़ाको व्यक्त करना भी अपनी शानके खिलाफ़ समझते हैं—

जौरो-जफ़ायेयारसे^१ रंजो-महन^२ न हो।

दिलपर हुजूमेग़म हो, ज़बीपर शिकन न हो ॥

^१'आतिश' का परिचय एवं कलाम 'शेरो सुखन' प्रथम भागमें दिया जा चुका है। ^२प्रेयसीके अत्याचार करनेपर; ^३दुखी और व्यथित न हो।

‘शाद’ व्यथा पीड़ाके आँसुओंको पीनेके बजाय उन्हें, प्रकट करना आवश्यक समझते हैं—

खमोशीसे मुसीबत और भी संगीन होती है ।
तड़प ऐ दिल तड़पनेसे ज़रा तसकीन होती है ॥

युं ही रातोंको तड़पेंगे, युं ही जाँ अपनी खोयेंगे ।
तेरी मर्जी नहीं ऐ दर्देदिल ! अच्छा ! न सोयेंगे ॥

मगर वे अन्य शायरोंकी तरह सरे आम हाय-हाय करनेके पक्षपाती नहीं—

तड़पना है तो जाओ जाके तड़पो ‘शाद’ खिलवतमें ।
बहुत दिनपर हम इतनी बात गुस्ताखाना कहते हैं ॥

इन दोनोंके कलाममें उल्लेखनीय विशेष अन्तर यह है कि ‘आतिश’के यहाँ पतित भाव, हकीर विचार और बाज़ारी इश्क अधिकांश रूपमें पाया जाता है। लेकिन ‘शाद’के कलाममें इतनी संजीदगी, बड़प्पन, और सुथरापन पाया जाता है कि वे उर्दू-शायरोंमें सर्वश्रेष्ठ नज़र आते हैं।

उर्दूके सर्वश्रेष्ठ शायर ‘मीर’ भी अपना दामन इब्तज़ाल (कमीने-ज़लील विचारों)से न बचाये रख सके। बक़ौल किसीके “उनके दीवानमें लौंडे भरे पड़े हैं” ‘ग़ालिब’ भी धौल-धप्पेपर उतारू हो जाते हैं—

धौल-धप्पा उस सरापा नाज़का शेवा नहीं ।
हम ही कर बैठे थे ‘ग़ालिब’ पेश दस्ती एक दिन ॥

और ‘मोमिन’का तो माशूक ही हरजाई नहीं, स्वयं भी हरजाई थे ।
हमेशा मृगनयनियों (ग़ज़ालचश्मों)को फाँसते रहे—

आये गजालचश्म सदा मेरे दाममें ।

सैयाद ही रहा मैं, गिरफ्तार कम हुआ ॥

तात्पर्य यह कि प्राचीन और अर्वाचीन प्रायः सभी शायरोंके कलाममें यह दोष पाये जाते हैं। लेकिन 'शाद'का कलाम इन दोषोंसे मुक्त है। उनके यहाँ 'बोसा' (चुम्बन) जैसा बदनाम और हकीर शब्द भी इतनी बुलन्दीसे नज़म हुआ है कि अन्यत्र मिसाल नहीं मिलती।

बोसये-संगे-आस्ताँ^१ मिल न सका हजार हैफ़ ।

आगे क़दम न बढ़ सका हिम्मते-सरफ़राज़का^१ ॥

उक्त शेरकी पवित्रता और मर्तबेको वही अनुभव कर सकता है, जिसने कभी संगे-आस्ताँके बोसा लेनेका प्रयत्न किया हो, परन्तु किसी कारण सफलता न मिली हो। राष्ट्रपिता बापूके शहीद किये जानेपर उनकी चिताकी राख लेनेके लिए लाखों नर-नारी लालायित थे। एक-दूसरेको धकेलकर बापूकी राखको मस्तकसे लगानेको कई लाख नर-नारी बढ़ रहे थे, परन्तु कितनोंको सफलता मिली ? जो भी राख न पा सके, अपने भाग्यको कोस रहे थे। जब किसीकी ऐसी स्थिति हो, तभी 'शाद'के उक्त शेरकी महत्ता प्रकट हो सकती है। आस्ताने-यार या शहीदों-की समाधियोंको बोसा देना 'शाद'की अछूती और उच्च भावना है—

शहीदाने-बफ़ाकी खाक, क्या अक्सीरसे कम है ?

न हाथ आये क़दम, बोसा तो ले जाकर मज़ारोंका ॥

यह बात 'ग़ालिब' और 'आतिश'को कहाँ नसीब ? 'ग़ालिब' तो स्वयं ही अपने इस हकीर खयालसे भयभीत नज़र आते हैं—

^१माशूक़की चौखटके पत्थरका चुम्बन; ^१अभिमानीके साहसका ।

ले तो लूँ सोतेमें उसके पाँवका बोसा मगर—
ऐसी बातोंसे वह काफ़िर बदगुमाँ हो जायगा ॥

यारके पाँवका बोसा लेना या जहाँ उसने पाँव रखे हों, उस आस्ताँका बोसा लेना ज़ाहिरामें यकसाँ नज़र आते हैं। मगर 'शाद'के शेरमें श्रद्धा, भक्ति और पवित्र-प्रेमकी झलक है, तो ग़ालिबके यहाँ वासनाकी गन्ध। और 'आतिश' तो अपने इस शेरके प्रतिबिम्बमें सरीहन ऐय्याश मालूम होते हैं—

बोसेबाज़ीसे मेरी होती है ईज़ा उनको ।
मुँह छुपाते हैं जो होते हैं मुहासे पैदा ॥

और एक 'शाद' हैं कि उनकी अभिलाषा अधिक-से-अधिक इतनी बढ़ती है कि उनकी खाक यारके परिधानका बोसा ले सके तो अपनेको कृतकृत्य समझे—

बोसा लेनेका मेरी खाकको भी अरमाँ—ताब उठनेकी कहाँ ?
जामेज़ेबीका भला ! ऐ सनमेतंग क़बा—कुछ तो दामनको झुका ॥

यही पवित्र और उच्च इशक़की भाँकियाँ 'शाद'के कलाममें दृष्टिगोचर होती हैं। स्वयं भी फ़मति हैं—

मेरा दीवाँ तो शीरब हं जहाने-पाकबाज़ीका ।
पढ़े कलमा ज़बाने-फ़ारिस इस बाँगे-हिजाज़ीका ॥

ग़ज़ल इतनी नाज़ुक और कोमल कला है कि तनिक-सी चूकसे वह आकाशसे पृथ्वीपर गिर पड़ती है। शब्दोंके हेर-फेर और भावोंके उतार-चढ़ावसे इसमें पवित्र-से-पवित्र और पतित-से-पतित विचारोंका प्रतिबिम्ब झलकता है। 'आतिश' जैसा बुलन्द मर्तबेका शायर जब ऐसे बटियल शेर कह सकता है—

शबे-विसालमें खोले क़बाये-यारके बन्द ।
कमरसे खींचके पटकेको हमने दे मारा ॥

हाथ मलता हूँ जो मैं देखके सीनेका उभार ।
कहते हैं “तोड़िये जिनको यह वोह नारंज नहीं ॥”

जब ‘आतिश’ जैसे दरवेशका यह आलम हो, तब ‘दाग’का तो ज़िन्न ही क्या—

यह लुप्त है कि दुपट्टा उड़ा रही है हवा ।
छुपा रहे हैं जो सीना कमर नहीं छुपती ॥

ऐसे ही दूषित और विषाक्त भावोंके कारण ग़ज़ल वदनाम हो गई । इसकी अश्लीलतासे भले आदमी दामन बचाकर निकलने लगे । इसमें दुराचार और कामुकताके ऐसे धिनौने कीड़े बिलबिलाने लगे कि लोग इसकी परछाईसे भी दूर भागने लगे । इस छुतहा रोगसे बचानेके लिए ‘हाली’ और ‘आज़ाद’ने भरसक प्रयत्न किये । लोगोंका अनुमान था कि ग़ज़ल अब जीवित नहीं रहेगी, परन्तु उसकी खुशकिस्मती देखिये कि कुछ ऐसे लोग पैदा हो गये, जिन्होंने ग़ज़लको पुनर्जीवन ही प्रदान नहीं किया, अपितु उसे अमर कर दिया । उन्हीं सपूतोंमें एक ‘शाद’ अज़ीमावादी हैं ।

‘शाद’का इश्क़ वाज़ारी इश्क़ न होकर पवित्र और उच्च है । जो शमअ सरेवाज़ार जलती है, ऐसी बेहयापर जल मरनेके ‘शाद’ कायल नहीं—

जो शमअ हुआ करती है रोशन सरे-बाज़ार ।
उस शमअपै गिरता नहीं परवाना हमारा ॥

‘शाद’ इश्क़को जीका रोग नहीं समझते, बल्कि उनका विश्वास है कि इश्क़से इन्सानमें इन्सानियत आती है ।

‘उक्त अंशके लिखनेमें अप्रैल १९५१के ‘निगार’में प्रकाशित सैयद शाह अताउलरहमानके लेखसे हमें पर्याप्त सहायता मिली है ।—गोयलीय

नहीं रहते रिया' ओ-क़बह' फिर भूलेसे भी दिलमें ।

मुहब्बत यारकी इन्साँ बना देती है इन्साँको ॥

'शाद' भौंरे या तितलीके इश्क़को इश्क़ नहीं समझते । वे तो जिसके हो गये, जीवनभर उसे निभाना ही सच्ची आशिकी समझते हैं ! मानवी प्रेमके साथ-साथ कोई ईश्वरीय प्रेमका भी दम भरे तो वह उसे कुफ़ समझते हैं—

मशरबेइश्क़में^१ दिला^२ ! कुफ़ है यारसे रिया^३ ।

दिलको है गर बुतोंसे इश्क़, जिक़े-खुदाकी वजह क्या ?

'शाद' इश्क़से तंग आकर मरना नहीं चाहते, बल्कि वह तो उम्र-दराज चाहते हैं—

मुझ-सा फ़कीर आपसे राज़ो-नियाज़^४ हो ।

या रब ! हयाते-इश्क़े-मुहब्बत दराज^५ हो ॥

और वे अपने महबूबको इधर-उधर खोजना नादानी समझते हैं । उनका विश्वास है कि उनका प्रियतम सर्वत्र व्याप्त है—

गुबार आईनये-दिलका साफ़ हो तो फिर ।

उन्हींकी शक़ल नुमायाँ रहे जिधर देखो ॥

और जब ध्यानमें प्रियतम आ गया, तब वह ध्यान कैसे तोड़ा जाय ?

है जिसमें ध्यान काबये-अबरू-ए-यारका^६ ।

ऐसी नमाज़ जल्द इलाही अदा न हो ॥

^१जाहिरदारी, दिखावटीपन; ^२बुराई; ^३प्रेमधर्ममें; ^४ऐ दिल;
^५दिखावटी प्रेम; ^६अन्तरंग वार्तालापमें सम्मिलित; ^७प्रेमका जीवन
लम्बा हो; ^८यारकी भवें रूपी काबेकी महाराबका ।

और फिर एक दिन ऐसी स्थिति भी आ जाती है कि प्रेमी सुध-बुध बिसारकर अपनेमें खो जाता है। नमाज़-रोज़े सब तर्क हो जाते हैं—

दिल है किधर खिंचा हुआ, महव है किसकी यादमें ?

क्या कहें इसकी वजह हम, तर्क हुई नमाज़ क्यों ?

आशिक कितना वावला है कि अपने प्रियतमकी खोजमें मारा-मारा फिरता है। सर्वत्र ढूँढता है, परन्तु अपना अन्तस्थल नहीं खोजता, हायरे भोलापन—

इसी चूकने हमें खो दिया, कहें 'शाद' किससे यह माजरा ?

कटी उम्र जिनकी तलाशमें, वह हमीं थे हमसे जुदा न थे ॥

जैन-पुराणोंके अनुसार जब तीर्थंकर संसारमें जन्म लेते हैं, तो इन्द्र उनके अतुल रूपको निहारनेके लिए एक हज़ार नेत्र बना लेता है, फिर भी तृप्ति नहीं हो पाती। 'शाद' भी अपने हबीबको युं ही देखना चाहते हैं—

यही है धुन कि तेरी जलवागाहमें जाकर ।

हज़ार आँखें हों, और सबसे यारको देखें ॥

'लिपटने' शब्दकी उर्दू-शायरोंने जो मिट्टी खराब की है, वह किसीसे पोशीदा नहीं। औरोंको तो जाने दीजिये, 'अकबर' इलाहाबादी जैसा मुहज़िब आदमी यह कहनेसे नहीं चूका—

लिपट भी जा अरे 'अकबर' ! राजबकी ब्यूटी है ।

नहीं-नहीं पे न जा, यह हयाकी उछूटी है ॥

अब इसी ज़लील शब्दको 'शाद'की जबाने-मुबारकसे सुनिये—

लिपटकर काकुले-जानाँसे^१ नाजकर शाने^२ ।

खुदाने अर्शेसे^३ हत्बा तेरा बुलन्द किया ॥

जिस जगह सती-सतवन्ती पाँव रख दें, वोह स्थान तीर्थ बन जाते हैं। जिन्हें वे छू लें, वे अमर और कृतकृत्य हो जाते हैं। फिर उस कंधेके भाग्यका क्या कहना, जिसे उनके वालोंको सँवारनेकी इनायत अता हुई हो। बेशक उसका मर्तबा आस्मानसे बदरजहा बेहतर है। हर घड़ी और हर जगह अपने प्रियतमकी यादमें लीन रहना ही तो वास्तविक नमाज है—

जबाँपे जिक्र तेरा उज्र-ह्वाह दीदयेतर ।

यही वजू है, इसीको नमाज कहते हैं ॥

जब इश्कमें यह तल्लीनता आ जाती है तो वह बाअसर हो जाता है—

हजार शुक्र कि मुद्तमें यह असर आया ।

लिया जो नाम तेरा, दिलमें तू उतर आया ॥

‘शाद’की शराब वह शराब नहीं है, जिसे पीकर आदमी, आदमी न रह कर जानवर बन जाता है। ‘शाद’की शराब वोह आध्यात्मिक सुरा है कि उससे बेसुध होनेपर स्वर्गके देवता भी सार-सँभाल करनेको दौड़ पड़ते हैं—

असर देखो जरा लगजिशमें ‘या साक्की’के कहनेका ।

फरिश्ते बौड़कर बाजू हमारा थाम लेते हैं ॥

चन्द नमूने और देखिये, शादने शराबपर क्या पाकीजा शेर कहे हैं—

^१प्रेयसीकी जुल्फोंसे; ^२कंधे; ^३आकाशसे ।

लेके खुद पीरेमुग्रां हाथमें मीना आया ।
 मयकशो ! शर्म कि इसपर भी न पीना आया ॥
 मुगजचे^१ हें मुतहय्यर^२ मुतबस्सुम साक्री ।
 पीनेवाले तुम्हे पीनेका न अन्दाज़ आया ॥
 इसी उम्मीदमें बांधे हुए हें टकटकी मैकश !
 कफ़ेनाज़ुकपै साक्री रखके एक दिन जाम आयेगा ॥

सागर हमारा, मीना हमारा ।
 जन्नत हमारी, तौबा हमारा ॥
 दाताके दरसे लेकर फिरेंगे ।
 भरदेगा इक दिन कासा हमारा ॥
 मयपर किसीको, खुमपर किसीको ।
 साक्रीपै अपने, दावा हमारा ॥

बचाके हाथ अलग-से-अलग सुबू लेते ।
 यह क्या मजाल कि साक्रीका हाथ छू लेते ॥
 साक्रीकी चश्मेमस्तपै, मुश्किल नहीं निगाह ।
 मुश्किल सँभालना है दिले-बेकरारका ॥
 कहाँसे लाऊँ सन्ने-हज़रतेअयूब^३ ऐ साक्री !
 खुम आयेगा, सुराही आयगी, तब जाम आयेगा ॥
 न दे इलजाम बदमस्तीका इक उफ़ताद थी साक्री !
 मेरा गिरना, भरे सागरका चकनाचूर हो जाना ॥
 ग़ज़ब निगाहने साक्रीकी बन्दोबस्त किया ।
 शराब बादको दी पहले सबको मस्त किया ॥

^१शराब पिलानेवाले; ^२हैरान; ^३एक प्रसिद्ध सन्तोषी पैगम्बर ।

देके तहीसुबू^१ मुझे सबका होसला दिया ।
जिसकी तलब थी साक्रिया ! उससे कहीं सिवा दिया ॥

देखा किये वोह मस्त निगाहोंसे बार-बार ।
जब तक शराब आये, कई दौर हो गये ॥

बुरा इस बज्ममें था या भला मैं ।
खुदा हाफ़िज़ है, ले साक़ी ! चला मैं ॥

बग़ैर आत्मलीन हुए जीवनभर ईश्वर-ईश्वर पुकारनेसे क्या होता है ? जहाँ उसमें अपनेको खोया नहीं कि एक संकेतपर फ़रिश्ते तो क्या ब्रह्माण्ड उलट सकता है । और जब मनुष्य आत्मलीन हो जाता है, तब उसके नेत्रोंके आगेसे तू, मैं, पर, का परदा हट जाता है ।

इस्लामो-कुफ़्र, कुछ नहीं आता खयालमें ।
मुद्दतसे मुब्तिला हूँ, मैं आप अपने हालमें ॥

‘उदू’को लेकर उर्दू-शायरोंने कितनी गन्द उछाली है ? कोई उसके मरनेकी दुआ माँगता है, कोई उसे अन्धा देखना चाहता है, कोई उसे हज़ारों गालियाँ देकर दिलकी भड़ास निकालता है । शरज़ उसे हर तरह बदनाम और बरबाद करनेके उपाय निरन्तर सोचे जाते हैं । ‘शाद’ उदूके बारेमें माशूक़से केवल इतना कहते हैं—

दोनोंमें तू ही फ़र्क़कर लायक़े-महर^२ कौन है ?
शेर तेरा ग़िला करे, नाम न लें अदबसे हम ॥

‘कस्तूरबा’का निधन बन्दीगृहमें हुआ, उनकी समाधि भी वहीं बनाई गई ! जीतेजी तो बन्दी रहीं ही, मृत्युके बाद भी शासकोंने बन्दी बनाकर रखना चाहा । शादका यह शेर उक्त घटनापर कितना मौजूं होता है—

^१खाली सुरापात्र; ^२कृपा योग्य ।

क्रयामतका सितम है यह भी दुनियामें कि मरनेपर ।

असीरोंकी^१ बनाई क़त्त भी सैयादने घरमें ॥

ये मज़हबी दीवाने धार्मिक उन्मादमें कैसे-कैसे अनर्थ कर बैठते हैं ? बरसोंकी राहोरूम और चोली-दामनके साथको एक क्षणमें नष्ट कर देते हैं, इसका सबब 'शाद' साहब यह बतलाते हैं—

जबानें सहृदयानीपें वाइजोंकी खुली ।

मुरवतोंको लपेट आये जानमाजोंमें^२ ॥

हम देशसे निष्काशित कितना ही कष्ट क्यों न उठा लें, परन्तु हमारे देशपर आँच न आये—

हम बेनवा^३ बलासे क़फ़समें असीर^४ हैं ।

या रब ! मगर चमनमें ख़िजाँका^५ गुज़र न हो ॥

जो स्वयं आप नहीं उठता, उसे कोई भी सहारा नहीं देता । नेपोलियनने एक बार अपने सैनिकोंको सम्बोधित करते हुए कहा था—
“तुम ईश्वरपर भरोसा करो या न करो यह तुम्हारी इच्छापर निर्भर है, परन्तु मैं इतना जताये देता हूँ कि तुम्हारी बारूद गीली है तो उसे सुखाने ईश्वर नहीं आयेगा; वह तुम्हींको सुखानी होगी ।” इसी भावके द्योतक 'शाद'के चार शेर सुनिये—

यह बज्मे-मै^६ है याँ कोताह दस्तीमें^७ है महरूमि^८ ।

जो बढ़कर खुद उठा ले हाथमें मीना^९ उसीका है ॥

^१बन्दियोंकी; ^२जिस चटाईपर नमाज़ पढ़ी जाती है; ^३अनबोल, बेज़बान; ^४बन्दी; ^५पतझड़का; ^६मधुशाला; ^७हाथ न उठानेमें; ^८बंचित रहना; ^९मद्य-पात्र ।

समझता है इस दौरमें कौन किसको ?

करें 'रिन्द' खुद अहताराम^१ अपना-अपना ॥

क्या गलत ज़ोम है ! बाद अपने किसे गम अपना ?

हाथ क़ाबूमें है, करलें अभी मातम अपना ॥

'शाद' आखिर है शब और पाँवमें ताक़त है अभी ।

इस सरासे है यही वक़्त निकल जानेका ॥

चन्द नैतिक शेर—

हसरत आमेज़^२ सदा आती है यूँ क़ब्रोंसे—

“आज आता जो मेरे काम, न वोह काम किया” ॥

अगर किसीकी बुराई भी दिलमें आई 'शाद' !

हमें तो अपनी ही नीयतसे खुद हिजाब आया ॥

किसीके हम न काम आये, न कोई अपने काम आया ।

तअज़्जुब है कि तो भी जुमरये-इन्साँमें नाम आया ॥

यह मुमकिन है कि लिक्खी हो, क़लमने फ़तह आखिरमें ।

जो हैं अहबाबे-हिम्मत ग़म नहीं करते शिकस्तोंमें ॥

बशरके दिलमें न पड़ता जो आरज़ूका दाग़ ।

ख़ुदा गवाह कि अनमोल यह नगीं होता ॥

भलाई इसलिए चाही कि हों भले मशहूर ।

गरज़ कि अपने ही मतलबके आइना थे हम ॥

बार जिन कलियोंपें थीं परछाइयाँ ।

ऐ ख़िज़ाँ ! पहले वही मुरझाइयाँ ॥

^१आदर-सत्कार;

^२निराशाभरी आवाज़ ।

अभी नौखेज हैं रंगत जमानेकी नहीं देखी ।
विकसती हैं जो कलियाँ, बाज गुंचे मुसकराते हैं ॥

‘शाद’ अपने विरोधियों और आलोचकोंसे चिढ़ते नहीं । न तुर्की-ब-
तुर्की जवाब देते हैं । बल्कि यह कहकर चुप हो जाते हैं—

आखिर तो समझ लेगा कोई नुक्ता रस इक दिन ।
हासिदसे कहो ‘शाद’को बदनाम किये जा ॥

१९३८में प्रकाशित ‘शाद’का दीवान ‘मैखानये-इलहाम’ हमारे समक्ष
है । अनुमानतः ४,००० अशआर होंगे । उनमेंसे चुनकर कुछ अशआर
पेशेनज़र हैं—

बारे-सुबू^१ वही उठाये जिसपै हो फ़ज़ले-मैफ़रोश^२ ।
जाहिदेखुश्क ! यह भी क्या बोझ है जानमाजका^३ ?
जलवये-नुस्नकी तरफ़ देख तो कुछ पता चले ।
जाने दे, वलवला न पूछ आशिक्रेपाकबाजका ॥

कहाँ है उसका कूचा, कौन है वह ? क्या ख़बर क़ासिद !
पर इतना जानते हैं, नाम है आशिक़नवाज उसका ॥
न छोड़े जुस्तजूये-यार ख़िच्चे-शौक़से कह दो ।
किसी दिन खुद लगा लेंगी, पता उम्मेदराज उसका ॥

अबस^४ शिकवा है मय-सी चीज़का वाइज है क्यों दुश्मन ।
बसीरत^५ जब नहीं, बेशक बजा है अहतराज उसका ॥
अब इसका ज़िक्र क्या क़ासिदपै जो गुज़री गुज़रने दो ।
न कहना इस ख़बरको ‘शाद’से दिल है गुदाज^६ उसका ॥

^१मद्यके घड़ेका बोझ; ^२शराब-विक्रेताकी कृपा; ^३नमाज पढ़ने-
की चटाईका; ^४व्यर्थ; ^५दृष्टि, बुद्धि; ^६द्रवित ।

किसीको आबोहवा मुआफ़िक़ हुई न अफ़सोस इस चमनकी ।
हमेश थे नालाकश अनादिल, गुलोंने ता उम्र खून थूका ॥
पुकारकर वहशियोंसे कह दो “ख़िजाँका भी दौर है शनीमत ।
क्रबाके वामनको टाँक तो लें, अगर न मौक़ा मिले रफ़ूका ॥”

गुलोंपर क्या है, काँटों तकका मैं दिलसे बुआ-गो हूँ ।
ख़ुदावन्दा न टूटे दिल किसी दुश्मन-से-दुश्मनका ॥

मौजेफ़ना^१ मिटा न दे नामोनिशाँ वजूदका^२ ।
देख हुबाबकी^३ तरह शौक़ न कर नमूदका^४ ॥
ऐ शबेवस्ल ! जा तो जा, ऐ शबेहिज्र ! आ तो आ ।
दिलने खयाल उठा दिया, अपने ज़ियाँ-ओ-सूदका^५ ॥

बोरिया था, कुछ शबीना-में^६ थी, या टूटे सुब् ।
और क्या इसके सिवा, मस्तोंके वीरानेमें था ॥

बड़ा अहसाँ शबेसमने किया ऐ जागनेवाले !
यही तेरी खुली आँखें मिटा छोड़ेंगी शक़ तेरा ॥
बहुत तूने जब अपने पाँव फैलाये तो क्या चारा ?
अदब करती रही ऐ अश्क ! मुद्दत तक पलक़ तेरा ॥

गलीमें यारकी हो क्रब्र, या ख़राबेमें ।

हमें तो हश्रके दिन तक कहींपै सो रहना ॥

अगर मरते हुए लबपर न तेरा नाम आयेगा ।
तो मैं मरनेसे दरगुज़रा, मेरे किस काम आयेगा ॥
शबेहिजराँकी सस्ती हो तो हो लेकिन यह क्या कम है ?
कि लबपर रातभर रह-रहके तेरा नाम आयेगा ॥

^१मृत्यु-लहर; ^२अस्तित्वका; ^३पानीके बुलबुलेकी; ^४नामका
^५हानि-लाभका; ^६रातकी बची शराब ।

यही कहकर अजलको कर्जसवाहोंकी तरह ढाला ।
 कि “लेकर आज क्रासिद यारका पैगाम आयेगा ॥”
 गलीमें यारकी ऐ ‘शाद’ ! सब मुश्ताक^१ बैठे हैं ।
 खुदा जाने वहाँसे हुक्म किसके नाम आयेगा ?

जब अहले-होश कहते हैं अफ़साना आपका ।
 सुनता है और हँसता है दीवाना आपका ॥

सरापासोज^२ है ऐ दिल ! सरापा नूर हो जाना ।
 अगर जलना तो जलकर, जलवागाहे-तूर हो जाना ॥

हमारे जलमे-दिलने दिललगी अच्छी निकाली है ।
 छुपायेसे तो छुप जाना मगर नासूर हो जाना ॥
 खयालेवस्लकी अब आरजू भूला भुलाती है ।
 करीब आना दिलेमायूसके फिर दूर हो जाना ॥
 शबेवस्ल अपनी आँखोने अजब अन्धेर देखा है ।
 नक्राब उनका उलटना रातका काफ़ूर हो जाना ॥

वोह ज़िबह करके यह कहते हैं मेरे लाशेसे—
 “तड़प रहा है कि मुँह देखता है तू मेरा ?”
 कराहनेमें मुझे उज़्र क्या मगर ऐ दर्द !
 गला दबाती है रह-रहके आबरू मेरा ॥
 कहाँ किसीमें यह क्रुदरत सिबाय तेरेनिगाह ।
 कि हो नियाममें और काट ले गुलू मेरा ॥

इसे कहते हैं खूबी हम तो इस खूबीके कायल हैं ।
 हुआ जब ज़िक्र यकताईका, नाम आया वहीं तेरा ॥

^१अभिलाषी;

^२पूर्णरूपेण जलना ।

बहुत सरगोशियाँ^१ करने लगे रस्तेमें अब रहबर^२ !
बहुत चर्चा है बाजारोंमें ऐ खिलवतनशी^३ ! तेरा ॥

दिलकी यकसूईने बेपरदा दिखाया था तुझे ।
बीचमें मुफ्त क़दम आ गया बीनाईका^४ ॥

मुंहपै आशिक़के मुहब्बतकी शिकायत, नासेह !
बात करनेका भी नादाँ न करीना आया ॥
आ गया था जो ख़राबातमे^५ पी लेनी थी ।
तुझको सुहबतका भी जाहिद न करीना आया ॥

तेरी गलीमें रक़ीब आयें और मैं देखूँ ।
क़सम है तेरे क़दमकी तेरा ख़याल किया ॥
तलबके पहले ही जब हुक्म दे चुका था तू ।
तेरे फ़कीरने क्या सोचकर सवाल किया ॥

चाक करनेका है इलज़ाम मेरे सर नाहक़ ।
हाथ उनका है, मैं उनका हूँ, गरीबाँ उनका ॥

अब अश्कमें तेरे आता नहीं लहू ऐ चश्म !
तुझीपै क्या है ? ज़मानेका खूँ सफ़ेद हुआ ॥

समझ-समझके बढ़ा दस्ते-आरजू ऐ मस्त !
न मयक़दा न सबूही न ख़ुम न ज़ाम तेरा ॥

न मरनेवालोंकी आँखें न दिल है क़ाबूमें ।
यह कौन वक़्त था आया है कब पयाम तेरा ?

^१कानाफूसी; ^२पथ-प्रदर्शक; ^३एकान्तमें रहनेवाले;
^४दृष्टिका; ^५मधुशालामें ।

यह अस्तित्वपार तुझे है कि दे न दे साक्षी !
गिला समझते हैं हम बादाकश हराम तेरा ॥

जहाँ चाहे लगे, जिस दिलको चाहे चूर कर डाले ।
जबाँसे फेंक मारा, बात थी नासेह कि डेला था ॥

जबाँपे आह जो आई तो हँसके टाल दिया ।
किसीके इशकका अफसाना मैंने राज किया ॥

हर निवाला अब तो उसका तलख है ।
उम्र नेमत थी मगर जी भर गया ॥
जिस गलीमें था वहाँ थी क्या कमी ?
ऐ गदा ! क्यों माँगने दर-दर गया ?

ताबूतपै^३ मेरे आये जो वोह , मिट्टीमें मिलाया यूँ कहकर—
“फैला दिये दस्तो-पा”^४ तूने इतने ही में बस जी छूट गया ॥”

उन्हें जो मंज़ूर देखना है तो आके ऐसेमें देख जायें !
लिया सहारा मरीजेगमने, चराग कुछ बुझके झिलमिल गया ॥

निकहतेगुल^५ बहुत इतराई हुई फिरती है ।
वोह कहीं खोल भी दें तुरंयेगेसू^६ अपना ॥
निकहते-खुल्देबरी^७ फैल गई कोसोंतक ।
वोह नहाकर जो सुखाने लगे गेसू^८ अपना ॥
लिल्लाह हमद ! कदूरत^९ नहीं रहने पाती ।
मुंह धुला देता है हर सुबहको आँसू अपना ॥

^१भिक्षुक; ^२अर्थीपै ^३हाथ-पाँव; ^४फूलकी गन्ध;
^५चोटी; ^६जन्नत-जैसी सुगन्ध; ^७बाल; ^८द्वेष-भावना ।

गममें परवानये-मरहूमके^१ थमते नहीं अश्क ।
 शमअ ! ऐ शमअ ! ज़रा देख तो मुंह तू अपना ॥
 सुबू अपना-अपना है जाम अपना-अपना ।
 किये जाओ मयखवार काम अपना-अपना ॥
 न फिर हम न अफ़सानागो ऐ शबेगम^२ !
 सहरतक^३ है क़िस्सा तमाम अपना-अपना ॥
 जिनामें^४ है जाहिद, तेरे दरपे हम हैं ।
 महल अपना-अपना, मुक़ाम अपना-अपना ॥
 हुबाबो^५ ! हम अपनी कहें या तुम्हारी ।
 बस एक दम-के-दम है क़याम अपना-अपना ॥
 कहाँ निकहतेगुल,^६ कहाँ बूये-गेसू^७ !
 दमाग़ अपना-अपना मशाम^८ अपना-अपना ॥
 ख़राबातमें मयकशो ! आके चुन लो ।
 नबी अपना-अपना इमाम अपना-अपना ॥
 हम वह मैकश हैं कि सागरकी तरह ऐ साक़ी !
 सर हमेशा तेरी ख़िदमतमें रहा ख़म अपना ॥
 ऐ असीराने क़फ़स ! कुछ तो शगुन अच्छा है ।
 हाथ जाता है गरीबाँको जो पैहम^९ अपना ॥

मेरा सब हाल कह लेना तो क़ासिद ! यह भी कह देना—

“ख़बर कर दी तुम्हें, है अरुतयार आने-न-आनेका ॥”

हश्रमें जो है, वोह लेता है क़दम भुक-भुककर ।

आज देखे कोई रुत्बा तेरे दीवानेका ॥

^१मृतक पतंगेके; ^२दुखकी रात्रि, ^३प्रातःकालतक; ^४जन्नतमें;
^५पानीके बुलबुलो; ^६फूलकी सुगन्ध; ^७बालोंकी खुशबू; ^८सूँघनेकी
 सामर्थ्य, मस्तक; ^९बार-बार ।

चला जाऊंगा मैं जो महफ़िलसे तेरी ।
 कोई और मेरी जगह आ रहेगा ॥
 यह दुनिया है ऐ 'शाद' ! नाहक न उलझो ।
 हर इक कुछ तो अपनी-सी आखिर कहेगा ॥

"जब किसीने हाल पूछा रो दिया !
 चश्मेतर ! तूने तो मुझको खो दिया ॥
 दाग हो या सोज हो, या ददेंगम ।
 ले लिये खुश होके जिसने जो दिया ॥ "

देरोहरममें^१ गर नहीं, खैर न हों नहीं सही ।
 मेरे ही पास जब नहीं, आप कहीं हुए तो क्या ?
 हम थे मिटे हुए यूँ ही, रोज़े-अजलसे^२ ऐ अजल^३ !
 रूयेजमीपें^४ हें तो क्या, जेरे-जमीं हुए तो क्या ?
 जोशे-शबाबमें^५ दिला ! कुफ्रमें भी था इक मजा ।
 मिट गई जोकी जब उमंग, तालिबे-दीं हुए तो क्या ?

हमसे सहरागर्दको^६ छोड़ ऐ गुबार^७ !
 तू कहाँ तक पीछे-पीछे आयगा ?
 खो गये हैं दोनों जानिबके सिरें ।
 कौन दिलकी गुत्थियाँ सुलझायगा ?
 मैं कहाँ, वाइज कहाँ, तौबा करो !
 जो न समझा खुद बोह क्या समझायगा ?
 बागमें क्या जाऊँ, सरपर है खिजाँ ।
 गुलका उतरा मुंह न देखा जायगा ॥

^१मन्दिर-मस्जिदमें; ^२सृष्टिके आदिसे; ^३मृत्यु; ^४जंगलोंमें
 बिचरनेवालेको; ^५रेतीले प्रदेशोंमें उठता हुआ धूलका अम्बार ।

सबक़ तो मकतबे-उल्फ़तमें सबका था यकसाँ ।
 किसीको शुक्र, किसीको फ़क़त गिला आया ॥
 शराब दे कि न दे तुझपै मैं फ़िदा साकी !
 मुझे तो बातमें तेरी बड़ा मज़ा आया ॥
 सुबूके आते ही अल्लाहरे खुशी ऐ मस्त !
 इमाम आये, रसूल आ गये, खुदा आया ॥

जाहिदसे जब मुनो तो जबाँपर हैं ज़िक्के-हूर ।
 नीयत हुई ख़राब तो ईमान कब रहा ?

हज़रते 'शाद'से करनी है फ़रिश्तो ! क्या अज़्र ?
 चुप रहो, गुल न करो, आपने आराम किया ॥

तेरे कमालकी हद कब कोई बशर समझा ।
 उसी क़दर उसे हैरत है, जिस क़दर समझा ॥
 कभी न बन्दे-क़बा खोलकर किया आराम ।
 ग़रीबख़ानेको तुमने न अपना घर समझा ॥
 पयामेवस्लका मज़मूँ बहुत है पेचीदा ।
 कई तरह इसी मतलबको नामाबर समझा ॥
 न खुल सका तेरी बातोंका एकसे मतलब ।
 मगर समझनेको अपनी-सी हर बशर समझा ॥

शबेग़म सूँघ गया साँप मौअज़्ज़नको^१ भी ।
 आज जल्दीसे न काफ़िरको खुदा याद आया ॥
 हक़परस्तीके यह माने हैं तो जाहिद मैं बाज़ ।
 जब बुतोंपर न चला ज़ोर खुदा याद आया ॥

^१अज्ञान देनेवालेको ।

सदमा तेरे फ़िराक़का में क्या करूँ बर्या ?
बस इन्तहा तो यह है कि मरनेका डर न था ॥

“हुजूम-ग़मने सिखानेकी लाख की कोशिश ।
हमें तो आह भी करना न उम्रभर आया ॥
लहदमें शाना हिलाकर यह मौत कहती है—
“ले अब तो चौंक मुसाफ़िर कि अपने घर आया”
हज़ार शक्र ! हुआ आफ़ताबे-हश्श तुलू^१ ।
बड़ी तो बात रही यह कि तू नज़र आया ॥

चली जो रूह तो यूँ जिस्मसे कहा मुड़कर—
“कि हस्बल्लाह न मेहमाँका अहताराम^२ हुआ ।”
मिली न ‘शाद’को अफ़सोस कोई नेमतेखास ।
बस इन्तहा है कि मरना तलक भी आम हुआ ॥

जवाब है कहीं इस हृदकी बदगुमानीका ।
कि मिटनेवाले मिटे और मिटा न शक़ तेरा ॥

ख़मोश है तेरे नालोंपें यह ग़नीमत जान ।
अगर जवाबमें कह दे कि “मैं नहीं सुनता ॥”

जो कली सूख गई वोह तो खिलेगी न कभी ।
बाग़में फ़स्लेबहार आये तो क्या, जाये तो क्या ?

फिर आज शामसे नासेह ! है ग़ैर हाल अपना ।
तुझे है अपना ख़याल, है मुझे ख़याल अपना ॥
शराबख़ानेसे टलना मुहाल है वाइज !
बिका हुआ है इसी घरमें बाल-बाल अपना ॥

^१प्रलयका सूर्य निकला; ^२आदर-सत्कार ।

खबर मिली थी कि आयेंगे आज शामको वोह ।
हमें समझते हैं, जिस तरह दिन तमाम किया ॥

जगह दामनमें हम क्योंकर न देते ।
कि तिप्लेअइक^१ अपना ही लहू था ॥

मेरी तरफसे हरममें^२ न कुछ सबा^३ ! कहना ।
सलाम जुहदको^४ और इश्कको दुआ कहना ॥

फिराक़ेयारमें रोनेकी हद क्या ?
समन्दर है किनारा आस्तोका ॥
मेरी मायूसियोंकी कुछ न पूछो ।
न दुनियाका भरोसा है न दीका ॥

किसीको हुस्न दिया और किसीको माल दिया ।
गरीब जानके उसने मुझीको टाल दिया ॥

जरे-जरेको तेरे कूचेमें था मुझसे गुबार ।
मैं जो करता भी तो किस-किससे सफ़ाई करता ॥

खुशी बहारकी धड़का खिजाँके आनेका ।
गुलो ! फ़क़त यह उलट-फेर है जमानेका ॥

चुस्त कमरका क्या सबब तंग क़बाकी वजह क्या ?
हम तो किये हैं दिल निसार, हमसे अदाकी वजह क्या ?
ख़ाकमें जो मिला हो खुद, उसपै सितमसे फ़ायदा ?
हुस्नकी यह सरिश्त है, वरना जफ़ाकी वजह क्या ?

^१आँसूरूपी पुत्र; ^२काबेमें; ^३वायु; ^४दिखावटी उपासनाको
दूरसे ही प्रणाम करना ।

वस्ल आखिर लफ्जे-बेमानी बने ।

तूल इतना ऐ फ़िराक़ेयार ! खींच ॥

खतेशौक अपना लिफ़ाफ़ेमें रखो ।

आरजूओंको कफ़न पहनाओ 'शाद' !

मेरी खताकी नहीं हद, मगर सज़ा महदूद ।

वफ़ूरे-शौक^१ यहाँ, और तेरी जफ़ा महदूद ॥

फिर गये रास्तेसे वोह गर्दोगुबार देखकर ।

रह गई मेरी बेकसी सूये-मज़ार^२ देखकर ॥

वस्लो-फ़िराक़की ख़बर कौन पढ़े किसे दमाग़ ?

बढ़ गई और बेखुदी नामयेयार देखकर ॥

उठ गये उस मुक़ामसे अशक़ भर आये जिस जगह ।

आज तलक बचाये हैं, इशक़की आबरूको हम ॥

उठू देखें खुशी, अहबाब तेरे रंजोगम देखें ।

कहाँसे यह कलेजा लायें, किन आँखोंसे हम देखें ?

न आई दो घड़ी पहले अजल अफ़सोस क्या करिये ।

रक़ीब और हाथ रखकर तेरे बीमारोंका बम देखें ॥

बज़ममें साक़िया शराब बढ़ती है सफ़को^३ तोड़कर ।

सब तो हैं एक हालमें, उसपै यह इम्तयाज़^४ क्यों ?

तेरी गलीके क़अ़्दो-क़यामकी क्या बात !

इसीको दिलकी ज़बानमें नमाज़ कहते हैं ॥

^१प्रभिलाषाकी अधिकता;
^२भेद-भाव ।

^३समाधिकी तरफ़;

^४पंक्तिको;

बेजाये क़रीबे-नहलेगुल, चारा ही नहीं कुछ बुलबुलको ।
सैयादका देखो जुल्म ज़रा, ज़ालिमने छुपाया दाम कहाँ ?

वोह खुशनिगाह नहीं, जिसमें खुदनुमाई नहीं ।
यह चदमदीदा हैं, बातें सुनी-सुनाई नहीं ।
खयालसे है कहीं दूर आस्तानए-दोस्त !
वहाँका शौक़ है दिलको, जहाँ रसाई नहीं ॥
मरोज़े-हिज़्रको लाज़िम है तेरे जुल्मकी याद ।
दवा यही है मगर हमने श्राज़माई नहीं ॥
वोह आशिक़ोंसे है नाराज़ क्यों, खुदा जाने ?
वफ़ूरे-शौक़का होना कोई बुराई नहीं ॥
ज़बाँपे ज़िक्क़ मगर दिलमें वसवसा ऐ 'शाद' !
ख़ता मुआफ़ यह धोका है पारसाई नहीं ॥

हमें पैग़ाम्बरने कुछ तो ऐसी ही ख़बर दी है ।
कहें क्या तुझसे ऐ नासेह ! कि किस मतलबसे जीते हैं ?

उन्हें देखो कि अबतक ग़फ़लतोंसे काम लेते हैं ।
हमें देखो कि बेदेखे उन्हींका नाम लेते हैं ॥

जहाँतक हो बसरकर ज़िन्दगी आला खयालोंमें ।
बना देता है कामिल बैठना साहब-कमालोंमें ॥

जो आँखें हों तो चश्मेगौरसे औराक़े-गुल^१ देखो ।
किसीके हुस्नकी शरहे^२, लिखी हैं इन रिसालोंमें ॥

वोह सलामत रहें इतना भी बहुत है क़ासिद !
पूछ लेते हैं, ग़रीबोंपै करम^३ करते हैं ॥

^१फूलकी पत्ती रूपी पृष्ठ; ^२टीकायें; ^३दया ।

जो दें सवालपै उनकी सनद नहीं ऐ 'शाद' !
 वही करीम हैं जो बेसवाल देते हैं ॥
 पंराक वही हिज्रेमुहब्बतके हैं ऐ 'शाद' !
 डूबें तो किसी हाल उभरते ही नहीं हैं ॥
 इश्क और अक्लमें ऐ दोस्त ! हमेशासे हैं बैर ।
 लोग जो कुछ मुझे कहते हैं बजा कहते हैं ॥

हूँ इस कूचेके हर ज़र्रेसे वाकिफ़ ।
 इधरसे उम्र भर आया-गया हूँ ॥
 लहदमें^१ क्यों न जाऊँ मुँह छुपाये ।
 भरी महफ़िलसे उठवाया गया हूँ ॥
 कुजा में और कुजा ऐ 'शाद' दुनिया ।
 कहाँसे किस जगह लाया गया हूँ ॥

सराये-दहरमें^२ ऐ रूह ! अपना जी नहीं लगता ।
 छुदा जाने, यहाँ कितने दिनों रहनेको आये हैं ॥
 मेरी तलाशसे मिल जाय तू, तो तू ही नहीं ।
 इस अन्धेरासमें कुछ जायेगुफ़्तगू ही नहीं ॥
 नियाज़मन्दको लाज़िम है चश्मतर रखना ।
 अदा नमाज़ न होगी अगर बज़ू ही नहीं ॥
 वोह दामन अपना उठाये हुए हैं क्यों दमे-क़त्ल ?
 छुदाके फ़ज़लसे याँ जिस्ममें लहू ही नहीं ॥
 सदा यह आती है क़ब्रोंसे—“घुट रहा है दम ।
 कि बेकसीके सिवा कोई आस-पास नहीं ॥”

^१कब्रमें:^२संसाररूपी सरायमें।

फ़साना क़ससे सौदाये-इश्क़का पूछो ।
 मुझे तो सरके खुजानेका भी हवास नहीं ॥
 हुस्नो-इश्क़ एक हैं, जाहिरमें फ़क़त नाम हैं दो ।
 यह अगर सच है तो, क्या उनके बराबर हम हैं ?
 अक्लसे राह जो पूछी तो पुकारा यह जुनूँ —
 “वह तो खुद भटकी हुई फिरती है, रहबर^१ हम हैं ॥”

हिज़्रके बाद अगर है वस्ल, तब तो कोई अलम नहीं ।
 रहम है जिसकी इन्तहा, फिर वह सितम-सितम नहीं ॥

वाइज़को अस्तयार है, चाहे वह हो मलूल ।
 हम तो कलामे-हक़का बुरा मानते नहीं ॥
 ऐ ‘शाद’ जिनके साथ ज़माना बसर किया ।
 अल्लाह ! अब वही मुझे पहचानते नहीं ॥

बेकार हमको ज़िबह किये देती है बहार ।
 बरसा चमनमें अब कि तेगें बरस गई ॥

परवानेकी बिसात ही क्या थी फ़ना हुआ ।
 देखा तो शमअ भी न रही अपने हालमें ॥

रुसवाइयाँ ग़ज़बकी हुई तेरी राहमें ।
 हद है कि खुद ज़लील हूँ अपनी निगाहमें ॥
 मैं भी कहूँगा दंगे जो आज्ञा^२ गवाहियाँ ।
 या रब ! यह सब शरीक थे मेरे गुनाहमें ॥
 थी जुज़बे-नातवाँ^३ किसी ज़र्रमें मिल गई ।
 हस्तीका क्या वजूद तेरी जलवागाहमें ॥

^१पथ-प्रदर्शक; ^२इन्द्रियाँ; ^३निर्बलताके परमाणु ।

ऐ 'शाद' ! और कुछ न मिला जब बरायेनज़^१ ।
शरमिन्दगीको लेके चले बारगाहमें^२ ॥

बजाहिर मिल नहीं सकता अदाका तेरी अन्दाज़ा ।
मगर अहले-नज़र आँखोंमें सब कुछ तोल लेते हैं ॥

कहीं निशाँ न मिलेगा तेरा हमें न सही ।
किसीका क्या है हम अपनेको आप खोते हैं ॥

हम ऐसे गुमशुदा इन्साँका जिक्र क्या ऐ 'शाद' !
जो बा-निशाँ थे उन्हींका कहीं निशान नहीं ॥

निकली यह कहके आलमे-पीरीमें^३ तनसे रूह—
“बस अब हमारे रहनेके क़ाबिल यह घर नहीं ॥”

मंजिले-दोस्तका निशाँ देखिये किस तरह मिले ।
अक़ल तो खुद बहक गई, अब किसे रहनुमा करें ?

कोई मातम करे मेरे लिए क्यों ?
सज़ा जीनेकी है, इतना जिये क्यों ?

कुछ अस्तयार है मालिक उरुज दे जिसको ।
वोह शहसवार कहाँ और मेरा गुबार कहाँ ?

कहने लगते हैं जवानोंकी कहानी जो कभी ।
पहले हम देर तलक बैठके रो लेते हैं ॥
एक तो ज़ाम फिर उस हाथसे अहसनत ऐ 'शाद' !
यूँ कहो, पाते हैं हम, यूँ न कहो, लेते हैं ॥

^१ईश्वरको भेंट करनेके लिए; ^२ईशमन्दिरमें; ^३बृद्धावस्थामें ।

खुदा शाहिद, बुरा कहता नहीं जन्नतको मैं लेकिन ।
मज्जा कुछ और ही है, मै-कशीका बादाखानेमें ॥

दराज़ी उम्रकी हदसे ज़ियादा जब सताती है ।
ब-हसरत हम तुझे ऐ मौत ! घड़ियों याद करते हैं ॥

हज़ार तल्ल^१ है, पीरेमुग़ाने^२ जब दी है ।
खुदा न करदा^३ जो मैं मुँह बना-बनाके पियूँ ॥
मज्जा है बादाकशीका वहीं तो ऐ साक़ी !
पियूँ जो अब तो तेरे आस्ताँप आके पियूँ ॥
ज़मीपै जामको रख दे ज़रा ठहर साक़ी !
मैं इसपै हो लूँ तसद्दुक़ तो फिर उठाके पियूँ ॥

अब उनका नाम न ले हिज़्रमें कटी जो शबें ।
कर उनका ज़िक्क़ जो सरपर दिन आनेवाले हैं ॥

तड़पना देखते हो दोस्तो ! रह-रहके बिजलीका ।
न फँस जाये कोई बेकस बलाये-आस्मानीमें ॥

वफ़ाके मुद्दई शिकवा जफ़ाका लबपै लाते हैं ।
वोह गोया बेवफ़ा हैं, हम वफ़ा करना सिखाते हैं ।
जफ़ायें उनकी हैं बेमसलहत ? अक्ल^४ोंके नाखुन लो ॥
अब ऐसे क्या वोह भोले हैं, कि बेसोचे सताते हैं ॥

दरीचा खोलकर सुलभाते हैं वोह मुश्कबू जुल्फ़ें ।
यह खुश्बू सूँघ लो ऐसेमें आकर ऐ ! वतनवालो ॥

अपनी हस्तीको ग़मोदद मुसीबत समझो ।
मौतकी क़ंद लगा दी है, ग़नीमत समझो ॥

^१कड़वी; ^२मधुशाला-स्वामीने; ^३खुदा न करे ।

फ़ैसला होता है नेकी-ओ-बदीका हरदम ।
दिलको इस सीनेमें छोटी-सी अदालत समझो ॥

मयस्सर जिनका था दीदार बेखटके जमानेको ।
वही खुश चश्म अब मिलते नहीं सुर्मा लगानेको ॥
दमे-आखिर हमारे दिलमें यूँ उम्मीद आती है ।
कोई जाये कहीं शर्मिन्दगी जैसे मिटानेको ॥

लेता है मेरा जलमेजिगर बोसे-पै-बोसे ।
पैकापै कहीं नाम तुम्हारा खुदा न हो ॥

वोह पूछते ही रह गये वजहे-मलालेगम ।
हम सोचते रहे जो कहीं कुछ गिला न हो ॥
नाजुक मिजाज दिलको ही अहसाँ नहीं पसन्द ।
शर्मिन्दये-क्रुबूल हमारी दुआ न हो ॥
क्रासिद! वोह बात कह कियक्रीं कुछ तो दिलको आय ।
क्या कह रहा है तू कहीं वादा किया न हो ॥

यह सब दुरुस्त कि तुम बुत भी हो खुदा भी हो ।
मगर नियाजके क्राबिल यह दिल रहा भी हो ॥

दिल उसकी बारगाहमें सजदे करे तो क्या ?
अपने नियाजमन्दसे जो बेनियाज हो ॥

कोई ऐ 'शाद' ! पूछे या न पूछे इससे क्या मतलब ?
खुद अपनी क़द्वर करनी चाहिए साहब-कमालोंको ॥

“मरीजे-इश्क़को मरते कभी नहीं देखा ।”
दबी जबाँसे यह क्या कह गये, इधर देखो !

मुर्दोंकी क़नाअतोंपे है रश्क ।

पहने रहे इक कफ़न हमेशा ॥

अपनी आँखोंका यह ईमा है खयालयेारसे ।

तूने बेमौसमकी बरसातें न देखी हों तो देख ॥

एक हसरत दो तरफ़ रहती है, मसरूफ़े-कलाम ।

तख़लियेकी^१ गर मुलाक़ातें न देखी हों तो देख ॥

‘शाद’ ! आता है बगोला अपने इस्तक्रबालको^२ ।

दश्तेगुरबतकी^३ मदारातें^४ न देखी हों, तो देख ॥

बरसरेदार^५ खिंचे या न खिंचे वोह लेकिन ।

जो कहे कलमयेहक़^६ तू उसे मंसूर समझ ॥

जुम्बिशे-अबरूपे-ख़मदारका पूछो न सबब ।

रक्खे-रक्खे यह कमाँ यूँ भी कड़क जाती है ॥

“बहुत कुछ पाँव फँलाकर भी देखा ‘शाद’ दुनियामें ।

मगर आखिर जगह हमने न दो गज़के सिवा पाई ॥”

लगा न दे तेरी रफ़्तारे-नाज़में धब्बा ।

कहीं-कहीं जो निशाने-मज़ार बाक़ी है ॥

न रोकती जो मुझे ऐ ज़मीं ! कशिश तेरी ।

तो मेरी छाक खुदा जाने क्या-से-क्या होती ॥

तेरी तलाशमें हमने मिला दी छाकमें उम्र ।

तू ही बता कि यह कम्बरूत रहके क्या होती ?

^१एकान्तकी; ^२स्वागतको; ^३प्रवासके जंगलकी; ^४आवभगत;
^५फाँसीके तरुतेपर; ^६सत्य बात ।

गुलोंने खारोंके छेड़नेपर सिवा खमोशीके दम न मारा ।
शरीफ उल्लेखें अगर किसीसे तो फिर शराफत कहाँ रहेगी ?

बुतकदा है कि खराबात^१ है या मस्जिद है ।
हम तो सिर्फ आपके तालिब हैं खुदा शाहिद है ॥
न मुसल्लेकी जरूरत है न मिम्बर^२ दरकार ।
जिस जगह याद करें तुझको, वही मस्जिद है ॥

वोह चाहें बदलें-न-बदलें मेरे मुकद्दरको ।
किसी क़दर मुझे तसकी तो है हुआ करके ॥

सुनें कि हम न सुनें तूने खुद दिया है जवाब ।
हुजूमेयासमें^३ जब-जब तुझे पुकारा है ॥

यह शर्त आपसमें की थी, मैं निकलती हूँ कि तू पहले ।
मगर की रूहने सबक़त न निकली आरजू पहले ॥

मेरी ज़िन्दगानीका सौदा गरा है ।
घटे तो ज़ियाँ^४ है, बड़े तो ज़ियाँ है ॥

निकालें बहरेगमसे डूबतीको यह कहाँ हिम्मत !
खुद अपने हाथसे अपना डुबोना हमको आता है ॥
निचोड़ें बैठकर, फिर खुदक़ कर लें, यह नहीं आता ।
जहाँ बैठे वहाँ दामन भिगोना हमको आता है ॥

फ़लकका ज़िक्र तो क्या है, ज़मीके भी न रहे ।
हम अपनी चालमें आखिर कहींके भी न रहे ॥

^१मधुशाला;
^२निराशाओंमें;

^३मस्जिदका वह स्थान जहाँ भाषण दिया जाता है;
^४नुक़सान, घाटा ।

वोह साहबे-असर हूँ कि ऐ 'शाद' ! बादे-मर्ग ।
बोसे लिये हैं मेरी लहदके रक़ीबने ॥

असर अब इससे ज़ियादा वफ़ाका क्या होगा ।
क़सम हमारी मुहब्बतकी लोग खाने लगे ॥

वोह नातवाँ^१ हूँ कि नाला मेरा तेरे दर तक ।
लिये गया मुझे बेअस्तयार खींचे हुए ॥

मैं और अर्ज़ करूँ क्या जनाबे-नासेहसे ।
बस एक आप गरीबोंके ख़ैरख़्वाह मिले !

वोह ज़माना वस्लका क्या हुआ, कभी आदनाये-जफ़ा न थे ।
कि बदनसे रूह अलग भी थी, मगर आप हमसे जुदा न थे ॥
दिलेमुज़तरब ! तुझे क्या कहूँ ? अबसं उनके पाँवपै सर रखा ॥
जो खफ़ा भी हो गये थे तो क्या, कि वोह आदमी थे खुदा न थे ॥
हुए जाके तालिबेदीद जो, यह कुसूर है तो उन्हींका है ।
कोई और होंगे वोह बदयक़ीं, तेरे आस्ताँके गदा^२ न थे ॥

किसीकी बात भला उसके दिलपै क्या लगती ?
खुदाके बन्दोंने यूँ तो कही खुदा लगती ॥

हवाये-दहर^३ बिगाड़े हज़ार फूलोंको ।
न हो वोह रंग, शराफ़तकी कुछ तो बू होगी ॥

बवक़ते-नज़अ वोह नाहक़ चले गये उठकर ।
हम उसके बाद तो आँखोंको खुद फिरा लेते ॥

मैं निसार अपने ख़यालपर कि बग़ैर मयके हैं मस्तियाँ ।
न तो ख़ुम है पेशेनज़र कोई, न सुबू है पास न ज़ाम है ॥

^१निर्बल; ^२भिक्षुक;

^३संसारकी हवा ।

बड़ी मुश्किलोंसे हुआ है हल यह किताबेउम्रका मसअला ।
 उन्हें वस्लेगैर हलाल है, हमें शबकी नींद हराम है ॥
 इसी सोचमें है दिलेहजीं, कि क़यामत आनेको आयेगी ।
 हुए उनसे तालिबेदीद हम, वोह कहेंगे—“मजमये आम है ॥”

कह दो मरीज़ेगमसे कि आयेंगे क़ब्रपर ।
 रख लो खुदाके वास्ते, इतनी-सी जान भी ॥

बिछाकर जो गया बिस्तरपै कांटे ।
 वही ज़ालिम मेरा आरामे-जाँ था ॥

“जिसका दिल मुरझा चुका हो ऐ सबा ! उसके लिए ।
 फ़स्लेगुल आई तो क्या, अब्ने-बहार आया तो क्या ?”

भला हुआ कि उड़ा दी सबाने खाक मेरी ।
 तेरा तो सरपै न अहसान ऐ ज़मीन ! लिया ॥

आराम कर लो क़ब्रमें चन्दे मुसाफ़िरो !
 मंज़िल तक और अब कोई मेहमाँ सरा नहीं ॥
 दो-चार वक़्त जाते हैं रोज़ उस गलीमें हम ।
 अबतक कोई नमाज़ हमारी क़ज़ा नहीं ॥

मज़ा मिल जायगा जीनेका तुभको ।
 किसी ज़ालिमपै नासेह तू भी मर देख ॥

ऐसा न हो मलाइक^१ करने लगे शिकायत ।
 तीरे-नज़र तुम्हारा कुछ दूर जा पड़ा है ॥

रहे-बफ़ामें^२ क़दम डिंग न जायें देख ऐ दिल !
 सतानेवाले अभी बहुत कुछ सतायेंगे ॥

^१फ़रिश्ते;

^२नेकीके मार्गमें ।

यह अदा, यह उनका मिलना, यही कह रहा है मुझसे !
कि जफ़ा भी अब जो होगी तो ब-शक्लेनाज़ होगी ॥

नज़र आये-न-आये कोई आँसू पूछनेवाला ।
मेरे रोनेकी दाद ऐ बेकसी ! दीवारो-दर देंगे ॥

उसके लिए तो हाथ उठाना भी है गुनाह ।
जिसकी दुआ हों आप, वोह फिर क्या दुआ करे ?

मोती तुम्हारे कानके थर्रा रहे हैं क्यों ?
फ़रियाद किस ग़रीबकी गोश-आशना हुई ॥

गुलिस्ताने-जहाँमें बस वही आज़ाद इन्साँ है ।
सबाकी तरह जिस गुलसे मिले उसको हँसा आये ॥

तुलनात्मक अशआर

अब हम 'आतिश' और 'शाद' की हमतरही शज़लोंके चन्द तुलनात्मक शेर पेश कर रहे हैं, ताकि पाठक जान सकें कि एक ही क़ाफ़ियेमें दोनों उस्तादोंने कैसे-कैसे मज़ामीन नज़म किये हैं । और दोनोंका मर्तबा शज़ल-गोईमें कितना ऊँचा है । जहाँ शादने 'आतिश'के किसी क़ाफ़ियेपर शेर नहीं कहा है, वहाँ मजबूरन उससे मिलता-जुलता शादके दूसरे क़ाफ़िये-का शेर दे दिया है ।

आतिश— न पूछ हाल मेरा चौबे-खुशके-सहरा^१ हूँ ।
लगाके आग मुझे, कारवाँ^२ रवाना हुआ ॥

शाद— खुदा बुरा करे इस नौंदका यह कैसी नौंद ?
खुली कब आँख कि, जब कारवाँ रवाना हुआ ॥

^१जंगलकी सूखी लकड़ी;

^२यात्रीदल ।

आतिश— भरा है सोनये-दिल कूचए-मुहब्बतसे ।
खुदाका घर था जहाँ, बाँ शराबखाना हुआ ॥

शाद— ग़ज़ब किया तेरे जानने बज़ममें^१ साक़ी !
बुलन्द चारतरफ़ शेर आमयाना^२ हुआ ॥

आतिश— हो जाये हुस्नेमानी बेसूरत आश्कार ।
रूपे-हक़ीक़त उलटे जो परदा मजाज़का ॥

शाद— उनकी निगाहेनाज़ जो पलटी तो देखना ।
मुंह देखती रहेगी हक़ीक़त, मजाज़का ॥

आतिश— साक़ी ! जलाल^३-ओ-दर्द जो तौफ़ीक़^४ हो सो दे ।
मस्तोंको तेरे होश कहाँ इस्तयाज़का^५ ॥

शाद— देखा तो होगा हमने अज़लमें तेरा जमाल ।
लेकिन वोह कोई वक़्त न था इस्तयाज़का ॥

आतिश— क्योंकि वोह नाज़नीन करे बेनियाज़ियाँ ।
अन्दाज़से भी हौसला आली है नाज़का ॥

शाद— किस तरह दिलपै फ़ितनये-महशरका हो असर ।
हंगामा याद है तेरी रफ़्तारे-नाज़का ॥

आतिश— याद करके अपनी बरबादीको रो देते हैं हम ।
जब उड़ाती है हवाए-तुन्द^६ खाके-कूये-दोस्त^७ ॥

शाद— लाशये-उरियाने-आशिक़का^८ कोई देखे विक़ार^९ ।
ढाँकती है उठके किस उल्फ़तसे खाके-कूये-दोस्त ॥

^१महफ़िलमें; ^२आमफ़हम; ^३रूपका दर्शन, चमत्कार; ^४हौसला, सामर्थ्य; ^५थोड़े-बहुतके भेदका। ^६तेज़ हवा; ^७प्रेयसीके कूचेकी धूल; ^८प्रेमीकी नग्न-लाशका; ^९महत्व ।

आतिश— दागेदिलपर खर गुजरी तो गनीमत जानिये ।
दुश्मने-जाँ हैं जो आँखें देखती हैं सूये-दोस्त^१ ॥

शाद— तू बड़ा आक्रिल है नासेह ! तू ही समझा दे मुझे ।
कौन श रह-रहके दिलको खींचती है सूये-दोस्त ॥

आतिश— दो मरेंगे जस्मेकारीसे तो हसरतसे हजार ।
चार तलवारोंमें शल हो जायेगा बाजूये-दोस्त ॥

शाद— खत गलेपर पड़ चुका था खून देती थीं रंगें ।
वायेहसरत किस जगह आकर थका बाजूये-दोस्त ॥

आतिश— फ़र्शगुल बिस्तर था अपना खाकपर सोते हैं अब ।
ख़िशत^२ ज़रेसर नहीं, या तकिया था जानूये-दोस्त ॥

शाद— किस खुशीसे तहनयत दे-देके यूँ कहता है दिल ।
वस्लकी शब है मुबारक दोस्तको पहलूये-दोस्त ॥

आतिश—हिज्रकी शब हो गई रोज़े-क़यामतसे दराज़^३ ।
दोशसे^४ नीचे नहीं उतरे अभी गेसूये-दोस्त ॥

शाद— दहरमें क्या-क्या हुए हैं इनक़लाबातेअज़ीम ।
आस्माँ बदला, ज़मीं बदली, न बदली खूये-दोस्त^५ ॥

आतिश— इस बलाये-जाँसे 'आतिश' देखिये क्योंकर बने ?
दिलसिवाशिशेसे नाजुक, दिलसे नाजुक खूये-दोस्त ॥

शाद— 'शाद' यूँही अहलेशक शकमें पड़े रह जायेंगे ।
हम इन्हीं आँखोंसे इक दिन देख लेंगे रूये-दोस्त ॥

^१प्रेयसीकी तरफ़;
^२मित्रका स्वभाव ।

^३ईट;

^४लम्बी;

^५कन्धेसे;

आतिश— फुरकते-यारमें मुर्दा-सा पड़ा रहता हूँ ।
रूह कालिबमें नहीं, जिस्म है तनहा बाक़ी ॥

शाद— मैकदेमें न वोह सागर है, न ख़ुम है, न वोह ज़ाम ।
चल बसे यार, रहे हम तने-तनहा बाक़ी ॥

आतिश— इस क़दर सीनयेग़म, इश्क़से मामूर हुआ ।
न रही दिलमें मेरे हसरतेदुनिया बाक़ी ॥

शाद— काश जीते यूँ-ही मर-मरके कई बार ऐ दिल !
सैकड़ों साल रहेगी अभी दुनिया बाक़ी ॥

आतिश— गरमियाँ हूँ जो यही आहेशरर-अफ़शांकी^१ ।
नहीं रहनेका मेरे यारका परदा बाक़ी ॥

शाद— चार दीवारे-अनासिरको^२ गिराया भी तो क्या ?
वही धोका है, वही है अभी परदा बाक़ी ॥

आतिश— आशिक़-नवाज़ हुस्नकी तारीफ़ क्या करूँ ?
यूसुफ़से भी अज़ीज़ उसे अपना गुलाम है ॥

शाद— मस्तोंपे मुनहसिर है न अहलेशऊरपर ।
साक़ी ! तेरा तमाम ज़माना गुलाम है ॥

आतिश— जबतक करे हलाल न मुझ बेगुनाहको ।
क्रातिलको बहने हाथका खाना हराम है ॥

शाद— इतना भी मैक़शोंको नहीं मैक़शीमें होश ।
हवसे अगर सिवा हो तो पीना हराम है ॥

^१आहूरूपी चिनगारीकी वारिश; ^२पंचतत्त्वको ।

आतिश-- माशूक ही नहीं जो न वादा खिलाफ हो ।
चाहे जो तुझसे पुरतगीये-अहद^१ खाम^२ है ॥

शाद-- तेरे-निगाहेयार ! तेरी काट अलअमाँ ।
फ़ौलाद भी तो आगे तेरे मोम खाम है ॥

आतिश-- दौलतके सामने नहीं कुछ कद्रे-हुस्न भी ।
महमूदका अयाज़-सा खुशरू गुलाम है ॥

शाद-- कहते हैं किसको हुस्नकी खिदमत-गुज़ारियाँ ।
जिस मुब्तलाको देखिये दिलका गुलाम है ॥

आतिश-- मुबहे बहार है मुझे साक़ी पिला शराब ।
सब जानते हैं ईदका रोज़ा हराम है ॥

शाद-- इक ज़ामकी बिसात तो साक़ी बहुत न थी ।
पानी भी अब मुझे तेरे घरका हराम है ॥

आतिश-- 'आतिश' ! बुरा न मानिये हक़-हक़ जो पूछिये ।
शायर हैं हम, दरोज़ हमारा कलाम है ॥

शाद-- महमाँ सराये तनसे चली रूह कहके हाय--
"इस घरमें अब न आयेंगे गर 'शाद' नाम है ॥"

हम तरही गज़लोंके अतिरिक्त इन दोनों बाकमाल उस्तादोंके ऐसे अशआर भी बहुत अधिक हैं, जो विचारों और भावोंकी दृष्टिसे समानता रखते हैं । उनमें-से चन्द अशआर पेश किये जा रहे हैं, ताकि पाठक जान सकें कि एक ही तरहके भावों और विचारोंको सिद्धहस्त शायर अपनी-अपनी भाषा और कल्पनाका परिधान पहिनाकर किस तरह सँवारते हैं ।

आतिश-- दस्ते-याराने-वतनसे^१ नहीं मिट्टी दरकार ।
दब मरूंगा मैं कहीं, रीगे-बयाबाँके^२ तले ॥

शाद-- लबे-तिशना^३ रहना, अहसाँसे बहतर ।
देखा किया मुँह, दरिया हमारा ॥
खुश हैं गर तिश्नालबीने युँ-ही मारा हमको ।
चीने-अब्रू नहीं, दरियाकी गवारा हमको ॥

आतिश--- हमेशा भाड़ते हैं गदेंपैरहन^४ गाफिल ।
नहीं समझते कि है ज़ेरेपैरहन^५ मिट्टी ॥

शाद-- शुस्तगीयेज़बाँ^६ अबस,^७ दिलमें भरे हैं खारोखस^८ ।
छोड़ अभी बरूनेदर,^९ फ़िक्रे दरूने-ख़ाना कर^{१०} ॥

आतिश--आसमाँ ! मरके तो राहत हो कहीं थोड़ी-सी ।
पाँव फ़ैलानेको हाथ आये ज़मीं थोड़ी-सी ॥

शाद-- आरामसे हूँ क़ब्रके अन्दर जो बन्द हूँ ।
मैं भी तो आदमी हूँ फ़रागत पसन्द हूँ ॥

आतिश-- मारफ़तमें तेरी जातेपाकके ।
उड़ते हैं होशोहवास इदराकके^{११} ॥

शाद-- तेरे कमालकी हद कब कोई बशर समझा ।
उसी क़दर उसे हैरत है जिस क़दर समझा ॥

^१देशवासी मित्रोंके हाथसे; ^२रेगिस्तानकी धूलमें; ^३प्यासा;
^४पोशाककी धूल; ^५लिवासके नीचे; ^६वाणीकी मधुरता;
^७व्यर्थ; ^८काँटे, तिनके; ^९बाहरी भाड़-पोंछ; ^{१०}अन्तरंगकी; ^{११}बुद्धिके ।

आतिश— दोनों जहाँके कामका रक्खा न इश्कने ।
दुनिया-ओ-आखरतसे किया बेखबर मुझे ॥

शाद— फलकका जिक्र ही क्या है, जमींके भी न रहे ।
हम अपनी चालसे आखिर कहींके भी न रहे ।

आतिश— बीना^१ हों जो आँखें तो रखे यारको देखें ।
नज्जारेके क्राबिल जो तमाशा है तो ये है ॥

शाद— यह आरजू है तेरी जलवागाहमें जाकर ।
हजार आँखें हों और सबसे यार हम देखें ॥

आतिश— हृथपर वादयेदीदार न कर आशिकसे ।
किसको मालूम है, फरदायेक्रयामत^२ कब है ॥

शाद— तकिय-ए-वादापै^३ सब चुपके पड़े हें तहेखाक^४ ।
कल क्रयामत जो न आई तो क्रयामत समझो ॥

आतिश— ठहरा हुआरेयार न माहे-चहार वोह ।
दिन हो गया नक्राब जो शबको उठा दिया ॥

शाद— शबेवस्ल अपनी ही आँखोंसे यह अन्धेर देखा है ।
नक्राब उनका उलटना रातका काफूर हो जाना ॥

^१देखनेवाली; ^२प्रलयका दिन; ^३वायदेके भरोसेपर;
^४मिट्टीके नीचे, समाधिमें ।

आतिश— कालिबे-खाकीकी^१ तो मुनते हैं 'आतिश' जेरेखाक ।
कुछ नहीं मालूम हमको रुह^२ किस आलममें है ॥

शाद—जिसे पाक रखनेकी थी हविस वोह तो तेरे दरपे पहुँच गई ।
यह जो मुश्तेखाक जमीपे^३ है, उसे फेंक आओ कहीं सही ॥

आतिश— वक़्ते-आखिर इश्क़े-पिन्हां, यारपर जाहिर हुआ ।
नज़अमें ईसाने पहचाना मेरे आजारको ॥

शाद— तुम्हीको नज़अमें पूछा तेरे ख़मोशोंने ।
अख़ीर वक़्त जब आया छुपे न राज़^३ उनके ॥

आतिश— हाथ क़ातिलका मेरे, खंजर तक आकर रह गया ।
कुहनियों तक आस्तीनोंको चढ़ाकर रह गया ॥

शाद— हमारी जान सदक़े नौजवाँ क़ातिलके गुस्सेपर ।
कोई अन्दाज़ देखे आस्तीनोंके चढ़ानेका ॥

आतिश— छोड़ बैठे जो हम अफ़सानये-गेसूये-दराज़ ।
सुबह होगी न रहेगी शबे-यल्दा^४ बाक़ी ॥

शाद—जो कहूँ तो ख़त्म न हो सके, जो सुने कोई तो ख़लिश रहे ।
यह फ़साना जुल्फ़े-दराज़का मेरी ज़िन्दगीसे दराज़^४ है ॥

^१मिट्टीरूपी शरीरकी; ^२आत्मा; ^३भेद; ^४सबसे बड़ी अँधेरी रात; ^५लम्बा, विस्तृत ।

आतिश— अदमसे हस्तीमें जाकर यही कहूँगा मैं ।
हजारों हसरतेजिन्दाको गाड़-ओ-दाब आया ॥

शाद—अभी बहुत दिलमें हैं उम्मीदें तड़पके हसरतसे मर न जायें ।
मिलो अगर 'शाद'से अजीजो ! तो जिक्र करना न आरजूका ॥

आतिश— चमनिस्तांकी गई नशवोनुमा फिरती है ।
रत बदलती है, कोई दिनमें हवा फिरती है ॥

शाद— खिजाँमें खुशक शाखोंसे लिपटकर मुफ्त जी खोना ।
बहार आयेगी घबराओ न ऐ उजड़े चमनवालो !

आतिश— आलमसे कुछ गरज नहीं ऐ जाने जाँ ! हमें ।
दिलको नहीं है कोई तुम्हारे सिवा क़ुबूल ॥

शाद— हजार मजमये-खूबाने-माहरू^१ होगा ।
निगाह जिसपै ठहर जायगी वह तू होगा ॥

आतिश— कहाँतक आँखोंमें सुखी शराबख़वारीसे ।
सफ़ेदमू^२ हुए बाज़ आ सियाहकारीसे ॥

शाद— अब इज्तनाब^३ मुनासिब है 'शाद' रिन्दीसे ।
सफ़ेद आपके दाढ़ीके बाल होने लगे ॥

^१सुन्दरियोंका समूह;
बचाव ।

^२सफ़ेद बाल;

^३परहेज़,

आतिश--राजेदिल^१ अफ़शा^२ न हो ऐ दिल ! कहे देता हूँ मैं ।
फोड़ डाली आँख अगर आँसू नज़र आया मुझे ॥

शाद-- हुजूमे-अश्कसे दीदारमें ख़लल न पड़े ।
जो अबके रोज़ तो आँखोंको मैंने फोड़ दिया ॥

आतिश-- नाफ़हमी^३ अपनी परदा है दीदारके लिए ।
वरना कोई नक्राब नहीं यारके लिए ॥

शाद-- गिला जलवेका तेरे क्या कि आलम आशकारा है ।
हमें रोना तो जो कुछ है वोह अपनी कमनिगाहीका ॥

आतिश-- ख़ूब रोये हालपर अपने, वतनका सुनके हाल ।
कोई ग़ुरबतमें जो आ निकला हमारे शहरसे ॥

शाद-- चमनको याद करके देरतक आँसू बहाता हूँ ।
कोई तिनका जो मिल जाता है उजड़े आशियानेका ॥

आतिश-- करम किया जो सनमने सितम ज़ियादा किया ।
शबे-फ़िराक़में मैंने ख़ुदाको याद किया ॥

शाद-- कोई ख़फ़ा हो-तो-हो, अमरेहक़ मगर यूँ है ।
बूतोंकी चालने सबको ख़ुदापरस्त किया ॥

^१दिलका भेद; ^२प्रकट; ^३बेसमझी, अज्ञानता ।

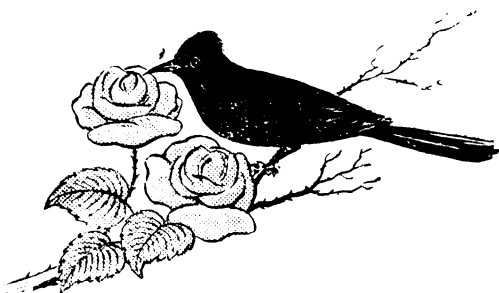
आतिश— हिमेशा फ़क़से याँ आशिक़ाना शेर ढलते हैं ।
जबाँको अपनी बस इक हुस्नका अफ़साना आता है ॥

शाद— न आईनेका क्रिस्सा और न हालेशाना कहते हैं ।
हकीक़तमें जमाले-यारका अफ़साना कहते हैं ॥

आतिश— हिकायते-गुले-रंगीने-यार क्या कहते ?
चमनको आग लगाता जो बाग़बाँ सुनता !

शाद— जमालेयारका क्रिस्सा चमनमें चलके कहो ।
गुलोंके कान खड़े होंगे उस हिकायतसे ॥

२४ मई १९५३]



गुल-बुलबुल



अमरनाथ 'साहिर'

[१८६३ — ई०]

पं० अमरनाथ मदन साहब 'साहिर' काश्मीरी ब्राह्मणथे । आपका जन्म २६ मार्च १८६३ ई०में और निधन १९४५ ई० के लगभग हुआ । आप देहलीके रईस रायबहादुर पं० जानकीदास मदनके सुपुत्र थे । आपके पूर्वज पं० दीनानाथजी पंजाबके महाराजा रणजीतसिंहके दीवान और ताऊ अंग्रेजी फौजमें सूबेदार थे ।

'साहिर' साहब तहसीलदारीके पदसे सम्मानपूर्वक पेंशन लेकर दिल्लीमें साहित्य-सेवामें जीवन-यापन करते रहे । अपने मकानपर नियमसे मासिक मुशायरे कराते रहते थे और बड़ी धूम-धामसे वार्षिक मुशायरे वृहतरूपमें कराते थे । मैंने स्वयं सन् १९२४से दसों वार्षिक और न जाने कितने मासिक मुशायरे आपके संचालकत्वमें सफलतापूर्वक सम्पन्न होते देखे हैं । उर्दू-संसारमें आपको अत्यन्त सम्मान और आदर प्राप्त था । आप हैंसमुख, मिलनसार और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, चेहरेपर सफ़ेद दाढ़ी खूब ज़ेब देती थी ।

पहले आप फ़ारसीमें शेर कहते थे, बादमें मित्रोंके आग्रहसे २२ वर्षकी आयुसे उर्दूमें शेर कहना आरम्भ कर दिया । आपका १९३७ ई०में एक दीवान "कुफ़ेइश्क़" प्रकाशित हो चुका है । आपका कलाम उच्चकोटिका

दार्शनिक और आध्यात्मिक है। भाषा भी फ़ारसीमय है। गद्यके भी आप मशहूर लेखक थे। यहाँ हम आपके कुछ सरल अशआर निगार जनवरी १९४१ से देनेका प्रयत्न कर रहे हैं—

चश्मे-दिल नज़अमें हैं महवे तमाशाये-जमाल^१ ।

हश्^२ क्या और है उससे कोई बहतर अपना ॥

होनेको तो है अब भी वही हुस्न, वही इश्क ।

जो हर्फ़-ग़लत होके मिटा नक्शे-वफ़ा था ॥

पिन्हूँ नज़रसे परदयेदिलमें रहा वोह शोख ।

क्या इम्तयाज़^३ हो मुझे हिज़्रो-विसालका ॥

ऐ परीरू ! तेरे दीवानेका ईमाँ क्या है ।

इक निगाहे-ग़लत अन्दाज़पै कुर्बाँ होना ॥

जुनूने-इश्कमें कब तन-बदनका होश रहता है ।

बड़ा जब जोशे-सौदा हमने सरको दर्द-सर जाना ॥

एक जज़्बा था अज़लसे गोशये-दिलमें निहूँ ।

इश्कको इस हुस्नके बाज़ारने रुसवा किया ॥

तमझायें बर आई अपनी तर्केंमुद्दा होकर ।

हुआ दिलबेतमझा अब, रहा मतलबसे क्या मतलब ?

देखकर आईना कहते हैं कि—“लासानी हूँ मैं”

आईना देता है उनकी लनतरानीका जवाब ॥

पा लिया आपको अब कोई तमझा न रही ।

बेतलब मुझको जो मिलना था मिला आपसे आप ॥

^१मृत्युके समय हृदय-नेत्र प्रेयसीके सौन्दर्य देखनेमें लीन हैं;
^२प्रलय; ^३अन्तर मालूम दे ।

गुम कर दिया है आलमे-हस्तीमें होशको ।
हर इकसे पूछता हूँ कि 'साहिर' कहाँ है आज ॥

दामानेयार मरके भी छूटा न हाथसे ।
उठे हैं खाक होके सरे रहगुजरसे हम ।

सदाये-वस्ल बामे-अर्शसे आती है कानोंमें—
"मुहब्बतके मजे इस दारपर चढ़कर निकलते हैं ॥"

कतरा दरिया है अगर अपनी हकीकत जाने ।
खोये जाते हैं जो हम आपको पा जाते हैं ॥

कहाँ दैरोहरममें जलवये-साकी-ओ-मय बाकी ?
चलें मयखानेमें और बैअते-पीरेमगाँ^१ कर लें ॥

परेपरवाजे उनका लायेंगे गर लामकाँ भी हो ।
तुम्हें हम ढूँढ लायेंगे कहीं भी हो, जहाँ भी हो ॥

हुस्न क्या हुस्न है जलवा जिसे दरकार न हो ।
यूसफी क्या है जो हंगामये-बाजार न हो ॥

बेतमन्नाईने बरहम रंगे-महफ़िल कर दिया ।
दिलकी बज्म-आराइयाँ थीं आरजूये-दिलके साथ ॥

अजलसे दिल है महवेनाज वक्फ़े-खुद-फ़रामोशी ।
जो बेखुद हो वोह क्या जाने, वफ़ा क्या है, जफ़ा क्या है ?

परवा पड़ा हुआ था राक़लतका चश्मे-दिलपर ।
आँखें खुलीं तो देखा आलममें तू-ही-तू है ॥

^१शराब बेचनेवालेपर ईमान ले आयें;

^२कल्पित पक्षी ।

जलवये-हक़ नज़र आता है सनममें 'साहिर' !
है मेरे काबेकी तामीर सनम-ख़ानोंसे ॥

हुस्नमें और इश्क़में जब राबता कायम हुआ ।
शम बना दिलके लिए और दिल बना मेरे लिए ॥

वोह भी आलम था कि तू-ही-था और कोई न था ।
अब यह कैफ़ीयत है सै-ही-मैका है सौदा मुझे ॥

हुस्नको इश्क़से बेपरदा बना देते हैं वोह ।
वोह जो पिन्दारे-खुदी^१ दिलसे मिटा देते हैं ॥

ख़ाली हाथ आयेंगे और जायेंगे भी ख़ाली हाथ ।
मुफ़्तकी सैर है, क्या लेते हैं, क्या देते हैं ॥

ज़िन्दगीमें है मौतका नक़्श ।
जिसको हम इन्तज़ार कहते हैं ॥

दीदारे-शशजहत^२ है कोई दीदावर^३ तो हो ।
जलवा कहाँ नहीं, कोई अहलेनज़र तो हो ॥

दरेसनमकदाको हमने जाके खड़काया ।
हरममें जब न हुए बारयाब, क्या करते ?

हरम है मोमिनोंका, बुतपरस्तोंका सनमख़ाना ।
ख़ुदा-साज इक इमारत है मेरे पहलूमें जो दिल है ॥

^१अहमका अभिमान;

^३अखिलविश्वके दर्शन;

^२देखनेवाला ।

चले जो होशसे हम बेखुदीकी मंजिलमें ।
मिला वोह जौक्रे-नजर, पर उधर न देख सके ॥

हम हैं और बेखुदी-ओ-बेखबरी ।
अब न रिन्दी न पारसाई है ॥

९ मई १९५२]





दत्तात्रय कैफ़ी

[१८६६—.....ई०]

पं० बृजमोहन दत्तात्रय कैफ़ी काश्मीरी ब्राह्मण हैं। आपके पूर्वज फ़रखसियर बादशाहके साथ काश्मीरसे दिल्ली आये और सरकारी दफ़्तरोंमें उच्च पदोंपर नियुक्त हुए। कैफ़ीके पिता पं० कन्हैयालाल नाभा स्टेटमें शहर कोतवाल थे।

अल्लामा कैफ़ी १३ दिसम्बर १८६६ ई०में दिल्लीमें उत्पन्न हुए। आपके नाना फ़ारसीके बहुत बड़े पण्डित थे। उन्हींसे फ़ारसीकी शिक्षा प्राप्त की। अंग्रेज़ी शिक्षा मिशन कॉलेजमें प्राप्त की। शायरीका प्रारम्भ ग़ज़लसे हुआ, परन्तु हाली-आज़ादके आन्दोलनोंके फलस्वरूप आपने नज़्म भी लिखनी प्रारम्भ कर दीं।

१९१५-१६में यूरोपका भ्रमण करके वहाँके साहित्यिकोंसे भेंट-मुलाक़ात की। आपकी कई कृतियाँ सरकारसे पुरस्कृत हो चुकी हैं। आप काश्मीरके विदेशी विभागके उपमंत्री पदसे रिटायर हुए और एक रियासतमें मजिस्ट्रेट और कलेक्टर भी रहे। अब शान्तिपूर्वक साहित्य-सृजन कर रहे हैं। आप उर्दू-साहित्य-इतिहासके बहुत प्रतिष्ठित विद्वान हैं। आपकी आलोचनायें बहुत गवेषणापूर्ण होती हैं। आप उर्दू-संसारके एक स्तम्भ

समझे जाते हैं। सैकड़ों मुशायरों और साहित्यिक सभाओंके आप सभा-पति होते रहे हैं। आपका उर्दू-साहित्यिक बहुत सम्मान करते हैं। न जाने कितने युवक आपसे प्रेरणा पाकर शायर और लेखक बन गये। विरोधी भी आपकी विद्वता और साहित्यिक सेवाओंका लोहा मानते हैं और आपके दमको उर्दूके लिए एक बहुत बड़ी देन समझते हैं। हिन्दी-हितैषीके नाते जो स्थान आदरणीय पुरुषोत्तमदास टण्डनका है, वही उर्दू-संसारमें आपका है। सादा-मिजाज, साफ़-दिल और वा-इखलाक बुजुर्ग हैं। सभी आपको श्रद्धा भक्तिसे देखते हैं। दिल्लीकी बड़ी-से-बड़ी वज़्मेअदबका सभापति होते हुए हमने आपको देखा है। आपके एक-एक शब्दको लोग मंत्रकी तरह समझते हैं।

‘कैफ़ी’ बूढ़े हो चले हैं और उनकी शायरी भी बूढ़ी हो गई है। लेकिन उनके कलाममें न तो पुराने ढंगकी शोखी मिलेगी, न वाज़ारूपन। उनका कलाम संजीदा और پاک होता है। निगार जनवरी १९४१ से चन्द अग़ार चुनकर यहाँ दिये जा रहे हैं—

हैं मेरे दिलमें वोह आहें कि जो बिजली न बनीं ।

मेरी आँखोंमें वोह क़तरा है जो तूफ़ाँ न हुआ ॥

ग़म रहा उनका जो दोज़ख़में पड़े जलते हैं ।

मेरे खुश होनेका जन्नतमें भी सामाँ न हुआ ॥

राज़^१ उनके खुले जाते हैं एक-एक सभूपर ।

और इसपै तमाशा है कि में कुछ नहीं कहता ॥

हाल यह बेख़ुदिये-इश्क़में^२ ‘कैफ़ी’का हुआ ।

शेख़ काफ़िर उसे और ग़बर^३ मुसलमाँ समझा ॥

^१भेद; ^२प्रेमकी तन्मयतामें; ^३अग्निपूजक (यहाँ ग़रमुस्लिमसे तात्पर्य है) ।

यूँ अगर देखिये क्या कुछ नहीं यह मुश्तेगुबार^१ ।

और अगर सोचिये तो खाक भी इन्साँमें नहीं ॥

चारागरको हैरत है इरतकाये-वहशतसे ।

पाँवमें जो चक्कर था आ रहा है वोह सरमें ॥

सुहबतें अगली जो याद आती हैं, जी कटता है ।

कोई पूछे भी तो कहते हैं, हमें याद नहीं ॥

हाँ-हाँ मगर ऐ दोस्त ! तू तदबीर किये जा ।

यह भी तेरी तकदीरके दफ़्तरमें लिखा है ॥

गुले-पज्ममुर्दाकी बिखरी हुई कुछ पत्तियाँ देखीं ।

तो इक बेदिल यह चीख उठ्ठा "मेरा दिल है, मेरा दिल है ॥"

तुमसे अब क्या कहें, वोह चीज है दाग़े-ग़मे-इश्क़ ।

कि छुपाये न छुपे और दिखाये न बने ॥

बात वोह कह गये आये भी तो किस तरह यकीं ।

और सहर इसमें कुछ ऐसा कि भुलाये न बनें ॥

जिसको खबर नहीं, उसे जोशो-ख़रोश है ।

जो पा गया है राज़, वोह गुम है, ख़मोश है ॥

पैकरे-खाक है तू चख़पै छा भिस्ले-गुबार ।

तुझको मिट्टीमें मिलाया है जबीं-साईने ॥

नहीं मालूम अज़ाँ थी कि वोह बाँगेनाकूस^२ ।

कहीं खींचे लिये जाती है इक आवाज़ मुझे ॥

"इनक़लाब आनेको ऐसा है न आया हो कभी ॥"

दरो-दीवारसे आती है यह आवाज़ मुझे ॥

^१मुट्ठीभर खाक;

^२शंख-ध्वनि ।

जो ज़िन्दादिल हें हमेशा जवान रहते हें ।
बहारे-ज़ीस्त यक़ीनन इसी शबाबमें हें ॥

हम तो बुरे बने यूँ ही नालेसे आहसे ।
दिलमें जो था वोह फूट ही निकला निगाहसे ॥
आबाद है यह खानयेदिल इक खयालसे ।
दुनियाके हादसे इसे वीराँ न कर सके ॥

साज़ीकी इक नज़र ही हमें मस्त कर गई ।
किसको मुराही-ओ ख़ुमो-सागरका होश था ॥

१६ मई १९५२]



मै ख़ाना

'आज़ाद' अन्सारी

[१८७० — ई०]

शेख अलताफ़ अहमद 'आज़ाद' अन्सारीका जन्म १८७० ई०में नागपुरमें हुआ। वहाँ आपके पिता ओवरसियर थे। १८-१९ वर्षकी अवस्थातक अरबी-फ़ारसीकी शिक्षा प्राप्त की। १९०० ई०में देहरादूनमें मकतब खोला। १९०२से १९०६ तक कानपुरमें हकीमी की। यहीं आपकी पत्नीका निधन हो गया। फिर आप सहारनपुर, अम्बाला, अलीगढ़, दिल्ली, आदि कई स्थानोंमें रहे। १९२३के बाद आप हैदराबाद चले गये और वहाँ चश्मेका व्यापार करने लगे। आप शायरीमें हालीके शिष्य थे। आप पुनः दिल्लीमें रहने लगे थे। यूँ आप सहारनपुरके रहनेवाले थे। १८९०में आपने शायरी प्रारम्भ की और २० वर्षतक हालीकी सुह-बतका लाभ उठाया। आपका निधन हो चुका है। आपके स्वयं निर्वाचित कलामसे चन्द शेर हम यहाँ निगार जनवरी १९४१ से साभार दे रहे हैं—

तबीयत ही दर्द-आइना हो गई ।

दवाका न करना दवा हो गया ॥

यूँ याद आओगे हमें इसला^१ खबर न थी ।

यूँ भूल जाओगे हमें वहमो-गुमाँ न था ॥

आह ! किसने मुझे दुनियासे मिटाना चाहा ।

आह ! उसने, जिसे मैं हासिले-दुनिया जाना ॥

जाहिर है कि बेकस हूँ, साबित है कि बेबस हूँ ।

जो जुल्म किया होगा, बरदाश्त किया होगा ॥

उम्मीदे-सकूँ रखसत, तस्कीने-दरूँ रखसत ।

अब दर्दकी दारी है, अब दर्द मज्जा देगा ॥

कभी दिनरात रंगीं सुहबतें थीं ।

अब आँखें हैं, लहू है, और मैं हूँ ॥

तेरा गुलशन वोह गुलशन, जिसपै जन्नतकी फ़िजा सदक़े ।

मेरा ख़िरमन^२ वह ख़िरमन, जिसपर अंगारे बरसते हैं ॥

अब आँखोंके आगे वोह जलवे कहाँ ?

अब आँखें उठानेसे क्या फ़ायदा ?

अब फ़रेबे-महर्बानी^३ रायगाँ^४ ।

ज़िन्दगी भरको नसीहत हो गई ॥

“जब हमें बज़्ममें आनेकी इजाज़त न रही ।

फ़िर यह क्यों पुरसिंशेहालात है ? यह भी न सही ॥”

^१कदापि;
^२व्यर्थ ।

^३खलिहान;

^४कृपाओंका मयाजाल;

अब हालेदिल न पूछ, कि ताबे-बयाँ^१ कहाँ ?
अब महर्बाँ न हो किं जरूरत नहीं रही ॥

तेरा बारेगिराने-महर्बानी कौन उठा सकता ?
तेरा नामहर्बाँ होना कमाले-महर्बानी है ॥

सितमशआर ! सता, लेकिन इस क्रदर न सता ।
कि शुक्र शक्ले-शिकायात अस्तयार करे ॥
खुदाके वास्ते आ और इससे पहले आ ।
कि यास चारये-तकलीफ़ेइन्तज़ार करे ॥

हाय ! वोह राहत कि जबतक दिल कहीं आया न था ।
हाय ! वोह साअत कि जब तुमसे शनासाई हुई ॥

मेरे शौक़ेसज़ाका ख़ौफ़नाक अंजाम तो देखो ।
किसीका जुर्म हो अपनी ख़ता मालूम होती है ॥

समझता हूँ कि तुम बेदादगर हो !
मगर फिर दाद लेनी है तुम्हींसे ॥

इक गदायेराहको^२ नाहक न छेड़ ।
जा, फ़क़ीरोसे मज़ाक़ अच्छा नहीं ॥

तेरा अदील^३ कोई तेरे सिवा न होगा ।
तुझ-सा कहाँसे लाऊँ, तुझ-सा हुआ न होगा ॥
मंज़िलकी जुस्तजूसे पहले किसे ख़बर थी ?
रस्तोके बीच होंगे और रहनुमा^४ न होगा ॥

^१बयान करनेकी शक्ति;
तुझ जैसा; ^२पथ-प्रदर्शक ।

^३मार्गके भिक्षुकको;

^४नज़ीर,

हक बना, बातिल बना, नाकिस बना, कामिल बना ।

जो बनाना हो बना, लेकिन किसी काबिल बना ॥

जब मैं तक शिकवये-महरूमिये-दीदार आना था ।

खिताब आया कि “जा, और ताकते-दीदार पैदा कर ॥”

गैर फ़ानी खुशी अता कर दी ।

ऐ ग़मेदोस्त ! तेरी उम्नदराज ॥

उठो दर्दकी जुस्तजू करके देखें ।

तलाशे-सकूने तबीयत कहाँ तक ?

दीदारकी तलबके तरीकोंसे बेख़बर ।

दीदारकी तलब है तो पहले निगाह माँग ॥

जो चाहना है चाह मगर कायदेके साथ ।

जो माँगना है माँग मगर राह-राह माँग ॥

निशानेराह हाथ आया तो किससे ? सिर्फ़ उल्फ़तसे ।

कमाले-रहबरी पाया तो किसमें ? सिर्फ़ रहज़नमें ॥

आओ, फिर मौक़ा है, कुछ इसरारकी बातें करें ?

सूरते-मन्सूर बहकें, दारकी बातें करें ॥

बयाने-राजेदिलकी ख़्वाहिशें और वोह भी मिम्बर पर ?

ख़बर भी है ? यह बातें दारपर कहनेकी बातें हैं ॥

कोई दोनों जहाँसे हाथ उठा बैठा तो क्या परवा ?

तुम इन मोलों भी सस्ते हो, तुम इन दामों भी अरज़ाँ हो ॥

दिल और तेरे ख़यालसे राहत न पा सके ।

शायद मेरे नसीबमें राहत नहीं रही ॥

इसे भी खुश नज़र आया, उसे भी खुश नज़र आया ।
तेरे ग़ममें ब-हाले शादमाँ कर दी बसर मेंने ॥

मुनासिब हो तो अब परदा उठाकर ।
हमारा शक बदल डालो यक़ींसे ॥

बेख़बर ! कारेख़बर मुश्किल नहीं ।
बेख़बर हो जा, ख़बर हो जायगी ॥

जो बोह मिलता नहीं है आप खो जा ।
कि इक यह भी तरीक़े-जुस्तजू है ॥

तेरे होते मेरी हस्तीका क्या ज़िक्र ?
यही कहना बजा है "मैं नहीं हूँ" ॥

आज वोह दिन है कि इक साक़ीके दस्ते-खाससे ।
पी और इतनी पी कि मैं हक़दारे-कौसर हो गया ॥

याराए-तुहदो-ताबदिरअ़ कुछ तलब न कर ।
तौफ़ीक़ हो तो सिर्फ़ मजाले-गुनाह माँग ॥

जो अहलेहरम दरपये-दुश्मनी हैं ।
तो परदा नहीं, आस्ताँ और भी हैं ॥

आ, मगर इस क़दर क़रीब न आ ।
कि तमाशा मुहाल हो जाये ॥

जब रुख़ेमक़सदसे इक परदा उठा ।
और ला-तादाद परदे पड़ गये ॥

अचानक नज़ूले-बला^१ हो गया ।

यकायक तेरा सामना हो गया ॥

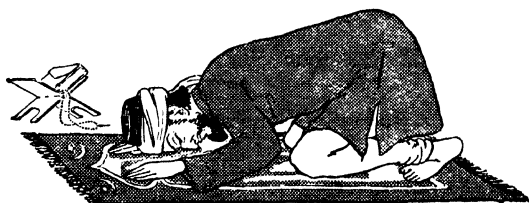
इन्सानकी बदबस्ती अन्दाज़से बाहर है ।

कम्बस्तेत खुदा होकर बन्दा नज़र आता है ॥

बन्दापरवर ! मैं वोह बन्दा हूँ कि बहरे-बन्दगी ।

जिसके आगे सर झुका दूँगा खुदा हो जायगा ॥

२४ मई १९५२ ई०]



आबिद

^१आपदाका आगमन ।

‘हसरत’ मोहाना

[१८७५—१९५१ ई०]



सैयद फ़ज़लुलहसन ‘हसरत’ उन्नाव ज़िलेके मोहाना कसबेमें १८७५ई० में उत्पन्न हुए, और १९०३ ई०में आपने अलीगढ़ मुस्लिम यूनि-वर्सिटीमें बी० ए० पास किया ।

‘हसरत’ कट्टर और धार्मिक मुसलमान थे । नमाज़ और रोज़ेके सख्त पाबन्द थे । ओलियाओंके^१ मुरीद थे । फ़िरंगी महल लखनऊके पीरे-खानकाहके हाथपर आप बैठ^२ कर चुके थे, और इतनी श्रद्धा-भक्ति रखते थे कि अपने अन्तिम दिनोंमें आप फ़िरंगी महल आ गये थे । यहीं ता० १३ मई १९५१को आपकी मृत्यु हुई । मृत्युसे पहले आपने केवल यही अभिलाषा प्रकट की, कि आपका भी प्रतिवर्ष पीरे-खानकाहके साथ उर्स^३ किया जाय । आप अरसेसे प्रतिवर्ष हज-यात्राको भी जाया करते थे । किसी भी क्रिस्मका नशा नहीं करते थे, यहाँतक कि तम्बाकूसे भी परहेज़ था ।

मुसलमानोंके हितके लिए जीना और मरना जीवनका मुख्य ध्येय समझते थे । इस्लामके लिए आपके हृदयमें दहकती हुई ज्वाला थी,

^१पहुँचे हुए फ़कीरोंके; ^२ईमान ला चुके थे, उनके भक्त हो गये थे ।
^३समाधि पर धार्मिक गायन आदि ।

जिसे आप तमाम उम्र सुलगाये रहे, बड़ी-से-बड़ी मुसीबतोंके छींटे उसे कभी बुझा नहीं सके।

भारतकी बागडोर अंग्रेजोंने मुस्लिम शासकोंसे छीनी थी। अतः आप अंग्रेजी-राज्यके कट्टर विरोधी थे। यह वह युग था जब कि भारतके मुसलमान नवाब और रईस अंग्रेजोंकी चाटुकारितामें ही बड़प्पन समझते थे, और सर सैयदके आन्दोलनके फलस्वरूप जी हुजूरी मुसलमानोंमें व्याप गई थी। अंग्रेजोंके विरुद्ध बोलने और लिखनेकी स्वप्नमें भी कल्पना मुसलमानोंसे नहीं की जा सकती थी। 'हसरत' उस समय भी अंग्रेजोंके पाँव भारतसे उखाड़नेके स्वप्न देखने लगे थे।

उन दिनों लोकमान्य तिलक स्वराज्य-आन्दोलन बहुत सरगर्मीसे चला रहे थे। शत्रुका शत्रु अपना मित्र होता है, इसी नीतिके अनुसार 'हसरत' लोकमान्य तिलककी नीतिके समर्थक हो गये। शिक्षा समाप्त करते ही नौकरी आदिके चक्करमें न पड़कर आपने साहित्य और राज-नैतिक विचारोंसे ओत-प्रोत 'उर्दू-ए-मोअल्ला' मासिक पत्र १९०४ ई०में अलीगढ़से निकालना प्रारम्भ कर दिया।

'हसरत' जैसे निर्धन युवकके लिए पत्र-प्रकाशन करना कण्टकाकीर्ण मार्गपर चलना था, परन्तु इरादेके मजबूत और धुनके पक्के 'हसरत'को विचलित करनेका साहस किसमें था? उर्दू-ए-मुअल्ला बड़े आबोताबसे प्रकाशित हुआ और बड़े धड़ल्लेसे चलता रहा। साहित्यिक और राज-नैतिक गंगा-जमुनी दोनों विचार धारायें निर्बाध गतिसे बहती रहीं। १९०४ ई०में आप पहलीबार प्रतिनिधिकी हैसियतसे कांग्रेस-अधिवेशनमें भी सम्मिलित हुए।

१९०८ ई०में एक सज्जनका टर्कीके सम्बन्धमें एक ऐसा लेख 'उर्दू-ए-मोअल्ला'में प्रकाशित हो गया, जो अंग्रेज सरकारकी दृष्टिमें गैर कानूनी था। ऐसे विद्रोहको अलीगढ़ यूनिवर्सिटीके कर्त्ता-धर्त्ता कैसे बर्दाश्त कर सकते थे? उन्होंने जी खोलकर 'हसरत'के विरुद्ध गवाहियाँ दीं।

फलस्वरूप आप दो वर्षको जेल भेज दिये गये। मगर चरित्रकी दृढ़ता देखिये कि मजबूर किये जानेपर भी आपने वास्तविक लेखकका नाम नहीं बताया और सारी जिम्मेवारी अपने ऊपर ओढ़ ली।

जेल जानेका तो आपको मलाल नहीं हुआ, क्योंकि जिस मार्गपर आप चल निकले थे, उसमें ऐसा पड़ाव आना लाजिमी था। मगर बेहद कलक पुलिसकी इस हरकतसे हुआ कि उसने आपके सामने ही पुस्तकोंका बहुत बड़ा संग्रह फूँक दिया। जिसमें बहुत-से हस्तलिखित दीवान भी थे। जेलमें आपको बीस सेर गेहूँ रोजाना पीसने पड़ते थे। उसी जमानेमें आपने यह शेर कहा था—

है मशके-मुखन जारो, चक्कीकी मशक्कत भी।

इक तुरफ़ा तमाशा है, 'हसरत'की तबीयत भी ॥

रमजानका महीना आया तो रोज़े तो रखे, मगर जेलमें न रोज़े अस्तियार करनेके, न खोलनेके खाद्य पदार्थ थे।

कट गया क़ैदमें माहे-रमज़ाँ भी 'हसरत' !

गरचे सामान सहरका^१ था न इफ़्तारीका^२ ॥

स्वदेशी आन्दोलनके आप प्रबल समर्थक थे। भूलकर भी विदेशी वस्त्रका उपयोग नहीं करते थे। एक बार किसीके यहाँ आप मेहमान हुए तो मेज़बानने आपके पलंगपर ओढ़नेके लिए विदेशी कम्बल रख दिया। अतः आप उस जाड़ेकी रातमें बग़ैर ओढ़े ही पड़े रहे।

प्रथम महायुद्धमें टर्की, जर्मनीके साथ था। अतः भारतके मुसलमानोंकी सहानुभूति जर्मनके साथ थी। विद्रोहकी आशंकाके कारण अंग्रेज़ोंने कुछ भारतीय मुसलमानोंको नज़रबन्द कर दिया था। 'हसरत' भी उनमें-से

^१वे खानेकी चीज़ें, जिन्हें खानेके बाद सुबह रोज़ा अस्तियार किया जाता है; ^२वे खानेकी चीज़ें, जिनसे रोज़ा शामको खोला जाता है।

एक थे। आप लड़ाई समाप्त होनेके बाद छोड़े गये। फिर कांग्रेस और खिलाफतका गठ-बन्धन हो जानेपर असहयोग आन्दोलनमें आप जेल गये और कुछ दिनों बड़े सरगर्म कार्य-कर्त्ता रहे, किन्तु साम्प्रदायिक मनोवृत्ति होनेके कारण आप १९२४के हिन्दू-मुस्लिम-संघर्षके बाद सदैव-को देशोपयोगी कार्योसे पृथक् हो गये और मुस्लिमलीग-जैसी साम्प्रदायिक संस्थासे रिश्ता जोड़ लिया। आप मुस्लिमलीगके टिकटपर संसदके सदस्य निर्वाचित हुए। पाकिस्तानी आन्दोलनके पक्के हिमायती थे। लेकिन भारत-विभाजन होनेके बाद आप पाकिस्तान न जाकर भारतमें ही रहे, और निर्भीक होकर मुसलमानोंके हितोंमें विचार व्यक्त करते रहे।

आप स्वभावतः उग्रविचारक और विद्रोही स्वभावके थे। पढ़ते समय यूनिवर्सिटीमें, कांग्रेसमें, मुस्लिमलीगमें, संसदमें, हर जगह विद्रोहका झण्डा बुलन्द रखते थे। यहाँतक कि पाकिस्तानके प्रबल अंग होते हुए भी आपकी मि० जिन्नासे पटरी नहीं बैठती थी। यही कारण है कि आप राजनैतिक क्षेत्रमें केवल योद्धा बने रहे, मंचालन-सूत्र आप कभी हस्तगत नहीं कर सके।

‘हसरत’के राजनैतिक विचारोंसे लोगोंको मतभेद हो सकता है, लेकिन उनकी शायराना अज़मत और मानवताको सभी आदर और सराहनाकी दृष्टिसे देखते हैं। शायरीमें जो उनका स्थान है, उसका परिचय तो आगे मिलेगा ही, परन्तु उन्होंने प्राचीन शायरोंका चुना हुआ कलाम पचामों भागोंमें प्रकाशित किया। जिससे उन शायरोंका कलाम नष्ट होनेसे बच गया। यदि ‘हसरत’ शायर न भी होते तो भी यही एक कार्य उनकी ख्यातिके लिए बहुत बड़ा कार्य था।

साहित्यिक होनेके अतिरिक्त हसरत बहुत अच्छे इन्सान थे। जिससे जो सम्बन्ध एक बार हो गया, उसे जीवनभर निभाया। बहुत खुश-मिज़ाज, मुल्ह-कुल् और सादा वज़्र-क़तअके बुज़ुर्ग थे। शेरवानी, तुर्की टोपी,

शरई पायजामा उनका मखसूस लिबास था। दूरका चश्मा लगाते थे। पढ़ते वक़्त चश्मा उतार लेते थे। क़द छोटा, रंग साफ़, आँखें बड़ी, चेहरे-पर चेचकके दाग, आवाज़ बारीक। भारत-विभाजनके बाद कुछ उर्दू पुस्तकोंकी तलाशमें मैं दिल्ली गया था कि वहीं आपके दर्शन हो गये। बहुत अख़लाक़ और मुहब्बतसे पेश आये। मेरे यह निवेदन करनेपर कि मैं आपका कलाम चयन कर रहा हूँ, मगर चाहता हूँ कि एक अपना शेर अपने दस्तेमुबारकसे डायरीमें लिख दें, आपने सहर्ष यह शेर लिख दिया—

पढ़िये इसके सिवा न कोई सबक़।

“ख़िदमते-ख़ल्क़^१-ओ-इश्क़े-हज़रते-हक़^२॥”

डायरीको पढ़ता हूँ और सोचता हूँ कि ‘हसरत’ तो चले गये, मगर कितनी बड़ी नसीहत अता फ़र्मा गये—

ख़िदमते-ख़ल्क़-ओ-इश्क़े-हज़रते-हक़

१३ मई १९५१को ७५ वर्षकी आयुमें आपका निधन हो गया, और अनवरबाग़में अपने पीरेमुश्दिदके पास आपको समाधि मिली।

हसरतकी शायरी—

‘हसरत’ सिर्फ़ ग़ज़लगो शायर थे, और यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। न तो वे कभी आध्यात्मिक रूपी तत्त्व-चर्चाओंमें उलभे, न कभी दार्शनिक गुत्थियोंको सुलभानेका प्रयत्न किया। उन्होंने केवल वही बोल बोले जो उनके जीवनसे सम्बन्धित थे।

हसरतको जो ख्याति और सर्वप्रियता मिली, वह बहुत कम लोगोंको

^१संसार-सेवा;

^२सत्यसे प्रेम।

नसीब होती है। जिन शायरोंने मृत्युशैयापर छटपटाती ग़ज़लमें जीवन संचार करके उसे दर्शनीय और गौरवपूर्ण बनाया, उनमें-से एक आप भी हैं।

‘हसरत’का शायरीमें न तो कोई प्रतिद्वन्द्वी था, न उन्हें कभी अपने समकालीन शायरोंसे तू-तू, मैं-मैंसे वास्ता पड़ा। वे छोटोंसे आदर और बड़ोंसे सदैव स्नेह पाते रहे। उनका शायराना रंग और व्यवितत्व दोनों ही उच्च थे।

‘हसरत’की शायरीमें कृत्रिमता नहीं, स्वयं उनके जीवनके अनुभव हैं। उर्दूशायरीमें यह एक बहुत बड़ा दोष पाया जाता है कि वह वास्तविकतासे कोसों दूर है। जिन शायरोंने कूचये-इश्कमें कभी कदम नहीं रखा, जो नहीं जानते कि आँख लगनेसे कैसी पीड़ा होती है, वे भी अपनी शायरीमें मजनूँ और फ़रहादके उस्ताद नज़र आते हैं। जो ज़िन्दगीभर जाहिदे-खुशक रहे, कभी एक बूँद सुरा हलक़के नीचे उतारनेका अवसर नहीं मिला, वे भी अपनेको मयखानेका इमाम घोषित करते हैं। जो सारी ज़िन्दगी नमाज़-रोज़ेमें गँवाते रहे, हज-यात्राको सरके बल जाते रहे, वे शायर भी कावा-ओ-हृथकी खिल्लियाँ उड़ाते रहे हैं।

इसका कारण यही है कि उर्दू-शायरीके महलका निर्माण इश्क़ और शराबके गारेसे हुआ है। ग़ज़लमें शराबो-इश्क़के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं। अतः हर व्यक्ति जो शायर बनना चाहता है, उसे शराबो-इश्क़के गीत गाने ही पड़ते हैं। चाहे उसके जीवनमें इनसे दूरका भी लगाव न हो।

उर्दू-शायरोंके जीवन-परिचयमें अक्सर यह पढ़नेमें आता है कि वे ६-१० वर्षकी आयुमें ही शेर कहने लगे थे। भला यह भी कोई उम्रमें उम्र है, जिसमें इश्क़ सम्बन्धी किसी भी बातका अनुभव हो सके। फिर भी शायरीकी परम्पराके अनुसार इन बाल-कवियोंके कलाममें हुस्न, माशूक, रक़ीब, दरबान, हरजाई आदि सभी देखनेको मिलते हैं। माँ-

बापके अत्यन्त प्रयत्न करनेपर भी दूध पीनेके लिए भी जिनकी नींद उचाट नहीं हो पाती, वे भी अपने आईनए-कलाममें गमे-हिजराँमें रात-रातभर रोते-बिसूरते नज़र आते हैं।

तात्पर्य यह है कि वे अबोध किशोर जो प्रेम सम्बन्धी अनुभवोंसे शून्य हैं, वे भी उर्दू-परम्पराका सहारा लेकर कल्पना क्षेत्रमें आशिक बने मजनुँ की तरह घूमते हैं। जो नहीं जानते कि माशूक है किस मर्जकी दवा, वे भी माशूकोंके हाव-भाव, नखरे-गमजे आदिको इस ढंगसे नज़्म करते हैं कि मालूम होता है इश्ककी सभी मंजिलें तै कर ली हैं।

उर्दूमें ऐसे ही अनुभवहीन, शायरोंका इश्किया कलाम पाया जाता है। 'हाली' जैसा शायर इसी दूषित प्रथाके कारण अपने आपको वर्षों धोखा देता रहा। इस धोखे-धड़ीके सम्बन्धमें हाली लिखते हैं--

“शायरीकी बदौलत चन्द रोज़ भूठा आशिक बनना पड़ा। एक खयाली माशूककी चाहमें दस्तेजुनूँ (उन्माद-मार्ग)की वह खाक उड़ाई कि क़ैस-ओ-फ़रहादको गर्द कर दिया। कभी नालये-नीमशबी (रात्रिमें बिलखते हुए)से रब्बेमसकन (ईश्वरासन)को हिला डाला, कभी चश्मेदरियावार (आँसुओं)से तमाम आलमको डुबो दिया। आहो-फ़ुगाँके ज़ोरसे कर्णेबयाँके कान बहरे हो गये। शिकायतोंकी बौछारसे ज़माना चीख उठा। तानोंकी भरमारसे आसमान चलनी हो गया। जब रश्कका तलातुम (ईर्ष्याका वेग) हुआ तो सारी खुदाईको रक्तीब (प्रतिद्वन्दी) समझा। यहाँतक कि आप अपनेसे बदगुमान हो गये। बार-हा तेगेअब्रू (भर्वे-रूपी तलवार)से शहीद हुए और बार-हा एक ठोकरसे जी उठे। गोया ज़िन्दगी एक पैरहन (वस्त्र) था कि जब चाहा उतार दिया और जब चाहा पहन लिया। मैदानेक़यामतमें अक्सर गुज़र हुआ। बहिश्त-ओ-दोज़खकी अक्सर सैर की। बादानोशी (शराब पीने) पर तो खुम-के-खुम लुढ़ा दिये और फिर भी सैर (सन्तुष्ट) न हुए। कुफ़से मानूस और ईमानसे बेज़ार रहे। खुदासे शोखियाँ कीं।

.... २० वर्षकी उम्रसे ४० वर्षतक तेलीके बैलकी तरह इसी एक चक्करमें फिरते रहे और अपने नजदीक सारा जहान तय कर चुके। जब आँख खुली तो मालूम हुआ कि जहाँसे चले थे, अवतक वहीं हैं।”

‘हसरत’की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उन्होंने अपनेको इस धोखे-जालमें नहीं फँसाया। स्वयं भी सच बोले और दूसरोंको भी सच बोलनेके लिए प्रोत्साहित किया। ‘हसरत’का प्रेम मानवी-प्रेम है। उन्होंने ईश्वरकी आड़में प्रेमका बखान करके न तो भक्त बननेकी कभी चेष्टा की और न कभी दार्शनिक और आध्यात्मिक बननेकी भूल की। उन्होंने केवल इसी दुनियाके प्रेमका बखान किया है।

हसरत एक सफल प्रेमी थे। अतः उनके कलाममें हिज्र, नाले, नाकामी, बेऐतनाई आदिकी कैफियतोंका बयान बहुत कम मिलता है, और यत्र-तत्र जो थोड़ा-बहुत मिलता है, वह उर्दू-परम्पराके हीजमें जी बहलानेके लिए कूद पड़नेके कारण मिलता है।

हसरतका जीवन इश्क़, तसव्वुफ़ और राजनीतिका संगम रहा है। इश्क़की धारा उनके यहाँ अबाध गतिसे प्रवाहित रही है, और एकाकार हो गई है।

तसव्वुफ़की झलक यत्र-तत्र इसलिए मिलती है कि ‘हसरत’ धार्मिक व्यक्ति थे। नमाज़-रोज़ेके सख्त पाबन्द, असें दराज़से हजके यात्री और सूफ़ियोंके श्रद्धालु ऐसे भक्त कि फ़िरंगी महलके एक सूफ़ी बुजुर्गके हाथपर जैत कर चुके थे। प्रतिवर्ष अजमेर, प्रानकिलयर, वहराइच आदि सूफ़ियाए-करामके उर्सोंमें शरीक होते थे। यही नहीं, उन्होंने अपनी जीवन-लीला भी फ़िरंगी महलकी दरगाहमें समाप्त की। वहीं उनको समाधि मिली और प्रतिवर्ष उनकी समाधिपर भी उनकी अन्तिम अभिलाषाके अनुसार उर्स होते रहनेकी व्यवस्था हुई। इसी श्रद्धा-भक्तिके कारण उनके कलाममें

यत्र-तत्र सूफियाना शेर नज़र आते हैं। लेकिन उनका यह रंग फीका है। और फीका होना लाज़िमी भी था। गुहजनोंकी श्रद्धा-भक्तिमें आनन्द तो मिलता है, पर प्रेयसी-मिलनकी प्रतीक्षामें जो उत्कंठा, तड़प, बेचैनी, और गर्मि-ए-मुहब्बत होती है, वह श्रद्धा-भक्तिमें नहीं। कर्तव्य पूर्ण करने और हृदयकी उमंगमें जो अन्तर है, या भाई और पतिके साथ नारीके स्नेह और चाहतमें जो अन्तर है, वही अन्तर 'हसरत'की आशिकाना और सूफियाना शायरीमें है।

'हसरत'की राजनैतिक शायरी तो और भी फीकी और बेजान है। जनाब खलीलुर्रहमान आजमी लिखते हैं—

'हसरतने बार-हा जेलमें चक्की पीसी और पुलिसके कोड़े खाये। लेकिन उनकी सियासी (राजनैतिक) शायरी रस्मी और फुसफुसी है। . . . क्या वजह है कि उनकी शायरीमें उनकी जिन्दगीका यह पहलू पूरे तौरपर अपना अक्स न दिखा सका ? यह सवाल दरअसल बड़ा अहम (आवश्यक) है और वाकई हैरत होती है कि वही 'हसरत' जिनकी जिन्दगीमें हिन्दोस्तानने कितनी करवटें लीं, कांग्रेसकी इब्तदाई तहरीके (प्रारम्भिक आन्दोलन) आज्ञादीसे लेकर जंगेअज़ीम, कहते-बंगाल, तक्लीमेहिन्द, फ़िसादात और न जाने कितने वाक़यात जिन्हें हिन्दोस्तानके बिगाड़ने और बनानेमें बड़ा दख़ल है, 'हसरत' ही के ज़मानेमें पेश आये और खुद 'हसरत' उसमें जाती तौरपर शरीक रहे, लेकिन 'हसरत'की शायरीमें इन वाक़यातकी गरमी, खून और धमक कहीं महसूस नहीं होती। उन्होंने तिलक, डा० अन्सारी या बाज़ सियासी रहनुमाओं (राजनैतिक नेताओं)के बारेमें जो नज़में लिखी हैं, वोह बहुत रस्मी अन्दाज़में लिखी गई हैं, जैसे किसीका सेहरा लिख दिया जाये। वोह नक्काद (आलोचक) जो किसी शायरपर लिखते वक़्त महज़ उसके ज़मानेके हालात और समाजी पसेमंज़र (सामाजिक स्थिति)पर ही निगाह रखते हैं, यहाँ बड़ी दुश्गारीमें मुब्तिला हो जायेंगे। आख़िर 'हसरत'के बारेमें

क्या फ़तवा सादिर किया जाये ? क्या वे रजअत पसन्द (दक्कियानूसी, पुराने खयालके) शाइर थे, कि ज़मानेकी तरफ़से आँख बन्द करके अपनी महबूबा (प्रेयसी)की यादमें मुब्तिला रहे ? क्या वे क़ौमी तरक्की और आज़ादीकी तहरीकमें दिलसे हिस्सा नहीं ले रहे थे ? मेरा खयाल है 'हसरत'का बड़े-से-बड़ा मुख़ालिफ़ भी इस बातकी ज़ुरअत नहीं कर सकता कि उनके खुलूस (नीयत)पर शुबहा करे। उन्होंने हिन्दुस्तानकी जंगे-आज़ादीमें जो क़ुर्बानियाँ दी हैं, उनका ऐतराफ़ न करना बड़ी बेईमानी होगी। लेकिन उनकी शायरीको पढ़ते और उसपर राय देते वक़्त ज़रा सज़से काम लेना पड़ेगा। 'हसरत' मुख़लिस (साफ़, निर्मल) थे, सच्चे थे। रजअत पसन्द नहीं, बल्कि बड़े तरक्की पसन्द और इन्सानियतके लिए बड़े मुफ़ीद थे। लेकिन शायरीपर इन्सानके उस शऊरका असर पड़ता है, जो उसके मिज़ाज और उसकी शख्सियत (व्यक्तित्व)का परवरदा (पाला हुआ, पोसा हुआ) होता है। अगर कोई नक़््काद (आलोचक) शायरके मिज़ाजको समझ ले और उसके शऊरका तजज़या (परख) कर ले तो उसकी शायरीके महरकात (उभारों) और उसके मौजूआत (कविता-विषय)की नौइयतको बहुत आसानीसे समझ सकता है। दर-अस्ल ख़ारजी दुनियामें जो कुछ हो रहा है, उससे तो इन्कार मुमकिन ही नहीं, लेकिन ख़ारजी दुनियाका अक्स हर शायरपर उसके शऊरके ऐतबार ही से पड़ता है। एक आदमी इनक़लावकी जंगमें एक मुख़लिस (सच्चे) सिपाहीकी हैसियतसे काम करनेके बावजूद आज़ादी और इनक़लाबके इदराक (सूझ-बूझ)से महरूम होता है, और उसके शऊरमें उसे ज़ब्र करने और उसकी तहोंतक पहुँचनेकी सलाहियत (क्षमता) नहीं होती। वह अपने जिस्मो-जानको उस राहमें क़ुर्बान करना तो ज़रूरी समझता है, लेकिन उसे यह पता नहीं होता कि यह राह किस तरह मुतय्यन (निश्चित) की जाये। इसमें कौन-कौनसे मोहरे और चालें हैं। किन हथियारोंसे काम लिया जाये कि दुश्मनपर फ़तह हासिल हो। कब क़दम फूँककर

रखना है और कब तेज़गामीकी ज़रूरत है। उसे तो सिर्फ़ आज़ादीसे मुहब्बत है, और उसका वोह एक जाँनिसार सिपाही है। इस सिपाहीके खलूसकी भी तारीफ़ की जायेगी, लेकिन उसके शऊर और इदराक (बुद्धि और समझ)पर भरोसा नहीं किया जा सकता। एक आदमी जो आज़ादी और इन्क़लाबके लिए इतनी कुर्बानियाँ नहीं दे सकता, लेकिन वह उससे अलग रहते हुए भी उसे अपने शऊरमें जज़ब करनेकी सलाहियत (क्षमता) रखता है और साथ ही साथ उसके अन्दर खलूस है तो वह इस जज़बे (भाव)को शिद्दतसे महसूस कर सकता है; और उसके इदराक (सूझ-बूझ)पर हम ज्यादा भरोसा कर सकते हैं। 'हसरत' और 'इक़बाल' दोनोंकी शायरीको पढ़िये तो पता चलेगा कि सिर्फ़ शस्त्रियतोंके फ़र्क़ने एक सियासी (राजनैतिक) आदमीको मुहब्बतका शाइर और ग़ौर सियासी तथा गोशानशीन शरूसको क़ौमोमुल्क आज़ादी-ओ-सियासत और इन्सा-नियतका शायर बनाया। 'हसरत'की सच्चाईमें कोई शुबहा नहीं, लेकिन उनकी शस्त्रियतमें वोह अन्सर (तत्त्व) नहीं थे, जो एक शरूसको मदीए, सियासतदाँ, मुफ़क्कर, फ़लसफ़ी और मसायलेहयात (जीवन-गुत्थियों)का इदराक रखनेवाला बना देते हैं। उनकी सियासी जिन्दगीसे जो लोग वाकिफ़ हैं, वे अच्छी तरह जानते हैं कि 'हसरत' एक सियासी कारकुन (कार्य-कर्त्ता) होनेके बावजूद सियासी सूझ-बूझ नहीं रखते थे। वोह पुरखुलूस (सच्चे) मगर जज़्वाती (भावुक) आदमी थे। बहुत जल्द किसीके बारेमें कोई राय क़ायम कर लेते थे। यही वजह है कि सियासतमें वोह हमेशा नाकाम रहे। हरजमायतमें हिज़बे मुखालफ़त (विद्रोहीवर्ग)की सरदारी उन्होंने की और हर तजवीज़पर मुखालफ़तमें धुआँधार तक़रीरें करनेके लिए वे मशहूर थे। किसी बातको ठण्डे दिलसे ग़ौर करना, मसालह (अच्छे-बुरे पहलुओं) पर नज़र रखना, ज़ब्तो-इस्तक़लाल (धैर्य और संजीदगी), हालात और वक़्तकी रफ़्तारको पहचानना और उसके तक्राज़ोंको समझना, मुनासिब मौक़ेपर क़दम उठाना, यह

‘हसरत’की सियासतमें शामिल न था। यही वजह है कि हम उन्हें एक सच्चा और वफ़ादार सिपाही कह सकते हैं। लेकिन बा-शऊर सियासतदाँ नहीं। जाहिर है कि सिपाही लड़ तो सकता है, लेकिन जंगपर बा-शऊर तरीक़ेसे नज़र नहीं डाल सकता। बल्कि उसको तो अपनी कठिन मंज़िलोंमें अपने माज़ी (भूतकाल) की सुनहरी यादके सहारे ही दिल बहलाना होगा और मेरा ख़्याल है कि हसरत जो बुढ़ापेतक इश्क़िया शायरी करते रहे, उसकी सबसे बड़ी वजह यही है।”^१

‘हसरत’की शायरी उनकी आप बीती जीवनी है। यही उनकी शायरीकी सबसे बड़ी विशेषता है और यही उनकी शायरीका दोष भी। ‘हसरत’ एक अपने ही समाज और ख़ान्दानकी युवतीसे प्रेम करते हैं। उसके लिए सामाजिक और ख़ान्दानी रीतिरिवाज़ोंसे संघर्ष करते हैं। इसी अवधिमें प्रेयसीसे छेड़-छाड़ और आँख-मिचौनी चलती रहती है, और अन्तमें ‘हसरत’ उसे अपनी जीवन संगिनी बना लेनेमें कामयाब हो जाते हैं।

प्रेयसीको पत्नी बना लेनेपर इश्क़ मर जाता है। जो प्रेयसी कभी ईश्वर समझी जाती थी, वह शादी हो जानेपर दासी हो जाती है। शादी होनेपर प्रेयसीका वह बुलन्द मर्तबा कायम नहीं रह सकता, जो पहले होता है। फूँड केवल दूरसे निहारनेके लिए है, सूँघनेपर उसका गौरव नष्ट हो जाता है।

हसरतका इश्क़ शादी होनेके बाद कबतक स्थिर रहता ? अधिक-से-अधिक ८-१० वर्ष। यानी हसरतकी २५-३० वर्षकी उम्रतक। हसरतकी प्रेयसी जो शादीके बाद ‘बेगम हसरत’ कहलाने लगी, उसे ‘हसरत’के इश्क़िया अशआर सुननेके बजाय चूल्हे-चक्कीसे अधिक सरोकार हो गया।

‘हसरत’से ज्यादा अब वह बाल-बच्चोंको चाहने लगी। उनके भरण-पोषण, शिक्षा-दीक्षाकी चिन्तामें दिन-रात घुलने लगी।

यही कारण है कि ‘हसरत’की इश्किया शायरीमें एकरूपता नज़र आती है। यानी उन्हे जो अनुभव जवानीमें हुए, उन्हींको बुढ़ापेतक नज़म करते रहे। हसरतकी शायरी जवानीकी शायरी है। उनकी शायरीमें जवानीके उतारके साथ उतार आता गया है। होना तो यह चाहिए था कि उम्रके साथ-साथ नये-नये अनुभवोंको अपनी शायरीके बढ़ते हुए अभ्यासके साथ नित नये ढंगसे सँजोते और तराशते जाते। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, ओर इसका कारण केवल यही हो सकता है कि जवानीके बाद उनका इश्क भी बूढ़ा हो गया। और उनका राजनैतिक जीवन इतना संघर्षमय हो गया कि फिर वे दिलकी शायरी न करके रस्मी तौरपर शायरी करते रहे। यही वजह है कि उनकी शायरी भी उम्रके साथ बूढ़ी होती चली गई, और उनकी शायरीमें उत्तरोत्तर फीकापन आता चला गया।

वे ज़िन्दगीभर एक ही मौजूसे लिपटे रहे। जवानीके उफानमें जो बोल, बोळ गये—

याद कर वह दिन कि तेरा कोई सौदाई न था ।

बा-बजूदे-हुस्न तू आगाहे-रअनाई न था ॥

वही बुढ़ापे (१९४१ ई०)में भी बोलते रहे—

जब सिवा मेरे न था कोई निशाना तेरा ।

याद है मुझको अभीतक वोह जमाना तेरा ॥

आजमी साहब फ़रमति हैं—

“हसरतके पहले दीवानमे उनके कलामका मुतालआ शुरू कीजिये तो तीसरे-चौथे दीवानतक पहुँचते-पहुँचते हसरत कुछ मद्धम होना शुरू होते हैं, ओर ग्यारहवें-बारहवें तक पहुँचते-पहुँचते तो वे बिल्कुल बुझ जाते हैं। इधर दस-बारह सालसे अपनी ज़िन्दगी ही में ब-हैसियत शायरके

उनका रोल तकरीबन खत्म हो गया था। कभी-कभार जो गज्रलें कहते थे, वह रस्मी और बेजान होती थीं। जिन्हें लोग तबख्बकन पढ़ते थे।”

हसरतका शायरीमें मर्तबा—

‘हसरत’ मौजूदा गज्रलगोईके बानी-मुबानी समझे जाते हैं। आपने उर्दू-गज्रलमें उस समय जीवन-संचार किया, जब कि वह मृत्युशैयापर पड़ी छटपटा रही थी। न उसमें युगके साथ चलनेकी शक्ति रही थी, न अपनी ओर आकर्षित करनेकी क्षमता। वह बिस्तरे-मर्गपर पड़ी हुई कराह रही थी, और सन्निपात ज्वरमें इस तरह बड़-बड़ा रही थी—

गिरे होते उलझकर आस्तांसे ।

चले आते हो घबराये कहाँसे ?

हमीं भूठे हैं, बग़ाबाज़ हमीं हैं, साहब ।

हम सितम करते हैं और आप करम करते हैं ॥

बाग़बाँ कलियाँ हों, हलके रंगकी ।

भेजना है एक कमसिनके लिए ॥

छुपा-छुपाके नज़र-बाज़ियाँ हों ग़ैरोंसे ।

हमींसे आँख चुराना ! ज़रा इधर देखो !!

‘अमीर’ इतना न छोड़ो उसको सरेशाम ।

कि शब भर प्यार करनेको पड़ी है ॥

बोह फूलवालोंका मेला बोह सैर याद है ‘बाग़’ ।

बोह रोज़ भरनेपे जमघट, परी जमालोंका ॥

गुद-गुदाया जो उन्हें नाम किसीका लेकर ।
मुसकराने लगे वोह मुंहपं दुपट्टा लेकर ॥

ईदका दिन है परीजाद हैं सारे घरमें ।
राजा इन्दरका अखाड़ा है हमारे घरमें ॥

परदा उठाके मुझसे मुलाक़ात भी न की ।
रुखसतके पान भेज दिये बात भी न की ॥

सुबहको आये हो भूले शामके ।
जाओ भी अब तुम रहे किस कामके ॥
हाथापाईसे यही मतलब भी था ।
कोई मुंह चूमे कलाई थामके ॥

वस्लकी रात चली एक न शोखी उनकी ।
कुछ न बन आई तो चुपकेसे कहा मान गये ॥

पान बन-बनके मेरी जान कहाँ जाते हैं ?
यह मेरे क़त्लके सामान कहाँ जाते हैं ॥

क्यों मुझसे है यह मुफ़्तकी तक़रार, क्या हुआ ?
अच्छा जो मैंने कर ही लिया प्यार, क्या हुआ ?

जब वोह बाहें गलेका हार नहीं ।
दूरका प्यार कोई प्यार नहीं ॥

वोह एक हम कि जो चाहा किया विसालकी रात ।
वोह एक तुम कि तुम्हारी हयासे कुछ न हुआ ॥

तुमने एक बोसेपं 'मुजतर' दिले-मुजतर बेचा ।
यार ईमानकी ये है कि बड़े बाम लिये ॥

कहते हैं “वस्लमें तुम छेड़े ही जाते हो मुझे ।
गालियाँ कुछ अभी पड़ जायें तो क्या बात रहे” ॥

किसीसे वस्लमें सुनते ही जबान सूख गई ।
“चलो हटो भी, हमारी जबान सूख गई ॥”

आँखें दिखलाते हो जोबन तो दिखाओ साहब ।
वोह अलग बाँधके रक्खा है जो माल अच्छा है ॥

जले हैं गैर क्या-क्या, वोह जो खिलवतसे मेरे निकले ।
परेशाँ, बाँधकर जूड़ा, दुपट्टा ओढ़कर उलटा ॥

छेड़ देना था कि भरमार थी दुश्नामोंकी ।
एक सीगा था कि फ़र-फ़र उसे गरदान गये ॥

इस तरहकी अश्लील वकवास जब कोई रोगी प्रारम्भ कर दे, तो घरवालोंके अतिरिक्त भला किसमें साहस है, जो उसकी परिचर्या या मित्राजपुरसीके लिए नज़दीक आ सके । मृत्युके समीप जाती हुई ग़ज़लको सबसे घातक चरका ‘हाली’के नज़्म आन्दोलनसे लगा । जब घरका भेदी प्राण लेनेपर उतारू हो जाय, तब उसके वचनेकी आशा भी क्या की जा सकती है ?

‘हसरत’ने ठीक ऐसे संकटकालमें ग़ज़लको सहारा दिया । ‘दाग’ और ‘अमीर’ मोनाईकी चिकित्सासे जो बड़-बड़ाहट प्रारम्भ हो गई थी, उमे ‘हसरत’ने प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा समाप्त ही नहीं किया, अपितु ऐसा कायाकल्प किया कि उसे अमरत्व प्राप्त हो गया । इस कायाकल्प-का श्रेय केवल ‘हसरत’को है, यह कहना न्यायसंगत नहीं होगा । ‘हसरत’की गायरीका जब युग प्रारम्भ हुआ, तब ‘शाद’ अज़ीमावादी, ‘यास’ अज़ीमावादी (अब नाम यगाना चंगेज़ी) और लखनवी शायर सफ़ी, अज़ीज़, आरज़ू, जलील, असर, साक्रिब, महशर, तथा असगर गोण्डवी, फ़ानी

बदायूनी आदि बड़ी तनदिहीसे गज़लकी सार-सँभाल कर रहे थे; और उस पतनोन्मुखी वातावरणमें भी उनके मुँहसे सुसुचिपूर्ण शेर निकल रहे थे ।

‘हसरत’ और उनके समकालीन उक्त गायरोंने सचमुच गज़लको जीवनदान दिया । उसे भद्रसमाजके उपयुक्त बनाया और युगके साथ चलते रहनेकी शक्ति प्रदान की ।

‘हसरत’ने उर्दू गज़लकी पुरानी रवायतोंको नये सँचिमें ढाला । नई तराश-खराश की । उसे आकर्षक रूप-रंग दिया । उनके कलाममें ‘मुसहफ़ी’ जैसे कोमल और मधुर भाव और ‘मोमिन’ जैसी फ़ारसी तर-कीबोंका समिश्रण एक अजीब लुत्फ़ पैदा कर देता है । लेकिन उनके यहाँ ‘मीर’ जैसा सोजो गुदाज नहीं है । स्वयं भी फ़र्माया है—

‘मीर’का शेवये-गुफ़्तार कहाँसे लाऊँ ?

और ‘मीर’का शेवये-गुफ़्तार बाज़ारमें विकनेवाली चीज़ होता तो ‘हसरत’ भी ख़रीद लाते । मगर जो शेवये-गुफ़्तार दिलमें चरका लगने-पर और जीवनभर खून रोनेसे आता है, उसे ‘हसरत’ क्योंकर प्राप्त कर सकते थे ? वे कामयाब आशिक़ थे । वे क्या जानें असफलता और निराशाके आनन्दको । उन्हें प्रेयसीकी यादमें सर फोड़ने और बिलख-बिलखकर रोनेकी लज़ज़त कभी नसीब नहीं हुई ।

‘हसरत’ ‘तसलीम’^१ लखनवीके शिष्य थे । और ‘मोमिन’ स्कूलके तनहा यादगार । सो वह भी चल बसे । बक़ौल ‘आसी’ गाज़ीपुरी—

सुबह तक बोह भी न छोड़ी तूने ऐ वादेसबा !

यादगारे-रौनक़े-महफ़िल थी परवानेकी खाक ॥

^१‘तसलीम’ ‘तसनीम’के शागिर्द थे और ‘तसनीम’ ‘मोमिन’के शिष्य थे । ‘मोमिन’ ‘तसनीम’ और ‘तसलीम’का परिचय-कलाम ‘शेरोसुखन’ प्रथम भागमें दिया जा चुका है ।

‘हसरत’ अवध प्रान्तीय और ‘तसलीम’ लखनवीके शिष्य होते हुए भी देहलवी रंगके शायर थे। खुद भी फ़र्माया है—

‘हसरत’ मुझे पसन्द नहीं तर्जे-लखनऊ ।
पैरो हूँ शायरीमें जनाबे ‘नसीम’का ॥

‘हसरत’ने जिन ‘नसीम’ साहबका पैरो (अनुयायी) होनेका उल्लेख किया है, वह ‘नसीम’ देहलवीसे मुराद है। जो ‘मोमिन’के शिष्य और ‘हसरत’के उस्तादके उस्ताद थे। हसरतके उस्ताद ‘तसलीम’ लखनवी होते हुए भी सदैव देहलवी स्कूलके अनुयायी रहे।

‘हसरत’के चन्द अशआरकी भाँकी—

मूसाने खुदाका जलवा तो देखना चाहा, लेकिन अपनेमें इतनी शक्ति और सामर्थ्य न जुटा सके, जो खुदाके जलवेको सह सकें। खुदा तो फिर भी खुदा है, लेकिन ‘हसरत’की प्रेयसी भी इतनी महान है कि उसकी ओर देखनेका भी साहस नहीं होता—

मेरी निगाहे-शौक़का शिकवा नहीं जाता ।
सोतेमें भी पाससे देखा नहीं जाता ॥

‘हसरत’का इश्क़ कितना बुलन्द और पवित्र है कि वे उसके आगे क़िरदौसको भी हेच समझते हैं—

वल्लाह तुझे छोड़के ऐ कूचये-जानाँ !
‘हसरत’से तो क़िरदौसमें जाया नहीं जाता ॥

हमारा प्राणप्यारा जीवन सर्वस्व हमें बिसार बैठा है, इसका कारण शायद यही है कि हमसे कोई अक्षम्य भूल हुई है। अन्यथा उसकी यह उपेक्षा हमपर कदापि न होती—

फिर और तप्राफ़ुलका सबब क्या है खुदाया !

में याद न आऊँ उन्हें, ऐसा नहीं मुमकिन ॥

बच्चेकी तोतली और रसभरी वाणी सुनते-सुनते मन तृप्त नहीं होता । जी यही चाहता है कि बच्चा अपनी बातें बार-बार दुहराये जाय । इसीलिए ऐसा भाव धारण कर लिया जाता है कि हम उसकी बातें सुनना नहीं चाह रहे हैं । फलस्वरूप वह नई-नई अठखेलियों-द्वारा अपनी बातको बार-बार दुहराता है, और माँ-बाप आदि उसकी इस सरलताका आनन्द लूटते हैं । 'हसरत'की प्रेयसीकी भी यही आन्तरिक अभिलाषा है कि वह अपने प्यारेके प्यार भरे बोल बराबर सुनती रहे—

खुद उसको मेरी अज्ज-तमन्नाका शौक है ।

क्यों वरना यूँ सुने है कि गोया सुना नहीं ॥

भारतीय नारी पतिको ही परमेश्वर समझकर चारों ओरसे ध्यान समेटकर उसीकी हो रहती है । लेकिन पुरुषकी ओरसे उसे वह प्यार और सम्मान नहीं मिलता, जिसकी वह अधिकारिणी है । जो नारी जननी है, अम्बा है, सृष्टिकर्ता है, वह नारी भी ईश्वरका ही रूप है । पुरुष यदि कामुकताकी आँखें बन्द करके नारीके इस रूपका दर्शन करे तो फिर स्वर्ग और बैकुण्ठमें जानेकी ज़हमत गवारा क्यों की जाय ? इसी पृथ्वीपर जन्म लेनेको विष्णु, ब्रह्मा, तरस उठें 'हसरत' इसी पवित्र भावना-को यूँ व्यक्त करते हैं—

'हम क्या करें अगर न तेरी आरजू करें ।

दुनियामें और भी कोई तेरे सिवा है क्या ?

अपने प्यारेकी यादमें दिन-रात लीन रहनेके अतिरिक्त और कुछ भी सुखकर नहीं है—

शब वही शब है, दिन वही दिन है ।

जो तेरी यादमें गुज़र जायें ॥

प्राचीन शायरोंने प्रेमको असाध्य रोग बताया और उससे बचते रहनेकी कड़ी-से-कड़ी चेतावनियाँ दीं। वर्तमान युगीन शायर 'शाद' और 'जोश'ने कहा कि इश्क मनुष्यके लिए आवश्यक है। बिना इसके आदमीमें आदमीयत नहीं आती। लेकिन 'हसरत' एक कदम आगे बढ़ते हुए फ़र्माते हैं कि इश्क इस आदमियतको अमरत्व प्रदान करता है—

तुमपर मिटे तो ज़िन्दग़े-जावेद^१ हो गये।
हमको बक्रा^२ नसीब हुई है, फ़नाके^३ बाद ॥

और सचमुच—“जिसे मरना नहीं आया, उसे जीना नहीं आया।” माँगनेसे भी कभी राजनैतिक अधिकार मिले हैं? अधिकार माँगे नहीं जाते, छीने जाते हैं। इसी आशयको 'हसरत' ग़ज़लके अन्दाज़में यूँ व्यक्त करते हैं—

वस्लकी बनती है इन बातोंसे तद्बीरों कहीं ?
आरज़ूओंसे फिरा करती है, तक्रदीरों कहीं ?

इश्क किया नहीं जाता, हो जाता है। अनजानेमें ही दिलपर ऐसी चोट लग जाती है कि उस चोटका घाव जीवनभर नहीं भरता, और यह अनजानेमें, बेसम-भीमें जो हो जाता है, उसकी याद भी कभी विस्मरण नहीं होती। वह एक अव्यक्त आनन्दका अनुभव कराती रहती है—

हुस्नसे अपने वोह ग़ाफ़िल था, मैं अपने इश्क़से।
अब कहाँसे लाऊँ वोह नावाक़फ़ीयतके मज़े ॥

'हसरत'की प्रेयसी लज्जाशील नारी है—

आईनेमें वोह देख रहे थे बहारे-हुस्न।
आया मेरा ख़याल तो शरमाके रह गये ॥

मिर्जा ग़ालिबका अनुभव^१ है कि मृत्युसे पूर्व दुःखोंसे छुटकारा नहीं मिल सकता। लेकिन 'हसरत' और ही कुछ कहते हैं—

क्यों कहें हम कि ग़मेददसे^२ मुश्किल है फ़राग^३।

जब तेरी यादमें हर फ़िक्रसे हासिल है फ़राग ॥

जब इश्कमें पुरुषतगी आ जाती है, तब विरह और मिलनमें कोई अन्तर नहीं रहता—

अब सदमये-हिजरांसे भी डरता नहीं कोई।

ले पहुँची है याद उनकी बहुत दूर किसीको ॥

अपने प्यारेकी यादके अतिरिक्त संसारके समस्त कार्य व्यर्थ हैं। यहाँतक कि पूजा-पाठसे भी आत्म-विज्ञापन और अभिमानकी गन्ध आती है—

कुछ भी हासिल न हुआ, जोहदसे^४ नख़वतके^५ सिवा।

शरल बेकार हैं सब उसकी मुहब्बतके सिवा ॥

^१वह अनुभव यह है—

क़दे-हयात-ओ-बन्देग़म अस्लमें दोनों एक हैं।

मौतसे पहले आदमी ग़मसे निजात पाये क्यों ?

[यह जीवन शरीररूपी पिंजरेमें क़ैद है, जबतक इस शरीरमें रहेगा कष्ट उठाता रहेगा। ज़िन्दगी और कष्टोंका बन्धन (क़देहयात-ओ-बन्दे-ग़म) परस्पर भिन्न नहीं, अपितु एक ही अवस्थाके दो नाम हैं। दुखोंके पुंजको ही ज़िन्दगी कहते हैं। इसलिए मुक्तिसे पूर्व ग़मोंसे छुटकारेकी आशा व्यर्थ है]

^२दुखोंके रंजसे, पीड़ासे;
^३दिखावटी उपासनासे;

^४दुखोंके रंजसे, पीड़ासे;
^५अभिमानके।

इसी रंगके दो शेर और—

सबसे मुँह मोड़के राजी हैं तेरी यादसे हम ।
 इसमें इक शाने-फ़रागत^१ भी है राहतके^२ सिवा ॥

शाम हो या कि सहर याद उन्हींकी रखनी ।
 दिन हो या रात हमें ज़िक्र उन्हींका करना ॥

हसरतके यहाँ भी उर्दू गज़लकी परम्पराके अनुसार रक़ीबका ज़िक्र आता है। मगर किस खूबीके साथ? वे रक़ीबकी महफ़िलमें अपने रक़ीबकी बेंजा हरकतोंको देखने या उसकी चौकसी करने नहीं जाते। वे तो केवल अपनी प्रेयसीके हमराह रहते हैं—

बज्मे-दुश्मनमें भी दिल थामे हुए बैठा रहा ।
 शेर मुमकिन है जहाँ ऐ शोख ! तू हो, मैं न हूँ ॥

अक्सर लोगोंने हसीन, मगर बेशऊर, युवतियोंको रेलवे प्लेटफ़ार्म या किसी दरियापर स्नान करते और कपड़े बदलते देखा होगा। उनके फूहड़पन और बेशऊरपनसे वहाँ खड़े हुए शोहदे लुत्फ़ उठानेसे बाज़ नहीं आते—

तमझाने की ख़ूब नज़्जारा-बाज़ी ।
 मज्जा दे गई हुस्नकी बेशऊरी ॥

हसरतके दीवानमें इस तरहके गिरे हुए शेर स्थान न पाते तो उत्तम होता—

तुझमें कुछ बात है ऐसी, जो किसीमें भी नहीं ।
 यूँ तो औरोंसे भी दिल हमने लगा रक्खा है ॥

^१और न कुछ करनेकी शान;

^२चैनके।

बात तो 'हसरत' अपनी प्रेयसीसे यही कहना चाहते थे कि तू विश्वकी सुन्दरियोंमें यकता है, तेरा कोई जवाब नहीं। मगर—"औरोसे भी दिल हमने लगा रक्खा है" कहकर अपनेको भौंरा साबित कर दिया और प्रेयसीको व्यर्थमें आशंकित और बरहम कर दिया। इसी बातको 'मीर'ने इस खूबीसे व्यक्त किया है कि उनकी प्रेयसीके अनुपम सुन्दरी होनेके साथ ही 'मीर'के पारखी हृदय और सच्चे इश्कका परिचय मिलता है—

फूल, गुल, शम्सोक्रमर^१ सारे ही थे ।

पर हमें उनमें तुम्हीं भाये बहुत ॥

अब हम 'कुलियाते' हसरतसे चुनकर सभी रंगके कुछ शेर सन्वार दे रहे हैं। ताकि पाठक हसरतकी शायरीके उतार-चढ़ावका अनुमान लगा सकें।

१८९३-१९०३ ई०

जो आना हो तो आओ बेतकलुफ़ ।

यह अर्जें-जलवये-हैरत-फ़िजा^२ क्या ?

करते थे कभी हौसलये-तर्कें-मुहब्बत ।

अब सदमये-दूरी भी उठाया नहीं जाता ॥

उम्मीद नहीं उनसे मुलाक़ातकी हरचन्द ।

आँखोंसे मगर शौक़े-तमाशा नहीं जाता ॥

अल्लाहरी महरूमि, अल्लाहरी नाकामी ।

जो शौक़ किया हमने सो ख़ाम नज़र आया ॥

इस शलसे आँखोंको दमभर जो नहीं फ़ुरसत ।

रोनेमें वह क्या ऐसा आराम नज़र आया ?

^१चाँद-सूर्य; ^२जलवा देखनेके लिए प्रार्थना कबतक की जाय ?

क्रफ़समें सँयाद बन्द करदे, नहीं तो, बेरहम छोड़ ही दे ।
यहाँ उम्मीदोबीममें^१ आखिर रहेंगे हम जेरेदाम^२ कबतक ॥

सताइये न मुझे यूँ ही दिलफ़िगार^३ हूँ मैं ।
रुलाइये न मुझे खुद ही बेक्ररार हूँ मैं ॥
तेरा यह रंग कि है बेसबब खफ़ा मुझसे ।
मेरा यह हाल कि बेवजह बेक्ररार हूँ मैं ॥

हज़ारों बार छोड़ा, जोशिशोगम-हाय-फ़ुरक़तने^४ ।
हज़ारों बार आँसू आपके सरकी क्रसम निकले ॥

वोह जो बेचैन हुए देखके हालत मेरी ।
हो गई और परेशान तबीयत मेरी ॥

छोड़ा है दस्तेशौक़ने^५, मुझसे खफ़ा हैं वोह ।
गोया कि अपने दिलपै मुझे अख़्तियार है !

१९०३-१९१२ ई०

हम रहे याँ तक तेरी ख़िदमतमें सरगम-नियाज़^६ ।
तुझको आख़िर आशनाये-नाज़े-ब्रेजा^७ कर दिया ॥

मानूस^८ हो चला था तसल्लीसे हाले-दिल ।
फ़िर तूने याद आके बदस्तूर कर दिया ॥

किसे फ़ुरसत ? तुम्हारी ज़ुस्तजूके शौक़े-बेहदसे ।
अभी हमने कहाँ ढूँढा, अभी हमने कहाँ पाया ?

^१, ^२आशा और डरके जालमें कबतक फँसे रहेंगे ? ^३भग्नहृदय ;
^४विरह, कष्टोंके जोशने ; ^५अभिलाषी हाथोंने ; ^६नम्रप्रार्थी ;
^७आवश्यकतासे अधिक सौन्दर्याभिमानी ! ^८अभ्यस्त ।

दयारेशौक्रमें मातम बपा है मर्गें-‘हसरत’का ।
वोह वज्रए-पारसा उसकी, वोह इश्क़े-पाकबाज उसका ॥

चल भी दिये वोह छीनके सबोकरारे-दिल ।
हम सोचते ही रह गये यह माजरा है क्या ?

देखो जिसे, है राहे-फ़नाकी तरफ़ रवाँ ।
तेरी महल-सराका यही रास्ता है क्या ?

इरादे थे कि उनसे हाले-दिल सब मिलके कहदेंगे ।
मगर मिलनेपै हमसे आज होता है न कल कहना ॥

खुले न हमसे खमोशाने-आरजूकी जबाँ ।
जो इतफ़ाक़ भी हो, उनसे हमकलामीका ॥

अब तो उठ सकता नहीं आँखोंसे बारे-इन्तज़ार^१ ।
किस तरह काटे कोई लँलो-निहारे-इन्तज़ार^२ ॥
उनकी उलफ़तका यक़ीं हो उनके आनेकी उम्मीद ।
हों यह दोनों सूरतें, तब है बहारे-इन्तज़ार ॥
उनके ख़तकी आरजू है, उनकी आमदका ख़याल ।
किस क्रदर फ़ेला हुआ है, कारोबारे-इन्तज़ार ॥

कमाले-झाकसारीपर यह बेपरवाइयाँ ‘हसरत’ ।
मैं अपनी दाद खुद देलूँ, कि मैं भी क्या कयामत हूँ ॥

हमपर भी मिस्ले सैर हैं, क्यों महरबानियाँ ?
ऐ बदगुमाँ ! यह ख़ूब नहीं, बदगुमानियाँ ॥

^१प्रतीक्षाका बोझ;

^२प्रतीक्षाके रात-दिन ।

भुलाता लाख हूँ लेकिन बराबर याद आते हैं ।
इलाही तर्क-उलफ़तपर वोह क्योंकर याद आते हैं ॥
हकीक़त खुल गई 'हसरत' तेरे तर्क-मुहब्बतकी ।
तुझे तो अब वह पहलेसे भी बढ़कर याद आते हैं ॥

निगाहे-यार जिसे आशनाये-राज^१ करे ।
वोह अपनी खूबिये-क्रिस्मतपै क्यों न नाज करे ॥

और तो पास मेरे हिज़्रमें क्या रक्खा है ।
इक तेरे दर्दको पहलूमैं छुपा रक्खा है ॥
आह वह याद कि उस यादको होकर मजबूर ।
दिले-मायूसने मुद्दतसे भुला रक्खा है ॥

न देखे और दिले-उझाक़पर^२ फिर भी नज़र रखे ।
क़यामत है निगाहेयारका हुस्ने-ख़बरदारी^३ ॥
यही आलम रहा गर उसके हुस्ने-सहर परवरका^४ ।
तो बाक़ी रह चुकी दुनियामें राहो-रस्मे-दुश्चारी ॥

मेरे उज्रें जुर्मपर मुतलक़ न कीजे इल्तफ़ात^५ ।
बल्कि पहलेसे भी बढ़कर कजअदा^६ हो जाइए ॥
मेरी तहरीरे-नदामतका^७ न दीजे कुछ जवाब ।
देख लीजे और तगाफ़ुल-आश्ना^८ हो जाइये ॥
हाय री बेअस्तिथारी यह तो सब कुछ है मगर ।
उस सरापा नाज़से क्योंकर ख़फ़ा हो जाइये ॥

^१भेद जाननेवाला, अन्तरंग साथी; ^२आशिकोंके दिलपर;
^३सौन्दर्यताकी सावधानी; ^४रूपके जादूका; ^५कृपा,
^६तिष्ठें, ख़फ़ा; ^७क्षमा-याचनाके, पत्रका; ^८उपेक्षापूर्ण ।

मुझे शिक्कवये-जफ़ाकी नहीं आने पाई नौबत ।
वोह सितम भी गर करे है, तो ब-लुत्फ़े होशमन्दी ॥

देख ऐ सितमेजानाँ ! यह नक्शे-मुहब्बत हैं ।
बनते हैं ब-दुश्चारी, मिटते हैं ब-आसानी ॥
थी राहते-हँरतकी किस दर्जा फ़रावानी ?
मंने गमेहस्तीकी सूरत भी न पहचानी ॥

मैं उस बूते बदखूकी^१ इस आनपै मरता हूँ ।
खींचा न कभी उसने अन्दोहे-पशोमानी^२ ॥

अज्जेकरमपै^३ तर्के-जफ़ा भी न कीजिये ।
ऐसा न हो कि आप मिला भी न कीजिये ॥

अब रोनेसे क्या होगा, परवाना है बेपरवा ।
बरबाद है सब महनत, ऐ शमअ ! लगन तेरी ॥

जाहिर मलाले-रश्को-रक्काबत^४ न कीजिये ।
बेहतर यही है उनसे शिकायत न कीजिये ॥

उज्जे-सितम जरूर न था आपके लिए ।
'हसरत'को शर्मसारे-नदामत न कीजिये ॥

सितम हो जाये तमहीदे-करम^५ ऐसा भी होता है ।
मुहब्बतमें बता ऐ जब्तेगम ! ऐसा भी होता है ॥

न मुझको इसकी खबर है, न खुद उन्हें है खयाल ।
कुछ इस तरहसे मुहब्बत बढ़ाई जाती है ॥

^१बदआदत; ^२अपने जुर्मपर शर्मिन्दा होनेकी परेशानी न उठाई ।
^३कृपाकी याचनापर; ^४ईर्ष्या, शत्रुताके भावको; ^५कृपाकी भूमिका ।

यह भी आदाबे-मुहब्बतने गवारा न किया ।
 उनकी तसवीर भी आँखोंसे निकाली न गई ॥
 दिलको था हौसलये-अर्जें-तमन्ना^१ सो उन्हें ।
 सर गुजिश्ते-शबे-हिजराँ^२ भी सुनाई न गई ॥

१९१२-१६ ई०

शरफ़^३ हासिल हो उस जानेजहाँसे^४ मुझको निसबतका^५ ।
 गुलामीका सही, गर हो न सकता हो मुहब्बतका ॥

आपको अब हुई है कद्रेवफ़ा ।
 जब कि मैं लायक़े-जफ़ा न रहा ॥
 तुझको पासे-वफ़ा ज़रा न हुआ ।
 हमसे फिर भी तेरा गिला न हुआ ॥
 कट गई अहतियाते-इश्क़में उम्र ।
 हमसे इजहार-मुद्दा न हुआ ॥
 कौन लाता तेरे अताबकी^६ ताब ।
 खैर गुजरी कि सामना न हुआ ॥
 छिड़ गई जब जमाले-यारकी बात ।
 खत्म ता-देर सिलसिला न हुआ ॥
 मैं गिरफ़्तारे-उल्फ़ते-सैयाद ।
 दामसे छुटके भी रिहा न हुआ ॥
 हर घड़ी शेख़को है फ़िक़रे-सवाब^७ ।
 यह भी इक़ तरहका अजाब^८ हुआ ॥

^१अभिलाषा प्रकट करनेका साहस; ^२विरह-रात्रिकी बीती घटना;
^३इज्जत; ^४विश्वसुन्दरीसे; ^५सम्बन्धित होनेका; ^६क्रोधकी;
^७पुण्यकी चिन्ता; ^८रोग ।

अब यह क्यों आप मनके फिर बिगड़े ।

अब यह किस बातपर अताब हुआ ॥

आपके हाथसे करम^१ कि सितम ।

जो हुआ मुझमें बेहिसाब हुआ ॥

रहने लगी उनकी याद हरदम ।

अब और हमें रहेगा क्या याद ?

वोह तो करदें मेरा कुसूर मुआफ़ ।

मंही कहता नहीं, 'हुजूर मुआफ़' ॥

सब आये, पर इक तू न आया, न आया ।

तेरा देर देखा किये रास्ता हम ॥*

यह क्या मुंसिफ़ी^२ है, कि महफ़िलमें तेरी ।

किज़ीका भो हो जुर्म पायें सज़ा हम ॥

तेरी ख़ूए-बरहमसे^३ वाक़िफ़ थे फिर भी ।

हुए मुफ़्त शर्मिन्दये-इल्तजा^४ हम ॥

तमहीदे-सुलहे-शौक़के^५ सामान हो गये ।

जितने थे उनके जौर^६ सब अहसान हो गये ॥

^१कृपा;

*साक़ी-ओ-मुतरिब आये, ज़ाम आये, सुबू आये ।

आना था जिनको वोही न आये तमाम रात ॥

—शमीम जयपुरी

^२न्यायपरायणता;

^३क्रोधीस्वभावसे;

^४प्रार्थना करके शर्मिन्दा

^५सुलह करनेके;

^६अत्याचार ।

खन्दये-अहलेजहाँकी^१ मुझे परवा क्या थी ।
तुम भी हँसते हो मेरे हालपै रोना है यही ॥

अगर हुआ भी तो उल्टा असर हुआ मैं हुआ ।
सकूनेयास^२ मिला, इज्तराबके^३ बदले ॥

जमालेयारकी^४ रंगीनियाँ अदा न हुईं ।
हजार काम लिया हमने खुश बयानीसे ॥

बहुत खिजल^५ है तेरे दर्दसे हुआ मेरी ।
यह खौफ है कि न सुन ले कहीं खुदा मेरी ॥
छुपे वोह मुझसे तो क्या यह भी इक अदा न हुई ।
वोह चाहते थे न देखे कोई अदा मेरी ॥*
कहीं वोह आके मिटा दें न इन्तज़ारका लुफ़ ।
कहीं क्रुबूल न हो जाये इल्तिजा मेरी ॥†

मुझसे बरग़दता न होते तो तअज्जुब होता ।
आपको उज्ज्रे-तप्राफ़ुलकी जरूरत क्या है ॥

खींच लेना वोह मेरा परदेका कोना दफ़अतन ।
और दुपट्टेसे तेरा वोह मुँह छुपाना याद है ॥

^१संसारके हँसनेकी; ^२निराशाका चैन; ^३तड़पके; ^४प्रेयसीके
रूपकी; ^५शर्मिन्दा ।

*अन्दाज़ अपना देखते हैं आईनेमें वोह ।
और यह भी देखते हैं, कोई देखता न हो ॥

—निज़ाम रामपुरी

†हम आँख बन्द किये तसव्वुरमें पड़े हैं ।
ऐसेमें कहीं छमसे वोह आजायें तो क्या हो ॥

—रियाज़ ख़ैराबादी

गैरकी नज़रोंसे बचकर सबकी मर्ज़ीके खिलाफ़ ।
वोह तेरा चोरी छुपे रातोंको आना याद है ॥

परदेसे इक झलक जो वोह दिखलाके रह गये ।
मुश्ताक़ेदीद^१ और भी ललचाके रह गये ॥
टोका जो बज़्मेग़ैरसे आते हुए उन्हें ।
कहते बना न कुछ वोह क़सम खाके रह गये ॥

१९१६-१९१७ ई०

सुनके ज़िक्केइश्क़ रह जाते हैं अक्सर हम ख़मोश ।
अब तलक इतना असर बाक़ी है उनकी यादका ॥

क्या हुआ 'हसरत' वोह तेरा इद्दआए-ज़ब्तोग़म^२ ।
वो ही दिनमें रंजे-फ़ुरक़तका गिला होने लगा ॥

की मंने लुत्फ़ेयारकी पहले न कुछ भी क़द्र ।
होती है किससे जिन्से-फ़रावांकी अहतयात^३ ॥

ऐ सहरे-हुस्ने-यार^४ में अब तुझसे क्या कहूँ ?
दिलका जो हाल तेरी बबौलत है आजकल ॥
इकतर्फ़ा बेख़ुदीका है आलम कि इश्क़में ।
तकलीफ़ आजकल है न राहत है आजकल ॥

हमपर तेरी निगाह जो पहले थी अब नहीं ।
सो भी न कुछ दिनोंमें रहे तो अजब नहीं ॥

^१देखनेके अभिलाषी; ^२कष्ट सहनेकी क्षमता; ^३अधिक वस्तुका आदर, चौकसी; ^४प्रेयसीके रूपका जादू ।

‘हसरत’ जफ़ायेयार तो इक आम थी अदा ।
इज़हारे-इल्तफ़ात मगर बेसबब नहीं ॥

उसीसे छुपते हैं होती है जिसपर उनकी नज़र ।
अगर यही है तो उम्मीदवार हम भी हैं ॥

मुझमें ताबे-जमाले-यार कहाँ ?
शौक उन्हें मेरे रूबरू न करे ॥

उनके क़दमोंपै रख दिया सरे-शौक ।
हम यह क्या बेखुदीमें कर गुज़रे ?

शबे-फ़ुरक़तमें याद उस बेख़बरकी बार-बार आई ।
भुलाना हमने भी चाहा, मगर बेअस्तिyार आई ॥

आग़ाज़े आशिक़ी^१ था, जोशो-ख़रोश यक़सर ।
या इन्तहायेग़म है, हैरानी-ओ-ख़मोशी ॥

१९१७-१९१८ ई०

इसकी बात और है पायें जो हम इसमें भी मज़ा ।
आपने तो न दिया कुछ भी अज़ीयतके^२ सिवा ॥

उनको याँ वादेपै आ लेने दे ऐ अब्बे-बहार !
जिस क़दर चाहना फिर बादमें बरसा करना ॥
कुछ समझमें नहीं आता कि यह क्या है ‘हसरत’ !
उनसे मिलकर भी न इज़हारे-तमन्ना करना ॥

नज़र फिर न की उसपै दिल जिसका छीना ।
मुहब्बतका यह भी है कोई क़रीना ?

^१प्रारम्भिक प्रेमासक्ति;

^२कष्टके ।

‘हसरत’ फिर और जाके करें किसकी बन्दगी ?

अच्छा, जो सर उठायें भी उस आस्तांसे हम ॥

पूछते हैं वह कि “हमसे, तेरी ख्वाहिश है सो क्या ?”

दिलमें जो-जो कुछ है मेरे, अब मैं उनसे क्या कहूँ ?

खुदा जाने यह अपना हाल क्या है हिजरेजानाँमें ।

कि आहें लबतक आती हैं, न अशक आँखोंसे बहते हैं ॥

खमोशीकी अजब यह गुप्तगू है वस्लमें बाहम ।

न कहते हैं वोह कुछ हमसे, न हम कुछ उनसे कहते हैं ॥

हाल खुल जायेगा बेताबिये-दिलका ‘हसरत’ ।

बार-बार आप उन्हें शौक्रसे देखा न करें ॥

शौक्र जब हृदसे गुजर जाय तो होता है यही ।

वरना हम और करमे-पारकी परवा न करें ॥

हविसेदीव’ मिटी है, न मिटेगी ‘हसरत’ ।

देखनेके लिए चाहो उन्हें जितना देखो ॥

हर नामने उन्हींकी तलबका दिया पयाम ।

हर साजने उन्हींकी सुनाई सदा^१ मुझे ॥

१९१८-१९२२ ई०

शिकवये-ग्राम तेरे हुजूर किया ।

हमने बेशक बड़ा क्रुसूर किया ॥

नादिम हूँ जान देकर, आँखोंको तूने जालिम !

रो-रोके बाद मेरे क्यों लाल कर लिया है ?

^१देखनेकी तृष्णा ;

^२आवाज ।

देख ले अब भी कहीं आकर जो वोह राफलतशआर ।
किस क्रूर हो जाय मर जानेमें आसानी मुझे ॥

१९२२-१९२३ ई०

जान दे दी पहुँचके उनके हुजूर ।
हमने और उनसे कुछ कहा न सुना ॥

दिले-मजबूर भी क्या शं है कि दरसे अपने ।
उसने सौ बार उठाया तो मैं सौ बार आया ॥

सब मुश्किल है, आरजू बेकार ।
क्या करें आशिकीमें क्या न करें ॥

इक यह भी हकीकतमें है शानेकरम उनकी ।
जाहिरमें वोह रहते हैं जो हर वक़्त ख़फ़ा-से ॥

मेरा इश्क़ भी ख़ुदशरज़ हो चला है ।
तेरे हुस्नको बेवफ़ा कहते-कहते ॥

१९२३ ई०

हम शिकवये-फ़लक ही करेंगे हुजूर-दोस्त ।
जाहिर न होने देंगे वहाँ भी कुसूरे-दोस्त ॥

अहवे-यक-उन्ने-फ़रायतसे भी ख़ुशतर गुज़रा ।
वोह जो इक लहज़ा तेरी यावमें हमपर गुज़रा ॥

तुझसे अब मिलके तआज्जुब है कि अरसा इतना ।
आजतक तेरी जुदाईका यह क्योंकर गुज़रा ॥

आपको आता रहा मेरे सतानेका खयाल ।
मुलहसे अच्छी रही मुझको लड़ाई आपकी ॥*

१९२४ ई०

क्रदमोंपे उनके रखके सर रफ़अ मलाल^१ कर दिया ।
हिम्मते-उज्रह्वाहने^२ आज कमाल कर दिया ॥

चलो जान देके 'हसरत' हुई खूब ग़मसे फ़ुरसत ।
वोह कभी न तुमसे मिलते यूँ ही सुबहोशाम करते ॥

१९२५-३४ ई०

करनेको तो मैं अहद करूँ तर्क-हविसका^३ ।
पर दिलसे कहूँ क्या जो नहीं है मेरे बसका ॥

हो रही है सबाहे-इश्कतुलू^४ ।
हो चले हैं चराग़े-अक्ल खमोश ॥

तुझको ऐ महबे-तयाफ़ुल^५ मेरी परवा ही नहीं ।
हाले-दिल किससे मैं कहता, तूने पूछा ही नहीं ॥

१९३५-१९४० ई०

क्रिस्मते-शौक आजमा न सके ।
उनसे हम आँख भी मिला न सके ॥
हम तो क्या भूलते उन्हें 'हसरत' !
दिलसे वोह भी हमें भुला न सके ॥

*वोह दुश्मनीसे देखते हैं, देखते तो हैं ।
मैं शाद हूँ कि हूँ तो किसीकी निगाहमें ॥

—आतिश

^१मलाल दूर कर दिया; ^२क्षमा माँगनेके साहसने; ^३तृष्णा-
त्यागका; ^४प्रेमरूपी पी फट रही है; ^५उपेक्षा-लीन ।

थी कभी याद उनकी बजहे-सकूं ।

अब किसी हालमें करार नहीं ॥

१९४१-१९५० ई०

उस शोखका शिकवा किया, 'हसरत' यह तूने क्या किया ?

इससे तो ऐ मर्देखुदा ! बहतर था मर जाना तेरा ॥

यह किसके इज्जतमन्नाका^१ पास है कि वोह शोख ।

ब-जोमेनाज^२ भी दामन छुड़ा नहीं सकता ॥

रौनक़ेदिल यूँ बढ़ा ली जायगी ।

ग़मकी इक दुनिया बसा ली जायेगी ॥

दिल न तोड़ो 'हसरते'-नाकामका ।

जुल्फ़ तो फिर भी बना ली जायगी ॥

ख़ुद फ़रामोशियोंमें^३ भी तो हमें ।

भूल जाना किसीका याद रहा ॥

बदगुमाँ आप हैं क्यों, आपका शिकवा है किसे ?

जो शिकायत है हमें गरदिशे-ऐयामसे है ॥

पैमाने-वफ़ाके ईफ़ाका^४ हम उनसे तक्राजा भूल गये ।

इसका भी तो अब अहसास नहीं, क्या याद रहा क्या भूल गये ॥

'हसरत'की तमाम ग़ज़लोंकी संख्या ७७१ होती है । जिनमें ३८३ ग़ज़लें क्रैद या नज़रबन्दीकी हालतमें लिखी गई थीं ।

'हसरत'की पहली ग़ज़ल जो उन्होंने १२ या १३ सालकी उम्रमें सबसे पहले कही—

^१नम्रतापूर्ण अभिलाषाका ;

^२अभिमानका बल रखते हुए ;

^३अपनेको भूले रहनेपर भी ;

^४नेकी करनेके वायदेका ।

मैं तो समझा था कयामत आ गई ।
 खैर फिर साहब सलामत हो गई ॥
 मसजिदोंमें कौन जाये बायज़ा !
 अब तो इक बुतसे इरादत हो गई ॥
 जब मैं जानूँ दिलमें भी आओ न याद ।
 गरचे जाहिरमें अदावत हो गई ॥
 उनको कब मालूम था तर्ज-जफ़ा ।
 ग़ैरकी सुहबत कयामत हो गई ॥
 इश्क़ने उसको सिखा दी शायरी ।
 अब तो अच्छी फ़िक़रे 'हसरत' हो गई ॥

और यह अन्तिम ग़ज़ल उन्होंने मृत्युसे छः माह पूर्व २० नवम्बर १९५० को लखनऊमें कही थी—

शौक़ कि दादेहया मिलती नहीं ।
 वोह तिगाहे-आशना मिलती नहीं ॥
 शेवये-अहले-रियासे जीनहार ।
 ख़ूए-अरबाबे-सफ़ा मिलती नहीं ॥
 दीदनी है यह मुरव्वत हुस्नकी ।
 जुमें-उल्फ़तकी सज़ा मिलती नहीं ॥
 उनसे मिलनेकी हविसमें शौक़को ।
 ढूँढ़ता है और दुआ मिलती नहीं ।
 आशिक़ीसे ख़ूए-नाज़े-हुस्ने-दोस्त !
 बरसबीले-एतना मिलती नहीं ॥
 यह भी 'हसरत' क्या सितम है इश्क़से ।
 हुस्नको दादे-जफ़ा मिलती नहीं ॥

‘फ़ानी’ बुढ़ायुनी

[१८७९-१९४१ ई०]



‘मीर’ उर्दू-शायरीके खुदाये-सुखन समझे जाते हैं, और ‘फ़ानी’ यास-यातके इमाम । यासयात यानी असफल और निराश-व्यक्तियोंके ऐसे नेता कि जिन्हें कभी जीवनमें एक क्षणको भी सफलता और आशाकी एक भी किरण दिखाई नहीं दी । तमाम उम्र अथक परिश्रम और उद्योग करते रहे, किन्तु असफलता और निराशाके अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं लगा । तब मजबूरन तक्रदीर (भाग्य)के आगे तद्बीर (पुरुषार्थ)को घुटने टेकने पड़े । इस पराजयकी घुटनको ‘फ़ानी’ने यूँ व्यक्त किया है—

देख ‘फ़ानी’ वोह तेरी तद्बीरकी मैयत^१ न हो ।

इक जनाज़ा^२ जा रहा है, दोशपर^३ तक्रदीरके ॥

तमाम उम्र हाथ-पाँव मारते गुज़र जायें, फिर भी किनारा हाथ न आये, तब छट-पटाकर डूब जानेके अतिरिक्त अन्य उपाय भी क्या है ?

कुछ आस्तिक कहेंगे कि ‘फ़ानी’ने ऐसे घोर संकटके समय ईश्वरको पुकारा होता तो निश्चय ही बेड़ा पार हो जाता । फ़ानीने यह भी करके

^१अर्थी;

^२शव;

^३कन्धेपर ।

देख लिया। वे जीवनभर आस्तिक बने रहे, घोर संकटके क्षणोंमें भी वे खुदाको नहीं भूले। उनका दृढ़ विश्वास था कि खुदा रहीम है और उसकी रहमत कभी-न-कभी उनपर भी होगी। लेकिन मरते दम तक भी रहमतका सहारा जब नहीं मिला तो धीरजका बाँध टूट गया, और उमी बेकलीमें उनके मुँहसे निकल गया—

या रब ! तेरी रहमतसे मायूस नहीं 'फ़ानी'।

लेकिन तेरी रहमतकी ताख़ीरको क्या कहिये ?

आपदाओंके भँवरमें जब फ़ानीकी जीवन-नौका चक्कर काट रही थी, उनकी संगिनी और युवा कन्या चल बसीं; जो बच रहे उनको क्षणभर भी निराकुल न देख सके। यह बोह मनोव्यथा है कि इस टीसका अनुभव भुक्त-भोगी ही कर सकता है। 'मीर' तो एक कल्पना ही करके रह गये कि उन-जैसा बदनाम मद्यप भी मस्जिदका इमाम बन गया है—

मस्जिदमें इमाम आज हुआ आके वहाँसे।

कल तक तो यही 'मीर' ख़राबात-नशीं था ॥

ख़राबात (मद्यालयों)के मीर (सरदार) रहे तो क्या, और मस्जिदमें इमाम^१ बने तो क्या ? इससे विगड़ता-बनता क्या है ? लेकिन 'फ़ानी' तो जीवनभर असफलताओं और निराशाओंसे द्वन्द्व करते रहे और एक क्षणको भी विजयी न हुए, इसीलिए उर्दू-आलोचक उन्हें यासयातका इमाम कहते हैं।

‘कौन कम्बख़्त तेरी दयालुता और दीनबन्धुत्वमें सन्देह करता है ? हमें तो आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि तू अपनी रहमतका हाथ हमारे लिए भी बढ़ायेगा। लेकिन इतना जो विलम्ब (ताख़ीर) हो रहा है, इसको क्या कहा जाय ? क्या हम डूब जायेंगे तब . . . ?

^१धार्मिक नेता, जिसके पीछे खड़े होकर लोग नमाज़ पढ़ें।

यासयातका इमाम तो वह भी कहला सकता है, जो असफल और निराश व्यक्तियोंमें आशाका संचार करे, कर्तव्य-क्षेत्रमें डटे रहनेके लिए उत्साहप्रद भावना भरे। लेकिन 'फ़ानी' ऐसे इमाम नहीं हैं, अपितु किसी व्यक्तित्वमें आशा-उत्साहका कोई अंकुर रह भी गया हो, तो उनकी इमामत (नेतृत्व) उसे जड़-मूलसे उखाड़ फेंकती है, उसी अर्थमें वे यासयातके इमाम हैं।

यही कारण है कि कुछ आलोचक उनकी जीवितावस्थामें ही यह दोषारोपण करने लगे थे कि 'फ़ानी' हर वक्त रोते-बिसूरते रहते हैं। उनकी प्रेम-ज्वाला ठंडी पड़ गई है। ग़मसे घबराकर हर वक्त मौतकी कामना रखते हैं। उनकी शायरीमें व्यक्तिगत रोने-भींकनेके अतिरिक्त और रखा ही क्या है? हाय-हाय करना, छाती पीटना, विधवाओंकी तरह शोकमग्न रहना, बिलखते रहना, उनका स्वभाव है। लखनवी शायरोंकी तरह वह भी प्रेमको एक रोग समझते हैं। उनकी शायरीमें जनाज़ा, मैयत, कफ़न, लहद, मज़ार, शमा, परवाना आदि शब्दोंकी भरमार रहती है। 'जोश' मलीहाबादी^१ तो उन्हें मानवतासे गिरा हुआ कहनेमें भी संकोच नहीं करते, क्योंकि मनुष्य होकर जो ग़मोंसे घबरा उठे, उसे वे मनुष्य नहीं, मनुष्यताका अभिषाप समझते हैं।

किसी हालतमें उक्त आलोचनाएँ ठीक हैं, किन्तु एक ही कांटेपर धान और मोती नहीं तोले जा सकते। हर व्यक्तिके जीवनके भिन्न-भिन्न पहलू होते हैं, और भिन्न-भिन्न वातावरणमें रहने-सहनेके कारण जुदा-जुदा आचार-स्वभाव होते हैं। रामायणका पाठक महाभारतके कौरव-पाण्डवोंमें भी भरत-राम-जैसा स्नेह-सम्बन्ध देखना चाहेगा तो निराशाके अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। हर शायर 'ग़ालिब' और 'जोश' नहीं

^१'जोश' मलीहाबादीका परिचय 'शायरीके नये दौर' नामक पुस्तकमें दिया गया है, जो कि शीघ्र छपेगी।

हो सकता । न हर शायर 'मीर' और 'फ़ानी' जैसा दर्दीला दिल पा सकता है । प्रारम्भमें 'फ़ानी' भी 'ग़ालिब' से प्रभावित नज़र आते हैं, जैसा कि इन चन्द अशआरसे आभास मिलता है—

ग़ालिब— हस्तीके मत फ़रेबमें आजाइयो 'असद' !
आलम तमाम हलक़ये-दामे-ख़याल है ॥

फ़ानी— हर मुज़दए-निगाहे-ग़लत जलवा खुदफ़रेब ।
आलम दलीले गुमरहीए-चश्मोगोश था ॥

ग़ालिब— है ग़ैब-ग़ैब जिसको समझते हैं हम शहूद ।
हैं ख़्वाबमें हनूज़ जो जागे हैं ख़्वाबमें ॥

फ़ानी— तजल्लियाते-वहम हैं मुशाहिदाते-आबो-ग़िल ।
करिश्मये-हयात है ख़याल, वोह भी ख़्वाबका ॥
एक मुअम्मा है समझनेका न समझानेका ।
ज़िन्दगी काहेको है ? ख़्वाब है दीवानेका ॥

ग़ालिब— हाँ खाइयो मत फ़रेबे-हस्ती ।
हर चन्द कहें कि है, नहीं है ॥

फ़ानी— है कि 'फ़ानी' नहीं है क्या कहिए ।
राज़ है बेनियाज़े-महरमे-राज़ ॥

ग़ालिब— न गुले-नामा हूँ, न परदयेसाज़ ।
मैं हूँ अपनी शिकस्तकी आवाज़ ॥

फ़ानी— हूँ, मगर क्या यह कुछ नहीं मालूम ।
मेरी हस्ती है ग़ैबकी आवाज़ ॥

ग़ालिब— लो वोह भी कहते हैं कि "यह बे-नंगो-नाम है" ।
यह जानता अगर तो लुटाता न घरको मैं ॥

फ़ानी— बहला न दिल, न तीरगीये-शामे-शम गई ।
यह जानता तो आग लगाता न घरको मैं ॥

ग़ालिब— छोड़ा न रक्कने कि तेरे घरका नाम लूं ।
हर-एकसे पूछता हूँ कि जाऊँ किधरको मैं ॥

फ़ानी— वोह पाये-शौक़ दे कि जहत-आश्ना न हो ।
पूछूँ न खिज़्रसे भी कि जाऊँ किधरको मैं ॥

ग़ालिब— उग रहा है दरो-दीवारसे सब्ज़ा 'ग़ालिब' !
हम बयाबाँमें हैं और घरमें बहार आई है ॥

फ़ानी— याँ मेरे क़दमसे है वीरानेकी आबादी ।
वाँ घरमें खुदा रक्खे आबाद है वीरानी ॥

ग़ालिब— मेरी तामीरमें मुज़मिर है इक सूरत ख़राबीकी ।
हयूला बर्क़े-ख़िरमनका है, खूने-गर्म दहक़ाँका ॥

फ़ानी— तामीरे-आशियाँकी हविसका है नाम बर्क़ ।
जब हमने कोई शाख़ चुनी शाख़ जल गई ॥

ग़ालिब— हो चुकीं 'ग़ालिब' बलाएँ सब तमाग़ ।
एक मर्गे-नाग़हानी और है ॥

फ़ानी— अपनी तो सारी उम्र ही 'फ़ानी' गुज़ार दी ।
इक मर्गे-नाग़हाँके ग़मे-इन्तज़ारने ॥

'ग़ालिब' और 'फ़ानी' में अन्तर यही है कि दोनों आपदाओंकी भट्टीमें जीवनभर सुलगते रहते हैं और अन्तमें राख़ हो जाते हैं । लेकिन 'ग़ालिब' तब भी मुसकराते रहते हैं, तीखे व्यंग़ कसते हैं, और ऐसा मुँह चिढ़ाते हैं कि आपदायें भी भेंप-भेंपकर रह जाती हैं—

न लुटता दिनको तो, कब रातको यूँ बेख़बर सोता ।

रहा खटका न चोरीका, दुआ देता हूँ रहज़नको !

है किसीमें ऐसी हिम्मत कि सर्वस्व लुट जाये, फिर भी आह न करे, उलटा चोरका आभार ही माने ? अपने उजाड़ घरको देखकर कितना तीखा व्यंग़ करते हैं—

घर हमारा जो न रोते भी तो वीराँ होता ।

बहर गर बहर न होता तो बयाँबा होता ॥

[हमारा घर तो उजाड़ होना ही था, फिर रो-रोकर उसे आँसुओं-द्वारा हमने स्वयं ही डुबो दिया तो क्या बुरा किया ?]

कम किरायेके टूटे-फूटे मकानमें रहते हैं । उसकी दीवारोंपर काई जम गई है । छतों और मुँडेरोंपर घास उग आई है । जानते हैं कि निर्धनताके कारण ऐसे मकानमें रहना पड़ रहा है, किन्तु अपनी इस बेबसीपर आँसू न बहाकर किस खूबीसे मुँह चिड़ाते हैं कि भकान-मालिकने यह शेर सुना होगा तो अपना सर पीट लिया होगा—

उग रहा है दरो-दीवारपै सब्जा 'गालिब' !

हम बयाबाँमें हैं और घरमें बहार आई है ॥

घास और काईको 'सब्जा' और घरकी जीर्णताको 'बहार' कहना गालिबका ही कलेजा है ।

दुःख-दरिद्रतामें जीवन व्यतीत करते-करते खयाल आया कि अगर खुदा मुझे लोक और परलोक दोनों प्रदान कर दे तो क्या हो ? चट स्वाभिमानी हृदय घृणासे भर आया, कि जिस खुदाने एक लमहेको मुख-चैनकी साँस नहीं लेने दी, उसका दिया हुआ अब क्यों स्वीकृत किया जाय ? लेकिन अपनी वज्रअ-कृतअकी शराफतके कारण 'नहीं' कहनेका साहस भी नहीं होता, सकुचाकर रह जाते हैं—

दोनों जहान देके वोह समझा कि खुश हुआ ।

याँ आ पड़ी यह शर्म कि तकरार क्या करें ॥

लेकिन 'फ़ानी' दुःखकी भट्टीमें जलते हुए 'गालिब'की तरह मुसकरा नहीं सकते थे । उनका हृदय जिन परमाणुओंसे बना था, उनमें मुसकानके अणु नहीं थे । 'फ़ानी' अपनी व्यथा-पीड़ाके कारण 'गालिब'के बजाय

‘मीर’के अधिक समीप मालूम होते हैं। उनके बहुतसे अशआर में ‘मीर’का धोका होता है। ऐसे चन्द शेर दिये जाते हैं—

‘फ़ानी’को या जुनूँ है या तेरी आरजू है ।

कल नाम लेके तेरा दीवानावार रोया ॥

नाला क्या ? हाँ इक धुआँ-सा शामे-हिज्र ।

बिस्तरे-बीमारसे उठा किया ॥

आया है बादे-मुद्दत बिछड़े हुए मिले हैं ।

दिलसे लिपट-लिपटकर ग़म बार-बार रोया ॥

नाज़ुक है आज शायद, हालत मरीज़े-ग़मकी ।

क्या चारागरने समझा, क्यों बार-बार रोया ?

ग़मके टहोके कुछ हों बलासे, आके जगा तो जाते हैं ।

हम हैं मगर वह नींदके माते जागते ही सो जाते हैं ॥

महवे-तमाशा हूँ मैं या रब ! या मदहोशे-तमाशा हूँ ।

उसने कबका फेर लिया मुँह अब किसका मुँह तकता हूँ ॥

गो हस्ती थी ख़वाबे-परीशाँ नींद कुछ ऐसी गहरी थी ।

चौक उठे थे हम घबराकर फिर भी आँख न खुलती थी ॥

फ़स्ले-गुल आई, या अजल आई, क्यों दरे ज़िन्दाँ खुलता है ?

क्या कोई बहशी और आ पहुँचा या कोई क़ैदी छूट गया ॥

या कहते थे कुछ कहते, जब उसने कहा—“कहिये” ।

तो चुप हूँ कि क्या कहिये, खुलती है ज़बाँ कोई ?

यहाँ यह कहा जा सकता है कि ‘फ़ानी’ उम्रभर जलते-भुनते रहते, लेकिन उन्हें अपने दिलकी टीस शायरीमें बखेरकर पाठकोंके हृदयको द्रवित करने और उन्हें निराशावादका पाठ देनेका क्या अधिकार था ?

उन्हें तो अपने रिसते हुए नासूरपर मरहम लगाकर डब-डबाई आँखोंके आँसू पीकर जाहिरामें मुसकराते रहना चाहिए था ।

दिलमें हज़ार ग़म हों, जबींपर शिकन न हो

लेकिन शायरी चित्र-जैसी कला नहीं कि मनोभाव दबाकर फ़र्मा-इशके अनुसार चित्रित की जा सके । लाख प्रयत्न किये जायें, शायरके कलाममें उसके हृदयगत भाव व्यक्त हुए बग़ैर रह नहीं सकते । 'ग़ालिब'ने लाख चाहा कि वे हृदयमें सुलगते ज्वालामुखीको दबाकर जीवनभर मुसकराते रहें और व्यंगोक्तियाँ कसते रहें । मगर यह उनसे भी बराबर नहीं निभ सका, और उनकी हृदयगत आग उनके चारों ओर फैले बग़ैर नहीं रह सकी—

दिलमें जौक़े-वस्ल-ओ-यादे-यार तक बाक़ी नहीं ।

आग इस घरको लगी ऐसी कि जो था जल गया ॥

किससे महरूमिधे किस्मतकी शिकायत कीजे ।

हमने चाहा था कि मर जायें, सो वह भी न हुआ ॥

और जिसे माँगसे मौत भी न मिले, वह असहाय और लाचार घुट-घुटकर जीने और मनको यह सान्त्वना देनेके अतिरिक्त और कर भी क्या सकता है—

क़दे-हयात-ओ-बन्दे-ग़म, अस्लमें दोनों एक हैं ।

मौतसे पहले आदमी ग़मसे निजात पाये क्यों ?

शायरी एक दर्पण है, जिसमें अनिच्छा होते हुए भी हृदयगत भावोंका प्रतिबिम्ब पड़े बग़ैर नहीं रह सकता । सैयद मुलेमान नदवीके शब्दोंमें—

“ग़ज़ल लिखनेके लिए स्याही बाज़ारमें नहीं मिलती, बल्कि खूँ-चक़ाँ सीनेमें पाई जाती है । उसके लिए ज़रूमी दिल दरकार है । इसलिए ‘इक़बाल’ने कहा है—

मिसरयेमन कतरयेखूने मनस्त ।

और 'कतरयेखून' शायरीमें उसी वक्त टपकता है, जब कि शायरका खलूस उसमें कारफरमा हो। शेरमें शेरियत (कवित्व)के साथ-साथ तासीर (प्रभाव, असर)का होना भी जरूरी है।^१ तासीर बगैर शेर निष्प्राण शरीरके समान हैं।

'फ़ानी'के एक-एक शब्दमें उनकी आत्मा बोल रही है। उनके कलामके अध्ययनसे उनके जीवन-पृष्ठ स्वयं उजागर हो जाते हैं; और यही उनकी शायरीका कमाल है। जहीरउद्दीन अहमदखाँ लिखते हैं—

"वही शायरी बुलन्दपाया (उच्चतम) होगी, जिसको शायरने खुद महसूस किया हो। ज़िन्दगीकी चक्कीमें जिसने अपनेको पीसा हो, और रंजो-ग़मकी भट्टीमें जिसने अपनेको सुलगाया हो, उससे जो आवाज़ निकलती है, वही शायरी है।"^२

'फ़ानी' इस शायरीकी कसौटीपर पूरा उतरते हैं, जैसा कि उनके जीवन-परिचयसे आभास मिलता है।

शौकतअलीखाँ 'फ़ानी' १३ सितम्बर १८७६ ई०में बदायूँ ज़िलेके इस्लामनगरमें उत्पन्न हुए। वे पठान हैं और उनके पूर्वज शाह आलमके शासनकालमें काबुलसे भारत आये और यहाँ उच्च पदोंपर प्रतिष्ठित रहे।

'फ़ानी'के परदादा नवाब बशारतखाँ, बदायूँ सूबेके गवर्नर थे और २०० गाँव उनकी जागीरमें थे। धीरे-धीरे जागीर खिसकती गई और नौबत यहाँतक आ पहुँची कि आपके पिता मुहम्मद शुजाअतअलीखाँ पुलिसकी नौकरी करनेपर मजबूर हुए और उस थोड़े-से वेतनमें ही अपनी सारी ज़िन्दगी गुज़ार गये।

^१निगार अप्रैल १९४६, पृ० १०; ^२निगार अप्रैल १९४६, पृ० ११।

‘फ़ानी’ने १६०१में बी० ए० और १६०८में एल-एल० बी० पास किया। १६२३ तक लखनऊमें रहे, उसके बाद सन् ३२ तक आगरेमें वकालत करते रहे। कुछ अर्से बरेली और बदायूँमें भी वकालत की। जब कहीं भी प्रैक्टिस न चली, तब हैदराबादके प्रधान मंत्री महाराजा किशनप्रसाद ‘शाद’ने महरबानी फ़रमाकर हैदराबाद बुला लिया। मगर वहाँ भी अभाग्यने साथ नहीं छोड़ा। वहाँ जाकर जिन असुविधाओं और विघ्न-वाधाओंका सामना करना पड़ा होगा, उसका कुछ आभास निम्न पत्रसे होता है, जो कि उन्होंने २८ जून १६३३को अपने एक सम्बन्धीको लिखा था—

“मेरा तक्रर (नियुक्ति) नहीं हुआ है, देखिये कब होता है ? और कहाँ ? या ग़ालिबन होता भी है या नहीं।”

‘फ़ानी’को वहाँ मुल्की और ग़ैरमुल्की भगड़ोंके कारण भी परेशानी उठानी पड़ी।^१ आखिर राम-राम करके फ़ानी-जैसे शायरको वहाँके एक हाईस्कूलकी हेडमास्टरी नसीब हुई।

इसी अर्सेमें उनकी जीवन-संगिनी और युवा पुत्री चल बसीं। यहाँ तक कि उनके वहाँ एकमात्र हितैषी महाराजा किशनप्रसाद भी स्वर्गस्थ हो गये। इसे भाग्य-रेखके अतिरिक्त और क्या कहा जाय ? बक़ौल ‘जिगर’ मुरादाबादी—

‘हैदराबादमें यह प्रान्तीय भावना बहुत पुरानी है। सरकारी नौकरियोंमें मुसलमानोंको तो तरजीह दी ही जाती रही है, लेकिन वहाँके मुसलमान भी यह बर्दाश्त नहीं करते थे कि उनके यहाँ कोई अन्य प्रान्तीय आये। हैदराबादसे बाहरके लोगोंको वहाँ ‘ग़ैरमुल्की’ समझा जाता है। मिर्ज़ा ‘दाग़’की नियुक्तिपर भी यह एतराज़ उठा था। आज भी वह रोग ज्यों-का-त्यों बना हुआ है।

मेरे गमखानये-मुसीबतकी ।

चाँदनी भी सियाह होती है ॥

आजीविकाकी खोजमें—लखनऊ, बरेली, इटावा, आगरा, हैदराबाद—
न जाने कहाँ-कहाँकी खाक छानी । जहाँ भी गये असफलताओं और निरा-
शाओंने आगे बढ़कर स्वागत-सत्कार किया । ‘फ़ानी’ भावुक थे, तनिक-
तनिक-सी बातें उनके दिलपर चरका पहुँचाती थीं । और दिल जब ज़रुमी
होता है तो बक्रौल ‘सीमाव’—

सितारोंकी चमकसे चोट लगती है रगे-जाँपर

हैदराबादमें जिसप्रकार उन्होंने दिन गुज़ारे, उनके बारेमें वहाँके
पत्र ‘पयाम’ने लिखा था—

“इस सरज़मीनपर शायद ही कोई ऐसा साहबे-कमाल इस कसम-
पुरसीकी हालतमें दफ़न हुआ हो, जिस हालतमें ‘फ़ानी’ने अपनी ज़िन्दगीके
चन्द आखिरी साल गुज़ारे ।”

शेरगोईका शौक ‘फ़ानी’को ग्यारह वर्षकी अवस्थामें ही हो गया
था । यानी सबसे पहली गज़ल आपने १८९० ई०में कही और २० वर्षकी
आयुमें दीवान मुकम्मिल हो गया था । अफ़सोस कि वह नष्ट हो गया ।
१९०६में दूसरा दीवान तैयार किया तो वह भी पहले दीवानकी तरह
गुम हो गया । आखिर दिल बैठ गया और १९१७ तक ‘फ़ानी’ दुनियाए
शायरीसे रूपोश रहे । इसके बाद जलवागर हुए तो उनका पहला दीवान
बदायूँसे छपा । दूसरा दीवान ‘बाक़ियाते फ़ानी’ १९२६में और शेष कलाम
‘वजदानियात’ १९४०में प्रकाशित हुआ । बक्रौल किसीके—

“लुफ़तरीन अहसासात रखते हुए तबाहियों और बरबादियोंका
मुसलसल (निरन्तर) शिकार होना और फिर ज़िन्दा भी रहना एक
इन्सानको फ़ानी न बना दे तो और क्या तबक्कोह (आशा) हो सकती
है ? हवादस-ओ-सदमात (मुसीबतें और रंजोगम) इन्तदामें दर्दनाक

भी मालूम होते हैं, और नाक्राबिले बरदाश्त भी। इन्सान चीखता भी है और आँसू भी बहा लेता है। लेकिन उस हिरमाँ-नसीब (असफल-निराश व्यक्ति) को क्या कहिए? जिसके आँसू भी इन मृतवातिर और पैहम (लगातार-निरन्तर) चोटोंसे खुश्क हो जाते हैं। फिर उसकी मुसकराहट भी 'आह' बन जाती है। और यास (निराशा) में उसको लुत्फ भी आता है। चुनाँचे किसी मातमकदे (शोक-गृह) के नौहा (मातम) करने-वालेसे अगर तराने-शादयाने (मंगलवाद्य) की तवक्कोह (आशा) नहीं की जा सकती तो 'फ़ानी' की शायरी भी यासया (निराशावादी) शायरी ही हो सकती थी।"

फ़ानीने जब होश मँभाला तो लखनवी शायरीसे कंधी, चोटी, सुरमा-मिस्सी, चोली-दामन बिदा हो गये थे। लखनऊ की नवाबी मिट चुकी थी। इसलिए रंगीन और ज़नानी शायरी की जगह मर्सिया ले रहा था। लखनऊ के उरुज के दिनों में वहाँ के शायरों ने जिस तत्परतासे रंगीन एवं खारजी शायरी के नोक-पलक सँवारे थे, उसी तेज़ीसे मर्सिया के मैदान में भी कूदे। जिस घर में शादी के नगमोंसे कान पड़ी आवाज़ सुनाई न देती हो, उस घर में अकस्मात् दुर्घटना होने पर क्रन्दन भी आकाशभेदी उठता है। मर्सियागोई रंगीन शायरी की प्रतिक्रिया थी, और यह स्वाभाविक भी था। उन दिनों लखनवी शायरों को रंजो-नाम गिरय-ओ-मातम, गोरे-गरीबाँ और यासो-हिरमाँ के अतिरिक्त कुछ सूझता ही न था। यहाँ तक कि गज़ल में भी मर्सियतका रंग चढ़ रहा था। रंगीन शायरी की तरह इसमें भी लखनवी शायरों ने तकल्लुफ़ और कृत्रिमता को हाथसे नहीं छोड़ा।

फ़ानी की प्रकृति इस वातावरण के अनुकूल थी। वे इस रंगसे काफ़ी प्रभावित हुए। यद्यपि प्रारम्भ में वे ग़ालिब के अनुयायी नज़र आते हैं, किन्तु लखनवी मर्सियतका वातावरण उनके अधिक अनुकूल रहा। अतः करूणा-व्यथा भरे बोल उनके मुँहसे अनायास निकलने लगे।

यहाँ तक कि इस पृथ्वी का स्वर्ग काश्मीर भी उनके हृदय-कमल को

नहीं खिला सका, वहाँका प्रसिद्ध 'निशातबाग' भी उन्हें फर्सूदा (कुम्हलाया हुआ) नज़र आया—

इस बाग़में जो कली नज़र आती है ।
तसवीरे-फ़सुर्दगी नज़र आती है ॥
कश्मीरमें हर हसीन सूरत 'फ़ानी' ।
मिट्टीमें मिली हुई नज़र आती है ॥

फूलोंकी नज़र-नवाज़ रंगत देखी ,
मख़लूककी दिल-गुदाज़ हालत देखी ,
कुदरतका करिश्मा नज़र आया कश्मीर ,
दोज़ख़में समोई हुई जन्नत देखी ॥

उनकी पत्नी और पुत्री मिट्टीमें मिल जायें और उनका घर जिसे वह जन्नत बनाना चाहते थे, दोज़ख़ बन जाये; तब हर हसीन सूरत उन्हें मिट्टीमें मिली हुई और 'जन्नत' दोज़ख़में समोई हुई दिखाई न दे तो और क्या दे? यही व्यथा-भरा अलाप धीरे-धीरे वह रूप लेता गया, जिसे आज 'फ़ानी'की शायरी कहा जाता है। व्यथा रूपी दीमकसे खाये हुए उनके मनसे यही ध्वनित होगा, चाहे वह काश्मीरमें रहें या हैदराबाद-में—

दरमें या हरममें गुज़रेगी ।
उम्र तेरे ही ग़ममें गुज़रेगी ॥

और धीरे-धीरे 'फ़ानी' रंज-ओ-ग़मके इतने आदी हो गये हैं कि उन्हें सुख-चैनका तो ख़्वाबो-ख़याल भी नहीं आता। उन्हें तो अब यही आशंका खाये जाती है कि दुःखसे भरे-पूरे दिन उनके जो व्यतीत हो रहे हैं, वोह भी दुर्दैव कहीं उनसे छीन न ले।

हाँ नाखुने-ग़म कमी न करना ।

डरता हूँ कि ज़ख्मे-दिल न भर जाये ॥

और इस दुःखको वे मर्दानावार आमन्त्रण देते हैं—

ग़ैरत हो तो ग़मकी जुस्तजू कर ।

हिम्मत हो तो बेकरार हो जा ॥

और इस ग़मको वे अपना सर्वस्व समझते हुए सगर्व कहते हैं—

चुन लिया तेरी मुहब्बतने मुझे ।

और दुनिया हाथ मलकर रह गई ॥

‘फ़ानी’ने मर्सियतसे बहुत जल्द कनाराकशी करके अपना जुदागाना—
रंग अख्तियार कर लिया । कहीं उनके यहाँ ग़ालिब-जैसी दार्शनिकता,
और कहीं ‘मीर’-जैसा सोज़ोगुदाज़ पाया जाता है । इश्क़िया रंगमें
भी उन्होंने अपनी मौलिक प्रतिभाका परिचय दिया है ।

हूँ असीरे-फ़रेबे-आज़ादी^१ ।

पर हूँ और मश्क़े-हीलये-परवाज़^२ ॥

इश्क़ है परतवे-हुस्ने-महबूब^३ ।

आप अपनी ही तमन्ना क्या खूब ॥

अब लबपै वोह हंगामये-फ़रियाद नहीं है ।

अल्लाहरे तेरी याद कि कुछ याद नहीं है ॥

हमको मरना भी मयस्सर नहीं जीनेके बग़ैर ।

मौतने उम्मे-बो रोज़ाका बहाना चाहा ॥

^१स्वतन्त्रताके धोकेका कैदी; ^२पर होते हुए भी न उड़नेके लिए
बहाना ढूँढना; ^३प्रेयसीके सौन्दर्यका प्रतिबिम्ब ।

बिजलियाँ शाखे-नशेपनपे बिछी जाती हैं ।
 क्या नशेमनसे कोई सोलता-सामा^१ निकला ?
 'फ़ानी'की ज़िन्दगी भी क्या ज़िन्दगी थी या रब !
 मौत और ज़िन्दगीमें कुछ फ़र्क चाहिए था ॥

फ़ानीके चन्द मक्ते—

किसीके ग़मकी कहानी है ज़िन्दगीए-‘फ़ानी’ ।
 ज़माना एक फ़साना है, मेरे नालोंका ॥
 छाके-‘फ़ानी’की क़सम है, तुझे ऐ दशते-जुनूँ !
 किससे सीखा तेरे ज़रने बयाबाँ होना ?
 चमनसे रुखसते ‘फ़ानी’ करीब है शायद ।
 कुछ अबकी बूए-कफ़न दामने-बहारमें है ॥
 किसकी क़श्ती तहे-गरदाबे-फ़ना^२ जा पहुँची ?
 यकबयक शेर जो ‘फ़ानी’ लबे-साहिलसे^३ उठा ॥

आज रोज़े-विसाल ‘फ़ानी’ है ।
 मौतसे हो रहे हैं नाज़ो-नियाज़ ॥

‘बाक़याते फ़ानी’ और ‘वजदानियत’ शीर्षक उनके दो संकलनोंसे उनके सभी रंगके अश्रुआर पेश किये जा रहे हैं—

तूने करम किया तो ब-उनवाने रंजेज़ीस्त ।
 ग़म भी मुझे दिया तो ग़मे-जाबिदाँ न था ॥
 आ गई है तेरे बीमारके मुंहपर रौनक ।
 जान क्या जिस्मसे निकली, कोई अरमाँ निकला ॥

^१दग्धहृदय; ^२मृत्यु-दरियाके तलेमें; ^३किनारेसे ।

रस्मेखुदारीसे गो वाक्किफ़ न थी दुनिया-ए-इश्क ।
फिर भी अपना जलमेदिल शरमिन्द-ए-मरहम न था ॥

मज्जाक़े-तलख़पसन्दी न पूछ, उस दिलका—
बग़ैर मर्ग जिसे जीस्तका मज्जा न मिला ॥
मेरी हयात है महरूमे-मुद्दा-ए-हयात ।
वोह रहगुज़र हूँ जिसे कोई नक़शेपा न मिला ॥

यूँ सबको भुला दे कि तुझे कोई न भूले ।
दुनिया ही में रहना है तो दुनियासे गुज़र जा ॥

क्या-क्या गिले न थे कि इधर देखते नहीं ।
देखा तो कोई देखनेवाला नहीं रहा ॥

एक आलमको देखता हूँ मैं ।
यह तेरा ध्यान है मुजस्सिम क्या ॥

फ़ुरसते-रंजेअसीरी दी न इन धड़कोंने हाय ।
अब छुरी सैयादने ली, अब क़फ़सका दर खुला ॥

मंजिलेइश्कपै तनहा पहुँचे कोई तमन्ना साथ न थी ।
थक-थककर इस राहमें आख़िर इक-इक साथी छूट गया ॥

रफ़त-ए-नज़र^१ हो जा, सबसे बेख़बर हो जा ।
खुल गया है राज़^२ अपना खुल न जाये राज़ उनका ॥

फ़रेबेजलवा और कितना मुकम्मिल ऐ मुआज़ल्लाह ।
बड़ी मुश्किलसे दिलको बज्मे-आलमसे उठा पाया ॥

^१उपेक्षित दृष्टि; ^२भेद ।

हाथ क्या दिन हैं कि नक्शे-सजदा है और सर नहीं ।
याद है वोह दिन कि सर था और वबालेदोश^१ था ॥

निगहे-कहर खास है मुझपर ।
यह तो अहसाँ हुआ सितम न हुआ ॥
अब करम है तो यह गिला है मुझे ।
कि मुझीपर तेरा करम न हुआ ॥

गुलमें वोह अब नहीं है जो आलम था खारका ।
अल्लाह क्या हुआ वोह जमाना बहारका ॥

‘तिनकोसे खेलते ही रहे आशियाँमें हम ।
आया भी और गया भी जमाना बहारका ॥’

उसको भूले हुए तो हो ‘फ़ानी’ !
क्या करोगे अगर वोह याद आया ॥

घर खैरसे तक्रदीरने वीराना बनाया ।
सामाने-जुनूँ^२ मुझसे फ़राहम^३ न हुआ था ॥

बालीपै^४ जब तुम आये तो आई वोह मौत भी ।
जिस मौतके लिए मुझे जीना जरूर था ॥
थी उनके सामने भी वही शाने-इज्तराब^५ ।
दिलकी भी अपनी वज्रअपै कितना गरूर था ॥

बा-ख़बर हैं वोह सबकी हालतसे ।
लाओ हम पूछ लें न हाल अपना ॥

^१कन्धोंका वोझ; ^२उन्मादका सामान; ^३एकत्र; ^४बीमारके सिरहाने; ^५तड़पनेकी शान ।

अल्लाहरे एतमादेमुहब्बत^१ कि आजतक ।
हर दर्दकी दवा हैं वोह अच्छा किये बाँर ॥
निगाहें ढूँढ़ती हैं दोस्तोंको और नहीं पातीं ।
नज़र उठती है जब जिस दोस्तपर पड़ती है दुश्मनपर ॥

न इब्तदाकी ख़बर है न इन्तहा मालूम ।
रहा यह वहम कि हम हैं, सो वोह भी क्या मालूम ?
यह ज़िन्दगीकी है रूदादे-मुस्तसिर^२ 'फ़ानी' !
वजूदे-दर्देमुसल्लिम,^३ इलाज ना मालूम ॥

किस ज़ोममें है ऐ रहरवेगम^४ ! धोकेमें न आना मंज़िलके ।
यह राह बहुत कुछ छानी है, इस राहमें मंज़िल कोई नहीं ॥

हाँ ऐ यक़ीनेवादा ! दामन तेरा न छूटे ।
यह आसरा न टूटे वोह आयें या न आयें ॥

दिलमें आते हुए शरमाते हैं ।
अपने जलबोंमें छुपे जाते हैं ॥

ना महरबानियोंका गिला तुमसे क्या करें ?
हम भी कुछ अपने हालपै अब महरबाँ नहीं ॥

तसकीन^५ अजीब चाहता हूँ ।
दुश्मनका नसीब चाहता हूँ ॥

गम भी गुज़श्तनी^६ है खुशी भी गुज़श्तनी ।
कर गमको अस्तयार कि गुज़रे तो गम न हो ॥

^१प्रेम-विश्वास; ^२संक्षिप्त कहानी; ^३दर्द पूर्णरूपेण है;
^४गमकी राहपर चलनेवाले; ^५चैन; ^६नाशवान !

बहार लाई है पैगामे-इनकलाबे-बहार ।

समझ रहा हूँ मैं कलियोंके मुसकरानेको ॥

काफ़िर सूरत देखके मुँहसे आह निकल ही जाती है ।

कहते क्या हो ? अब कोई अल्लाहका यूँ भी नाम न ले ॥

गो नहीं जुझ-तर्क-हसरत^१ दर्दहस्तीका^२ इलाज ।

आह वोह बीमार जो आजुर्द-ए-परहेज^३ है ॥

अहले-ख़िरदमें^४ इश्ककी रसवाइयाँ न पूछ ।

आने लगी है ज़िन्ने-बफ़ासे हया मुझे ॥

या रब ! नवाये-दिलसे^५ तो कान आश्ना-से^६ हैं ।

आवाज़ आ रही है, यह कबकी सुनी हुई ॥

तर्क-तदबीरको भी देख लिया ।

यह भी तदबीर कारगर न हुई ॥

यूँ मिली हर निगाहसे वोह निगाह ।

एककी एकको खबर न हुई ॥

आज तस्कीने दर्ददिल 'फ़ानी' !

वह भी चाहा किये मगर न हुई ॥

उनके तो दिलसे नक्शे-कुदूरत^७ भी मिट गया ।

हम शार्द^८ हैं कि दिलमें कुदूरत नहीं रही ॥

ज़िन्दगी खुद क्या है 'फ़ानी' यह तो क्या कहिये मगर ।

मौत कहते हैं जिसे वोह ज़िन्दगीका होश है ॥

^१अभिलाषाओंके त्यागके अतिरिक्त; ^२जीवन-व्यथाका; ^३परहेज करते-करते दुखी; ^४अकलमन्दोंमें; ^५दिलकी आवाज़से; ^६परिचित-से; ^७द्वेष-भाव; ^८प्रसन्न ।

न दिलके ज़र्फ़को^१ देखो न तूरको^२ देखो ।
बलाकी धुन है तुम्हें बिजलियाँ गिरानेकी ॥
कलतक जो तुमसे कह न सका हाले-इस्तराब^३ ।
मिलती है आज उसकी खबर इस्तराबसे ॥

मुद्दआ है कि मुद्दआ न कहूँ ।
पूछते हैं कि मुद्दआ क्या है ?

दुश्मने-जाँ थे तो जाने-मुद्दआ क्यों हो गये ?
तुम किसीकी ज़िन्दगीका आसरा क्यों हो गये ?

ज़िन्दगी यादे-दोस्त है यानी—
ज़िन्दगी है तो ग़ममें गुज़रेगी ॥

आपने अहद किया है मेरी ग़मख़्तवारीका ।
अब इजाज़त हो तो यह अहद मुझे याद रहे ॥
मरके टूटा है कहीं सिलसिलये क़ंदे-हयात ?
मगर इतना है कि जंजीर बदल जाती है ॥
शेवये-आशिक़ी नहीं हिज़्रमें आरज़ूए-मर्ग ।
हाँ नहीं ज़िन्दगी अज़ीज़, मौत ही ज़िन्दगी सही ॥
जीने भी नहीं देते मरने भी नहीं देते ।
क्या तुमने मुहब्बतकी हर रस्म उठा डाली ?

तर्क-उम्मीद बसकी बात नहीं ।
वरना उम्मीद कब बर आई है ॥

^१पात्रताको; ^२एक पर्वतका नाम; ^३तड़पकी खबर ।

मौजोंकी सयासतसे मायूस न हो 'फ़ानी' !
गरदाबकी हर तहमें साहिल नज़र आता है ॥

फूँटोंसे तअल्लुक तो, अब भी है मगर इतना ।
जब ज़िक्रे-बहार आया, समझे कि बहार आई ॥

कर खूये-जफ़ा न यक-बयक तर्क ।
क्या जानिये मुझपै क्या गुज़र जाये ॥

वोह हमसे कहाँ छुपते ? हम खुद हैं जवाब उनका ।
महमिलमें जो छुपते हैं, छुपते नहीं महमिलसे ॥

हर राहसे गुज़रकर दिलकी तरफ़ चला हूँ ।
क्या हो जो उनके घरकी यह राह भी न निकले ॥
शिकवा न कर फ़ुगाँका, वोह दिन खुदा न लाये ।
तेरी जफ़ापै दिलसे जब आह भी न निकले ॥

लो तबस्सुम भी शरीके-निगहे-नाज़ हुआ ।
आज कुछ और बढ़ा दी गई क्रीमत मेरी ॥

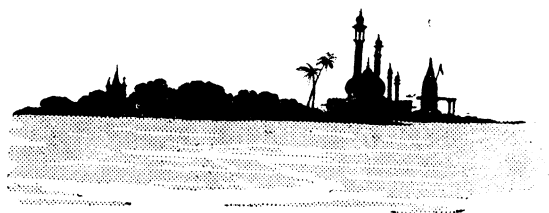
दो घड़ीके लिए मीज़ाने-अदालत ठहरे ।
कुछ मुझे हश्ममें कहना है खुदासे पहले ॥

गुल दिये थे तो काश फ़स्ले-बहार ।
तूने काँटे भी चुन लिये होते ॥

चौक पड़ते हैं ज़िक्रे 'फ़ानी'से ।
नींद उचटती है इस कहानीसे ॥

बेजौक्रेनज़र बज़्मे-तमाशा न रहेगी ।
मूँह फेर लिया हमने तो दुनिया न रहेगी ॥

पछतायेंगे आप दिलको लेकर ।
 कमबख्त गमआश्ना बहुत है ॥
 जिन्दगीकी दूसरी करवट थी मौत ।
 जिन्दगी करवट बदलकर रह गई ॥
 क्या बला थी अदाये-पुरसिशेयार ।
 मुझसे इजहारे-मुद्दा न हुआ ॥
 तेरे फ़िराकमें हालत तबाह-सी है तबाह ।
 न दिलपै हाथ न अब सूए-आसमाँ है निगाह ॥
 रस्मे-बेदादे-डोस्त आम हुई ।
 तल्लिये-जीस्त भी हराम हुई ॥
 करमे-बेहिसाब चाहा था ।
 सितमे-बेहिसाबमें गुजरी ॥
 मिजाजेदहरमें उनका इशारा पाये जा ।
 जो हो सके तो बहरहाल मुसकराये जा ॥
 तू कहाँ है कि तेरी राहमें यह काबा-ओ-दैर ।
 नक्श बन जाते हैं मंजिल नहीं होने पाते ॥
 १४ मई १९५२ ई०]



काबा-ओ-दैर

'वहशत' कलकत्तवी

[१८८१—..... ई०]



वहशत १८ नवम्बर १८८१ में जन्मे, कलकत्ते के आप निवासी हैं और भारत-विभाजन के बाद पूर्वी पाकिस्तान चले गये हैं। १९११ ई० में आपका दीवान प्रकाशित हुआ था। आप इस्लामिया कालेज कलकत्ते में उर्दू के प्रोफेसर रह चुके हैं। १९३१ ई० में अंग्रेज सरकार से खानबहादुरी का खिताब भी मिला था। आपका कलाम पुरुता और गहराई लिये हुए होता है।

अभी तो तेरी मायूसी से इत्मीनान है ऐ दिल !
मुझे उस वक्त होगा खौफ जब तू शादमां होगा ॥

फिर नवाजिश आपकी हृद से जियादा हो गई ।
फिर दिले-आफ़तरसीदा बदगुमां होने लगा ॥

मुझे अब तानये-अफ़सुर्वंगी देता है तू ऐ दिल !
कभी तूफ़ान था मैं भी जमाना यादकर मेरा ॥

किसी से कहती है चितवन किसीकी ।
“कि तू क्या और तेरा मुद्दा क्या ॥”

निशाने-मंजिले-जानाँ मिले-मिले-न-मिले ।

मजेकी चीज हैं यह जौके-जुस्तजू मेरा ॥

हैं नजरबाजोंमें हलचल, सब हैं गरमे-जुस्तजू ।

वोह परी है कौन 'वहशत' जिसका दीवाना हुआ ॥

दिलके कहनेपै चलूँ अक्लका कहना न करूँ ।

मैं इसी सोचमें हूँ, क्या करूँ और क्या न करूँ ॥

जरूरत तुमको क्या मुझसे तकल्लुफ़की तबाज़अकी ।

यही अन्दाज़ वोह हैं जो मुझे मायूस करते हैं ॥

इस दिलनशीं अदाका मतलब कभी न समझे ।

जब हमने कुछ कहा है, वोह मुसकरा दिये हैं ॥*

कुछ शोख़ कर दिया है, छेड़ोंसे हमने तुमको ।

कुछ हौसले हमारे तुमने बढ़ा दिये हैं ॥

निशाने-ज़िन्वगि-ए-दिल है, बेकरारिये-दिल ।

है दिलकी मौत अगर चैन आ गया दिलको ॥

आप अपना रूपे-ज़ेबा देखिये ।

या मुझे महबे-तमाशा देखिये ॥

जिससे चाहो पूछ लो तुम मेरे सोजे-दिलका हाल ।

शमअ भी महफ़िलमें है; परवाना भी महफ़िलमें है ॥

*इसी खयालको 'सबा' अकबराबादीने किस खूबीसे व्यक्त किया है—

ग़लतफ़हमियोंमें जवानी गुजारी ।

कभी वोह न समझे कभी हम न समझे ॥

अब खफ़ा होने लगे हो मुझसे हर-हर बातमें ।
तुम कि हो जाते थे दुश्मनसे खफ़ा मेरे लिए ॥

दोनोंने किया है मुझको रसवा ।
कुछ दर्दने और कुछ दवाने ॥

हँसा हूँ हालपर अपने जहाँ रोकनेका मौक़ा था ।
किया है शुक्रे परदेमें किस्मतका गिला मैंने ॥

है हिदायतके लिए मौजूद खुद तेरा जमीर ।
गोशे-दिलसे सुन हकीक़तकी यही आवाज़ है ॥

वोह आयें या न आयें, उन्हें अख़्तियार है ।
ऐ जोक़े-इन्तज़ार मैं खुश हूँ कि तू तो है ॥

परवानेकी है मौतपर ऐ शमअ ! मुझको रश्क ।
तेरा शहीदेनाज़ तेरे रूबरू तो है ॥

हो रसाई क्या वहाँतक बस इक आसरा यही है ।
कि उन्हींको याद आये कभी अपने नातवाँकी ॥

निगार जनवरी १९४१

अल्लाहरे-जोरे मजबूरी खुद मुझको हैरत होती है ।
जो बार उठाना पड़ता है, क्योंकर वोह उठाया जाता है ॥
यह भी है तमाशा उल्फ़तका, जो बात है वोह नादानीकी ।
मंज़ूर नहीं है रब्त जिन्हें, रब्त उनसे बढ़ाया जाता है ॥

सरेबालीं ज़रा आजाओ तुम बीमारे-हिज़राँके ।
कि इक हिचकीमें वोह कह दे कहानी ज़िन्दगी भरकी ॥

निगाहे-नाज़ तेरी मेरे हुक़म इक मुअम्मा हैं ।
समझही में नहीं आता कि क्या इरशाद होता है ॥

गो में हूँ तुझसे दूर तेरी आरजू तो है ।
तेरा पता मिले-न-मिले जुस्तजूं तो है ॥

बारहा बे इल्तफ़ाती देखकर सैयादकी ।
खुद-ब-खुद बेताब होकर मैं तहे-दाम आ गया ॥

२० मई १९५२ ई०]



सैयाद



'यगाना' चंगेजी

[१८८४—.....ई०]

मिर्जा वाजिदहुसैन 'यगाना' चंगेजखाँके वंशजोंमें-से हैं। आपके पूर्वज ईरानसे भारत आये थे और तत्कालीन सल्तनतकी तरफसे पटने (अज्मीमाबाद)में कुछ जागीर प्रदान किये जानेपर वहीं बस गये थे। वहीं आपका १८८४ ई०के लगभग जन्म हुआ। उर्दू-फ़ारसीकी शिक्षाके अतिरिक्त १९०३में आपने मैट्रिक परीक्षा भी पास की। स्कूलमें सदैव प्रथम रहे और वज्जीफ़े, तमग़े, इनाम आदि हमेशा पाते रहे।

शायरीमें आपको 'शाद' अज्मीमाबादी-जैसे बड़े उस्तादका शिष्य होनेका गौरव प्राप्त हुआ। १९०५ ई०में आप स्वास्थ्य-सुधारकी दृष्टिसे लखनऊ गये थे, वहाँका वातावरण आपको इतना पसन्द आया कि वहीं सकूनत अख्तियार कर ली और १९१३ ई०में वहीँके एक प्रतिष्ठित परिवारकी कन्यासे शादी भी हो गई। उन दिनों आप 'यास' उपनामसे शायरी करते थे और 'यास' अज्मीमाबादी नामसे प्रसिद्ध थे।

जिन दिनों आप लखनऊ पहुँचे, उन दिनों लखनऊसे 'नासिख' और 'अमीर मीनाई'का रंग तो उड़ चुका था, मगर 'मीर'-ओ-'शालिब'की शमो-दर्दवाली शायरीका असफल अनुकरण हो रहा था। मर्सियाकी शायरीका बोल-बाला था। जिसे देखो वही रोने-बिसूरनेकी शायरीमें

लीन मालूम होता था। यह ग़लत अनुसरण 'यास'को न भाया, 'यास'ने मुशायरोंमें शिरकत फ़र्माकर और अख़बारोंमें निरन्तर लिखकर अपने रंगकी धूम मचा दी। आपके कलाममें 'मीर'-ओ-'आतिश'के रंगकी पुट होती थी। कहनेका और बयान करनेका अपना निजी अन्दाज़ था। चन्द ही दिनोंमें 'यास'का तूती बोलने लगा। लखनवी उस्तादोंको यह कब सहन हो सकता था, उन्होंने बहुत जोरोंसे मुख़ालफ़त शुरू कर दी। 'यास' इन विरोधोंसे कब दबनेवाले थे। 'यास'ने हार मानना कभी सीखा ही नहीं। आप स्वभावतः जिद्दी, स्वाभिमानी और अहमन्य हैं। अतः आपने डटकर मुक़ाबिला ही नहीं किया, अपितु वोह दन्दान शिकन जवाबी हमले किये कि रहे नाम साईका।

उन्हीं दिनों आपका 'नश्तरे-यास' प्रकाशित हुआ तो लखनवी उस्ताद और भी चराग़-पा हो गये। परिणामस्वरूप कागज़ी जंग छिड़ गई। १९१५ ई०में आपने शायरी सम्बन्धी एक पत्रका प्रकाशन प्रारम्भ किया तो दबी आग फिर भड़क उठी। लेकिन मिर्ज़ाने तनिक भी चिन्ता न की और अपनी टेकपर बराबर अडिग रहे।

इस निरन्तरके विरोध, उपेक्षा, घृणा आदिके कारण मिर्ज़ामें एक विचित्र प्रकारकी प्रतिक्रिया अंकुरित हो उठी। आप प्रारम्भमें मिर्ज़ा 'ग़ालिब'के प्रशंसक थे, किन्तु लखनवी उस्तादोंकी अन्धी श्रद्धा-भक्ति और असफल अनुकरणकी प्रतिक्रिया स्वरूप आप मिर्ज़ा ग़ालिबके घोर विरोधी बन बैठे। यहाँतक कि मिर्ज़ा ग़ालिब आपके जन्मसे पूर्व ही परलोक सिधार चुके हैं, और उम्रके लिहाज़से भी आपके दादाकी उम्रोंके रहे होंगे, फिर भी आप अपनेको 'ग़ालिब'का चचा अथवा ग़ालिब-शिकन कहने लगे और यह प्रतिक्रिया यहाँतक बढ़ी कि आपने सैकड़ों ग़ज़लोंमें इन शब्दोंका प्रयोग किया है, और करते रहते हैं। यथा—

भोण्डापन है मज़ाक्के-ग़ालिबमें रचा।

मिर्ज़ाका कलाम अपनी न नज़रोंमें जचा ॥

महफ़िलमें है अब रंगे-‘यगाना’ गालिब ।

बोह कौन ‘यगाना’ ? वही ‘गालिब’के चचा ॥

‘यास’के बजाय अब ‘यगाना’ उपनामसे शेर कहने लगे । निरन्तरके विरोधोंके कारण लखनऊका वातावरण इतना विषाक्त हो गया कि आप लाहौर चले गये और वहाँ उर्दू-साहित्यके प्रसिद्ध सम्पादकाचार्य तथा आलोचक मौलाना ताजवर नजीबाबादीके साथ साहित्यिक अनुष्ठानमें लग गये । वहाँ भी पंजाबियोंकी प्रान्तीय भावनाओंके कारण आप स्थिर न रह सके और लखनऊ लौट आना पड़ा । लखनऊ पहुँचनेपर अहले लखनऊके पुराने ज़रूम फिर हरे हो गये, और वे आपको हर तरहसे मिटानेको कटिबद्ध हो गये । आखिर महाराजा किशनप्रसाद ‘शाद’ प्रधान मंत्रीके निमंत्रणपर आप हैदराबाद चले गये और वहाँ किसी ज़िलेमें सब-रजिस्ट्रार बना दिये गये ।

मिर्जा ‘यगाना’ सर्वधर्म समभावी हैं । साम्प्रदायिकतासे कोसों दूर हैं । फ़र्माया है—

कृशनका^१ हूँ मैं पुजारी अलीका बन्दा हूँ ।

‘यगाना’ शानेख़ुदा देखकर रहा न गया ॥

मिर्जा किसी बाहरी ख़ुदाके क़ायल नहीं, वह तो अपने मनमन्दिरके पुजारी हैं । जो ईश्वर अपने घटमें विराजमान है, उसे बाहर खोजना सरासर भूल है—

आपसे बाहर चले हो ढूँढ़ने ।

आह ! पहला ही क़दम भ्रूण पड़ा ॥

दिखावटी पूजा-उपासनासे आपको बेहद चिढ़ है—

कलमा पढ़ूँ तो क्यों पढ़ूँ, सबकी नज़रपे क्यों चढ़ूँ ?

यादे-ख़ुदा तो दिलसे है, दिलसे ज़बाँतक आये क्यों ?

^१शुद्ध नाम कृष्ण ।

मिर्जा मजहबी दीवानगीको इन्सानियतके लिए बोझ समझते हैं—

दुनियाके साथ दीनकी बेगार ! अलअमाँ ।

इन्सान आदमी न हुआ जानवर हुआ ॥

और पुरुषार्थ छोड़कर जो हाथपर हाथ धरे ईश्वरके भरोसे बैठनेके आदी हैं, उनके समक्ष ईश्वरकी सर्वशक्तिमानताकी निःसारता बताते हुए फर्माया है—

आईको टाल दे जभी जानें ।

दम-ब-खुद है तो फिर खुदा क्या है ॥

छैल-छबीले विलासी युवकोंपर कितना मीठा व्यंग किया है—

वक्त जिसका कटे हसीनोंमें ।

कोई मर्दाना काम क्या करता ?

यह नौजवानी, यह नामुरादी ।

छाई है मुंहपर यह मुर्दनी क्या ॥

मिर्जा सबके हितमें अपना हित समझते हैं । वे आपा-धापीके कायल नहीं । यहाँतक कि वह एक ही नावमें बैठे मुसाफ़िरोंको डूबते देखकर स्वयं भी डूब जाना श्रेष्ठ समझते हैं—

मुझे ऐ नाखुदा ! आखिर किसीको मुंह दिखाना है ।

बहाना करके तनहा पार उतर जाना नहीं आता ॥

महात्मा गांधी जीवनभर हिन्दू-मुस्लिम एक्यका प्रयत्न करते रहे, परन्तु साम्प्रदायिक लोग सदैव अड़ंगा लगाते रहे, इसी भावको मिर्जा यूँ व्यक्त करते हैं—

मुलह ठहरी तो है बिरहमनसे ।

कहीं मजहब अड़ा न दे कोई टाँग ॥

इन्सान, इन्सानके आगे हाथ फैलाये, इस दयनीय स्थितिसे खीजकर मिर्जाको कहना पड़ा—

ख्वाह प्याला हो या निवाला हो ।

बन पड़े तो झपट ले, भीक न माँग ॥

ईश्वर और खुदाके नामपर संसारमें जैसे बीभत्स कृत्य हुए हैं, वैसे कार्य नारकीयों, दोखियों और दरिन्दोंसे होने सम्भव ही नहीं। धर्म-मजहबकी रक्षाके लिए जितने मानवोंकी हत्यायें होती रही हैं, यदि उन सबकी हड्डियाँ एकत्र की जा सकतीं तो मुमेर पर्वतको अपनी इस ऊँचाईका इस कदर गर्व न रहता। ईसाइयोंके रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टैण्टोंका पारस्परिक वध, आस्तिकों द्वारा नास्तिकोंका विध्वंस, और अहले इस्लामका शेर इस्लामियोंके खिलाफ जहाद, पुराने पोथोंमें पड़े कराह रहे थे कि भारत-विभाजनके वक्त ईश्वर-खुदाके लाड़ले बेटोंने उनके नामपर जो लाखों मनुष्योंकी बलि दी हैं और लाखों नारियोंकी जो अस्मत्तदरी की है, उसके समक्ष दरिन्दोंकी क्रूरता भी पानी-पानी हो गई। स्वयं खुदा भी यह महसूस करने लगा होगा कि मैंने दुनिया बनाकर घोर अपराध ही किया है—

तखलीक़े-कायनातके दिलचस्प जुर्मपर ।

हँसता तो होगा आप भी यज़दाँ कभी-कभी ॥

—अदम

ऐसे ही मजहबी उन्मादसे तंग आकर मिर्जा 'यगाना'ने अपने किसी मुसलमान दोस्तको कुछ ऐसे शब्द लिख दिये, जो इस्लामके लिए अपमान जनक समझे गये। वस फिर क्या था ? खुदाके बन्दों और रसूलके इन लाड़लोंने ७० वर्षके बूढ़े यगानाको घेर लिया। तारकोलसे मुँह काला करके, जूतोंका हार डालकर उनको गधेपर बिठाना चाहा; मगर गधेको

मनुष्योंकी यह हरकत पसन्द न आई, और वह स्वयं शर्माकर भाग खड़ा हुआ। इस वाक्यसे मजहबी दीवाने क्या सबक लेते, उनका इन्तक़ाम और भड़क उठा, और उन्होंने एक और गधेको पकड़कर रिक्शामें जोता और मिर्जा 'यगाना'को उसपर बिठाकर लखनऊ भरमें घुमाया गया। थोड़ी-थोड़ी दूरपर उन्हें रिक्शापर खड़े होनेको मजबूर किया जाता था, ताकि जनता उनपर थूक सके, लानत-न्योछावर कर सके और यह सब दिनदहाड़े उत्तर प्रदेशकी राजधानी लखनऊमें इसी अप्रैल १९५३ में पुलिसकी चौकियोंके सामने हुआ। मानवताका शव निकलता रहा, सम्म्यता बैठी सर पीटती रही, मगर खुदाके वन्दे खुदाको खुश करनेमें मसरूफ़ रहे।

सत्य बोलनेपर भी अनेक बाधाओं-मुसीबतोंका सामना करना पड़ता है यह मिर्जा यगाना खूब जानते थे, जैसा कि उन्होंने वर्षों पहले फ़र्माया भी था—

शामत आ गई आखिर कह गया खुदा लगती।

रास्तीका फल पाता बन्दये-मुकर्रब क्या ?

[वारगाहे खुदावन्दीका सबसे बड़ा फ़रिश्ता खरी बात कहने पर जन्नतसे निकाल दिया गया। उसने यही कहा था कि जिस सरको मैंने तेरी हुजूर में भुकाया है, उसे आदमे-खाकीके सामने क्योंकर भुका दूँ ? कितना उच्च और श्रेष्ठ उपासनाका भाव था, परन्तु खुदा साहब इस उच्च भावनाकी कद्र न कर सके, और तानाशाहीपर उतर आये कि तूने आज्ञा भंग करके अनुशासन-हीनताका परिचय दिया है और उसे जन्नतसे निकाल दिया। जब फ़रिश्ते भी सत्य बोलनेपर दण्ड पा सकते हैं तो सर्वसाधारणकी तो बात ही क्या ?]

फिर भी न जाने क्यों चूक गये और ईर्ष्यालुओंको व्यर्थमें ही आक्रमण करनेका अवसर दे दिया।

मिर्जा 'यगाना' वृद्धावस्थाके कारण हैदराबादसे आकर अब लखनऊ रहने लगे हैं।

जून १९५३]

खुदीका नशा चढ़ा आपमें रहा न गया ।
 खुदा बने थे 'यगाना' मगर बना न गया ॥
 गुनाहे-ज़िन्दादिली कहिये या दिल-आज़ारी^१ ।
 किसीपै हँस लिये इतना कि फिर हँसा न गया ॥
 समझते क्या थे, मगर सुनते थे तरानये-दर्द ।
 समझमें आने लगा जब तो फिर सुना न गया ॥
 पुकारता रहा किस-किसको डूबनेवाला ।
 खुदा थे इतने, मगर कोई आड़े आ न गया ॥

पहले अपनी तो जात पहचाने ।
 राजे-ऋदरत बखाननेवाला ॥
 जानकर और होगया श्रनजान ।
 हो तो ऐसा हो जाननेवाला ॥
 पेटके हलके लाख बड़मारें ।
 कोई खुलता है जाननेवाला ?
 खाकमें मिलके पाक हो जाता ।
 छानता क्या है छाननेवाला ॥
 दिनको दिन समझे और न रातको रात ।
 वक्तकी क्रूर जाननेवाला ॥

क्या खबर थी दिल-सा शाह-शाह आखिर एक दिन ।
 इश्कके हाथों गदाओं-का-गदा^२ हो जायगा ॥

^१सताना;

^२भिक्षुक ।

किस दिले-बेकरारको तूने यह वलवला दिया ।
देना न देना एक है, जफ़से^१ जब सिवा दिया ॥
हुस्न चमक गया तो क्या, बूएवफ़ा तो उड़ गई ।
इस नई रोशनीने आह दिलका कँवल बुझा दिया ॥

जिन्दा रक्खा है सिसकनेके लिए
वाह अच्छे दोस्तसे पाला पड़ा ॥

किधर चला है ? इधर एक रात बसता जा ।
गरजनेवाले गरजता है क्या, बरसता जा ॥
रुला-रुलाके ग़रीबोंको^२ हँस चुका कलतक ।
मेरी तरफ़से अब अपनी दसापै हँसता जा ॥

शरबतका घूँट जानके पीता हूँ खूनेदिल ।
ग़म खाते-खाते मुँहका मज़ातक बिगड़ गया ॥

इसी फ़रेबने मारा कि कल है कितनी दूर ।
इस आज-कलमें अबस^३ दिन गँवाये हैं क्या-क्या ?
ख़ुशीमें अपने क़दम चूम लूँ तो ज़ेबा^४ है ।
वोह लगज़िशोंपै^५ मेरी मुसकराये हैं क्या-क्या ॥

बस एक नुक्तये-फ़र्ज़ीका^६ नाम है काबा ।
किसीको मरकज़े-तहक़ीक़का^७ पता न चला ॥
उमीदो-बीमने^८ मारा मुझे दुराहेपर ।
कहाँके देरोहरम ? घरका रास्ता न मिला ॥

^१आवश्यकतासे अधिक, पात्रतासे सिवा;

^२व्यर्थ; ^३मुनासिब;

^४लड़खड़ानेपर;

^५कल्पना-विन्दुका;

^६खोजके लक्षका;

^७आशा-निराशाने ।

मुझे दिलकी खतापर 'यास' ! शरमाना नहीं आता ।
 पराया जुर्म अपने नाम लिखवाना नहीं आता ॥
 बुरा हो पाये-सरकशका कि थकजाना नहीं आता ॥
 कभी गुमराह होकर राहपर आना नहीं आता ॥
 मुसीबतका पहाड़ आखिर किसी दिन कट ही जायेगा ॥
 मुझे सरमारकर तेशेसे मर जाना नहीं आता ॥
 दिले-बेहौसला है इक जरा-सी ठेसका महमाँ ।
 वह आँसू क्या पियेगा जिसको शम खाना नहीं आता ॥
 सरापा राज हूँ मैं क्या बताऊँ कौन हूँ, क्या हूँ ?
 समझता हूँ मगर दुनियाको समझाना नहीं आता ॥

गिला किसे है कि क्रातिलने नीमजाँ^१ छोड़ा ।
 तड़प-तड़पके निकालूँगा हौसला दिलका ॥
 खुदा बचाये कि नाजुक है उनमें एक-से-एक ।
 तुनक-मिज्जाजोंसे ठहरा मुआमला दिलका ॥
 किसीके हो रहो अच्छी नहीं यह आज्ञादी ।
 किसीकी जुल्फसे लाजिम है सिलिसला दिलका ॥
 पियाला खाली उठाकर लगा लिया मुँहसे ।
 कि 'यास' कुछ तो निकल जाय हौसला दिलका ॥

परवाने कर चुके थे सर-अंजामे-खुदकशी^२ ।
 फ़ानूस आड़े आ गया, तक्रदीर देखना ॥

चराग़ेजीस्त^३ बुझा दिलसे इक धुआँ निकला ।
 लगाके आग मेरे घरसे मेहमाँ निकला ॥

^१अर्द्धमृतक;

^२आत्महत्याका प्रयत्न;

^३जीवन-दीप ।

तड़पके आबलापा' उठ खड़े हुए आखिर ।
 तलाशेयारमें जब कोई कारवाँ निकला ॥
 लहू लगाके शहीदोंमें हो गये दाखिल ।
 हविस तो निकली मगर हौसला कहाँ निकला ?
 लगा है दिलको अब अंजामेकारका खटका ।
 बहारे-गुलसे भी इक पहलुए-खिजाँ निकला ॥
 जमाना फिर गया चलने लगी हवा उलटी ।
 चमनको आग लगाके जो बागबाँ निकला ॥
 कलामे 'यास'से दुनियामें फिर इक आग लगी ।
 यह कौन हज़रते 'आतिश'का हमजबबाँ निकला ?
 हवाएतुन्दमें^१ ठहरा न आशियाँ अपना ।
 चराग जल न सका ज़ेरे-आस्माँ अपना ॥
 जरसने^२ मुजदए-मंजिल^३ सुनाके चौकाया ।
 निकल चला था दबे पाँव कारवाँ अपना ॥
 खुदा किसीको भी यह सवाबे-बद न दिखलाये ।
 क़फ़सके सामने जलता है आशियाँ अपना ॥
 सुहबते-वाइजमें भी अँगड़ाइयाँ आने लगीं ।
 राज अपनी मंज़रीका क्या कहें क्योंकर खुला ।
 रोशन तमाम काबा-ओ-बुतखाना हो गया ।
 घर-घर जमालेयारका अफ़साना हो गया ॥
 दयारे-ब्रेखुदी है अपने हक़में गोशये-राहत ।
 ग़नीमत है घड़ीभर सवाबे-ग़फलतमें बसर होना ॥

^१पाँवके छाले; ^२तेज़ हवामें; ^३यात्रीदलके ऊँटोंकी घण्टीकी आवाज़ने; ^४यात्राका अन्त होनेकी खुशख़बरी ।

दिले-आगाहने बेकार मेरी राह खोटी की ।
 बहुत अच्छा था अंजामे-सफ़रसे बेखबर होना ॥
 लाश कम्बख़्तकी काबेमें कोई फ़िक्रवा दे ।
 कूचये-यारमें क्यों ढेर हो बेगानेका ॥

जीस्तके हैं यही मजे बल्लाह ।
 चार दिन शाद, चार दिन नाशाद ॥
 सब इतना न कर कि दुश्मनपर ।
 तलख़ हो जाय लज्जते-बेदाद ॥

आप क्या जानें मुझपै क्या गुजरी ।
 सुबहदम देखकर गुलोंका निखार ॥
 दूरसे देख लो हसीनोंको ।
 न बनाना कभी गलेका हार ॥
 अपने ही सायेसे भड़कते हो ।
 ऐसी वहशतपै क्यों न आये प्यार ॥
 तू भी जी और मुझे भी जीने दे ।
 जैसे आबाद गुलसे पहलू-ए-ख़ार ॥
 बेनियाजी भली कि बेअदबी ।
 लड़खड़ाती जबाँसे शिकवये-यार ॥
 बन्दगीका सबूत दूँ क्योंकर ।
 इससे बहतर है कीजिये इन्कार ॥
 ऐसे दो दिल भी कम मिले होंगे ।
 न कशाकश हुई न जीत न हार ॥

ढूँढ़ते फिरते हो अब टूटे हुए दिलमें पनाह ।
 दर्दसे ख़ाली दिले-गाबरू-मुसलमाँ देखकर ॥

सब करना सरल मुश्किल है तड़पना सहल है ।
अपने बसका काम कर लेता हूँ आसाँ देखकर ॥

ऐसी पिला कि साक्रिया ! फ़िक्र न हो निजातकी ।
नशा कहीं उतर न जाय रोज़े-शुमार देखकर ॥
आबला-या निकल गये काँटोंको रौंदते हुए ।
सूझा फिर आँखसे न कुछ मंजिले-पार देखकर ॥

सब तेरे सिवा काफ़िर, आख़िर इसका मतलब क्या ?
सिर फिरा दे इन्साँका ऐसा खबते-मजहब क्या ?

जमीं करवट बदलती है बलाये-नागहाँ होकर ।
अजब क्या सरपे आये पाँवकी खाक आस्माँ होकर ॥
उठो ऐ सोनेवालो ! सरपे धूप आई कयामतकी ।
कहीं यह दिन न ढल जाये नसीबे-दुश्मनाँ होकर ॥
अरे ओ जलनेवाले ! काश जलना ही तुझे आता ।
यह जलना कोई जलना है कि रह जाये धुआँ होकर ॥

पसीना तक नहीं आता, तो ऐसी खुश्क तौबा क्या ?
नदामत वोह कि दुश्मनको तरस आ जाये दुश्मनपर ॥

उस तरफ़ सात आसमाँ और इस तरफ़ इक नातवाँ ।
तुमने करवट तक न ली दुनियाको बरहम देखकर ॥

ख़ुदा जाने अजलको पहले किसपर रहम आयेगा ?
गिरफ़्तारे क़ससपर या गिरफ़्तारे नशेमनपर ॥

मजाल थी कोई देखे तुम्हें नज़र भरकर ।
यह क्या है आज पड़े हो मले-दले क्योंकर ॥

कोई क्या जाने बाँकपनके यह ढंग ।
 सुलह दुश्मनसे और दोस्तसे जंग ॥
 क्या जमाना था कैसे दुश्मन थे ?
 रातभर सुलह और दिनभर जंग ॥
 संगे-दिलको बना दूँ देवता में ।
 आप क्या जानें बन्दगीके ढंग ?

फिरते हैं भेसमें हसीनोंके ।
 कैसे-कैसे डकैत थांग-की-थांग ॥

आह ! यह बन्दये गरीब आपसे लौ लगाये क्यों ?
 आ न सके जो वक्तपर, वक्तपै याद आये क्यों ?*

दीदकी^१ इलतजा^२ करूँ ? तिश्ना^३ ही क्यों न जान दूँ ।
 परदयेनाज^४ खुद उठे, दस्ते-दुआ उठायेँ क्यों ?

बदल न जाये जमानेके साथ नीयत भी ।
 सुना तो होगा जवानीका एतबार नहीं ॥
 जो ग्राम भी खायें तो पहले खिलायें दुश्मनको ।
 अकेले खायेंगे ऐसे तो हम गँवार नहीं ॥

// नतीजा कुछ भी हो लेकिन हम अपना काम करते हैं ।
 सबरे ही से दूरन्देश फ़िक्के-शाम करते हैं ॥ //

*इसी मजमूनपर असर लखनवीका यह अमर शेर भी सुनें—

हम उसीको खुदा समझते हैं ।
 जो मुसीबतमें याद आ जाये ॥

^१दर्शनोंकी; ^२प्रार्थना; ^३प्यासा; ^४प्रेयसीका परदा ।

दावरे-हथ्र^१ होशियार, दोनोंमें इस्तयाज^२ रख ।
 बन्दये-नाउम्मीद^३ और बन्दये-बेनियाज^४में ॥
 यादे-खुदाका वक्त भी आयेगा कोई या नहीं ?
 यादे-गुनाह कब तलक शामोसहर नमाजमें ?
 नाखुदा ! कुछ जोरे-तूफ़ाँ आजमाई भी दिखा ।
 फ़िक्रे-साहिल छोड़ लंगर डाल दे मजधारमें ॥
 'यास' ! गुमराहीसे अच्छी जहमते-वामान्दगी ।
 डाल लो जंजीर कोई पायेकज-रफ़्तारमें ॥
 पैवन्दे-खाक होनेका अल्लाहरे इस्तयाक ।
 उतरे हम अपने पाँवसे अपने मज्जारमें ॥
 शरमिन्दये-कफ़न न हुए आसमाँसे हम ।
 मारे पड़े हैं सायए-दीवारे-यारमें ॥
 कहते हो अपने फ़ेलका मुल्तार है बशर ।
 अपनी तो मौत तक न हुई अख्तियारमें ॥
 दुनियासे 'यास' जानेको जी चाहता नहीं ।
 बल्लाह क्या कशिश है इस उजड़े दयारमें ॥
 मौत माँगी थी खुदाई तो नहीं माँगी थी ।
 ले दुआ कर चुके अब तर्क-दुआ करते हैं ॥
 गलेमें बाहें डाले चैनसे सोना जवानीमें ।
 कहाँ मुमकिन फिर ऐसा ख़्वाब देखूँ जिन्दगानीमें ॥
 ग़नीमत जान उस कूचेमें थककर बैठ जानेको ।
 किसे दमभर मिला आराम दोरे-आसमानीमें ॥

^१प्रलयके दिन न्याय करनेवाले; ^२भेद-अन्तर; ^३असफल भक्तमें;
^४अभिलाषा न रखनेवाले भक्तमें ।

यकसाँ कभी किसीकी न गुजरी जमानेमें ।
 यादश बख़ैर बैठे थे कल आशियानेमें ॥
 सदमा दिया तो सबकी दौलत भी देगा वोह ।
 किस चीज़की कमी है सखीके खजानेमें ॥
 अफ़सुर्दा खातिरोकी खिज़ाँ क्या, बहार क्या ?
 कुंजे-क़फ़समें मर रहे या आशियानेमें ॥
 हम ऐसे बदनसीब कि अबतक न मर गये ।
 आँखोंके आगे आग लगी आशियानेमें ॥
 दीवाने बनके उनके गलेसे लिपट भी जाओ ।
 काम अपना कर लो 'यास' बहाने-बहानेमें ॥

हिजाबेनाज़ बेजा 'यास' जिस दिन बीचमें आया ।
 उसी दिनसे लड़ाई ठन गई शेख़ो-बिरहमनमें ॥

तौबा भी भूल गये इश्क़में वोह मार पड़ी ।
 ऐसे ओसान गये हैं कि खुदा याद नहीं ॥
 क्या अजब है कि दिले-दोस्त हो मदफ़न अपना ।
 कुश्तये-नाज़ हूँ मैं कुश्तये-बेदाद नहीं ॥

खूनके घूंट बलानीश पिये जाते हैं ।
 खैर साक़ीकी मनाते हैं जिये जाते हैं ॥
 एक तो दर्द मिला उसपै यह शाहाना मिज़ाज ।
 हम गरीबोंको भी क्या तोहफ़े दिये जाते हैं ॥
 दिल है पहलूमें कि उम्मीदकी चिनगारी है ।
 अबतक इतनी है हरारत कि जिये जाते हैं ॥

तो क्या हमीं हैं गुनहगार, हुस्नेयार नहीं ?
 लगावटोंका गुनाहोंमें क्या शुमार नहीं ?

खटका लगा न हो तो मज्जा क्या गुनाहका ।
लज्जत ही और होती है चोरीके मालमें ॥
अल्लाह क़फ़समें आते ही क्या मत पलट गई ।
आखिर हमीं तो हैं कि फड़कते थे जालमें ॥

महराबोंमें सजदा वाजिब, हुस्नके आगे सजदा हराम ।
ऐसे गुनहगारोंपे खुदाकी मार नहीं तो कुछ भी नहीं ॥
दिलसे खुदाका नाम लिये जा, काम किये जा दुनियाका ।
काफ़िर हो, दींदार हो, दुनियादार नहीं तो कुछ भी नहीं ॥

सजदा वह क्या कि सरको झुकाकर उठा लिया ।
बन्दा वोह है जो बन्दा हो, बन्दानुमा न हो ॥
उम्मीदे-सुलह क्या हो, किसी हक़परस्तसे ।
पीछे वोह क्या हटेगा, जो हदसे बढ़ा न हो ॥

मज्जा जब है कि रफ़ता-रफ़ता उम्मीदे फलें-फूलें ।
मगर नाज़िल कोई फ़जले-इलाही नागहाँ क्यों हो ॥
समझमें कुछ नहीं आता पढ़े जाऊँ तो क्या हासिल ?
नमाज़ोंका है कुछ मतलब तो परदेसी ज़बाँ क्यों हो ?

दिल अपना जलाता हूँ, काबा तो नहीं ढाता ।
और आग लगाते हो, क्यों तुहमते-बेजासे ॥

बाज़ आ साहिलपे गोते खानेवाले बाज़ आ ।
डूब मरनेका मज्जा दरियाए-बेसाहिलमें है ॥

मुफ़लिसीमें भिजाज शाहाना ।
किस मरज़की दवा करे कोई ॥

हँस भी लेता हूँ ऊपरी दिलसे ।

जी न बहले तो क्या करे कोई ॥

न जाने क्या हो यह दीवाना जिस जगह बैठे ।

खुदीके नशेमें कुछ अनकही न कह बैठे ॥

कोई ज़िद थी या समझका फेर था ।

मन गये वोह मैंने जब उल्टी कही ॥

शक है काफ़िरको मेरे ईमानमें ।

जैसे मैंने कोई मुँह देखी कही ॥

क्या ख़बर थी यह खुदाई और है ।

हाय ! क्यों मैंने खुदा लगती कही ॥

ताअत हो या गुनाह पसेपरदा ख़ूब है ।

दोनोंका मज़ा जब है कि तनहा करे कोई ॥

बन्दे न होंगे, जितने खुदा हैं खुदाईमें ।

किस-किस खुदाके सामने सजदा करे कोई ?

इतना तो ज़िन्दगीका कोई हक़ अदा करे ।

दीवानावार हालपै अपने हँसा करे ॥

ज़माना खुदाको खुदा जानता है ।

यही जानता है तो क्या जानता है ॥

वोह क्यों सर खपाये तेरी जुस्तजूमें ?

जो अंजामे-फ़िक़ेरसा जानता है ॥

खुदा ऐसे बन्दोंसे क्यों फिर न जाये ।

जो बैठा हुआ माँगना जानता है ॥

वोह क्यों फूल तोड़े वोह क्यों फूल सूँघे ?

जो दिलका दुखाना बुरा जानता है ॥

क्यों होशमें फिर आया, क्यों हाथ मल रहा है ?
हृदसे गुजरनेवाले तेरी यही सजा है ॥
मंजिलकी फ़िक्र क्यों हो, जब तू हो और मैं हूँ ।
पीछे न फिरके देखूँ काबा भी हो तो क्या है ॥

हासिले-फ़िक्रे नारसा क्या है ।
तू खुदा बन गया बुरा क्या है ॥
कैसे-कैसे खुदा बना डाले ।
खेल बन्देका है खुदा क्या है ॥
बर्दे-दिलकी कोई दवा न हुआ ।
या इलाही ! यह माजरा क्या है ॥
नूर ही नूर है कहाँका जहूर ।
उठ गया परदा अब रहा क्या है ॥
रहने दे हुस्नका ढका परदा ।
वक़्त-बेवक़्त भाँकता क्या है ॥

यहींसे सैर कर लो 'यास' इतनी दूर क्यों जाओ ।
अदम आबादका डांडा मिला है कूए-क्रातिलसे ॥

गला न काट सके अपना वाये नाकामी ।
पहाड़ काटते हैं रोज़ोशब मुसीबतके ॥

मौत आई आने दीजिये परवा न कीजिये ।
मंजिल है ख़त्म सजदये-शुकराना कीजिये ॥
दीवानावार दौड़के कोई लिपट न जाय ।
आँखोंमें आँख डालके देखा न कीजिये ॥

क्या कोई पूछनेवाला भी अब अपना न रहा ।
बर्दे-दिल रोने लगे 'यास' जो बेगानोंसे ॥

पढ़के दो कलमे अगर कोई मुसलमाँ हो जाय ।
 फिर तो हैवान भी दो रोज़में इन्साँ हो जाय ॥
 आगमें हो जिसे जलना तो वोह हिन्दु बन जाय ।
 खाकमें हो जिसे मिलना वोह मुसलमाँ हो जाय ॥
 नशये-हुस्नको इस तरह उतरते देखा ।
 ऐबपर अपने कोई जैसे पशेमाँ हो जाय ॥

मजा गुनाहका जब था कि बावजू करते ।
 बुतोंको सजदा भी करते तो क़िब्लारू करते ॥
 जो रो सकते तो आँसू पूछनेवाले भी मिल जाते ।
 शरीके-रंजोगम दामनसे पहले आस्तीं होती ॥

जैसे दोज़खकी हवा खाके अभी आया है ।
 किस क्रदर वाइजे मक्कार डराता है मुझे ॥
 जलवये-दारोरसन अपने नसीबोंमें कहाँ ?
 कौन दुनियाकी निगाहोंपे चढ़ाता है मुझे ॥

सुलहजूर्ने गुनहगार मुझे ठहराया ।
 जुर्म साबित जो किया चाहो तो मुश्किल हो जाय ॥
 नाखुदाको नहीं अबतक तहे-दरियाकी खबर ।
 डूबकर देखे तो बेगानये-साहिल हो जाय ॥
 एक ही सजदा किया दूसरेका होश कुजा ।
 ऐसे सजदेका यह अंजाम कि बातिल हो जाय ॥

न इन्तक़ामकी आदत न दिल दुखानेकी ।

बदी भी कर नहीं आती मुझे कुजा नेकी ?

अल्लाहरी बेताबियेदिल वस्लकी शबको ।
 कुछ नौद भी आँखोंमें है कुछ मयका असर भी ॥

बोह कश-म-कशे-ग्रम है कि में कह नहीं सकता ।
 आगाज़का अफ़सोस और अंजामका डर भी ॥
 कोई बन्दा इश्क़का है कोई बन्दा अक्लका ।
 पाँव अपने ही न थे क़ाबिल किसी जंजीरके ॥
 शैतानका शैतान, फ़रिश्तेका फ़रिश्ता ।
 इन्सानकी यह बुलअज़बी याद रहेगी ॥
 दर्देसर था सजदये शामोसहर मेरे लिए ।
 दर्देदिल ठहरा दवाए दर्देसर मेरे लिए ॥
 दर्देदिलके वास्ते पैदा किया इन्सानको ।
 ज़िन्दगी फिर क्यों हुई है, दर्देसर मेरे लिए ॥
 फ़ितरते-मजबूरको अपने गुनाहोंपे है शक ।
 वा रहेगा कबतलक़ तौबाका दर मेरे लिए ॥
 हँसीमें लगज़िशे-मस्ताना उड़ गई बल्लाह ।
 तो बेगुनाहोंसे अच्छे गुनाहगार रहे ॥
 ज़माना इसके सिवा और क्या वफ़ा करता ।
 चमन उजड़ गया काँटे गलेका हार रहे ॥

ऐसी आज्ञाद रूह इस तनमें ।
 क्यों पराये मकानमें आई ॥
 बात अधूरी मगर असर दूना ।
 अच्छी लुक्कनत ज़बानमें आई ॥
 आँख नीची हुई अरे यह क्या ।
 क्यों गरज़ दरमियानमें आई ॥
 में पयम्बर नहीं 'यगाना' सही ।
 इससे क्या कल्ल शानमें आई ॥

कीमया-ए-दिल क्या है, खाक है, मगर कैसी ?
 लीजिये तो मँहगी है, बेचिये तो सस्ती है ॥
 खिञ्जे-मंजिल अपना हूँ, अपनी राह चलता हूँ ।
 मेरे हालपर दुनिया क्या समझकर हँसती है ॥

बन्दा वोह बन्दा जो दम न मारे ।
 प्यासा खड़ा हो दरिया किनारे ॥

शबे-उम्मीद कट गई, लेकिन—
 जिन्दगी अपनी मुस्तसिर न हुई ॥

सलामत रहें दिलमें घर करनेवाले ।
 इस उजड़े मक़ामें बसर करनेवाले ॥
 गलेपै छुरी क्यों नहीं फेर देते ।
 असीरोंको बेबालो-पर करनेवाले ॥
 खड़े हैं दुराहेपै देरो-हरमके ।
 तेरी जुस्तजूमें सफ़र करनेवाले ॥
 कुजा सहने-आलम, कुजा कुंजे-मरक़द ।
 बसर कर रहे हैं बसर करनेवाले ॥

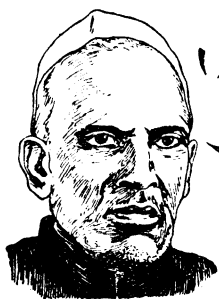
१० दिसम्बर १९५०]

यगाना साहबके कलामका चयन उनके निम्न ग्रन्थोंसे किया गया है—

१—गंजीना—प्रकाशक, कौमी दारुल इशाअत लाहौर,
 प्रकाशन-सन और आवृत्तिका उल्लेख नहीं ।

१८६ पृष्ठोंमें १२१ गज़लें और १६३ ख़वाइयाँ हैं;

२—आयाते वजदानी—प्रकाशक—मिर्जा मुरादबेग चुगताई हैदराबाद
 दक्षिण—१९४५ ई०में प्रकाशित पृ० ४००, विस्तृत टीका और
 भाष्य सहित ।



'अमजद' हैदराबादी

[१८८४ — ई०]

हजारत अमजद १८८४ ई० में हैदराबाद में पैदा हुए। आपके जन्मके ४० रोज़ बाद पिताका निधन हो गया। माताके अतिरिक्त कोई ऐसा कुटुम्बी या रिश्तेदार न था, जो भरण-पोषणका भार उठाता। आमदनीका कोई जरिया नहीं था। जिन्दगी निहायत तकलीफ़से बसर होती थी। फिर भी विधवा और असहाय माँ ने हिम्मत न हारी और महन्त-मजदूरी करके अमजदका भरण-पोषण ही नहीं किया, अपितु उन्हें उन दिनोंके रिवाजके अनुसार फ़ारसीकी उच्च शिक्षा भी दिलाई। अमजद बहुत परिश्रमी और अध्ययनशील थे। जिन उस्तादसे आपने फ़ारसीका अध्ययन किया, वे आपके मकानसे १४ मील दूर रहते थे। फिर भी आप उनके पास दैनिक पढ़ने जाते थे। इस परिश्रमका परिणाम यह हुआ कि आपने फ़ारसीमें मुंशी फ़ाज़िलकी सर्वोच्च डिग्री प्राप्त की।

हैदराबाद उन दिनों शेर-शायरीका मुख्य केन्द्र बना हुआ था। मिर्जा 'दाग़'-जैसे ख्यातिप्राप्त उस्ताद हैदराबादमें जलवा-फ़र्मा थे। दो हजारके लगभग उनके शिष्य भारतके कोने-कोनेमें बिखरे हुए थे। 'दाग़' की गज़लसराईसे जब समस्त भारत गमक रहा था, तब हैदराबादकी

साहित्यिक मजलिसोंके तो ठाट ही निराले होंगे, जहाँ वे स्वयं अपनी ज़बाने-मुबारकसे ग़ज़ल पढ़ते थे। स्थानीय लोगोंके अतिरिक्त बीसों शिष्य दिल्ली, इलाहाबाद, एटा, पंजाब आदि-जैसे सुदूर शहरोंसे उस्तादकी खिदमतमें रहते थे। महाराजा सर किशनप्रसाद 'शाद' जो कि हैदराबाद राज्यके प्रधान मंत्री थे, अधिक-से-अधिक गायरोंका समागम बनाये रखते थे। उन जैसा महमाँ-नवाज़, क़द्रदाँ, कला-पारखी और उदार-हृदय प्रधान शासक जहाँ मौजूद हो और स्वयं नवाव हैदराबाद मिर्जा 'दाग'के शिष्य हों, और शेरशायरीमें दिलचस्पी लेते हों, उस हैदराबादका क्या कहना? गली-गली, कूचे-कूचेमें मुशायरोंकी महफ़िलें जमती थीं। 'दाग'के अतिरिक्त उत्तरी भारतसे 'सरशार', 'तुर्की', 'गिरामी', 'ज़हीर' वगैरह भी रौनक अफ़रोज़ थे। इसी वातावरणमें अमजद भी परवान चढ़ रहे थे। चुगांचे शायरीका शौक बचपनसे ही हो गया। कहींसे 'नासिख'का दीवान हाथ लग गया, अतः चुपचाप उसे पढ़ते रहते और शेर कहनेका अभ्यास करते रहते थे। पहले-पहल आपने यह शेर मौजूँ किया—

नहीं राम गरचे दुश्मन हो गया है, आसमाँ अपना ।

मगर या रब ! न हो, नामहरबाँ वोह महरबाँ अपना ॥

जीविकोपार्जनके लिए आप स्कूलमें शिक्षक हो गये, और उसी अल्प वेतनमें स्वाभिमानके साथ सन्तोषपूर्वक जीवन-निर्वाह कर रहे थे, कि दैवसे आपका यह सुख भी नहीं देखा गया। आपकी माँ, पत्नी और पुत्री दरियामें डूब गये। किसी तरह कई फ़र्लांग मौजोंके थपेड़े खाकर अकेले 'अमजद' साहब बचे। इस दुर्घटनासे आपको बहुत सदमा पहुँचा।

आप स्वाभिमानी, महमाँनवाज़, विनम्र और सरल एवं सादा स्वभाव-के बुजुर्ग हैं। आप ग़ज़ल और नज़्म दोनों ही कहते हैं।

नालए-जाने-खस्ता-जाँ,^१ अशेंबरीपं^२ जाये क्यों ?
 मेरे लिए जमीनपर साहबे-अशं^३ आये क्यों ?
 नूरे-जमी-ओ-आसमाँ, दीदये-दिलमें आये क्यों ?
 मेरे सियाह-खानेमें कोई दिया जलाये क्यों ?
 जलमको घाव क्यों बनाओ ? दर्दको और क्यों बढ़ाओ ?
 निसबतेहूको^४ तोड़कर कीजिये हाय-हाय क्यों ?
 बरूशने वाला जब मेरा उफूपै^५ है तुला हुआ ?
 मुझ-सा गुनहगार फिर जुर्मसे बाज़ आये क्यों ?
 'अमजदे'-खस्ता हालकी पूरी हो क्योंकर आरजू ।
 दिल ही नहीं जब उसके पास, म तलबेदिल बर आये क्यों ?

अमजद सूफी खयालके हैं । आपका इश्क ईश्वरीय और भाव दार्शनिक हैं । उमी दृष्टिसे निम्न अशआर अवलोकन कीजिये—

हम तो एक बार उसके हो जायें ।
 वोह हमारा हुआ, हुआ, न हुआ ॥
 दूँढता हूँ मैं हर नफ़स^६ उसको ।
 एक नफ़स^७ मुझसे जो जुदा न हुआ ॥
 क्या मिला वहदते-वजूदीसे^८ ?
 बन्दा, बन्दा रहा, खुदा न हुआ ॥
 बन्दगीमें यह किन्नयाई^९ है ?
 खैर गुजरी कि मैं खुदा न हुआ ॥

^१निर्बल शरीरवाले दिलकी आहें; ^२ईश्वरके समीप तक; ^३भगवान्;
^४ईश्वर-लीनताको; ^५क्षमाशीलतापै; ^६हरस्वासमें; ^७एक लमहेको;
^८एक ईश्वरवादसे; ^९अभिमान ।

किस तरह नज़र आये वोह परदानशीं 'अमजद' !
 हर परदेके बाद और एक परदा नज़र आता है ॥*
 वोह करते हैं सब छुपकर, तद्बीर इसे कहते हैं ।
 हम धर लिये जाते हैं, तक्रदीर इसे कहते हैं ॥†

चन्द रुबाइयात—

हर ज़र्रेंपे फ़ज़ले-किब्रिया^१ होता है ।
 इक चश्मे-ज़दनमें^२ क्या-से-क्या होता है ॥
 असनाम दबी जबाँसे यह कहते हैं—
 “वोह चाहे तो पत्थर भी खुदा होता है ॥”

हर गामपे चकराके गिरा जाता हूँ ।
 नक्शे-कफ़े-पा बनके मिटा जाता हूँ ॥
 तू भी तो सम्भाल मेरे देनेवाले !
 मैं बारे-अमानतमें दबा जाता हूँ ॥

इस जिस्मकी केचुलीमें इक नाग भी है ।
 आवाज़-शिकस्ता दिलमें इक राग भी है ॥
 बेकार नहीं बना है, इक तिनका भी ।
 ख़ामोश दियासलाईमें इक आग भी है ॥

*आह परदा तो कोई मानए-दीदार नहीं ।
 अपनी शफलतके सिवा कुछ दरो-दीवार नहीं ॥

—दर्द

†हम ख़्वाबमें वाँ पहुँचे, तद्बीर इसे कहते हैं ।
 वोह नींदसे चौक उठे, तक्रदीर इसे कहते हैं ॥

^१ईश्वरीय कृपा;

^२पलक मारते ।

हर चीजका खोना भी बड़ी दौलत है ।
 बेफ़िकरीसे सोना भी बड़ी दौलत है ॥
 इफ़लासने^१ सख्त मौत^२ आसाँ कर दी ।
 दौलतका न होना भी बड़ी दौलत है ॥
 साँचिमें अजलके हर घड़ी ढलती है ।
 हर वक़्त यह शमए-ज़िन्दगी जलती है ॥
 आती-जाती है साँस अन्दर-बाहर ।
 या उम्रके हलक़पर छुरी चलती है ॥
 हासिल न किया महरसे^३ ज़र्रा तुमने ।
 दरियासे पिया न एक क़तरा तुमने ॥
 'अमजद' साहब ! खुदाको क्या समझोगे ?
 अबतक खुद ही को जब न समझा तुमने ॥

—आजकल १५ जुलाई १९४६ ई०

कामयाबीके नहीं हम ज़िम्मेदार ।
 कामकी हदतक हमारा काम है ॥
 जब उस मुस्तारपर क्योंकर करें ?
 अर्ज कर देना हमारा काम है ॥
 हुस्ने-सूरतको नहीं कहते हैं हुस्न ।
 हुस्न तो हुस्ने-अमलका नाम है ॥
 रह सके किस तरह 'अजमद' मुतमईन !
 ज़िन्दगी खौफ़े-खुदाका नाम है ॥

१७ मई १९५३ ई०]

—आजकल जून १९४६ ई०

^१निर्धनताने; ^२कठिनतासे आनेवाली मृत्यु, दुखदमृत्यु; ^३सूर्यसे ।

तू कानका कच्चा है तो बहरा हो जा ,
 बदबों^१ है अगर आँख तो अन्धा हो जा ।
 गाली-नौबत^२ दरोरागोई^३ कबतक ?
 'अमजद' क्यों बोलता है, गूंगा हो जा ॥

मत सुन परदेकी बात बहरा हो जा ,
 मत कह इसरारे-गानी^४ गूंगा हो जा ।
 वोह रूए लतीफ़^५ और यह नापाक नज़र^६ ,
 'अमजद' क्यों देखता है अन्धा हो जा ॥

दुनियाके हरइक ज़र्रेसे घबराता हूँ ।
 ग़म सामने आता है, जिधर जाता हूँ ।
 रहते हुए इस जहाँमें मिल्लत गुजरी ,
 फिर भी अपनेको अजनबी पाता हूँ ॥

दिलशाद^७ अगर नहीं तो नाशाद सही ,
 लबपर नसमा^८ नहीं तो फ़रियाद सही ।
 हमसे दामन छुड़ाके जानेवाले ,
 जा-जा गर तू नहीं तेरी याद सही ॥

गुलज़ार^९ भी सहारा^{१०} नज़र आता है मुझे ,
 अपना भी पराया नज़र आता है मुझे ।
 दरिया-ए-वजूदमें है तूफ़ाने-अदम^{११} ,
 हर क़तरे में ख़तरा नज़र आता है मुझे ॥

^१कुदृष्टि; ^२पीठ पीछे बुराई करनेकी आदत; ^३असत्य सम्भाषण;
^४शत्रुका भेद; ^५सुशीला पवित्र नारीकी कोमल देह; ^६कामुक दृष्टि;
^७प्रसन्न; ^८संगीत उद्यान; ^९वीरान जंगल; ^{१०}अस्तित्व रूपी
 दरियामें मृत्यु रूपी तूफ़ान ।

बरबाद न कर बेकसका चमन, बेवर्द खिजांसे कौन कहे ।
 ताराज^१ न कर मेरा खिरमन,^२ उस बर्क-तपांसे^३ कौन कहे ॥
 मुझ खस्ता जिगरकी जान न ले, यह कौन अजलको^४ समभाये ।
 कुछ बेर ठहर जा ऐ दरिया ! दरिया-ए-रवांसे^५ कौन कहे ॥
 सीनेमें बहुत राम हैं पिन्हा^६ और दिलमें हज्जारों हैं अरमां ।
 इस कहर-मुजस्सिमके^७ आगे, हाल अपना जबांसे कौन कहे ॥
 हरचन्द हमारी हालतपर रहम आता है हरइकको लेकिन—
 कौन आपको आफतमें डाले, उस आफते-जांसे कौन कहे ॥
 कासिदके बयांका ऐ 'अमजद' क्योंकर हो असर उनके दिलपर
 जिस दर्दसे तुम खुद कहते हो, उस तजेंबयांसे कौन कहे ॥

किस शानसे 'मैं' कहता हूँ, अल्लाहरे मैं ।

समझा नहीं 'मैं' को आजतक बाहरे मैं ॥

आजकल फरवरी १९५४ ई०



फक्कीर

^१नष्ट; ^२खलिहान; ^३कौन्दती हुई बिजलीसे; ^४मृत्युको; ^५बहते हुए दरियासे; ^६छिपे हुए; ^७साक्षात मौतसे ।

'आसी' गाज़ीपुरी

[..... — १९१७ ई०]

हजरत शाह अब्दुलअलीम 'आसी' अपने सूफ़ियाना कलाम और रबा-इयोंके कारण प्रसिद्ध थे। आप नासिख स्कूलके स्नातक और लखनवी शायर थे। अतः आपके यहाँ ख़ारजी और लखनवी रंगके अशआरकी भी काफ़ी संख्या है। जिनके नमूने न देकर हम केवल चन्द चुने हुए शेर दे रहे हैं—

गौना करते ही पिया कमाने-खाने परदेश चला गया और वहाँ मिरच-देशवालोंके^१ फन्देमें फँस गया। बेचारे परस्पर मुँह भी न देख सके। वहाँसे किसी तरह बचकर आया भी तो कब? जब केस रूपा हो गये। और आँखें इस योग्य न रहीं कि एक दूसरेको निहार सकें। विरह-व्यथा सहते-सहते वे विरहके मूर्तमान रूप हो गये हैं। उन्हें तब वस्ल नसीब

^१दक्षिण अफ़्रीका आदि प्रदेश बसानेके लिए अंग्रेज़ भारतसे कुली भर्ती किया करते थे। जो निश्चित अवधिके बाद ही भारत वापिस आ सकते थे। उनमें अधिकांश कष्टोंके कारण मर जाते थे, या वहीं रह जाते थे, बिरले ही लौटकर आ पाते थे। इन्हीं प्रदेशोंको उन दिनों मिरच-देश कहा जाता था।

होता है, जब वे वस्लके योग्य नहीं रहे। वे दोनों रंजोगमके इतने अभ्यस्त हो गये हैं कि उन्हें यह जीवन भरकी कठोर तपस्याके बाद मिली हुई मिलनकी शुभवेला भी आकुल किये दे रही है। इसी जीवनके अनुभवको 'आसी' देखिये किस खूबीसे एक शेर में समोते हैं—

वस्ल है, पर दिलमें अबतक जौक्रे-गम पेचीदा है।

बुल-बुला है ऐन दरियामें मगर नम-दीदा है ॥

[वस्ल नसीब है, मगर दिल गमोंके शौकका इतना आदी हो गया है कि वह वस्लका लुप्त उठानेके योग्य नहीं रहा है। पानीका बुलबुला पानीमें रहते हुए भी अश्रुपूर्ण (नमदीदा) है, क्योंकि वह अपने क्षणिक जीवनसे परिचित है]

अक्सर सूफी शायर हर जगह खुदाका जलवा देखते हैं—

मदरसा या दैर था या काबा या बुतखाना था।

हम सभी मेहमान थे, इक तू ही साहबखाना था ॥

—रुवाजा दर्द

यहाँतक कि वे माशूकके पैरमें भी खुदाको ही देखते हैं।

मगर 'आसी'के इश्ककी इन्तहा और बुलन्दी देखिये कि वह खुदाको खुदा ही नहीं समझते। वे हश्रमें पहुँचें तो उनका खयाल था कि वहाँ खुदाका जलवा देखनेको मिलेगा और वह हमारा इन्साफ़ करेगा। मगर हश्रमें यह क्या हश्र-बरपा हुआ कि जिसे लोग खुदा संभ्रम रहे हैं, वह तो 'आसी'का वही शोख माशूक है। उसने 'आसी'को देखते ही हयासे मुँह फेर लिया—

हश्रमें मुँह फेरकर कहना किसीका हाय ! हाय !!

“आसी-ए-गुस्ताख़का हर जुर्म ना-बख़्शीदा है ॥”

वहाँ भी वादये-दीदार इस तरह टाला ।
 “कि ख़ास लोग तलब होंगे बारे आमके बाद ॥”

मूर्ति-पूजक तो मुसलमानोंसे अधिक तेरे भक्त हैं । मुसलमान तो केवल काब्रेमें ही तुझे सजदा करते हैं और यह तो सब जगह तेरा चिन्तन ओर स्मरण करते हैं—

इतने बुतख़ानोंमें सजदे एक काब्रेकी एवज़ ।
 कुफ़्र तो इस्लामसे बढ़कर तेरा गरवीदा है ॥

वर्षोंकी साधनाके बाद, प्यारेका दीदार नसीब हुआ, मगर दिलको यक़ीन नहीं आता कि प्यारा यूँ भी जलवागर हो सकता है—

मेरी आँखें और दीदार आपका ?
 या क़यामत आ गई या ख़्वाब है ॥

इश्क़के बारेमें ‘आसी’ फ़र्माते हैं—

आशिक़ीमें है महबियत दरकार ।
 राहते-वस्ल-ओ-रंजे-फ़ुरक़त क्या ?

इसी ग़ज़लके चन्द अशआर और—

न गिरे उस निगाहसे कोई ।
 और उफ़ताद क्या, मुसीबत क्या ?
 जिनमें चर्चा न कुछ तुम्हारा हो ।
 ऐसे अहबाब, ऐसी सुहबत क्या ?
 जाते हो जाओ, हम भी रुख़सत हैं ।
 हिप्पज़में ज़िन्दगीकी मुद्दत क्या ?

‘आसी’ खुदासे दुआ माँगते हैं—

ताबे-दीदार जो लाये मुझे वोह दिल देना ।
मुँह कयामतमें दिखा सकनेके क़ाबिल देना ॥
रश्के-ख़ुरशीदे-जहाँ-ताब दिया दिल मुझको ।
कोई दिलबर भी इसी दिलके मुक़ाबिल देना ॥

अस्ल फ़िल्ना है, क़यामतमें बहारे-फ़रदौस ।
जुज तेरे कुछ भी न चाहे मुझे वोह दिल देना ॥
तेरे दीवानेका बेहाल ही रहना अच्छा ।
हाल देना हो अगर रहमके क़ाबिल देना ॥
हाय-रे-हाय तेरी उक़दाकुशार्ईके मजे ।
तू ही खोले जिसे, वोह उक़दये-मुश्किल देना ॥

चन्द शेर और—

“तुम नहीं कोई तो सबमें नज़र आते क्यों हो ?
सब तुम ही तुम हो तो फिर मुँहको छुपाते क्यों हो ?”

फ़िराक़े-यारकी ताक़त नहीं, विसाल मुहाल ।
कि उसके होते हुए हम हों, यह कहाँ यारा ?

तलब तमाम हो मतलूबकी अगर हद हो ।
लगा हुआ है यहाँ कूच हर मुक़ामके बाद ॥

अनलहक़ और मुश्ते-खाके-मन्सूर ।
ज़रूर अपनी हक़ीक़त उसने जानी ॥

इतना तो जानते हैं कि आशिक़ फ़ना हुआ ।
और उससे आगे बढ़के खुदा जाने क्या हुआ ॥

यूँ मिलूँ तुमसे मैं कि मैं भी न हूँ ।

दूसरा जब हुआ तो खिलवत क्या ?

इश्क कहता है कि आलमसे जुदा हो जाओ ।

हुस्न कहता है जिधर जाओ नया आलम है ?

न कभीके बादापरस्त हम, न हमें यह कैफ़े-शराब है ।

लबेयार चूमें हैं ख्वाबमें, वही जोशे-मस्तिशे-ख्वाब है ॥

दिले मुब्तिला है तिरा ही घर, उसे रहने दे कि खराबकर ।

कोई मेरी तरह तुझे मगर न कहे, कि खाना खराब है ॥

उन्हें 'किब्रे-हुस्नकी' नखवतें, मुझे 'फ़ैजे-इश्ककी' हैरतें ।

न कलाम है, न पयाम है, न सवाल है, न जवाब है ॥

दिले-अन्दलीब यह शक नहीं, गुलो-लालाके यह बरकत नहीं ।

मेरे इश्कका वोह रिसाला है, तेरे 'हुस्नकी' यह किताब है ॥

नहीं होता कि बड़कर हाथ रख दें ।

तड़पता देखते हैं, दिल हमारा ॥

अगर क़ाबू न था दिलपर, बुरा था ।

वहाँ जाना सरे-महफ़िल हमारा ॥

वहाँ पहुँचके यह कहना सबा ! सलामके बाद ।

“कि तेरे नामकी रट है, खुदाके नामके बाद ॥”

यह हालत है तो शायद रहम आ जाय ।

कोई उसको दिखा दे दिल हमारा ॥

बे तेरे, जीनेकी किस जीसे तमन्ना करते ?
मर न जाते जो शबे-हिज्र तो हम क्या करते ?

भला किस दिलसे हम इनकारे-दवे-इश्क करते हैं ।
नहीं कुछ है तो क्यों रह-रहके दिलपर हाथ धरते हैं ॥

जाहिरमें तो कुछ चोट नहीं खाई है ऐसी ।
क्यों हाथ उठाया नहीं जाता है जिगरसे ?

ता-सहर वोह भी न छोड़ी तूने ऐ बादे-सबा !
यादगारे-रौनके-महकिल थी परवानेकी खाक ॥

तूने दावाए-खुदाई न किया खूब किया ।
ऐ सनम ! हम तेरे दीदारकी तरसा करते ॥
दिले-बीमारसे दावा है मसीहाईका ।
चश्मे-बीमारकी अपने नहीं अच्छा करते ॥
दागेदिल दिलवर नहीं, सीनेसे फिर लिपटा हूँ क्यों ?
मैं दिलेदुश्मन नहीं, फिर यूँ जला जाता हूँ क्यों ?

रात इतना कहके फिर आशिक तेरा राश कर गया ।
“जब वही आते नहीं, मैं होशमें आता हूँ क्यों ?”

वोह कहते हैं—“मैं ज़िन्दगानी हूँ तेरी” ।
यह सच है तो इसका भरोसा नहीं है ॥*

// *तुम हमारी ज़िन्दगी, पर ज़िन्दगीकी क्या उम्मीद ?
तुम हमारी जान, लेकिन क्या भरोसा जानका ? //

—जौक

कमी न जोशो-जुनूंमें, न पाँवमें ताकत ।
कोई नहीं जो उठा लाये घरमें सहाराको ॥

ऐ पीरेमुग्राँ ! खूनकी बू सागरे-में में ।
तोड़ा जिसे साक्रीने, वोह पैमानये-दिल था ॥

—निगार जनवरी १९५० ई०

कुछ हमीं समझेंगे या रोजे-क्रयामतवाले ।
जिस तरह कटती है उम्मीदे-मुलाक़ातकी रात ॥

गुबार होके भी 'आसी' फ़िरोगे आवारा ।
जुनूंने-इश्क़से मुमकिन नहीं है छुटकारा ॥

हम-से बेकल-से वादये-फ़रदा ?
बात करते हो तुम क्रयामतकी ॥

साथ छोड़ा सफ़रे-मुल्केअदममें सबने ।
लिपटी जाती है मगर हसरते-दीदार हनूज ॥

हवाके रुख़ तो ज़रा आके बैठ जा ऐ क़ैस !
नसीबे-सुबहने छोड़ा है जुल्फ़े-लैलाको ॥

बस तुम्हारी तरफ़से जो कुछ हो ।
मेरी सई और मेरी हिम्मत क्या ॥

जो रही और कोई दम यही हालत दिलकी ।
आज है पहलु-ए-ग़मनाकसे-रुख़सत दिलकी ॥
घर छुटा, शहर छुटा, कूचये-दिलदार छुटा ।
कोहो-सहरामें लिये फिरती है वहशत दिलकी ॥

रास्ता छोड़ दिया उसने इधरका 'आसी' ।
क्यों बनी रहगुजरे-यारमें तुरबत दिलकी ॥

तरक्की और तनज्जुलकी न पूछो ।
मैं दुश्मन हो गया, दुश्मन हुआ दोस्त ॥

इश्कने फ़रहादके परदेमें पाया इन्तक़ाम ।
एक मुद्दतसे हमारा खून दामनगीर था ॥
वोह मुसव्वर था कोई या आपका हुस्नेशबाब ।
जिसने सूरत देख ली, इक पैक़रे-तसवीर था ॥

मेरे दुश्मनको न मुझपर कभी क़ाबू देना ।
तुमने मुँह फेर लिया, आह, यही क्या कम है ?
कोई तो पीके निकलेगा, उड़ेगी कुछ तो बू मुँहसे ।
दरे-पीरेमुगाँपर मैपरस्तो चलके बिस्तर हो ॥
किसीके दरपे 'आसी' रात रो-रोके यह कहता था—
कि "आख़िर में तुम्हारा बन्दा हूँ, तुम बन्दा परवर हो ॥"

टुकड़े होकर जो मिली, कोहकनो-मजनूँकी ।
कहीं मेरी ही वोह फूटी हुई तक्रवीर न हो ॥

यह दोनों एक ही तरकशके हैं तीर ।
मुहब्बत और मर्गे-नागहानी ॥

तुम्हीं सच-सच बता दो कौन था शीरीकी सूरतमें ।
कि मुश्तेखाककी हसरतमें कोई कोहकन क्यों हो ॥

कौन उस घाटसे उतरा कि जनाबे 'आसी' ।
वोसा लेनेको बड़े हैं लबे-साहिलकी तरफ़ ॥

मिलनेकी यही राह, न मिलनेकी यही राह ।
 दुनिया जिसे कहते हैं, अजब राहुगुजर है ॥

ऐ शबेगोर ! वोह बेताबि-ए-शबहाय फिराक ।
 आज आरामसे सोना मेरी तकदीरमें था ॥

—तनक्रीदी हाशिये

६ जून १९५३ ई०]





‘असगर’ गोंडवी

[१८८४-१९३६ ई०]

असगरहुसैन साहब ‘असगर’के पूर्वज गोरखपुर ज़िला निवासी थे। आपके पिता गोण्डेमें क़ानूनगो थे। उन्होंने वहींसे पेंशन ली और फिर स्थाई रूपसे वहीं बस गये थे।

असगर १ मार्च १८८४ ई०में पैदा हुए। घरेलू वातवरण और आर्थिक स्थिति अनुकूल न होनेके कारण स्कूली शिक्षा व्यवस्थित रूपसे न हो सकी। यूँ फ़ारसी-अरबीका अच्छा ज्ञान था। अंग्रेज़ी भी समझ-बोल लेते थे। लेकिन यह सब उनके निजी अध्यवसाय और परिश्रमका परिणाम था।

‘असगर’ शायर न होते तो भी उनकी ख्यातिमें अन्तर न पड़ता। आप सदाचारी और पवित्र थे। आपका व्यक्तित्व उच्च और प्रभावशाली था। आपके सत्संगके परिणामस्वरूप ‘जिगर’ जैसे मशहूर रिन्द मैखानेका रास्ता छोड़कर सम्यक् मार्गपर चल निकले।

आप चश्मेका रोज़गार करते थे, आमदनी अल्प होते हुए भी न कभी आपने तंगदस्तीका किसीसे ज़िक्र किया, न कभी मेहमाँनवाज़ीमें अन्तर पड़ने दिया। अच्छा पहनते थे, अच्छा खाते थे। जो वज़अ शुरूमें अस्तियार की, उसे जीवनभर निभाया।

कुछ असें आप लाहौरके 'उर्दू मरकज'में कार्य करते रहे, और अन्तिम दिनोंमें आप 'हिन्दुस्तानी' एकेडमी' इलाहाबादकी त्रैमासिक पत्रिका 'हिन्दुस्तानी'का सम्पादन करते थे । 'असगर' खुद फर्मिया करते थे कि "मेरी ज़िन्दगीमें कोई वाक्या क़ाबिलेज़िक नहीं है ।" १९३६ ई०में आपका निधन हो गया ।

शायरीमें पहले तो आप मुंशी खलील अहमद 'वज्द'से संशोधन लेते रहे । फिर चन्द गज़लें मुंशी अमीर अल्लाह 'तसलीम'को दिखाई । लेकिन यह क्रम अधिक नहीं चल सका । 'असगर' बाक़ायदा किसीके शिष्य नहीं हुए । आपने जो मौलिक प्रतिभा और बुद्धि पाई थी, उसको देखते हुए यह कहना पड़ता है कि उन दिनों आपके योग्य कोई उस्ताद भी नहीं था । वही दक्रियानुसी पुरातन सड़े-गले विचारोंकी शृंखला चली आ रही थी । उस शृंखलामें 'असगर' जैसा प्रतिभाशाली जकड़कर नहीं रखा जा सकता था । उसे जिस लक्षपर पहुँचना था, उसके लिए कोई पगडंडी नहीं बनी थी । उसे स्वयं नई डगर बनानी थी ।

लोक-लोक गाड़ी चले, लीक़ाह चले कपूत ।

लोक छोड़ तीनों चले, शायर, सिंह, सपूत ॥

'असगर' उर्दूके उन्हीं शायरों, नरसिंहों और सपूतोंमेंसे एक थे, जो अपना मार्ग स्वयं बनाते हैं । बक़ौल ज़िगर मुरादाबादी—

अपना ज़माना आप बनाते हैं अहले-दिल ।

हम वोह नहीं कि जिसको ज़माना बना गया ॥

'असगर'ने भी 'अमीर' और 'दाग़'की शायरीके वातावरणमें आँखें खोलीं । लेकिन आपने उस रंगको सर्वथा हेय समझकर अपना नवीन

^१आपका परिचय शेर-ओ-सुखन प्रथम भागमें दिया जा चुका है ।

मार्ग चुना, और तारीफ़ यह कि जिस गज़लसे लोग दामन बचाकर निकलने लगे थे, उसीको अपने पवित्र भाव व्यक्त करनेका साधन चुना, और उस पतनोन्मुखी गज़लमें इतनी पवित्रता भरी कि उसका कायाकल्प ही हो गया। गज़ल आज जिस ऊँचाईपर पहुँच गई है, उसके इस विकासकी कल्पना स्वप्नमें भी नहीं हो सकती थी।

‘असगर’का प्रेम ईश्वरीय प्रेम है। आपके किसी शेरमें आध्यात्मिकताकी सुवास है तो किसी शेरमें दार्शनिकताकी झलक। कहीं सूफ़ियाना रंग हिलोरें ले रहा है, तो कहीं पवित्र प्रेम छलका पड़ रहा है। आपके यहाँ अश्लील, निक्कूट विचार तो दरकिनार, एक शेर भी साधारण और हलका नहीं मिलता। प्रत्येक शेर आत्म-विभोर कर देनेकी शक्ति रखता है। जो भी कहा गया है, बहुत गहरेमें डूबकर कहा गया है।

‘असगर’का प्रेम निर्मल, स्वच्छ और निष्कलंक है। उनके प्रेममें विषयाशक्ति नहीं कि उसे छिपाये फिरें; वे तो मुक्त-हृदयसे अपने प्रेमको प्रकट करते हैं और दृढ़तापूर्वक कहते हैं—‘प्रेम ही मेरे जीवनकी चेष्टा (सई) है। यही मेरे जीवनकी कमाई (हासिल) है। यही मेरी यात्राका अभीष्ट स्थान है और यही वहाँ तक पहुँचनेके लिए पगडंडी (जाद-ए-मंज़िल) है—

इश्क़ ही सअई मेरी, इश्क़ ही हासिल मेरा।

यही मंज़िल है, यही जाद-ए-मंज़िल मेरा ॥

‘असगर’का यह प्रेम अपने प्यारेकी खोजमें उन्हें मन्दिरों-मस्जिदोंकी खाक नहीं छनवाता। अपितु उनके झमेलोंसे उन्हें बेदाग़ निकाल ले जाता है—

देर^१-ओ-हरम^२ भी कूच-ए-जानाँमें आये थे।

पर शुक़ है कि बड़ गये दामन बचाके हम ॥

^१मन्दिर;

^२मस्जिद।

परिणाम इसका यह होता है कि वे इस प्रेमाग्निमें तपकर इतने महान हो उठते हैं कि अपने प्यारेकी यादमें जहाँ भी मत्था टेक देते हैं, एक तीर्थ बन जाता है। और यह तीर्थ हैं भी क्या ? जहाँ कहीं सिद्ध पुरुषों और वीतरागात्माओंके चरण पहुँचे हैं, वहीं उनकी स्मृतिमें तीर्थ बन गये।

नियाजे-इश्कको^१ समझा है क्या ऐ वाइजे-नावाँ !

हजारों बन गये काबे, जहाँ मंने जबीं रख दी ॥

प्रेमी जब उक्त स्थितिमें पहुँच जाता है, तब उसके लिए मिलन-सुख और विरह-दुःख कुछ अर्थ नहीं रखते—

क्या दर्दे-हिज्र और यह क्या लज्जते-बिसाल ।

उससे भी कुछ बुलन्द मिली है नज़र मुझे ॥

और अन्तमें एक ऐसी स्थिति आती है कि प्रेमी और प्यारा दोनों एकाकार हो जाते हैं—

अब न यह मेरी ज्ञात है, अब न यह कायनात^२ है ।

मंने नवाये-इश्कको^३ साजसे यूँ मिला दिया ॥

असगरने कुछ इसी तरहके भाव भिन्न-भिन्न अशआरमें इस तरह व्यक्त किये हैं—

इक सूरते-उप्तादगीये-नक़्शे-फ़ना^४ हूँ ।

अब राहसे^५ मतलब न मुझे राहनुमासे^६ ॥

मेरे मजाक़ेशौक़का इसमें भरा है रंग ।

मैं ख़ुदको देखता हूँ, कि तसबीरे-यारको ॥

^१प्रेम-विभोरताको; ^२सांसारिक वस्तुएँ; ^३प्रेम-वाणी, प्रेम-संगीतको;
^४विनाशका मिटा हुआ चिह्न; ^५मार्गसे; ^६पथ-प्रदर्शकसे।

हुजूमे-शौक्रमें अब क्या कहूँ मैं क्या न कहूँ ?
मुझे तो खुद भी नहीं, अपना मुद्दा मालूम ॥

जहान है कि नहीं जिस्मोजान हैं कि नहीं ।
वोह देखता है मुझे, उसको देखता हूँ मैं ॥

बेखुदीका^१ आलम है, महवे-जिबहसाई^२ हूँ ।
अब न सरसे मतलब है , और न आस्तानेसे^३ ॥

अब न कहीं निगाह है, अब न कोई निगाहमें ।
महव^४ खड़ा हुआ हूँ मैं, हुस्नकी जलवागाहमें ॥

जुनूने-इश्कमें हस्तीए-आलमपै नज़र कैसी ?
रखेलैलाको क्या देखेंगे महमिल देखनेवाले ॥

अब मुझे खुद भी नहीं होता है कोई इम्तियाज^५ ।
मिट गया हूँ इस तरह उस नक्शे-पा-के सामने ॥

नज़रमें वोह गुल समा गया है, तमाम हस्तीपै छा गया है ।
चमनमें हूँ या क़फ़समें हूँ मैं मुझे अब इसकी ख़बर नहीं है ॥

अक्स किस चीज़का आईन-ए-हैरतमें नहीं ।
तेरी सूरतमें है क्या जो मेरी सूरतमें नहीं ॥

खुदा जाने कहाँ है 'असगरे' दीवाना बरसोंसे ।
कि उसको ढूँढ़ते हैं काब-ओ-बुतख़ाना बरसोंसे ॥

‘असगरने अपने प्यारेके मोहनी रूपका वर्णन इतनी कुशलता और पवित्रतासे किया है कि कहीं भी वासनाकी गन्ध नहीं आती—

^१आत्मलीनताका; ^२नतमस्तक-लीन; ^३प्यारेके दर्वाज़ेके
पत्थरसे; ^४तल्लीन; ^५विवेक ।

उसका वोह क़दैरअना,^१ उसपर वोह रुखे-रंगी^२ ।
नाजुक-सा सरेशाख^३ इक गोया गुलेतर^४ देखा ॥

तुम सामने क्या आये, इकतरक़ा बहार आई ।
आँखोंने मेरी गोया फ़रदौसे-नज़र^५ देखा ॥

उठ्ठे अजब अन्दाज़से वोह जोशोग़ज़बमें ।
चढ़ता हुआ इक हुस्नका दरिया नज़र आया ॥

दोशपर बिजली गिरी, आँखें भी ख़ैरा^६ हो गई ।
तुम तो क्या थे, इक भलक-सी थी तुम्हारी यादकी ॥

जो शजर बाग़में है, वोह शजरे-तूर^७ है आज ।
पत्ते-पत्तेमें जो देखा तो वही नूर^८ है आज ॥

॥ यूँ मुसकराये जान-सी कलियोंमें पड़ गई ।
यूँ लबकुशा हुए कि गुलिस्ताँ बना दिया ॥ ॥

ताक़त कहाँ मुशाहदये-बेहिजाबकी^९ ।
मुभको तो फूँक देगी, तजल्ली^{१०} नक्राबकी ॥

नशे-क़दम यह हैं, उसी जाने-बहारके ।
इक पंखड़ी पड़ी है लहदपर गुलाबकी ॥

मैं इज़तराबे-शौक़^{११} कहूँ या जमाले-दोस्त^{१२} ।
इक बर्क़^{१३} है जो कौद रही है नक्राबमें ॥

^१उपयुक्त क़द; ^२सुन्दर मुख; ^३टहनीपर; ^४ताज़ा फूल;
^५स्वर्गका दृश्य । ^६चकाचौंध; ^७तूर पर्वतका वृक्ष; ^८रूप
प्रकाश; ^९परदेसे बाहर देखनेकी; ^{१०}आभा; ^{११}उत्कण्ठाकी
वेचैनी; ^{१२}प्यारेका रूप; ^{१३}बिजली ।

वोह निकहतसे^१ सिवा पिन्हां^२, वोह गुलसे भी सिवा उरियां^३ ।

यह हम हैं जो कभी परदा, कभी जलवा समझते हैं ॥

और सच तो यह है कि उसके रूपका बखान हो भी नहीं सकता—

अगर खमोश रहूँ मैं तो तू ही सब कुछ है ।

जो कुछ कहा तो तेरा हुस्न हो गया महदूद ॥ •

‘असगर’के दीवानमें एक शेर भी ऐसा नहीं, जिसमें कामुकताकी गन्ध आये । उनके यहाँ पवित्र प्रेम हिलोरें ले रहा है । वे तो प्यास बुझाने-को भी कामुकता (बुलहविशी) समझते हैं । अपने प्यारेकी खोजमें मृगमरीचिका (मौज-सराब)में भटकते रहना ही जीवनका सार समझते हैं । दर्शनोंकी प्यास बुझी तो फिर प्रेमपिपासा कहाँ रही ?

मैं बुलहविस^४ नहीं कि बुभाऊंगा तिसनी^५ ।

मेरे लिए तो उठती हैं मौजें सराबकी^६ ॥

अब तो यह तमझा है किसीको भी न देखूँ ।

सूरत जो दिखा दी है तो ले जाओ नज़र भी ॥

आये थे सभी तरहके जलवे मेरे आगे ।

मैंने मगर ऐ दीदये-हैरां नहीं देखा ॥

हम एक बार जलवये-जानाना देखते ।

फिर काबा देखते न सनमखाना देखते ॥

तसलीम^७ मुझको खानये-काबाकी मंज़िलत^८ ।

सब कुछ सही मगर वोह तेरा आस्तां^९ नहीं ॥

^१फूलकी सुगन्धसे; ^२छुपा हुआ; ^३नग्न, प्रकट; ^४कामुक;
^५प्यास; ^६मृगमरीचिकाकी; ^७स्वीकृत; ^८इज्जत, गौरव;
^९निवासस्थान ।

हर ज़र्रेमें सहराके बेताब नज़र आई ।
लैलीको भी मजनूँने यूँ छाक बसर देखा ॥

प्रेममें तो आठों पहर भीगा रहे, तभी जीवनकी सार्थकता है—

कहर है थोड़ी-सी भी ग़फ़लत तरीक़े-इश्क़में ।
'आँख़ भ्रमकी क़ैसकी और सामने महमिल न था ॥

'असगर'की रिन्दी मुलाहिज़ा हो—

रहा जो होश तो रिन्दी-ओ-मैक़शी क्या है ।
ज़रा ख़बर जो हुई फिर वोह आग़ही^१ क्या है ॥

उर्दू शायरीकी परम्पराके अनुसार 'असगर'के यहाँ भी शेख़-ओ-ज़ाहिदका ज़िक्र मिलता है । मगर देखिये कितने सलीक़े और सौजन्यताके साथ—

न होगा काविशे-बेमुद्आका^२ राज़दाँ^३ बरसों ।
वोह जाहिद जो रहा सरगुश्तए सूदो-ज़ियाँ^४ बरसों ॥

सनमकदेमें तजल्लीकी ताब मुश्किल है ।
हरममें शेख़को महबे-नमाज़ रहने दे ॥

मन्दिरों-मस्जिदोंको लेकर संसारमें इतना अधिक नर-संहार हुआ ।
फिर भी धर्मान्धोंकी आँखें नहीं खुलतीं । ईश्वर और खुदाके नामपर

^१होशियारी, वाक्त्रिफ़ियत; ^२निःस्वार्थ लगन, स्वार्थहीन काय्यौँका;
^३भेदी; ^४हानि-लाभके झगड़ेमें भटकनेवाला । भाव यह है कि
ज़ाहिद तो दूर-जन्मतकी अभिलाषामें नमाज़-रोज़ेका पाबन्द रहा, वह
कैसे जानेगा कि निःस्वार्थ पूजा-उपासना क्या होती है ?

उनके बन्दोंका हर समय रक्त पीनेको प्रस्तुत रहते हैं। इसके विपरीत 'असगर'का पवित्र हृदय है कि—

मौजे-नसीमे-सुबहमें^१, बूए-सनम कदा^२ भी है।

और भी जान पड़ गई कैफ़ियते-नमाजमें^३ ॥

'असगर' शायर हैं, मौलवी या वाइज़ नहीं। वे भी भूलें-भटकोंको मार्ग सुभाते हैं। मगर वाइज़की तरह नहीं कि पथिक खिन्न हो उठे—

फ़िल्ना-सामानियोंकी^४ खू^५ न करे।

मुस्तसर यह कि आरजू न करे ॥

पहले हस्तीकी है तलाश ज़रूर।

फिर जो गुम हो तो जुस्तजू न करे ॥

मावराये-सुखन^६ भी है कुछ बात।

बात यह है कि गुप्तगू न करे ॥

तर्क-मुद्आ^७ कर दे ऐने-मुद्आ^८ हो जा।

शाने-अबद^९ पंदाकर मजहरे-ख़ुदा^{१०} हो जा ॥

उसकी राहमें मिटकर, बे-नियाजे-ख़लक़त बन।

हुस्नपर फ़िदा होकर हुस्नकी अदा हो जा ॥

तू है जब पयाम उसका फिर पयाम क्या तेरा।

तू है जब सदा उसकी, आप बेसदा हो जा ॥

^१प्रातःकालीन मृदु पवनमें; ^२मन्दिरोंकी सुगन्ध भरी होनेसे;
^३नमाज़ पढ़नेमें और भी आनन्द आने लगा; ^४सांसारिक वस्तुओंकी;
^५इच्छा; ^६वाणीका संयम, चुप रहना; ^७अभिलाषाओंका त्याग;
^८इच्छा रहित, निर्मल; ^९आत्मसमर्पण करके उसके सेवक बननेका
गौरव प्राप्त कर; ^{१०}ईश्वरके प्रकट होनेका स्थान।

आदमी नहीं सुनता आदमीकी बातोंको ।

पैकरे-अमल बनकर ग्रैबकी सदा हो जा ॥

यह मुझसे सुन ले तू राजे-पिन्हां^१ सलामती खुद है दुश्मने-जां^२ ।

कहांसे रह्रवमें^३ ज़िन्दगी हो कि राह जब पुरखतर नहीं है^४ ॥

तलब कैसी^५ ? कहांका सूदो-हासिल कैफ़े-मस्तीमें^६ ।

दुआतक भूल जाते, मुद्दा^७ इतना हसीं होता ॥

चला जाता हूँ हँसता खेलता मौजे-हवादससे^८ ।

अगर आसानियाँ हों, ज़िन्दगी दुश्वार हो जाये ॥

‘असगर’ भी युवकोंको कुछ कर गुज़रनेकी प्रेरणा देते हैं, परन्तु कितने कोमल और मधुर ढंगसे कि नसीहतका आभासतक नहीं मिलता । वे ‘हाली’की तरह वाइज़ बनकर यह नहीं कहते—

कुछ कर लो नौजवानो उठती जवानियाँ हैं ।

बल्कि रिन्दाना एक लतीफ़ इशारा भर करके रह जाते हैं ।

ख़ूब जी भरके उठा ले जोशे-वहशतके^९ मजे ।

फिर कहां यह दस्त^{१०}, यह नाक्का^{११} कहां, महमिल^{१२} कहां ?

^१छुपा हुआ भेद; ^२सुख-चैन ही आत्माके शत्रु हैं; ^३यात्रीमें जीवनका ओज कहांसे आये; ^४जब मार्ग ही भयानक एवं कण्टकाकीर्ण नहीं है । भाव यह है कि संघर्षमें ही ज़िन्दगी है; ^५अभिलाषाओंका ज़िक्र क्या; ^६आत्म-लीनतामें हानि-लाभका लेखा-जोखा क्यों; ^७सुरुचिपूर्ण उपासनाका ध्येय पवित्र हो तो दुआके लिए हाथ उठानेकी भी याद न रहे; ^८आपदाओंसे; ^९दीवानगीके; ^{१०}बियावान; ^{११}ऊँटनी; ^{१२}लैलाका महमिल ।

‘असगर’ इस्कमें रोना-बिसूरना तो खिलाफेशन समझते ही हैं। बल्कि आपका विश्वास है कि सुखके साथ यदि दुःख न रहे तो ज़िन्दगी बेमजा हो जाय—

सहबाए-खुशगवार^१ भी या रब ! कभी-कभी ।

इतना तो हो कि तलखियेगम^२ बेमजा न हो ॥

हमारे सामने ‘असगर’ साहबके निम्न दो ग्रन्थ हैं—

१—निशाते-रूह—इसमें कुल ६३ गज़लें हैं।

२—सरोदे ज़िन्दगी—इसमें कुल ४८ गज़लें हैं।

इन्हीं दोनों ग्रंथोंसे असगरके सरल शेर चुनकर दिये जा रहे हैं—

सारे आलममें किया तुझको तलाश ।

तू ही बतला है रगेरदन^३ कहाँ ?

खूब था सहारा, पर ऐ जौक़े-जुनूँ ।

फाड़नेको नित नये दामन कहाँ ?

वोह लज्जते-सितमका जो खूगर^४ समझ गये ।

अब जुल्म मुझपै है कि सितम गाह-गाहका^५ ॥

शीशेमें मौजे-मै को यह क्या देखते हैं आप ।

इसमें जवाब है उसी बर्क़-निगाहका ॥

मेरी बहशतपै बहस-आराइयाँ अच्छी नहीं नासह !

बहुत-से बाँध रखे हैं ग़रेबाँ मेंने दामनमें ॥

इलाही कौन समझे मेरी आशुफ़्ता मिज़ाजीको^६ ।

क़क्रसमें चैन आता है, न राहत है नशेमनमें ॥

^१सुख-चैन-सुरा; ^२दुखकी कड़वाहटें ^३क़ुरानमें ऐसी आयत है कि खुदा हर रगे-ग़र्दनके नज़दीक है; ^४अभ्यस्त; ^५कभी-कभी; ^६अस्थिर स्वीभावको ।

खिलते ही फूल बागमें पजमुर्दा^१ हो चले ।
जुम्बिश रंगे-बहारमें मौजे-फ़ना की है ॥

बुलबुलो-गुलमें जो गुज़री हमको उससे क्या शरज ।
हम तो गुलशनमें फ़क्रत, रंगेचमन देखा किये ॥

जानते हैं वोह अदायें इस दिले-बेताबकी ।
उनसे बढ़कर कौन होगा, नुबतादाने-इस्तराब^२ ॥

नासहे मुश्क्रत^३ ! मगर यूँ ही तड़पने दे मुझे ।
मुझको भी मालूम है, सूदो-ज़ियाने-इस्तराब^४ ॥

तुम बाख़बर हो, चाहनेवालोंके हालसे ।
सबकी नज़रका राज़ तुम्हारी नज़रमें है ॥
मुझको जलाके गुलशने-हस्ती न फूँक दे ।
वोह आग जो दबी हुई मुझ मुश्ते-परमें है ॥

‘असगर’ हरीमेइश्कमें,^५ हस्ती^६ ही जुर्म है ।
रखना कभी न पाँव, यहाँ सर लिए हुए ॥

मरते-मरते न कभी आक़िलो-फ़रज़ाना बने ।
होश रखता हो जो इन्सान तो दीवाना बने ॥
परतवे-रुख़के करिश्मे थे सरे राह गुज़र ।
ज़रें जो खाकसे उठ्ठे, वोह सनमख़ाना बने ॥
कारफ़रमा है फ़क्रत हुस्नका नैरंगे-कमाल ।
चाहे वोह शमअ बने, चाहे वोह परवाना बने ॥

^१कुम्हलाने लगे; ^२बेचैनीको समझनेवाला; ^३हितैषी उपदेशक
महाराज; ^४बेचैनीका हानि-लाभ; ^५प्रेममन्दिरमें; ^६अहमन्यता,
अपने व्यक्तित्वका भान ।

ऐसा कि बुतकदेका जिसे राज हो सुपुर्द ।
अहले-हरममें कोई न आया नजर मुझे ॥

गो नहीं रहता कभी परदेमें राजे-आशिकी ।
तुमने छुपकर और भी उसको नुमायाँ कर दिया ॥

सरगमें तजल्ली हो, ऐ जलवए-जानाना !
उड़ जाये धुआँ बनकर, काबी हो कि बुतखाना ।

अबतक नहीं देखा है, क्या उस रुखेखन्दाँको ।
इकतारे शुआईसे उलझा है जो परवाना ॥
माना कि बहुत कुछ है, यह गर्मिये-हुस्नेशमअ ।
इससे भी ज़ियादा है, सोजे-गमे-परवाना ॥
जाहिदको तआज्जुब है, सूफ़ीको तहय्युर है ।
सद-रश्के-तरीक़त है, इक लग़जिशे-मस्ताना ॥

राजकी जुस्तजूमें मरता हूँ ।
और मैं खुद हूँ एक परदये-राज ॥

वोह शोखियोंसे जलवा दिखाकर तो चल दिये ।
उनकी ख़बरको जाऊँ कि अपनी ख़बरको में ॥

होता है राजे-इश्क़ी-मुहब्बत उन्हींसे फ़ाश !
आँखें जबाँ नहीं हैं, मगर बेजबाँ नहीं ॥

पीरीमें अक्ल आई तो समझे कि ख़ूब थी ।
डूबी हुई निशातमें,^१ राफ़लत शबाबकी^२ ॥

^१सुखचैनमें; ^२यौवनकी ।

न पूछो मुझपै क्या गुजरी है मेरी मक्के-हसरतसे ।
क्रफ़सके सामने रक्खा रहा है, आशियाँ बरसों ॥

यह इश्क़ने देखा है, यह अक्लसे पिन्हां है ।
क्रतरेमें समन्दर है, जर्रेमें बयाबाँ है ॥
धोका है यह नज़रोंका, बाजीचा है लज्जतका ।
जो कुंजे-क्रफ़समें था, वोह अस्ल गुलिस्ताँ है ॥

—निशातेरूह

समा गये मेरी नज़रोंमें छा गये दिलपर ।
खयाल करता हूँ, उनको कि देखता हूँ मैं ॥
न कोई नाम है मेरा न कोई सूरत है ।
कुछ इस तरह हमातनदीद हो गया हूँ मैं ॥
न कामयाब हुआ और न रह गया महरूम ।
बड़ा ग़ज़ब है कि मंज़िलपै खो गया हूँ मैं ॥

ख़ैर गई नज़रके साथ, होशका भी पता नहीं ।
और भी दूर हो गये, आके तेरे हुज़ूरमें ॥
तेरी हज़ार बरतरी, तेरी हज़ार मसलहत ।
मेरी हरइक शिकस्तमें मेरे हरइक कुसूरमें ॥

बस इतनेपर हुआ हंगामये-दारोरसन बरपा ।
कि ले आघोशमें आईना क्यों महरें-दरलशाँको ॥
सुना है हथ्रमें शानेकरम बेताब निकलेगी ।
लगा रक्खा है सीनेसे मताये-जौक़े-इसयाँको ॥

कहके कुछ लाला-ओ-गुल रख लिया परदा मँने ।
मुझसे देखा न गया, हुस्नका रुसवा होना ॥

हथ्र है जाहिब ! यहाँ हर चीजका है फ़ैसला ।
ला कोई हुस्नेअमल, मेरी खताके सामने ॥

चमनमें छेड़ती है किस मज्जेसे गुंच-ओ-गुलको ।
मगर मौजे-सबाकी पाकदामानी नहीं जाती ॥

कभी हैं मह्वेदीद ऐसे समझ बाक्री नहीं रहती ।
कभी दीदारसे महरूम हैं इतना समझते हैं ॥
यही थोड़ी-सी मैं है और यही छोटा-सा पैमाना ।
इसीसे रिन्द राजे-गुम्बदे-मीना समझते हैं ॥
कभी तो जुस्तजू जलवेको भी परदा बताती है ।
कभी हम शौक्रमें परदेको भी जलवा समझते हैं ॥
यह जौक़ेदीदकी शोखी, वोह अक्सेरंगे-महबूबी ।
न जलवा है न परदा, हम उसे तनहा समझते हैं ॥

सनमखानेमें क्या देखा कि जाकर खो गया 'असगर' !
हरममें काश रह जाता तो जालिम शोखे-दीं होता ॥

तुम उस काफ़िरका जौक़े-बन्दगी, अब पूछते क्या हो ?
जिसे ताके-हरम भी अबरु-ए-ख़मदार हो जाये ॥

हुस्नको बसअतें जो दीं, इश्क़को हौसला दिया ।
जो न मिले, न मिट सके, वोह मुझे मुद्दआ दिया ॥

मह-ओ-अंजुममें भी अन्दाज़ हैं पैमानोंके ।
शबको दर बन्द नहीं होते हैं मैखानोंके ॥

बुझ गई कल जो सरेबझ वही शमअ न थी ।

शमअ तो आज भी सीनेमें है परवानोंके ॥

जिसपै बुतखाना तसदुक्र, जिसपै काबा भी निसार ।

एक सूरत ऐसी भी सुनते हैं, बुतखानेमें है ॥

—सरुदे जिन्दगी

१८ जून १९५३]



बुतखाना-ओ-काबा

'जिगर' मुरादाबादी

[१८९० ई०]



अलीसिकन्दर 'जिगर' १८६० ई० में मुरादाबाद में उत्पन्न हुए। आपके पूर्वज मौलवी मुहम्मद समीअ दिल्ली-निवासी थे और ग़ाज़िग़ातुल्लाह वादशाह के शिक्षक थे। किसी कारणसे वादशाह के कोप-भाजन बन गये। अतः आप दिल्ली छोड़कर मुरादाबाद जा बसे थे। 'जिगर' के दादा हाफ़िज़ मुहम्मदनूर 'नूर' और पिता मौलवी अलीनज़र 'नज़र' भी शायर थे।

'जिगर' पहले मिर्जा 'दाग' के शिष्य थे। बाद में 'तसलीम' के शिष्य हुए। इस युग की शायरी के नमूने 'दागेजिगर' में पाये जाते हैं। आपकी वर्तमान-ढंग की शायरी का दौर 'असगर' गोण्डवी के प्रभाव में आने से हुआ। 'असगर' की संगत के कारण आपके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। पहले आपके यहाँ हलके और आम कलाम की भरमार थी। अब आपके कलाम में गम्भीरता, उच्चता और स्थायित्व आ गया है। आप ग़ज़लगो शायरों में बहुत बड़ा मर्तबा रखते हैं। नित नये अनुभवों का आप ग़ज़ल में समावेश कर रहे हैं। जिससे ग़ज़ल में एक ताज़गी, स्फूर्ति और नवीनता बढ़ती जा रही है। मजाज़ी इश्क के साथ-साथ हकीकती इश्क का पुट देकर तग़ज़ुल और तसव्वुफ़ का समन्वय करने में कमाल करते हैं। आपके पढ़ने का ढंग

इतना दिलकश और मोहक है कि सैकड़ों शायर उसकी काँपी करनेका प्रयत्न करते हैं, मगर वोह बात कहाँ ? जिगर, जिगर हैं।

पहले आप मशहूर रिन्द थे। मुशायरोंमें भी पीकर और बेखुद होकर बैठते थे। यहाँतक कि १९२८ ई०में बिजनौर नुमाइशके मुशायरेमें हमने उन्हें मुशायरेमें ही पीते हुए देखा है। मगर अब असेंसे तौबा किये हुए हैं। बहुत-से मुशायरोंमें आपका कलाम हमें सुननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

जिगरकी शायरी

इश्कको दिलफेंक छोकरे मनबहलावका एक साधन समझते हैं। जब जी चाहा किया, जब जी न चाहा, छोड़ दिया। यह इश्क नहीं, लुचपन है, ऐय्याशी है। इश्ककी परिभाषा 'जिगर'से सुनिये—

यह इश्क नहीं आसाँ, इतना ही समझ लीजो।

इक आगका दरिया है, और डूबके जाना है ॥

'जिगर'की प्रेयसी हरजाई या बाज्जारी नारी नहीं। वह हयापरवर, मुशीला कुलीन सुकुमारी है। न जाने उसके हृदयमें प्रेमकी चिनगारी कैसे जा लगी है ? वह अन्दर-ही-अन्दर सुलगती जा रही है, परन्तु उसका धुआँ बाहर नहीं निकलने देना चाहती। एक भी आह ओठोंसे बाहर निकली तो जग हँसाई होगी। कुटुम्बी क्या कहेंगे ? इसी भयसे वह मन-ही-मनमें सुलगती जा रही है। सामाजिक और पारिवारिक बन्धन इतने हैं कि वह एक पाती भी अपने प्यारेको नहीं भेज सकती, न किसीके हाथ सन्देश। जिगर अपनी प्रेयसीकी विवशतासे परिचित हैं। वे अन्य शायरोंकी तरह शिकवा-ओ-शिकायत, नाला-ओ-फुसाँ नहीं करते; यही कहकर दिलको बहलानेका यत्न करते हैं—

इधरसे भी है सिवा, कुछ उधरकी मजबूरी।

कि हमने आह तो की, उनसे आह भी न हुई ॥

ऐसे हयापरवर माशूकका तसव्वुर उर्दूगज़लमें 'जिगर'की जिगर-सोज़ीसे पहले-पहल आया है।

कुछ शायरोंका सिद्धान्त है कि—

जो ग़म हुआ उसे ग़मे-जानाँ बना लिया

यानी साँसारिक आपदायें किसी भी कारणसे आयें। वे स्व इशक़के कारण आईं, यही समझकर उसका उल्लेख ग़ज़लमें करते हैं। लेकिन आजका शायर ग़मेदौराँको ग़मेजानाँ न बनाकर, ग़मेजानाँको ग़मेदौराँ बनानेके पक्षमें है।

हमपर अकेले ही यह मुसीबतोंका पहाड़ नहीं टूट रहा है, अपितु समस्त मानव समाज इसके नीचे पड़ा हुआ कराह रहा है। उन सबका दुख दूर होनेमें ही अपना कल्याण है। यही भावना 'ग़मेदौराँ' है।

राष्ट्रपिता बापूपर जो अमानुषिक अत्याचार दक्षिण अफ़्रीकामें ग़ोरो द्वारा हुए, बापूने उन्हें व्यक्तिगत न समझकर समस्त अश्वेत जातिका अपमान समझा। इसी समझको 'ग़मेदौराँ' कहते हैं।

एक अबला भरी ज़वानीमें विधवा हो जाती है। वह बिलख-विलख कर रोनेके बजाय, यह समझकर कि यह आपदा केवल उसीपर नहीं आई है, न जाने कितनी नारियाँ इस दुःखसे बिलख रही हैं, उनके उद्धारके लिए आश्रमों और शिक्षालयोंका प्रबन्ध करनेमें जुट जाती है। घर-घर जाकर विधवाओंको सान्त्वना देती है। इसी कार्यको 'ग़मेदौराँ' कहते हैं।

यदि किसी पुत्रवती माँका इकलौता लाल देशहितमें शहीद हो जाता है, और उसकी माँ अपनेको निपूती न समझकर, समूचे देशकी माँ समझ लेती है। उसी समझको 'ग़मेदौराँ' कहते हैं। 'जिगर' इसी 'ग़मेदौराँ'-के कायल है—

मैं बोह साफ़ ही न कह दूँ, जो है फ़र्क़ मुझमें, तुझमें।

तेरा दर्द, दर्द-तनहा, मेरा ग़म ग़मे-ज़माना ॥

‘जिगर’का मानवीय-प्रेम धीरे-धीरे ईश्वरीय-प्रेममें परिवर्तित हो जाता है, और वे सर्वत्र उसका जलवा देखते हैं—

॥ जिस रंगमें देखा उसे, वह परदानशीं है ।
 और उसपै यह परदा है कि परदा ही नहीं है ॥
 हर एक मक़ाममें कोई इस तरह मुकीं है ।
 पूछो तो कहीं भी नहीं, देखो तो यहीं है ॥

बाहरकी आँखें वन्दकर जब उसे हियेकी आँखोंसे देखा तो—

मुझीमें रहे मुझसे मस्तूर होकर ।
 बहुत पास निकले बहुत दूर होकर ॥

अपना प्यारा सर्वत्र अपने साथ है, परन्तु अपनी अन्धी आँखें उसे न देख सकें, तो उसका क्या दोष ? जिसने जब भी उसे टेरा, अपने समीप पाया—

इस तरह न होगा कोई आशिक भी तो पाबन्द ।
 आवाज जहाँ दो उसे वोह शोख वहीं है ॥

साथ ही नहीं है, वह रोम-रोममें व्याप्त है—

आँखोंमें नूर, जिस्ममें बनकर वोह जाँ रहे ।
 यानी हमींमें रहके, वोह हमसे निहाँ रहे ॥

और जो मुसीबतें हमपर आई, वोह हमारे साथ हमारे प्यारेने भी वर्दीस्त कीं । आये हुए दुःखको जब अपने साथी बाँट लेते हैं, समवेदना प्रकट करते हैं, तो दुःखका बोझ बहुत हलका लगने लगता है—

हरचन्द वक्फ़े-क़श-म-क़शे-शे जहाँ रहे ।
 तुम भी हमारे साथ रहे, हम जहाँ रहे ॥

हमारा प्यारा हररूपमें जलवागर है, हियेकी आँखोंसे देखो तो भूखोंकी भूख-प्यासमें, सतियोंके आँसुओंमें, पीड़ितोंकी आहोंमें, पक्षियोंके चहकनेमें, वही दिखाई देगा—

बहारे-लाला-ओ-गुल, शोखिये-बक़्ती-शरर होकर ।

वोह आये सामने लेकिन, हिजाबाते-नज़र होकर ॥

अपने प्यारेका जलवा कैसे व्यक्त किया जाय ? जिन आँखोंने उसे देखा है, वे बोलना नहीं जानतीं, और जीभ कहे तो क्या कहे ? उसने कुछ देखा नहीं—

क्या हुस्नका अफ़साना महदूद हो लफ़्जोंमें ।

आँखें ही कहें उसको, आँखोंने जो देखा है ॥*

वाहरे मेरे प्यारेका मेरे प्रति अनुराग ! न वोह काबेमें रहा, न मन्दिरमें, न धनियोंके महलोंमें । वह तो मेरे इस उजड़े दिलमें ही बना रहा—

“ जो न काबेमें है महदूद न बुतखानेमें ।

हाय वोह और एक उजड़े हुए काशानेमें ॥

मैं तो उसीके हुस्नका आशिक हूँ । मुझे तो सर्वत्र उसीका हुस्न-ही-हुस्न नज़र आ रहा है, और कुछ भी नहीं—

हुस्न है मेरे सामने, हुस्नके मासिवा नहीं ।

इश्क़में मुब्तिला हूँ मैं, कुफ़्रमें मुब्तिला नहीं ॥

परमात्माकी एक झलक देखनेकी साध लिये हुए न जाने कितने साधकोंने साधनाएँ कीं । कुछ और आगे बढ़े तो परमात्माके चरणोंकी समीपता प्राप्त करनेकी अभिलाषामें दुर्धर तप करते रहे । अधिक-से-अधिक ईश्वरमें एकाकार होनेके प्रयत्न किये, परन्तु परमात्मा कोई पृथक

* गिरा अनयन, नयन बिन बानी—तुलसीदास

शक्ति नहीं। वीतराग होनेपर यह आत्मा ही परमात्मा हो सकता है। कुछ इसी सिद्धान्तसे मिलता-जुलता अभिप्राय जिगर इस तरह व्यक्त करते हैं—

यहाँतक जख्म कर लूँ काश तेरे हुस्ने-कामिलको।

तुझीको सब पुकार उट्ठेँ निकल जाऊँ जिधर होकर ॥

प्रेमी और प्यारा जब एकाकार हो जायें, तब विरह-मिलनके दुःखोंका समूल नाश हो जाता है। गुण, गुणी, ज्ञाता, ध्यान, ध्येय, ध्याता, तू, मैं, परका तब भेद-भाव नहीं रहता। मिस्रीसे मिठास जुदा नहीं, इसी तरह यह आत्मा वीतराग होकर परमात्म-पद प्राप्त कर लेता है, तब उपासक और उपास्यका भेद नहीं रहता—

वहदते-ख़ास इश्कमें गैरियतका जिक्र क्या ?

अपने ही जलवे देखिये अपनी ही बज्मेनाजमें ॥

ईश्वर नामकी कोई वस्तु संसारमें है और उसीने यदि यह सृष्टि की है तो न जाने वह अपने भक्तोंको मिटानेपर क्यों तुला हुआ है ? इस बेरहमीसे तो बच्चा भी अपने खिलौने नहीं तोड़ता। जब भक्त ही न होंगे तो भक्त-वत्सलको कौन पूछेगा ? सृष्टि ही न रहेगी तो उसे सृष्टि - कर्ता कौन कहेगा ?

मुझे ख़ाकमें तो न यूँ मिला, हूँ अगर्चे मैं तेरा नक्शे-पा।

तेरे जलवे-जलवेकी है बक्रा, मेरे शौक़े-नाम-ब-नामसे' ॥

‘इसी भावको इकबालने यूँ व्यक्त किया है—

इसी कोकबकी ताबानीसे है तेरा जहाँ रोशन।

जवाले-आदमे-ख़ाकी ज़ियाँ तेरा है या मेरा ?

(इन्हीं मानव-रूपी चमकते नक्षत्रोंसे तेरा संसार जगमग-जगमग हो रहा है। यदि इनको तू नष्ट कर देगा तो नुक़सान तेरा होगा या अन्य किसीका ?)

‘जिगर’ रोने-बिसूरनेको शायाने-शान नहीं समझते—

इश्ककी अजमत न हरगिज जीते जी कम कीजिये ।
जान दे दीजे मगर, आँखें न पुरनम कीजिये ॥

तौहीने-इश्क देख न हो, ऐ ‘जिगर’ ! न हो ।
हो जाये दिलका खून, मगर आँख तर न हो ॥ .

और कभी आहो-नाला मुँहसे निकले भी तो—

नाला यूँ कीजे, यह अन्दाजे-शिकेबाई^१ हो ।
जैसे बेसास्ता^२ होंटोंपै हँसी आई हो ॥

गमे-इश्कमें ओठोंपर मुसकान न आये, तो ‘जिगर’ ऐसे इश्कको इश्क
और ज़िन्दगीको ज़िन्दगी नहीं समझते—

तेरी खुशीसे अगर गममें भी खुशी न हुई ।
वोह ज़िन्दगी तो मुहब्बतकी ज़िन्दगी न हुई ॥

‘जिगर’ अपने प्यारे द्वारा दिये गये कष्टोंको कष्ट नहीं समझते ।
बल्कि उसका अहसान समझकर आभारी होते हैं—

तेरी अमानतेशमका तो, हक़ अदा कर लूँ ।
खुदा करे शबे-फ़ुरक़त अभी दराज़ रहे ॥
तेरे निसार अताकरदा एक लतीफ़ ख़लिश ।
तमाम उम्र मुहब्बतको जिसपै नाज़ रहे ॥

अब जबाँ भी दे अदाये-शुक्रके क़ाबिल मुझे ।
दर्द बरूशा है अगर तूने बजाये-दिल मुझे ॥

^१सन्तोष और सब्रका अन्दाज़ मालूम दे; ^२अनायास, यकायक ।

मनुष्यकी वह स्थिति कितनी शोचनीय है, जब कि कोई उसे दयनीय समझकर जुल्मो-सितमसे हाथ खींच ले। युद्धमें रत एक योद्धा यह समझकर हथियार फेंक दे कि विपक्षी योद्धा अशक्त हो चला है, प्रतिद्वन्द्वी योद्धाके लिए घोर लज्जाकी बात होगी।

फूँक दे ऐ गैरते-सोजे-मुहब्बत फूँक दे ।
अब समझती है वोह नजरें, रहमके काबिल मुझे ॥

‘जिगर’के यहाँ भी रक़ीबका ज़िक्र आता है, मगर कितनी महानताके साथ ?

वोह हजार दुश्मने-जाँ सही, मुझे फिर भी गैर अजीज़ है ।
जिसे खाके-पा तेरी छू गई, वोह बुरा भी हो तो, बुरा नहीं ॥

‘जिगर’ एक ज़मानेमें बहुत बड़े रिन्द रहें हैं। ऐसे कि इमामे-मैखाना कहलानेके पूर्ण अधिकारी। अपनी रिन्दीके बारेमें फ़रमाते हैं—

रिन्द जो मुझको समझते हैं उन्हें होश नहीं ।
मैकदा-साज़ हूँ मैं मैकदाबरदोश नहीं ॥
पाँव रुकते ही नहीं मंजिले-जानाँके खिलाफ़ ।
और अगर होशकी पूछो तो मुझे होश नहीं ॥

‘जिगर’को दसैं-हकीकत बहुत न दे वाइज़ !
वोह बेख़बर है बज़ाहिर तो बाख़बर पिन्हाँ ॥

‘रक़ीबके सम्बंधमें किसी अज्ञात कविका यह शेर ‘जिगर’ को हमने भूम-भूम कर पढ़ते सुना है और उनकी रायमें उर्दू शायरीमें इससे अच्छा शेर रक़ीब पर नहीं लिखा गया।

सामने उसके न कहते मगर अब कहते हैं ।
लज्जते-इश्क़ गई गैरके मर जानेसे ॥

जबतक शबाबेइशक, मुकम्मिल शबाब है ।
पानी भी है शराब, हवा भी शराब है ॥

तूने जिस अशकपर नज़र डाली ।
जोश खाकर वही शराब हुआ ॥

‘जिगर’ पतनोन्मुखी कौमको देखिये किस अन्दाज़में ग़ैरत दिलाते हैं—

जो साज़ कि खुद नमये-हिरमाँ था उसीको ।
अन्देशये-मिज़राब है मालूम नहीं क्यों ?
उसी किस्तीको नहीं ताबेतलातुम सदहैफ़ ।
जिसने मुँह फेर दिये थे कभी तूफ़ानोंके ॥

सुख-दुखका जोड़ा है । जब सुख भोगते रहे तो दुखसे घबराहट क्यों ?

काँटोंका भी कुछ हक़ है आखिर ।
कौन छुड़ाये अपना दामन ॥

अब हम आपके ‘शोलयेतूर’ दीवानसे ओर पत्र-पत्रिकाओंसे सभी
तरहका कलाम चुनकर दे रहे हैं—

बैठे हैं बज़्मेदोस्तमें^१ गुमशुदगाने-हुस्ने-दोस्त^२ ।
इशक है और तलब^३ नहीं, नम्रा^४ है और सदा^५ नहीं ॥
अरबाबे-चमनसे^६ नहीं, पूछो यह चमनसे ।
कहते हैं किसे निकहते-बरबादका^७ आलम ॥

^१प्यारेकी महफ़िलमें; ^२प्यारेके रूपमें लीन गुम-सुम; ^३इच्छा;
^४गीत लहरी; ^५आवाज़; ^६चमनवालोंसे; ^७बरबादीकी
गन्धका । ”

हरइक सूरत, हरइक तसवीर मुबहिम^१ होती जाती है ।
इलाही ! क्या मेरी दीवानगी कम होती जाती है ?

तेरे बगैर तो जीना रवा नहीं लेकिन ।
मैं क्या करूँ जो तेरा गम ही जानवाज^२ रहे ॥

इश्क ही के हाथोंमें कुछ सकत^३ नहीं रहती ।
वरना चीज ही क्या है गोशये-नक्राब उनका ॥

आँखोंका था कुसूर न दिलका कुसूर था ।
आया जो मेरे सामने मेरा गरूर था ॥

किसी सूरत नमूदे-सोजे-पिनहानी^४ नहीं जाती ।
बुझा जाता है दिल, चेहरेकी ताबानी^५ नहीं जाती ॥

मुहब्बतमें इक ऐसा वक्त भी दिलपर गुजरता है ।
कि आँसू खुश्क हो जाते हैं, तुगयानी^६ नहीं जाती ॥

जिसे रौनक्र तेरे कदमोंने देकर छीन ली रौनक्र ।
वोह लाख आबाद हो उस घरकी वीरानी नहीं जाती ॥
वोह यूँ दिलसे गुजरते हैं कि आहट तक नहीं होती ।
वोह यूँ आवाज देते हैं, कि पहचानी नहीं जाती ॥

वोह लाख सामने हों मगर इसका क्या इलाज ?
दिल मानता नहीं कि नज़र कामयाब है ॥

^१धुंधली; ^२जानके साथ; ^३शक्ति; ^४अन्तरंग व्यथाका
अस्तित्व; ^५चमक; ^६तूफ़ान ।

उन्हींके दिलसे कोई इसकी अजमतें पूछे ।
बोह एक दिल जिसे सब कुछ लुटाके लूट लिया ॥

और तो कुछ कमी नहीं आपके इक़तदारमें^१ ।
आप मुझे भुला सकें यह नहीं अस्तयारमें^२ ॥

फ़ितनये-रोज़गारमें^३ अमन^४ है क्या, करार^५ क्या ?
हासिले-ज़ीस्त^६ ग़म सही, ग़मका भी ऐतबार क्या ?

क्यों आतिशेगुल मेरे नशेमनको जलाये ?
तिनकोंमें है खुद बर्क़चमनज़ादका आलम ॥

उन लबोंकी जाँनवाज़ी देखना ।
मुँहसे बोल उठनेको है जामे-शराब ॥

दिलको बरबाद करके बैठा हूँ ।
कुछ खुशी भी है कुछ मलाल भी है ॥

आ कि तुझ बिन इस तरह ऐ दोस्त ! घबराता हूँ मैं ।
जैसे हर शैमें किसी शैकी कमी पाता हूँ मैं ॥
कूए-जानाँ की हवातकसे भी थरता हूँ मैं ।
क्या करूँ बेअस्तयाराना चला जाता हूँ मैं ॥
मेरी हस्ती शौक़ेपेहम, मेरी फ़ितरत इज़्तराब ।
कोई मज़िल हो मगर गुज़रा चला जाता हूँ मैं ॥

उनके बहलाये भी न बहला दिल ।
रायगाँ^७ सईए-इल्तफ़ात^८ गई ॥

^१अधिकारमें; ^२संसारके भ्रमेलोंमें; ^३सुख-शान्ति; ^४चैन;
^५ज़िन्दगीका हासिल; ^६व्यर्थ; ^७कृपा पानेकी युक्ति ।

तर्क-उल्फत बहुत बजा नासेह !
लेकिन उसतक अगर यह बात गई ?

सीनये-नैपे^१ जो गुजरती है ।
वोह लबे-नै-नवाज^२ क्या जाने ?

इबरते-बन्दगी-ओ-नाचारी^३ ।
कोई बन्दानवाज^४ क्या जाने ?

इस इश्ककी तलाफ़िये-माफ़ात^५ देखना ।
रोनेको हसरतें हैं, जब आंसू नहीं रहे ॥

हम न मरते तेरे तगाफ़ुले^६ ।
पुरसिशे-बे-हिस्ाबने^७-मारा ॥

हाय यह मजबूरियाँ, महलूमियाँ, नाकामियाँ ।
इश्क आखिर इश्क है, तुम क्या करो, हम क्या करें ?

किस तरफ़ जाऊँ, किधर देखूँ, किसे आवाज दूँ ?
ऐ हुजूमे-नामुरादी जी बहुत घबराय है ॥

हमसे पूछो तो इश्ककी भी निगाह ।
सलत काफ़िर निगाह होती है ॥
वोह भी है इक मुकामे-इश्क जहाँ ।
हर तमन्ना गुनाह होती है ॥

^१बाँसुरीके मनपर; ^२स्वर खींचनेवालेके ओठ । ^३उपासना
और उसे न कर सकनेकी मजबूरियाँ; ^४खुदा, माशूक; ^५प्रायश्चित्तकी
मरी हुई भावनार्यें; ^६उपेक्षासे; ^७अधिक पूछताछने ।

इलाही ! तर्कमुहब्बत भी क्या मुहब्बत है ।
भुलाते हैं उन्हें वोह याद आये जाते हैं ।

मैं तेरा अक्स हूँ कि तू मेरा ।
इस सवालो-जवाबने मारा ॥

देखा गया न यह भी सैयादो-बागबाँसे ।
इक शाखेगुल थी लिपटी एक शाखे-आशियाँसे ॥

जमानेके हम्दोशो^१ हमराज^२ कबतक ?
जमानेको पीछे हटाता चला आ ॥

सावनकी रैन अँधेरी, तनहाइयोंका आलम ।
भूले हुए फ़साने सब याद आ रहे हैं ॥

शौकने बेखुदीमें जब दस्तेतलब^३ बढ़ा दिया ।
इबरते-इश्कने वहीं पहलू-ए-दिल दबा दिया ॥

“इश्क फ़नाका नाम है इश्कमें ज़िन्दगी न देख ।
जलवये-आफ़ताब बन, ज़र्रेमें रोशनी न देख ॥
होके रहेगा हमनवा वोह भी तेरे ही साथ-साथ ।
नगमयेशौक गाये जा इश्ककी बरहमी न देख ॥”

सोज़े-तमाम चाहिए, रंगे-दवाम चाहिए ।
शमअ तहेमज़ार हो शमअ सरेमज़ार क्या ?

भूल जाऊँ कि मेरा जौक्रेमुहब्बत क्या है ?
इस तरह तो न मेरी हौसला अफ़जाई हो ॥

^१कन्धे-ब-कन्धे; ^२साथ-साथ; ^३इच्छाका हाथ ।

उनके जाते ही यह हैरत छा गई ।

जिस तरफ़ देखा किया, देखा किया ॥

वोह उनकी बेरुखी, वोह बेनियाज़ाना हँसी अपनी ।

फिरी महफ़िल थी लेकिन बात बिगड़ी बन गई अपनी ॥

फूल वही, चमन वही, फ़र्क़ नज़र-नज़रका है ।

अहदे बहारमें था क्या ? दौरेख़िज़ाँमें क्या नहीं ॥

रह गया है अब तो बस इतना ही रब्त इक़ शोख़से ।

सामना जिस वक़्त हो जाता है, भर आता है दिल ॥

जब मिली आँख़ होश खो बैठे ।

कितने हाज़िर जवाब हैं हम लोग ॥

अल्लाह तुझे रक्खे महफ़ूज़^१ हवादससे^२ ।

ऐ कुफ़ ! तेरे दमतक आराइशे-ईमाँ^३ हैं ॥

पीता बग़ैर अज़न^४ यह कब थी मेरी मजाल ।

दर-परदा चश्मेयारकी शह पाके पी गया ॥

किधरसे बर्क़ चमकती है देखें ऐ वाइज़ !

मैं अपना सागर उठाता हूँ, तू किताब उठा ॥

बहार तौबा-शिकन, चश्मे-मस्तेयार मुसिर ।

मैं आज पी जो न लेता वह बदगुमाँ होता ॥

हमसे नज़र फेर ली उस शोख़ने ।

हम भी हैं इन्सान ख़फ़ा हो गये ॥

^१सुरक्षित;

^२आपदाओंसे;

^३ईमानकी शोभा;

^४निमंत्रण ।

इश्क ही तनहा नहीं आशुप्ता सर मेरे लिए ।
हुस्न भी बेताब है और किस क़दर मेरे लिए ॥

अब नज़रको कहीं क़रार नहीं ।
काविशे-इन्तखाबने मारा ॥

ज़रोंसे बातें करते हैं दीवारोदरसे हम ।
मायूस किस क़दर हैं, तेरी रहगुज़रसे हम ॥
कोई हसीं हसीं ही ठहरता नहीं 'जिगर' !
बाज़ आये इस बुलन्दिये-ज़ौक़ी-नज़रसे हम ॥
इतनी-सी बातपर है बस इक जंगेज़रगरी ।
पहले उधरसे बढ़ते हैं वोह या इधरसे हम ॥

मुमकिन नहीं कि जज़बयेदिल कारगर न हो ।
यह और बात है तुम्हें अबतक ख़बर न हो ॥

जिसे मैं भी खुद न बता सकूँ, मेरा राज़ेदिल है वोह राज़ेदिल ।
जिसे ग़ैर दोस्त समझ सके, मेरे साज़में वोह सदा नहीं ॥

अज़े-शौक़पर मेरी पहले कुछ अज़ाब उनका ।
ख़ास इक अदाके साथ, उफ़ वोह फिर हिजाब उनका ॥

यह आलम है अब खुशक आँखोंमें अपनी ।
कि तूफ़ाँ है बरपा रवानी नहीं है ॥

हृद्दे-रूचये-महबूब है वहींसे शुरू ।
जहाँसे पड़ने लगे पाँव डगनगाये हुए ॥

लेके ख़त उनका किया ज़ब्त बहुत कुछ लेकिन ।
थरथराते हुए हाथोंने भरम खोल दिया ॥

भिलाके आँख न महरूमे-नाज रहने दे ।

तुझे कसम जो मुझे पाकबाज रहने दे ॥

खता मुआफ़ किसी औरका तो जिक्र ही क्या ?

नियाजमन्द तेरे तुझसे बेनियाज रहे ॥

मानूँसे-ऐतबारे-करम क्यों किया मुझे ?

अब हर खतायेशौक उसीका जवाब है ॥

जो मसरतोंसे खलिश नहीं, जो अजीयतोंमें मज्जा नहीं ।

तेरे हुस्नका भी कुसूर है, मेरे इश्क ही की खता नहीं ॥

मेरा जौक भी, मेरा शौक भी, है बलन्द सतहे-अवामसे ।

तेरा हिज्र भी, तेरा वस्ल भी, मेरे दर्देदिलकी दवा नहीं ॥

चुप हैं वोह यूँ सुनके मेरी अजेंशौक ।

जैसे कि सचमुच ही खफ़ा हो गये ॥

खबर नहीं मुझे, मैं क्या हूँ, आरजू क्या है ?

किसीने जबसे यह समझा दिया कि तू क्या है ॥

कूचये-इश्कमें निकल आया ।

जिसको खाना-खराब होना था ॥

लाखोंमें इन्तखाबके क़ाबिल बना दिया ।

जिस दिलको तुमने देख लिया दिल बना दिया ॥

माना गरुरे-इश्क भी इक चीज़ है मगर ।

इतने भी दूर-दूर तेरे आस्ताँसे क्या ?

उनकी वोह आमद-आमद अपना यहाँ यह आलम ।

इक रंग आ रहा है, इक रंग जा रहा है ॥

वोह कबके आये भी और गये भी, नज़रमें अबतक समा रहे हैं ।
 यह चल रहे हैं, वह फिर रहे हैं, यह आ रहे हैं, वह जा रहे हैं ॥
 वहीं कयामत है कहेबाला, वही है सूरत, वही सरापा ।
 लबोंको जुम्बिश, निगहको लरज़िश, खड़े हैं और मुसकरा रहे हैं ॥

हुस्न आया था खुद मनानेको ।
 सो तबज्जह ही इश्क़ने कम की ॥

मुझे क्या पड़ी है तेरे दरसे उट्टूँ ।
 ठहरने जो दे इज़्तराबे-मुहब्बत ॥

यह क्या है कि पहलूमें वोह भी हैं लेकिन—
 शबे-माह फिर भी सुहानी नहीं है ॥

अजब इन्क़लाबे ज़माना है, मेरा मुख़्तसर-सा फ़साना है ।
 यही अब जो बार है दोशपर यही सर था जानू-ए-यारपर ॥

हश्मके दिन वोह गुनहगार न बरूशा जाये ।
 जिसने देखा तेरी आँखोंका पशेमाँ होना ॥

दिलको क्या-क्या सकून होता है ।
 जब कोई आसरा नहीं होता ॥

उमीदे-उफ़ूको' भी मंने अब दिलसे मिटा डाला ।
 यह था इक़ बदनूमा धब्बा मेरे दामाने-इसयाँका' ॥

चाँदनी है, हवा है, क्या कहिये ।
 मुफ़लिसी क्या बला है, क्या कहिये ॥

'हश्ममें अपराध क्षमा किये जानेकी आशाको; 'पाप-रूपी चादरका ॥

फिर वह हमसे खफ़ा हैं क्या कहिये ?

जिन्दगी बेहया है, क्या कहिये ॥

अपना ज़माना आप बताते हैं अहले दिल ।

हम वोह नहीं कि जिसको ज़माना बता गया ॥

मुझ नातवाने-इश्क़को^१ समझा है तुमने क्या ?

दामन पकड़ लिया तो छुड़ाया न जायगा ॥

हरमो-दैरयें रिन्दोंका ठिकाना ही न था ।

वोह तो यह कहिए अमाँ^२ मिल गई मयख़ानेमें ॥

वोह भी निकली इक शुआए-बर्क़-हुस्न^३ ।

मैं जिसे अपनी नज़र समझा किया ॥

नवीदे-बलिशशे-इसयाँसे^४ शर्मसार न कर ।

गुनाहगारको या रब ! गुनाहगार न कर ॥

नाज़ करती है ख़ाना वीरानी ।

ऐसे ख़ाना ख़राब हैं हम लोग ॥

उससे भी शोख़तर हैं उस शोख़की अदायें ।

कर जायें काम अपना लेकिन नज़र न आयें ॥

जुनूने-मुहब्बत यहाँतक तो पहुँचा ।

कि तर्क-मुहब्बत किया चाहता हूँ ॥

हुस्नकी सहरकारियाँ^५ इश्क़के दिलसे पूछिये ।

वस्ल कभी है हिज़्र-सा, हिज़्र कभी विसाल-सा ॥

^१निर्बल प्रेमीको; ^२शरण; ^३हुस्नरूपी विजलीकी किरण;

^४अपराधोंको क्षमा किये जानेकी सूचनासे; ^५जादूगरी ।

हुस्नकी शानें थीं जितनी, सब नुमायां हो गईं ।
जो तेरे रुखसे बचीं रंगे गुलिस्तां हो गईं ॥

—निगार जनवरी १९४१ ई०

मेरी हैरतकी कसम आप उठायें तो नक्काब ।
मेरा जिम्मा है कि जलवे न परीशाँ होंगे ॥

मेरा जो हाल हो-सो-हो बक़्तेज़र गिराये जा ।
मैं यूँ ही नालाकश रहूँ तू यूँ ही मुसकराये जा ॥

लहज़ा-ब-लहज़ा दम-ब-दम जलवा-ब-जलवा आये जा ।
तिशने-हुस्ने-जात हूँ, तिश्नालबी बढ़ाये जा ॥

लुत्फ़से है कि महरसे, होगा कभी तो रुबरू ।
उसका जहाँ पता चले, शोर वहीं मचाये जा ॥

ख़ुशा वोह दर्दे-मुहब्बत, ज़हे वोह दिल कि जिसे ।
जरा सुकून हुआ, गुद-गुदा दिया तूने ॥

ख़ुशा वोह जान जिसे दी गई अमानते-इश्क़ ।
ज़हे वोह दिल जिसे अपना बनाके लूट लिया ॥
सलाम उसपै कि जिसने उठाके परदये-दिल ।
मुभीमें रहके मुभीमें समाके लूट लिया ॥

मुझे चाहिए वही साक़िया जो छलक चले, जो बरस चले ।
तेरे हुस्ने-शीशा-बदस्तसे, तेरी चश्मे-बादा-बजामसे ॥

तुम्हें भी ख़बर है जो तुम कह गये हो ?
ख़ुद अपनी अदाओंसे मसहूर होकर ॥

मुनता हूँ कि हर हालमें वोह दिलके करीं है ।
जिस हालमें मैं हूँ मुझे अफ़सोस नहीं है ॥
वाहरे शौक़े-शहादत, कूए-क्रातिलकी तरफ़ ।
गुनगुनाता, रक्स करता, भूमता जाता हूँ मैं ॥

—अपनी डायरीसे

“ तेरी खुशीसे अगर गममें भी खुशी न मिली ।
वोह ज़िन्दगी तो मुहब्बतकी ज़िन्दगी न हुई ॥
सबा ! यह उनसे हमारा पयाम कह देना ।
गये हो जबसे यहाँ सुबहोशाम ही न हुई ॥

दिल गया रौनक़े-हयात गई ।
गम गया सारी कायनात गई ॥

जबसे तू महरबान है प्यारे ।
और दिल बदगुमान है प्यारे ॥

३६ तू जहाँ नाज़से क़दम रख दे ।
वोह ज़मीन आसमान है प्यारे ॥ ”

शामसे आ गये जो पीनेपर ।
सुबहतक आफ़ताब हैं हम लोग ॥
तू हमारा जवाब है तनहा ।
और तेरा जवाब हैं हम लोग ॥

‘आजकल’ सितम्बर १९४९ ई०

तेरे जलवोंको देखें और मेरे बिलकी तरफ़ देखें ।
कहाँ है इत्तसाले'-मौजो-साहिल देखनेवाले ?

‘लहरें और किनारेको मिला हुआ ।

कहीं ऐसा तो नहीं वोह भी कोई हो आज़ार ।
 तुमको जिस चीज़पै राहतका गुमाँ होता है ॥
 हाय ! वोह सिलसिलये-अश्क कि जो तेरे हुज़ूर ।
 दिलमें रहता है न आँखोंमें रवाँ रहता है ॥
 वोह अदाये-दिलबरी हो कि नवाए-आशिक़ाना । •
 जो दिलोंको फ़तह कर ले, वही फ़ातहेजमाना ॥
 कभी हुस्नकी तबीयत न बदल सका जमाना ।
 वही नाज़े-बेनियाज़ी वही शाने-ख़ुसरवाना ॥
 मैं हूँ उस मुक़ामपर अब कि फ़िराक़ोवस्ल कैसे ?
 मेरा इश्क़ भी कहानी, तेरा हुस्न भी फ़साना ॥
 तेरे इश्क़की करामत यह अगर नहीं तो क्या है ?
 कभी बेअदब न गुज़रा, मेरे पाससे जमाना ॥
 मेरे हमसफ़ीर बुलबुल ! मेरा-तेरा साथ ही क्या ?
 मैं ज़मीरे-दश्तोदरिया तू असीरे-आशियाना ॥
 तुझे ऐ 'जिगर' ! हुआ क्या कि बहुत दिनोंसे प्यारे ।
 न बयाने-इश्क़ो-मस्ती न हृदीसे-दिलबराना ॥

‘आजकल’ १५ अगस्त १९४९ ई०

५० क़दम हटे जो कभी जादयेवफ़ासे कहीं ।
 हरेक ज़र्रा पुकारा कि देखता हूँ मैं ॥

इल्म ही ठहरा इल्मका बागी ।
 अक़ल ही निकली अक़लकी दुश्मन ॥

‘माहेनौ’ करांची फ़रवरी १९५१ ई०

अज़मते-काबा मुसल्लिम, लेकिन इसका क्या इलाज ?
 दिल ही जब कहता हो कि बुतख़ाना फिर बुतख़ाना है ॥

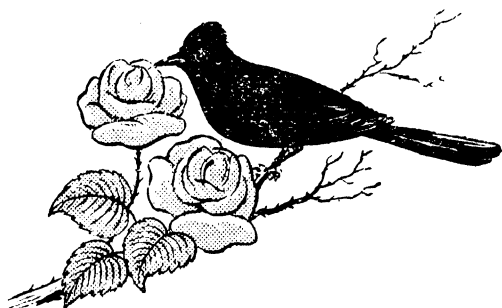
रिन्वोंने जो छोड़ा जाहिदको साक्रीने कहा किस तंजसे आज—
 “औरोंकी वोह अजमत क्या जानें, कमजर्फ जो इन्साँ होते हैं॥”
 यह खून जो है मजलूमोंका, जाया तो न जायेगा लेकिन—
 कितने वोह मुबारक क्रतरे हैं जो सफ़े-बहाराँ होते हैं ?

—‘शायर’ अक्टूबर १९५० ई०

वोह सज्जानंगे-चमन है, जो लहलहा न सके ।
 वोह गुल है जल्ले-बहाराँ जो मुसकरा न सके ॥
 घटे अगर तो बस इक मुश्तेखाक है इन्साँ ।
 बड़े तो वुसअते-कौनैनमें समा न सके ॥

कभी शाखो-सब्जा-ओ-बर्गपर कभी गुंचओ-गुलो-खारपर ।
 मैं चमनमें चाहे जहाँ रहूँ, मेरा हक है फ़स्ले-बहारपर ॥

२ जून १९५३ ई०]



आली अरबा 'अरुतर'

[१८९२ — ई०]

आप १८६२ ई०में रामपुरमें उत्पन्न हुए, अलीगढ़के रहनेवाले हैं। १६१०-११ ई०से हैदराबादमें नौकरी कर रहे थे, और अब भारत-विभाजनके बाद कराँची चले गये हैं। अरबी-फ़ारसीके अतिरिक्त अंग्रेज़ीमें मैट्रिकुलेट हैं। धरेलू वातावरण शायरीमय था। अतः आप भी बचपनसे शेर कहने लगे।

१४-१५ वर्षकी उम्रमें आप ऐसा कलाम कहने लगे थे—

क्रक़समें समझे थे हम कि हालत रहीने-अमनो-अमाँ रहेगी।

किसे ख़बर थी कि बर्क़ अब भी निगाह-बर आशियाँ रहेगी ॥

डूबी हुई पाता हूँ नब्बे-दिले-दीवाना।

हलकी-सी फिर इक जुम्बिश ऐ जलवये जानाना !

यहाँ आपके चन्द अशआर निगार जनवरी १९४१ से मुन्तख़िब करके दिये जाते हैं—

कोई और तर्ज़े-सितम सोचिये।

दिल अब ख़ूगरे-इम्तहाँ हो गया ॥

परीक्षाका अभ्यस्त ।

मेरी मजलूम^१ चुपपर शादमानीका^२ गुमाँ क्यों हो।
कि नाउम्मीदियोंके ज़रमको बहना नहीं आता॥

तुझसे हयातो-मौतका^३ मसअला हल अगर न हो।
जहरे-गमे-हयात पी मौतका इन्तज़ार कर ॥

कब हुई आपको तौफ़ीक़े-करम^४।

आह! जब ताक़ते-फ़रियाद नहीं ॥

जहमते-इल्तफ़ात^५ की, आपने आह! क्या किया?
अब वोह लताफ़तें कहाँ हसरते-इन्तज़ारमें ॥

करवटें लेती है फूज़ोंमें शराब।

हमसे इस फ़स्लमें तौबा होगी?

मेरी बलाको हो, जाती हुई बहारका ग़म।

बहुत लुटाई हैं ऐसी जवानियाँ मैंने ॥

मुझीको परदये-हस्तीमें दे रहा है फ़रेब।

वोह हुस्न जिसको किया जलवा आफ़रीं मैंने ॥

नहीं ऐ हमनफ़स! बेवजह मेरी गिरयासामानी।

नज़र अब वाकिफ़े-राजे तबस्सुम होती जाती है ॥

मेरी बेख़ुदी है उन आँखोंका सदका।

छलकती है जिनसे शराबे-मुहब्बत ॥

उलट जायें सब अबलोइरफ़ाँकी बहसैं।

उठा बूँ अभी गर नक्राबे-मुहब्बत ॥

१० फ़रवरी १९५२]

^१अत्याचार-पीड़ित; ^२प्रसन्नताका; ^३जीवन-मृत्युका; ^४कृपाकरनेकी
सामर्थ्य; ^५कृपाकरनेकी तकलीफ़ उठाई।



जरूर मेहदी 'रज्जु' अवधके एक कस्बे 'रुदौली' में करीब १६०० ई० में उत्पन्न हुए। रुदौली लखनऊ फैजाबादके दरम्यानमें पड़ता है। रज्जुकी इश्किया शायरीमें सौंदर्यकी कोमल भावनाओंके साथ-साथ प्रेमका एक बुलन्द तसव्वुर भी मिलता है। वे इश्कको बेकारोंके जी बहलावकी चीज़ नहीं समझते, बल्कि उसे जीवनके लिए अत्यंत आवश्यक समझते हैं—

बेइश्क ददें-जीस्तका दरमाँ न हो सका।

इन्साँ बजाये खुद कभी इन्साँ न हो सका॥

हर चीजपै छाया है अन्दाजे-जुनू मेरा ।
हर शयमें मुझे अपनी तसवीर नज़र आई ॥

४. खुदा मालूम उन ज़रोंमें कितने दिल धड़कते हैं ।
जमीं पर बसनेवाले कुछ समझते हैं जबाँ दिलकी ॥

॥ इश्कमें दरअस्ल जीना ही कमाले-ज़ौक है ।
ज़िन्दगी मुश्किल है, भर जाना कोई मुश्किल नहीं ॥

रंग बदला किये जमानेके ।
चन्द जुमले मेरे फ़सानेके ॥
हो सके कब हरीक़े-आज़ादी^१ ।
दरो-दीवार क़दख़ानेके ॥

अब कहाँ ले जाये किस्मत यह क़नाअत देखकर ।
देखिये क्या हो क़फ़सके आशियाँ होनेके बाद ॥

यह लालाज़ार मक़तल^२, यह हवाये-दामने-क्रातिल^३ ।
सकूँ-सा^४ मिल रहा है, नींद-सी मालूम होती है ॥

और होती जो कोई सूरते-इश्क ।
क्यों गुनहगारे-ज़िन्दगी होते ॥

^१स्वतन्त्रताके शत्रु;
दामनकी हवा; ^४चैन-सा ।

^२रक्तवर्ण वधस्थल;

^३क्रातिलके

मैं अपने ही जलबोंकी ताबानियोंमें^१ ।
तुझे देखकर गुम हुआ चाहता हूँ ॥

वादा तेरा सच्चा है, मेरी जीस्तका^२ क्या ठीक ?
आ जल्द जमाना कहीं भूठा न बनादे ॥

जिंदगी इश्क और इश्क यकीं ।
सौत वहमो-गुमान है प्यारे ॥

नज्जामें^३ गमिये-इनकास^४ है सरूर-अंगेज^५ ।
चले गये वोह मगर अब भी एक आलम है ॥

यह बेखुदीका है आलम कि एक कुर्ब तमाम^६ ।
मैं बढ़ रहा हूँ कि नज्जदीक आ रहा है कोई ॥

हरेक दर्दकी करवटपें उठ रहा है हिजाब ।
हरेक सांसमें पैशाम पा रहा है कोई ॥

जुर्म-उल्फतका सहारा मिलते ही होश आ गया ।
आलमे-असबाबमें खोया हुआ अब दिल नहीं ॥

चमनमें आग लगा दी दिलोंको फूंक दिया ।
मचलके और यह अब्बे-वहार क्या करते ॥

मैं और क्या कहूँ उनकी जफ्राये-पैहमको^७ ।
मेरी वफ़ाका फ़क़त हौसला बढ़ाना था ॥

^१प्रकाशमें; ^२जिंदगीका । ^३मृत्युके वक्त; ^४स्वासकी
गर्मी; ^५प्रफुल्लता देनेवाली; ^६समस्त मंजिल; ^७लगातार
अत्याचारोंको ।

मैं दलीले-ज़िदगी समझूँ कि उम्मीदे-विसाल ।
शमअ इक बुझती हुई-सी दिलके काशानेमें है ॥

भलक यूँ यासमे^१ उम्मीदकी मालूम होती है ।
कि जैसे दूरसे इक रोशनी मालूम होती है ॥

मुबारक ज़िदगीके वास्ते दुनियाको मर मिटना ।
हमें तो मौतमें भी ज़िदगी मालूम होती है ॥

यही है सबकी^२ जो निकहत-फ़रोशी^३ ।
क़फ़स लेके अब मैं उड़ा चाहता हूँ ॥

ऐ बादेसबा ! छेड़ न खाकस्तरे दिलको ।
हर ज़र्रा कहीं फ़ैलके सहारा न बना दे ॥

तेरे शायाने-लुत्फ़े-दिल न सही ।
हौसले तो हैं ग़म उठानेके ॥

हैं मेरी नाचीज़ हस्ती बहरे^४-नापैदा-कनार^५ ।
मौत कहते हैं जिसे वोह जीस्तका^६ साहिल^७ नहीं ॥

हुस्ने-नज़रसे भेने सँवारी जो कायनात^८ ।
वोह कौन ख़ार^९ था कि गुलिस्ताँ न हो सका ?

यह हौसला है कि बिजलीकी ज़दपे गुलशनमें ।
ब-अहतमाम^{१०} नशेमन बना रहा है कोई ॥

^१निराशामें; ^२हवाकी; ^३सुगन्ध बेचना; ^४नदी; ^५जिसके किनारे
नहीं; ^६जिन्दगीका; ^७किनारा; ^८दुनिया । ^९काँटा;
^{१०}सावधानीपूर्वक, प्रयत्नसे ।

तकमीले-इश्क क़ैदमें मजबूरियोंकी थी ।
कंसी हँसी कि रौनेकी ज़ुरअत न कर सके ॥

मेरी मजबूरियोंका नाम रख लो दूसरी दुनिया ।
यह कोई फ़ासला है जो क़फ़ससे आशियाँ तक है ॥

क़फ़स ही आशियाँ हैं एक मुद्दतके असरीरोंकी ।
कहाँ सर फोड़ने जायेंगे यह क़ैदी रिहा होकर ॥

हर इक नफ़समें तड़प है हर इक नज़र बेबाक ।
किसी ख़तरसे भिन्नकना शबाब क्या जानें ?

रिहाई ऐतमादे-ज़ाती-ओ-तौफ़ीक़से पाई ।
किया था क़ैद जिन हाथोंने वोह आज़ाद क्या करते ॥

लुत्फ़े-आज़ादी कुजा रुक-रुकके उठते हैं क़दम ।
याद है वोह दिन अभी जब पाँवमें जंजीर थी ॥

फ़िक़रे-आज़ादीको ता-अहसास इमकाँ कीजिये ।
दिलसे दिलतक बर्क़े-ख़ुदारीको जौलाँ कीजिये ॥

दामने-गुलमें फ़रोज़ाँ कीजिये आतशकदा ।
आगके शोलोंसे तरतीबे-गुलिस्ताँ कीजिये ॥

यह सितम हाये मुसलसल, यह ज़फ़ाए-मुत्तसिल ।
लाइये किसकी ज़बाँ जो शुक्ले-अहसाँ कीजिये ।

हँरते-नाम ता-कुजा^१, ज़ब्ते-मुहब्बत ता-बके^२ ।
'रज्जु' उठिये अब सकूने-नामको तूफ़ाँ कीजिये ॥

^१कहाँतक;

^२कबतक ।

हम बेखुदी-ओ-होशकी हदसे गुज़रके भी।
अन्दाज़ये-जमाले-हकीकत न कर सके॥

—निगार अवतूबर १९४९ ई०



हकीकत न महबूब

ग्ले
ग्ले

शब्द-कोश

ऐसे शब्द जो अशआरमें बहुधा प्रयुक्त हुए हैं, उनके अर्थ बार-बार फ़ुटनोटमें देनेसे पुस्तकका आकार अधिक न बढ़े, इसलिए अन्तमें दिये गये हैं। शब्द इज्जाफ़त सहित न देकर अलग-अलग दिये गये हैं। अतः उनको एक ही जगह न खोजकर अक्षर क्रमसे यथास्थान खोजना चाहिए। जैसे **बक्ते-मैनोशी**का अर्थ देखनेके लिए 'मै' का अर्थ मकारमें 'नोशी'का अर्थ नकारमें देखना चाहिए। इसी तरह अन्य शब्दोंका अर्थ देखना चाहिए। जिस तरह उर्दू उलटी तरफ़से लिखी जाती है, उनी तरह इसके इज्जाफ़ती (समासपदी) शब्दोंका अर्थ भी उलटे ढंगसे होता है। जैसे—हिन्दीमें 'मानव-धर्म'का अर्थ होगा मनुष्यका धर्म। मगर उर्दूके 'मजहबे-इन्सान'का अर्थ मजहबका इन्सान न होकर इन्सानका मजहब होगा। यानी जिस शब्दके अंतिम अक्षरके ऊपर या सामने 'ए' होगा, वह पहले लिखा जायगा और अपने सामनेके अक्षरके बादमें बोला जायगा। जैसे—

बक्के-खिरमनसोज़	==	खलियानको जलानेवाली विजली
शबे-गम	==	मुसीबतकी रात
दीदये-पुरनम	==	अश्रुपूर्ण नेत्र
क्राविले-रहम	==	रहमके योग्य
सैल-ए-हवादस	==	मुसीबतोंकी बाढ़
आबल-ए-पा	==	पाँवके छाले
दर्दे-हिज्र	==	विरहका दुःख
गुस्ले-मैयत	==	मृतकका स्नान (मृतकको नहलाना)

उक्त शब्दोंसे स्पष्ट हो जाता है कि पहला शब्द जिसके अन्तिम अक्षरपर या उसके आगे 'ए' लगी होती है, उसका अर्थ अपने सामनेके शब्दसे बादमें किया जाता है। यह इज्जाफ़ती शब्द केवल दो शब्दोंके ही नहीं होते, वरन् कई-कई शब्दोंके भी होते हैं। बाज़ दफ़ा तो पूरे मिसरेका-मिसरा (मिसरअ) ही इज्जाफ़ती होता है। जैसे—

मुहरे-मकतूबे-अजीजाने-गिरामी लिखिये

हिर्जे-बाजूए-शिगरफ़ाने-ख़ुदआरा कहिये

यह ग़ालिबका शेर है जिसके शब्दोंके अर्थ ये हैं—

मुहर	=	किसीके नामकी मुहर लगाना
मकतूब	=	लिखा गया, पत्र
अजीजान	=	मित्रोंको
गिरामी	=	श्रीमान्, सर्वश्री
मकतूबे-गिरामी गिरामी नामा	}	(श्रीमानका पत्र, कृपापत्र)
हिर्ज		
बाजू	=	तावीज
शिगरफ़ान	=	बाहुपर
ख़ुदआरा	=	सुन्दरियाँ
	=	शृंगारमयी

किन्तु उर्दू-व्याकरणके अनुसार अर्थ करते समय वही इज़ाफ़ती-नियम लागू होगा। यानी पहले (मिसरअ) मिसरेका अर्थ होगा—

‘प्रियजनोंको लिखे गये पत्रपर लगी हुई मुहर’

दूसरे (मिसरअ) मिसरेका अर्थ होगा—

‘शृंगारमयी सुन्दरियोंके बाजूपर बँधा हुआ तावीज’

अक्सर ग़ालिब, मोमिन, बर्क आदि ऐसे शायरोंके कलाममें लम्बे-इज़ाफ़ती शब्द आते हैं जो उर्दूमें क्लिष्ट कहनेके लिए मशहूर हैं।

इसी तरह ‘और’ शब्दका संक्षिप्त उर्दूमें ‘ओ’ होता है और यह बहुत अधिक उर्दू-शायरीमें प्रयुक्त होता है। जैसे—

गुल-ओ-बुलबुल, विसाल-ओ-हिज्र आदि। इन शब्दोंका अर्थ भी भिन्न-भिन्न स्थानोंमें देखना चाहिए। यानी गुलका अर्थ गकारमें, बुलबुलका अर्थ बकारमें, विसालका वकारमें और हिज्रका ‘ह’में देखना चाहिए। एक ही स्थानपर देखनेसे अर्थ न मिलकर निराशा ही मिलेगी।

कोश

अंगवी]

[अन्दाज

अ

अंगवीं—शहद ।
 अंगुष्ठ—उँगुली ।
 अंगुष्ठरी—अँगुठी ।
 अंगुज—भड़कानेवाला, भरा हुआ ।
 (यौगिक शब्दोंके अन्तमें)
 अंजाम—परिणाम ।
 अंजुम—तारे ।
 अंजुमन—सभा, मजलिस ।
 अकदस—श्रेष्ठ, पवित्र ।
 अकबर—महान ।
 अक्रीदत—विश्वास, श्रद्धा ।
 अकद—विवाह, इकरार ।
 अकल—भोजन, खाना (रोज़ी) ।
 अकल—बुद्धि ।
 अकस—प्रतिबिम्ब ।
 अकसर—प्रायः ।
 अकसीर—बहुत गुणकारी ।
 अखगर—आगकी चिनगारी ।
 अखज—ग्रहण करना, उद्धृत करना ।
 अखलाक—आचार, शील ।
 अखतर—तारा ।
 अगरचे—यद्यपि ।
 अगाराज—गरज, मतलब ।
 अजलुद—स्वयं ।
 अजजा—अंश, भाग ।

अजदहा—अजगर ।
 अजदहाम—भीड़, झुण्ड ।
 अजदाद—बाप-दादा ।
 अजबस—बहुत ।
 अजमत—बड़प्पन, महत्ता ।
 अजल—मृत्यु ।
 अजल—अनादिकाल ।
 अजाब—कष्ट, विपत्ति ।
 अजीज—प्रिय ।
 अजीब—अद्भुत, विचित्र ।
 अजीम—विशाल ।
 अजीयत—पीड़ा ।
 अजो—अंग ।
 अज्म—दृढ़ विचार ।
 अतवार—चाल-चलन, रंग-ढंग ।
 अदना—तुच्छ ।
 अदब—शिष्टाचार ।
 अदम—परलोक ।
 अदल—न्याय ।
 अदा—हाव-भाव ।
 अदीब—साहित्यज्ञ, नम्र ।
 अदू (उदू)—प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु ।
 अनवर—चमकीला ।
 अनादिल—बुलबलें ।
 अनीस—मित्र ।
 अन्दाज—भाव, चेष्टा, तख्मीना ।

अन्दाम-शरीर ।
 अन्दोह-दुःख ।
 अफगन-गिरानेवाला ।
 अफगार-घायल ।
 अफशा-प्रकट ।
 अफसाना-क़िस्सा ।
 अफसुरदा-मुरभाया हुआ, खिन्न ।
 अफसू-जादू ।
 अबतर-खराब ।
 अबस-व्यर्थ ।
 अब्बा-चोपा ।
 अब्ब-मेघ ।
 अमन-शान्ति ।
 अमल-आचरण ।
 अमान-शरण ।
 अमामा-पगड़ी ।
 अमीक-गम्भीर, गहरा ।
 अम्बोह-भीड़ ।
 अम्न-कार्य, घटना ।
 अय्यां-जाहिर ।
 अयादत-बीमार-पुरसी ।
 अय्याम-समय ।
 अरक-पसीना ।
 अरमान-इच्छा ।
 अर्क-रस ।
 अरज-सम्मान, शरीर ।
 अर्ज-निवेदन, चौड़ाई ।
 अर्ज-पृथ्वी ।
 अर्श-आसमान ।
 अलम-दुःख ।
 अलामत-चिह्न ।
 अज़ील-बीमार ।

अलताफ़-अनुग्रह ।
 अल्लामा-बहुत बड़ा विद्वान ।
 अशद-अत्यन्त ।
 अश्क-आँसू ।
 असगर-बहुत छोटा ।
 असद-सिंह ।
 असर-प्रभाव ।
 असरार-रहस्य ।
 असा-डंडा ।
 असीर-बन्दी ।
 असील-मुशील ।
 अस्तग़फ़िरुल्लाह-ईश्वर मुझे क्षमा
 करे ।
 अस्मत-पातिव्रत ।
 अहक़र-बहुत तुच्छ ।
 अहद-प्रतिज्ञा ।
 अहबाब-इष्ट-मित्र ।
 अहल-योग्य ।
 अहवाल-विवरण ।
 अहसन-बहुत नैक ।

आ

आईन-नियम ।
 आक़बत-परलोक ।
 आगा-बड़ा भाई, बड़ा ।
 आगाज-प्रारम्भ ।
 आगाह-जानकार ।
 आग़ोश-गोद ।
 आजम-महान ।
 आज्ञा-शरीरके अंग ।
 आजुर्दह-दुःखी, चिन्तित ।
 आतिश-आग ।

आदम-मनुष्य ।
 आकरीं-आकरीन-शाबाश ।
 आब-पानी ।
 आबदीदा-अश्रुपूर्ण ।
 आब-रवाँ-बहता हुआ पानी ।
 आबरू-प्रतिष्ठा ।
 आबला-छाला ।
 आबशार-जलप्रपात ।
 आबिद-भक्त ।
 आबेबका-अमृत ।
 आम-साधारण ।
 आमद-आगमन ।
 आमादा-तत्पर ।
 आमाल-चरित्र, काम ।
 आर-लज्जा भिन्नक ।
 आरजू-इच्छा, विनय ।
 आराइश-सजावट ।
 आरिज-कपोल ।
 आलम-तंसार, दशा ।
 आलिम-विद्वान् ।
 आलूदगी-लतपथ होना ।
 आशना-प्रेमी, मित्र ।
 आशिक-प्रेमी, अनुरक्त ।
 आशियाना-पक्षीका घोंसला ।
 आशुफतगी-विकल, घबराया हुआ ।
 आशकार-प्रत्यक्ष, स्पष्ट ।
 आसाइश-सुख, आनन्द ।
 आसी-पापी, अपराधी ।
 आसूदा-सुखी, बेफिक्र ।
 आस्तान-डचोड़ी-प्रवेशद्वार ।
 आहंग-विचार, इरादा ।
 आह-कष्टसूचक निःश्वास ।

आहन-लोहा ।

आहू-हिरन ।

इ

इकबाल-भाग्य, स्वीकार ।

इकरार-वादा ।

इकतफा-यथेष्ट, काफ़ी ।

इखलास-मित्रता ।

इस्तलाफ़-मतभेद, अनबन ।

इस्तयार-अधिकार ।

इसफ़ा-अप्रकट ।

इगलाम-लौंडेबाजी ।

इगवा-बहकाना ।

इजतनाब-संयम, बचना ।

इजतमाअ-जमा होना, इकट्ठा होना ।

इजतराब-विकलता ।

इजदहाम-जन-समूह ।

इजहार-बयान ।

इजाबत-स्वीकृति, मलत्याग ।

इज़ार-पाजामा ।

इताब-कोप ।

इत्तहाद-एकता ।

इदबार-दुर्भाग्य ।

इदराक-समझ ।

इनहसार-निर्भर ।

इन्कलाब-क्रान्ति ।

इन्कसार-नम्रता, दीनता ।

इन्तक़ाम-प्रतिशोध ।

इन्तक़ाल-मृत्यु ।

इन्तख़ाब-चुनाव ।

इन्तहा-चरमसीमा ।

इन्शाअल्लाह-ताला-यदि ईश्वरने
चाहा तो ।

इन्शापरदाजी-लेखन-कला ।

इफ़रात-अधिकता ।

इफ़लास-दरिद्रता ।

इफ़ाक्रा-रोग आदिमें कमी होना ।

इब्रत-नसीहत ।

इबलीस-शैतान ।

इबादत-उपासना ।

इब्तदा-प्रारम्भ ।

इमकान-सम्भावना ।

इमाम-धार्मिक नेता जिसके पीछे
लोग नमाज़ पढ़ें ।

इस्तियाज़-बुरे भलेकी परख ।

इरम-स्वर्ग ।

इरशाद-हुक्म ।

इलहाम-दैववाणी ।

इलाही-ईश्वर ।

इल्तजा-निवेदन ।

इल्तमास-प्रार्थना ।

इल्लत-बुरी आदत, कारण ।

इशरत-सुख-भोग ।

इशवा-चौचला-अदा ।

इशाअत-प्रकाशन ।

इश्क-प्रेम, चाह ।

इश्तिआल-भड़काना ।

इश्तियाक़-अनुराग ।

इसरार-आग्रह ।

इसिया-अपराध ।

इस्तक्रबाल-स्वागत ।

इस्तक्रलाल-दृढ़ता ।

इस्म-नाम ।

इस्लाम-संशोधन, एक मज़हब ।

ई

ईजा-कष्ट, पीड़ा ।

ईजाद-आविष्कार ।

ईमा-संकेत, इशारा ।

उ ऊ

उक़बा-परलोक ।

उक़ाब-गिद्धपक्षी ।

उक़दा-कठिन समस्या ।

उजरत-एवज़, मज़दूरी ।

उज़लत-जल्दी ।

उज़लत-एकान्त ।

उज़्ज-बाधा, विरोध ।

उदू-प्रतिद्वन्द्वी ।

उन्का-एक कल्पित पक्षी, नायाब ।

उन्स-प्यार ।

उफ़-कष्ट-सूचक ।

उफ़क़-आस्मान, क्षितिज ।

उफ़तादा-गिरा-पड़ा ।

उरिया-नग्न ।

उरूज-विकास ।

उरूस-वधु ।

उश्शाक़-प्रेमियों ।

उस्तसवा-हड्डि ।

ए

एतक्राद-विश्वास, श्रद्धा ।

एतनाई-लापरवाही ।

एतबार-विश्वास ।

एतमाद-भरोसा ।

एतराफ—इकरार करना ।
 एहतमाम—व्यवस्था, देखरेख ।
 एहतराज—बचना ।
 एहतराम—सम्मान ।
 एहति याज—आवश्यकता होना ।
 एहति यात—परहेज करना, बचना ।
 एहसान—कृतज्ञता, उपकार ।
 एहसान-फरामोश—कृतघ्न ।
 एहसास—अनुभव करना ।

ऐ

ऐजाज—करामात, मोअजिजा ।
 ऐजाज—सम्मान-आदर ।
 ऐन—उपयुक्त-टीक ।
 ऐबजोई—दूसरोंका दोष ढूँढना ।
 ऐयार—धूर्त ।
 ऐयाश—कामुक ।
 ऐश—भोग-विलास ।

औ औ

औक़ात—हैसियत ।
 औज—ऊँचाई, ऊँचापद ।
 औसाफ़—गुण ।

क

कज—टेढ़ापन ।
 क़जा—मौत ।
 क़ज़िया—भगडा ।
 क़ज़्ज़ाक़—लुटेरा ।
 क़तील—क़त्ल किया हुआ ।
 क़त्ताल—बधिक ।

क़त्लगाह—वध-स्थल ।
 कद—मकान, प्रारम्भ ।
 क़द—ऊँचाई ।
 क़द्व—इज्जत, सत्कार ।
 क़दह—प्याला ।
 क़दामत—प्राचीनता ।
 क़दीर—शक्तिशाली ।
 कदूरत—मन-मुटाव ।
 क़नाअत—सन्तोष ।
 कनीज—दासी ।
 क़फ़स—पिंजरा ।
 कफ़फ़ारा—प्रायश्चित्त ।
 क़बा—लम्बा ढीला पहनावा ।
 क़बाहत—दिक्कत ।
 कब्क—चकोरपक्षी ।
 कम—ज़फ़—कमीना, ओछा ।
 कमर—शरीरका मध्यम भाग ।
 क़मर—चन्द्रमा ।
 कमसिन—अल्पवयस्क ।
 क़याफ़ा—सूरत, शक्ल ।
 क़यामत—प्रलय ।
 क़यास—अनुमान ।
 करम—कृपा ।
 क़रार—प्रतिज्ञा, धीरज ।
 करश्मा—अद्भुत कार्य ।
 क़रीना—सलीक़ा ।
 करीम—दयालु ।
 करीह—घृणित ।
 क़र्ज—गुर्जिस्तानी क़ौम ।
 क़र्ज—ऋण ।
 कलमा—इस्लाम धर्मका मूलमंत्र ।
 कलाम—वाक्य ।

कलीम-हजरत मूसा ।
 कलील-थोड़ा ।
 कलीसा-गिरजा घर ।
 कल्ब-हृदय ।
 कबी-बलवान ।
 कश-आकर्षक, खींचनेवाला । जैसे
 दिलकश ।
 कसीर-बहुत अधिक ।
 कस्द-इरादा ।
 कस्दन-इच्छापूर्वक ।
 कह-कशाँ-आकाश-गंगा ।
 कहत-दुभिध ।
 कहर-आफ़त, विपत्ति ।
 काकुल-जुल्फ़ ।
 काजो-न्यायाधीश ।
 कातिल-बधिक ।
 काफ़िर-नास्तिक ।
 काफ़िला-यात्री-समूह ।
 काबा-मुस्लिम-तीर्थ ।
 कामत-क्रद ।
 कामराँ-सफल ।
 कामिल-योग्य ।
 कायनात-विश्व, मुख्य ।
 कार-काम ।
 कारवाँ-यात्री-दल ।
 कारी-प्रभावशाली ।
 कारी-पढ़नेवाला ।
 कालूँ-कंजूस धनी ।
 काल-शेखी, बहुश ।
 कालिब-शरीर ।
 काविश-खोज, बैर ।
 काश-ईश्वर करे ऐसा हो जाय ।

काश-फाँक ।
 काशाना-मकान ।
 कासा-प्याला ।
 कासिद-पत्र-वाहक ।
 कासिर-असमर्थ ।
 काह-सूखी घास ।
 काहिल-आलसी ।
 कनाथा-सकेत ।
 क़िबला-मक्का तीर्थ, पूज्य ।
 किस्ती-नौका ।
 किस्त-कई बार करके ऋण चुकाने-
 का ढंग ।
 कीना-शत्रुता ।
 कुंज-कोना ।
 कुजा-कहाँ ।
 कुफ़-नास्तिकता ।
 कुल-ताला ।
 कुमक-सहायता ।
 कुमरी-एक चिड़िया ।
 क़ुरबान-न्योछावर ।
 कुर्ब-सामीप्य ।
 कुरम-वेश्याओंका दलाल ।
 कुलफ़त-चिन्ता ।
 कुल्लियात-कृतियोंका संग्रह ।
 कूए-गली-कूचा ।
 कूजा-कुलहड़ ।
 कोताह-छोटा ।
 कोफ़त-पीड़ा ।
 कोह-पर्वत ।
 कोहकन-पहाड़ काटनेवाला, फ़रहाद ।
 कोहराम-रोना-पीटना ।
 कौकब-बड़ा और चमकीला तारा ।

कौतूहल-इहलोक, परलोक ।
कौल-प्रण, वादा ।
कौसर-जन्नतमें शराबकी नहर ।

ख

खता-अपराध ।
खत्म-समाप्त ।
खदंग-तीर ।
खदशा-आशंका ।
खन्दा-हास्य ।
खन्दाँ-हँसमुख ।
खफ़क़ान-पागलपन ।
खफ़ीफ़-थोड़ा, कम ।
खबीस-दुष्ट, कंजूस ।
खम-देहापन ।
खमियाज़ा-परिणाम ।
खमीदा-भुका हुआ ।
खर-गधा ।
खरखशा-भंभट, आशंका ।
खराबात-मधुशाला, संसार ।
खराश--खराँच ।
खरास-चक्की ।
खरीता-बड़ा लिफ़ाफ़ा ।
खरोश-आवेश, उत्साह ।
खलफ़-लड़का ।
खलल-पागलपन, खराबी ।
खला-खाली स्थान ।
खलिश-कसक, पीड़ा ।
खलीक़-मुशील-मिलनसार ।
खलीता-थैली, जेब ।
खलील-सच्चा मित्र ।
खलक़-मानव जाति ।

खसोस-कृपण ।
खाकसार-सेवक ।
खातून-भद्र महिला ।
खादिम-सेवक ।
खानए-खुदा-मस्जिद ।
खानक्राह-फ़क़ीरोंका मठ ।
खानगी-घरेलू ।
खाम-खयाली-व्यर्थके विचार ।
खायफ़-भयभीत ।
खार-काँटा ।
खाल-मुखका तिल ।
खालिक़-ईश्वर ।
खालिस-शुद्ध ।
खिजाँ-पतझड़, हास ।
खिज़्र-मार्ग-दर्शक ।
खिरद-बुद्धि ।
खिराम-मस्तानी चाल ।
खिलवत-एकान्त ।
खिलक़त-जनसमूह ।
खिश्त-ईंट ।
खुद-कुशी-आत्महत्या ।
खुदबी-घमण्डी ।
खुदा-हाफ़िज़-ईश्वर तुम्हारी रक्षा
करे ।
खुदी-अहंभाव ।
खुम-मद्य रखनेका पात्र, घड़ा ।
खुम-कदा-मधुशाला ।
खुम-खाना-मद्यालय ।
खुमार-मस्ती, शरीरका टूटना ।
खुमार-आलूदा-खुमारसे भरी हुई ।
खुरशीद-सूर्य ।
खुर्रम-खुश ।

खलूस—सरलता, निष्ठा, स्नेह ।
 खुलद—स्वर्ग ।
 खुसरवाना—राजकीय ।
 खू—स्वभाव ।
 खू-गार—अभ्यस्त ।
 खूबाँ—सुन्दरियाँ ।
 ख्वाब—स्वप्न ।
 ख्वाब—खानेवाला, खराब ।
 ख्वाह—इच्छुक, चाहे, या, तो ।

ग

गंज—कोश ।
 गदा—भिक्षुक ।
 गनी—बहुत बड़ा धनी ।
 गनीम—शत्रु ।
 गम—दुःख, शोक ।
 गमकदा—शोकसन्तप्त घर ।
 गमगीं—उदास ।
 गमगुसार—दूसरोंका दुःख दूर करने-
 वाला ।
 गमजदा—दुःखी ।
 गमजा—हाव-भाव ।
 गम्माज—निन्दक ।
 गय्यूर—ईर्ष्यालु, आन रखनेवाला ।
 गरक्राब—डूबा हुआ ।
 गरज—मतलब, स्वार्थ ।
 गराँ—भारी, मढ़ंगा ।
 गरीबनवाज—दीन-पालक ।
 गरीबपरवर—दीन दुखियोंका सहा-
 यक ।
 गरूर—घमण्ड ।
 गरेबान—कुरतेका गला ।

गरक—डूबा हुआ ।
 गर्द—धूल ।
 गर्दिश—विपत्ति ।
 गरी—घमण्ड, शेखी ।
 गलबा—प्रमुखता, प्रभावका आधिक्य
 गवारा—अनुकूल ।
 गश—बेहोशी ।
 गहवारा—हिंडोला ।
 गाजा—पाउडर ।
 गाफिल—बेसुध, असावधान ।
 गार—करनेवाला, कर्त्ता, जैसे—
 सितमगार, गुनाहगार ।
 गालिब—बलवान, विजयी ।
 गाह—जगह ।
 गाह-गाह—कभी-कभी ।
 गिरदाब—पानीका भँवर ।
 गिरिया—रोना-धोना ।
 गिला—शिकायत ।
 गीर—पकड़ने या रखनेवाला जैसे—
 जहाँगीर, आलमगीर ।
 गुजर—पहुँच, कालक्षेप ।
 गुजस्ता—बीता हुआ, गत ।
 गुजारिश—निवेदन ।
 गुनाह—पाप ।
 गुनहगार—अपराधी, पापी ।
 गुप्तार—बातचीत ।
 गुम—खोया हुआ ।
 गुमराह—भूला-भटका ।
 गुरबत—मुसाफिरी ।
 गुरबा—गरीब ।
 गुरबा—बिल्ली ।
 गुरूब—अस्त होना ।

गुरेज़-दूर रहना, वचना ।
 गुर्ग-भेड़िया ।
 गुल-फूल ।
 गुल-शोर, हल्ला ।
 गुलखन-भट्टी, अंगीठी ।
 गुल-गश्त-बागमें सैर करना ।
 गुलगूँ-गुलाबी ।
 गुलचीं-फूल चुननेवाला ।
 गुलज़ार-बाग ।
 गुलदुम-बुलबुल ।
 गुलफ़ाम-फूल-जैसा सुन्दर ।
 गुलरू-बहुत सुन्दर ।
 गुलशन-बाग ।
 गुलिस्ताँ-वाटिका ।
 गुलू-गला ।
 गुसार-दूर करनेवाला, गम खानेवाला,
 सहन करनेवाला जैसे-गम-गुसार ।
 गुस्ल-स्नान ।
 गुहर-मोती ।
 गैती-संसार ।
 गेसू-बालोंकी लट ।
 गैब-परोक्ष ।
 गैर-अन्य ।
 गैरत-लज्जा ।
 गोर-कब्र ।
 गोरिस्तान-कब्रिस्तान ।
 गोश-कोना ।
 गौहर-मोती ।

च

चख-लड़ाई, शोर ।
 चनार-एक पेड़ ।

चमन-फुलवारी ।
 चर्ख-आकाश ।
 चश्म-नेत्र ।
 चाक-फटा हुआ ।
 चाह-कुआँ ।
 चाहे-जनखदाँ-ठोड़ीका गड़ढा ।
 चिक्र-तीलियोंसे बना फरदा ।
 चिलमन-परदा, चिक्र ।
 चीं-चेहरेकी शिकन ।
 चुगद-उल्लू ।

ज

जंग-लड़ाई ।
 जंग-लोहेपर लगनेवाला मैल ।
 जईफ-वृद्ध ।
 जक्रन-ठुड़ी ।
 जकात-दान ।
 जज्जा-बदला ।
 जद-दादा ।
 जद-लक्ष्य ।
 जदीद-नवीन ।
 जन-औरत ।
 जनाज्जा-शव, अर्थी ।
 जनून-उन्माद ।
 जन्नत-स्वर्ग ।
 जफ़र-यंत्रकला ।
 जफ़र-विजय ।
 जफ़ा-अत्याचार ।
 जफ़ा-कश-सहिष्णु ।
 जफ़ाशिआर-अत्याचारी ।
 जबर-बलवान ।
 जबह-गला काटकर मारना ।

जबान-जीभ ।
 जबीं-मस्तक ।
 जब्र-बल-प्रयोग ।
 जम-जम-काबेका पवित्र कुआँ ।
 जमाल-सौन्दर्य ।
 जमील-सुन्दर ।
 जर-धन-दौलत ।
 जरर-चोट ।
 जराफत-परिहास ।
 जरीफ-मसखरा, चतुर ।
 जरी-वीर ।
 जरी-सोनेके तारका काम ।
 जई-पीला ।
 जर्र-पात्र, समाई ।
 जर्रा-अणु ।
 जलाल-तेज ।
 जलील-बहुत प्रतिष्ठित ।
 जलील-अपमानित, तुच्छ ।
 जलवा-शोभा, रोशनी ।
 जवाल-पतन ।
 जइन-उत्सव ।
 जसारत-साहस ।
 जहन्नुम-नरक ।
 जहमत-बखेड़ा, आफत ।
 जहाँ-संसार ।
 जहान-संसार ।
 जहूर-प्रकट होना ।
 जहे-क्रिस्मत-धन्यभाग्य ।
 जाँ-नवाज-दयालु, कृपालु ।
 जाँ-ब-लब-मरणोन्मुख ।
 जाँ-बाज-जानपर खेलनेवाला ।
 जा-स्थान ।

जाम-प्याला ।
 जारी-प्रवाहित ।
 जारी-रुदन ।
 जाविदाँ-हमेशा ।
 जाहिद-सब दुष्कर्मसे बचकर
 ईश्वरका उपासक ।
 जाहिल-मूर्ख, अज्ञान ।
 जिना-व्यभिचार ।
 जिन्दाँ-वन्दीगृह ।
 जियाँ-हानि, टोटा ।
 जिपारत-तीर्थ-दर्शन ।
 जिरह-हुज्जत, बहस ।
 जिरह-कवच ।
 जिला-चमक ।
 जिलेदार-जिलेका अफसर ।
 जिस्म-शरीर ।
 जीनत-शोभा ।
 जिनहार-कदापि ।
 जीना-सीढ़ी ।
 जीना-जीवित रहना ।
 जोस्त-जीवन ।
 जुज-खंड, टुकड़ा, अतिरिक्त ।
 जुन्नार-जनेऊ ।
 जुरअत-साहस ।
 जुर्म-अपराध ।
 जुल्म-अत्याचार ।
 जुल्मत-अंधेरा ।
 जुल्म-रसीदा-अत्याचार-पीड़ित ।
 जुस्तजू-तलाश ।
 जुहद-परहेजगारी ।
 जू-जलाशय ।
 जू-चमक, प्रकाश ।

जूए-दरिया, नहर ।
 जूक-भीड़ ।
 जूद-जल्दी ।
 जेब-पाकेट ।
 जेब-उपयुक्त, शोभायमान ।
 जेर-नीचे ।
 जेहल-नादानी ।
 जेहाद-धर्म-युद्ध ।
 जेहालत-मूर्खता ।
 जोक-अवकाश, गड्ढा ।
 जोक-दुर्बलता, मूर्च्छा ।
 जोया-खोजी ।
 जोर-बल ।
 जोक-प्रसन्नता, शौक ।
 जोर-अत्याचार ।

त

तऊज-तअना (ताना) ।
 तअस्सुब-पक्षपात ।
 तक्रदीर-भाग्य ।
 तक्रब्बुर-अभिमान ।
 तक्रमील-पूर्णता ।
 तक्रलीद-अनुकरण ।
 तक्रवा-परहेजगारी ।
 तक्री-धर्मनिष्ठ, ईश्वरसे डरनेवाला ।
 तखलिया-एकान्त ।
 तखल्लुस-उपनाम ।
 तखैयुल-विचार ।
 तगय्युर-बहुत बड़ा परिवर्तन ।
 तगाफुल-उपेक्षा ।
 तजदीद-नवीनता ।
 तजल्ली-छमक-दमक ।

तजस्सुस-तलाश ।
 तजाहुल-जानबूझकर अनजान बनना ।
 तनजुल-हास, जवाब ।
 तनफ़ुर-नफ़रत ।
 तनहा-एकाकी ।
 तन्नाज-नाज-नखरा करनेवाला ।
 तपिश-गरमी ।
 तबस्सुम-मन्दहास ।
 तबीब-वैद्य ।
 तमकनत-शान-शौकत, घमंड ।
 तमदुन-सम्यता, संस्कृति ।
 तमन्ना-कामना ।
 तमसील-उपमा ।
 तमहीद-भूमिका ।
 तमा (तमअ)-चाह, इच्छा ।
 तम्बीह-नसीहत ।
 तरगीब-उत्तेजन ।
 तरजीह-प्रधानता देना ।
 तरदीद-प्रत्युत्तर ।
 तरब-प्रसन्नता ।
 तरमीम-संशोधन ।
 तलातुम-समुद्रकी बड़ी तरंगें ।
 तलख-कड़वा ।
 तबंगर-सम्पन्न ।
 तवक्कुफ़-विलम्ब ।
 तवाफ़-प्रदक्षिणा ।
 तवारीख़-इतिहास ।
 तवालत-बखेड़ा ।
 तशखीस-रोगका निदान ।
 तशफ़ी-सन्तोष ।
 तशबीह-उपमा ।
 तशरीह-टीला, भाष्य, व्याख्या ।

तशवीश-परेशानी ।
 तसद्वुक्क-न्योछावर करना ।
 तसरीह-व्याख्या ।
 तसव्वुक्क-सूफियोंका धर्म ।
 तसव्वुर-ध्यान ।
 तस्वीह-माला, सुमरन ।
 तस्लोम-स्वीकार करना ।
 तहक्कीर-अपमान ।
 तहंजीब-भलमनसाहत ।
 तहम्मूल-सहनशीलता ।
 तहरीक-आन्दोलन ।
 तहंसोन-सराहना ।
 तहैयुर-अचरज ।
 तहो-बाला-उल्टा-पलटा, विनिष्ट ।
 ताअत-सेवा, इबादत ।
 ताखोर-विलम्ब ।
 ताम्मूल-असमंजस ।
 तायर-पक्षी ।
 तारी-प्रकट होना ।
 तारीक-अन्धकार ।
 तालिब-चाहनेवाला ।
 तावान-दण्ड ।
 तासीर-असर ।
 ताहिर-पवित्र ।
 तिफ़ल-बालक ।
 तिश्ना-प्यास ।
 तोरगी-अन्धकार ।
 तुपयानी-नदीकी बाढ़ ।
 तुन्द-उग्र, कड़वा ।
 तुपक-तोप ।
 तुफंग-बन्दूक ।
 तुरबत-क्रम ।

तूती-एक चिड़िया ।
 तूर-शाम देशका एक पर्वत । कहते हैं
 इसी पर्वतपर हज़रत मूसाको दिव्य
 प्रकाश दिखाई दिया था ।
 तुलानी-लम्बा ।
 तेग-तलवार ।
 तेज-तीव्र, महंगा, फुर्तीला ।
 तेशा-बसूला नामक औज़ार ।
 तैश-आवेश ।
 तोबा-प्रतिज्ञा ।
 तोहफ़ा-उपहार ।
 तोहमत-भूठा कलंक ।
 तौक्कीर-प्रतिष्ठा ।
 तौफ़ीक-सामर्थ्य ।

द

दक्कीक-कठिन, मुश्किल ।
 दन्दाँ-दाँत ।
 दफ़न-गाड़ना ।
 दबिस्ताँ-पाठशाला ।
 दमामा-नगाड़ा ।
 दयानत-ईमान ।
 दयार-प्रदेश ।
 दर-द्वार ।
 दरख़शाँ-चमकीला ।
 दरबान-द्वारपाल ।
 दरमाँ-इलाज ।
 दरवेश-फ़कीर ।
 दराज-लम्बा ।
 दरिन्दा-फाड़ खानेवाला जानवर ।
 दरेण-दुःख, कमी, पश्चाताप ।
 दरोण-भूठ ।

द्वर्ज—लिखित ।
 द्वर्ज—दरार ।
 दवाम—सदैव ।
 दशत-नवर्दी—जंगलोंमें मारे-मारे
 फिरना ।
 दस्त—हाथ, पतला पायखाना ।
 दस्तार—पगड़ी ।
 दहन—मुख ।
 दहर—जमाना, समय ।
 दहेलीज—देहली ।
 दहशत—भय ।
 दाद—इत्साफ़, प्रशंसा ।
 दाम—जाल ।
 दामन—कुरते आदिके नीचेका
 हिस्सा ।
 दार—सूज़ी, रखनेवाला जैसे ईमान-
 दार, वफ़ादार ।
 दावर—न्यायकर्ता ।
 दिल-आज़ार—अत्याचारी ।
 दिल-कश—लुभावना ।
 दिल-ख़राश—दिलको चोट पहुँचाने-
 वाला ।
 दिल-गीर—उदास, दुःखी ।
 दीद—देखा-देखी ।
 दीवार—दर्शन ।
 दीवान—ग़ज़लोंका संग्रह ।
 दुस्तर—पुत्री ।
 दुस्तर-रज—शराब ।
 दुर—मोती ।
 दुश्नाम—दुर्वचन ।
 दूब—धुआँ ।
 दैर—मन्दिर ।

दोज़ख़—नरक ।
 दोश—कन्धा ।
 दोशीजा—कुंवारी ।

न

नंग—लज्जा, कलंक ।
 न—नहीं ।
 नईम—स्वर्ग, दुलार ।
 नकहत—सुगन्धि ।
 नक्राहत—निर्बलता ।
 नक्रीब—चारण ।
 नक्श—अंकित ।
 नखचीर—शिकार ।
 नख़वत—घमंड, शेखी ।
 नख़ल—वृक्ष ।
 नगमा—मधुर-स्वर ।
 नज़अ—मृत्यु-समय साँस तोड़ना ।
 नजात—छुटकारा ।
 नजाबत—सज्जनता ।
 नज़्म—सितारा ।
 नज़्म—कविता ।
 नदामत—शरमिन्दगी ।
 नदीम—साथी ।
 नफ़ासत—उम्दगी ।
 नफ़स—आत्म, कामवासना ।
 नबद—युद्ध ।
 नबी—ईश्वरीय दूत ।
 नम—गीला, तर ।
 नवा—संगीत, स्वर ।
 नवाज़—दया करनेवाला जैसे—
 गरीब नवाज़, बन्दा-नवाज़ ।
 नवाज़िश—कृपा ।

नशिस्तगाह—बैठनेका स्थान ।
 नशेमन—घोंसला, घर ।
 नसीम—सुगन्धित वायु ।
 ना—अहल—अयोग्य ।
 नाक्रिस—अपूर्ण, बुरा ।
 नाक्रूस—शंख ।
 नाखुदा—नाविक ।
 नागहाँ—अचानक ।
 नाचार—मजबूर ।
 नाज—नखरा, गर्व ।
 नाजनी—सुन्दरी ।
 नाज व नियाज—चोचला, नाज-
 नखरा ।
 नाजाँ—अभिमानी, गर्वीला ।
 नाजिल—गिरनेवाला ।
 नाजिश—अभिमानी
 नाजुक—अन्धम—नाजुक बदनवाला ।
 ना-तमाम—अधूरा ।
 ना-तवाँ—दुर्बल ।
 नातिक्र—बोलनेवाला ।
 नातिका—वाक्-शक्ति ।
 नादान—मूर्ख ।
 नादार—दरिद्र ।
 नादिम—लज्जित ।
 नादिर—अनोखा, दुष्प्राप्य ।
 ना-दहिन्द—ऋण न चुकानेवाला ।
 नाने—जबों—जौकी रोटी ।
 नाफ़—नाभि ।
 ना-फ़हम—नासमझ ।
 नाफ़िज़—जारी होनेवाला ।
 ना-ब-कार—अयोग्य, कुकर्मी ।
 नाबूद—नष्ट होनेवाला ।

नामा—पत्र, पुस्तक ।
 नामाबर—पत्र-वाहक ।
 नामुराद—बदक्रिस्मत ।
 नामूस—प्रतिष्ठा, लज्जा ।
 नामूसी—बदनामी ।
 नायाब—बहुत बढ़िया ।
 नार—आग ।
 ना-रबा—अनुचित ।
 नालाँ—रोनेवाला, रोकर फ़रियाद
 करनेवाला ।
 नाला—रोना-धोना वाला ।
 नाश—लाश ।
 ना शाइस्ता—असम्भ्य, अनुचित ।
 ना-शाद—अप्रसन्न, दुःखी ।
 ना-शिकेब—अधीर, विकल ।
 ना-सबूर—बेचैन ।
 नासाज—अस्वस्थ, विरोधी ।
 नासिख—लेखक, मिटानेवाला ।
 नासेह—उपदेशक, नसीहत देनेवाला ।
 नाहंजार—दुश्चरित्र, पाजी ।
 निगहबान—देख-रेख रखनेवाला ।
 निगार—लिखने या बेल-बूटे बनाने-
 वाला । जैसे नामा-निगार ।
 निगूँ—नत, झुका हुआ । जैसे—सर-
 निगूँ ।
 निजाम—व्यवस्था ।
 निफ़ाक़—विरोध ।
 नियाज—न म्रता ।
 नियामत—दुर्लभ ।
 निशात—सुख-भोग ।
 निसवाँ—महिलाएँ ।
 निसार—निछावर ।

निसियाँ—भूलना, याद न रखना ।
 निस्फ—आधा
 निहंग—घड़ियाल, मगर ।
 निहाँ—छिपा हुआ ।
 निहानी—छिपा हुआ ।
 नीज—और भी ।
 नीम—अर्द्ध ।
 नीमजाँ—अधमरा ।
 नुबताचीं—छिद्रान्वेषी ।
 नुक्स—दोष, त्रुटि ।
 नुक्क—वाक्-शक्ति ।
 नुस्फा—वीर्य, सन्तान ।
 नुदरत—अनोखापन ।
 नुमा—दिखाई पड़नेवाला, जैसे बद-
 नुमा, खुश-नुमा, दिखलानेवाला,
 जैसे रह-नुमा । सदृश, जैसे
 गुम्बद-नुमा ।
 नुमायाँ—प्रकट ।
 नूर—प्रकाश ।
 नूरानी—प्रकाशमान ।
 नूरेचश्म—नेत्रोंका प्रकाश, पुत्र ।
 नुह—एक पैगम्बर ।
 नेस्त—नाबूद—नष्ट—भ्रष्ट ।
 नैयर—चमकदार सितारा ।
 नैरंग—धोखा, इन्द्रजाल ।
 नोश—पीनेवाला, जैसे मैनीश—
 शराब पीनेवाला, पियो ।
 नौ—नया ।
 नौअ—प्रकार, किस्म ।
 नौ-खेज—नवयुवक ।
 नौ-निहाल—नया पौधा, नौजवान ।
 नौबत—दशा, मंगलसूचक वाद्य ।

नौ-ब-नौ—बिलकुल नया ।
 नौहा—रुदन ।
 नौहांगर—शोक मनानेवाला ।

प

पंज—पाँच ।
 पज्जमुरदा—मुरझाया हुआ ।
 पज्जीर—माननेवाला, पालनकरने-
 वाला । जैसे—इताअत पज्जीर ।
 पनाह—रक्षा, आश्रय ।
 पयाम—सन्देश ।
 पयाम-बर—सन्देश-वाहक ।
 परखाश—लड़ाई-भगड़ा ।
 परचम—झण्डा ।
 परतौ—किरण, अक्स ।
 परवर—पालन करनेवाला, जैसे—
 बन्दा-परवर, मनुष्योंकी परवरिश
 करनेवाला ।
 परवाज—उड़ना ।
 परवाना—पतंगा, आज्ञा-पत्र ।
 परस्त—पूजा करनेवाला, जैसे—
 आतिश-परस्त, हुस्न-परस्त ।
 परस्तिश—उपासना ।
 परिस्तान—परियोंका निवासस्थान ।
 परी-पैकर—परीके समान देह-
 वाला ।
 परी-रू—परीके समान मुख-
 वाला ।
 परीवश—परीके समान, सुन्दर ।
 पलीद—अशुद्ध, दुष्ट ।
 पशेमान—शरमिन्दा ।
 पस—पीछे ।

पस-पा-पीछे हटनेवाला ।
 पस्त-हारा हुआ, नीचा ।
 पहलू-तही-ध्यान न देना ।
 पाक-पवित्र ।
 पामाल-कुचला हुआ ।
 पारसा-सदाचारी ।
 पाश-टुकड़ा, खंड ।
 पास-लिहाज, नजदीक ।
 पासबान-पहरेदार, रक्षक ।
 पिनहाँ-छिपा हुआ ।
 पिन्दार-बुद्धि, घमण्ड ।
 पिसर-पुत्र ।
 पिस्ताँ-स्तन (पिस्तान) ।
 पोर-वृद्ध, सिद्ध ।
 पुर-पूर्ण भरा हुआ ।
 पुरसाँ-पूछनेवाला ।
 पुरसिश-पूछना ।
 पुर्स-पूछनेवाला ।
 पुस्त-पीठ ।
 पैचाँ-पेचीदा, घुमावदार ।
 पेश-क्रब्ज-कटार ।
 पेशानी-मस्तक ।
 पैकर-चेहरा, देह ।
 पैकान-तीर (पैकाँ) ।
 पैग्राम-सन्देश ।
 पैमान-वादा ।
 पैमाना-मापनेका यंत्र, मधुपात्र ।
 पैरहन-लिबास ।
 पैहम-लगातार ।
 पोशीदा-छिपा हुआ ।
 पोशिश-पोशाक ।
 प्यादा-हरकारा ।

फ

फक्र-भय आदिके कारण चेहरा
 म्लान हो जाना ।
 फक्रत-केवल ।
 फक्र-दीनता, साधुता ।
 फल्ल-अभिमान, गर्व ।
 फजर-सबेरा ।
 फज्जा-खुला हुआ क्षेत्र, शोभा ।
 फज्जीलत-बड़प्पन, श्रेष्ठता ।
 फज्जीह-बदनाम करनेवाला ।
 फज्जीहत-बदनामी, दुर्दशा ।
 फजूल-ब्यर्थ ।
 फजल-कृपा, जैसे—फजले-इलाही,
 ईश्वरकी कृपा ।
 फतवा-मौलवी आदि किसी कर्म
 आदिके सम्बन्धमें जो व्यवस्था
 देते हैं ।
 फतह-विजय ।
 फतूर-विकार, उपद्रव ।
 फन-गुण, खूबी, करतब ।
 फना-नाश, बरबादी ।
 फन्द-छल-कपट ।
 फर-चमक-दमक, शोभा जैसे—
 कर्-ओ-फर, शान-शौकत ।
 फरक-भेद, अलगाव ।
 फरदा-आनेवाला दिन ।
 फरबा-स्थूल शरीरवाला ।
 फरमाबरदार-आज्ञाकारी ।
 फरमाइश-अनुरोध, आज्ञा ।
 फरमान-आज्ञा-पत्र ।
 फरमाना-कहना ।

फ़रसूदा—बहुत पुराना, शिथिल,
दुर्दशा-ग्रस्त ।
फ़रहत—प्रसन्नता ।
फ़रहत बल्लश—सुखद ।
फ़रहाद—फ़ारसका एक प्रसिद्ध प्रेमी ।
फ़राख—विशाल, बड़ा ।
फ़राण—फ़ुरसत, बे फ़िकरी ।
फ़रागत—छुटकारा, बेफ़िकरी ।
फ़राज—उच्च ।
नशेबो-फ़राज—ऊँच-नीच ।
फ़रामोश—विस्मृत, जैसे—अहसान-
फ़रामोश ।
फ़रायज—कर्तव्य ।
फ़रार—भाग हुआ ।
फ़राहम—इकट्ठा ।
फ़रियाद—प्रार्थना, पुकार ।
फ़रियाद-रस—फ़रियाद सुनकर दुःख
दूर करनेवाला ।
फ़रिश्ता—देवता ।
फ़रेफ़ता—आसक्त, धोखा खानेवाला ।
फ़रेब—छल-कपट ।
फ़रेब-दिही—धोखा देना ।
फ़रोस्त—बिक्री ।
फ़रोश—बेचनेवाला, जैसे—मेवा-
फ़रोश=मेवा बेचनेवाला ।
फ़र्जा—दरार, भग ।
फ़र्ज—फ़रायज, कर्तव्य-कर्म बिल-
फ़र्ज-मान लो कि ।
फ़ैलक—आकाश ।
फ़साना—फ़िस्सा, विवरण ।
फ़साहत—सुन्दर ढंगसे बोलनेकी
शक्ति । •

फ़सील—परकोटा ।
फ़सीह—सुवक्ता ।
फ़सू—जादू-टोना ।
फ़सूगर—मग्ध करनेवाला, जादूगर ।
फ़स्लेबहार—असंत-ऋतु ।
फ़हम—समझ, जैसे—सुखनहफ़म-
कलामको समझनेवाला ।
फ़हश—फ़हड़, अश्लील ।
फ़होम—समझदार ।
फ़ाका—निराहार रहना ।
फ़ास्ता—एक चिड़ियाका नाम ।
फ़ाजिल—उयादा, बुद्धिमान ।
फ़ातिहा—प्रार्थना, कब्रपर फ़ातिहा
पढ़ना ।
फ़ानी—नश्वर ।
फ़ाम—रंग, जैसे सियह फ़ाम=काला-
रंग ।
फ़ायक—श्रेष्ठ, उच्च ।
फ़ायज—विजयी, प्राप्त करनेवाला ।
फ़ाश—स्पष्ट, प्रकट,
फ़ाहिश—निर्लज्ज, बेईमान, दुश्च-
रित्र ।
फ़ाहिशा—दुश्चरित्रा ।
फ़िगार—घायल ।
फ़िजा—मैदान, शोभा, वातावरण ।
फ़ितना—लड़ाई-भगड़ा, । माश्कका
विशेषण ।
फ़ितरत—स्वभाव चालाकी ।
फ़िदवी—स्वामीभक्त ।
फ़िरऔन—अन्यायी, मिस्रका एक
अत्याचारी राजा ।
फ़िरका—सम्प्रदाय ।

फिरदोस—स्वर्ग ।
 फिराक—विछोह, वियोग ।
 फिराग—बरतन, चौड़ा, बोझकी
 बोरी ।
 फिल-फौर—नुरन्त ।
 फिल-बदीह—तत्काल ।
 फिशाँ—बरसाने या भाड़नेवाला,
 आतिश-फिशाँ—आग बरसाने-
 वाला ।
 फीरोज—सुखी, विजयी ।
 फील—हाथी ।
 फुगाँ—रोना, चिल्लाना ।
 फुज्ज—बढ़ा हुआ ।
 फुरकत—जुदाई, वियोग ।
 फ़ेज—उपकार, बड़ा लाभ ।
 फ़ेजेआम—लोकोपकार ।
 फ़ैयाजी—उदारता ।
 फ़ौकियत—उत्तमता, उच्चता ।
 फ़ौत—मौत ।

व

व—एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले
 लगकर 'के साथ' 'से' 'पर' आदि
 अर्थ देता है, जैसे—व-शौक-शौकसे ।
 वक्रा—अमरता, शाश्वत ।
 व-क़ौल—किसीके कथनानुसार ।
 वरुत—भाग्य ।
 वरुश—प्रदान ।
 वरुशिश—पुरस्कार, इनाम ।
 वजा—ठीक, दुरुस्त ।
 वजाय—किसीके बदलेमें ।
 व-जुज—सिवा, अतिरिक्त ।

बज्ज—सभा, रंगस्थल ।
 बतन—गर्भ, पेट ।
 बद—बुरा, जैसे बद-चलन. बद-
 मआश ।
 बद-ख्वाह—अशुभ चाहनेवाला ।
 बद-तर—अधिक बुरा ।
 बद-बरुत—अभागा ।
 बन्दा—सेवक ।
 बन्दा-नवाज—दीनदयालु ।
 बन्दा-परवर—दीनबन्धु ।
 बन्दी—क़ैदी ।
 बन्दी-खाना—कारागार ।
 बयाबान—उजाड़, जंगल ।
 बर—ऊपर, जैसे—बरवक्त—समय
 पर, ले जानेवाला, जैसे—नामा-
 वर, पत्रवाहक, लेनेवाली, जैसे—
 दिलवर-मोह लेनेवाली ।
 बर-गस्ता—फिरा हुआ, विरोधी ।
 बर-मला—सबके सामने, खुल्लम-
 खुल्ला ।
 बरहना—तंगा ।
 बर हम—क्रुद्ध ।
 बर्क—विजली ।
 बर्ग—वृक्षके पत्ते ।
 बलन्द—श्रेष्ठ, ऊँचा ।
 बला—आफ़त ।
 बलागत—अच्छी तरह बोलना,
 ज़बानी ।
 बशर—मनुष्य ।
 बशीर—खुशख़बरी देनेवाला
 सुन्दर मनुष्य ।
 बसर—दृष्टि, ज्ञान ।

बहर-वास्ते । बहरे-खुदा=खुदाके
 वास्ते । बहरावर=उत्तीर्ण ।
 बहर-महीसागर, कविताका माप ।
 बहा-मूल्य, बे-वहा=बहुमूल्य ।
 बहार-वसन्त-ऋतु, आनन्द ।
 बहिश्त-स्वर्ग ।
 बांग-आवाज, शब्द जैसे--वांगे-
 दरा=घण्टेकी आवाज ।
 बाइस-सबब ।
 बाग-उपवन ।
 बागबान-माली ।
 बाज-महसूल ।
 बाज-एक पक्षी, कोई-कोई ।
 बातिन-भीतरी भाग, मन ।
 बातिल-व्यर्थ ।
 बाद-पवन ।
 बाद-कश-पंखा, धौंकनी ।
 बाद-शराब ।
 बाद-कश-शराबी ।
 बाद-परस्त-मद्यप, शराबका
 पुजारी ।
 बाद-सबा-पुरवा हवा ।
 बान-रखवाली करनेवाला, जैसे--
 दरबान, निगहबान, रखनेवाला,
 हाँकनेवाला, जैसे--फ़ीलबान,
 गाड़ीबान ।
 बाम-घरकी छत, अटारी ।
 बार-भार, परिणाम ।
 • बार-याबी-हाज़िर होना ।
 बार-हा-कई बार ।
 बारां-वर्षा ।
 बारी-ईश्वर ।

बाला-ऊपर ।
 बाला-खाना-ऊपरका कमरा ।
 बावर-विश्राम ।
 बा-वस्फ-गुणी ।
 बाहम-परस्पर ।
 बिल्-उमूम-आमतौरपर ।
 बिल-जब्र-बलपूर्वक । •
 बिसात-समर्थ, शतरंजका बोर्ड ।
 बिस्मिल-घायल ।
 बों-दर्शक, जैसे वारीकबीं=सूक्ष्म-
 दर्शी ।
 बी-महिला ।
 बीना-जिसे दिखाई देता हो,
 सुभाखा ।
 बीनाई-दृष्टि ।
 बीबी-पत्नी, कुलवधू ।
 बीम-भय ।
 बुरूल-कृपणता ।
 बुज-भीतरी दुश्मनी ।
 बुत-मूर्ति, प्रेयसी, चुप्पा ।
 बुत-कदा-मन्दिर, प्रेयसीका स्थान ।
 बुत-परस्त-मूर्तिपूजक ।
 बुत-शिकन-मूर्ति-तोड़क ।
 बुल-हवस-लोभी, कामुक ।
 बूदे-बाश-निवास ।
 बूम-उल्लू पक्षी ।
 बे-खुद-बेहोश, ज्ञानशून्य ।
 बेगानगी-परायापन ।
 बेगाना-पराया, शैर ।
 बेजा-अनुचित ।
 बेताब-बेचैन ।
 बेदार-जागता हुआ ।

बे-नज़ीर—अनुपम ।
 बे-नवा—दरिद्र, फ़कीर ।
 बे-नियाज़—लापरवाह, स्वच्छन्द,
 इच्छा रहित ।
 बे-बहा—बहुमूल्य ।
 बे-बाक—निर्भय ।
 बे-बाज़—चुक्ता किया हुआ ।
 बे-श—श्रेष्ठ, ज़्यादा ।
 बे-हिस—बेहोश, मूर्च्छा ।
 बे-अं—बेचनेकी क्रिया, जैसे मकान बे
 किया = बेचा ।
 बोसा—चुम्बन ।
 बोसीदा—सड़ा-गला, पुराना ।
 बोस्ता—वाटिका ।
 बोहतान—भूटा इलज़ाम ।

म

मअरिज़—विरोध करनेवाला ।
 मआल—अन्त, परिणाम ।
 मआशरत—सामाजिक जीवन ।
 मकतब—विद्यालय ।
 मक़तूल—बधस्थान, प्रेमिकाका क्रीड़ा-
 क्षेत्र ।
 मक़तूल—बध किया हुआ, प्रेमी ।
 मक़बरा—क़ब्र ।
 मक़रूह—घृणित, गन्दा ।
 मक़सद—अभिप्राय ।
 मक्का—मुस्लिम तीर्थस्थान ।
 मख़ज़न—खज़ाना ।
 मख़दूम—मालिक, स्वामी ।
 मख़मूर—नशेमें चूर ।

मख़लूक—सृष्टिके जीव ।
 मख़फ़ी—गुप्त, छिपा हुआ ।
 मख़सूस—विशिष्ट ।
 मशफ़िरत—माफ़ी ।
 मशमूम—रंजीदा ।
 मशरिब—पश्चिम ।
 मशरूर—गर्वीला ।
 मज़कूर—जिसका ज़िक्र हुआ हो ।
 मज़नू—प्रेममें उन्मत्त, क्षीण-शरीर ।
 मजमअ—(मजमा) भीड़ ।
 मजरूह—घायल ।
 मजलिस—सभा, जलसा ।
 मज़लूम—अत्याचार-पीड़ित ।
 मज़हका—उपहास ।
 मजाज़—नियमानुसार मिला हुआ
 अधिकार ।
 मजाज़ी—सांसारिक ।
 मजाज़ी इश्क़—सांसारिक-प्रेम ।
 मज़ार—क़ब्र ।
 मज़ीद—पवित्र, पूज्य, बड़ा ।
 मज़ीद—अधिकता, बढ़ाया हुआ ।
 मतब—दवाखाना ।
 मतरूक—परित्यक्त, छोड़ा हुआ ।
 मतानत—दृढ़ता ।
 मदफ़न—क़ब्र ।
 मदफ़ून—गाड़ा हुआ, छिपाकर रखा
 हुआ ।
 मदह—प्रशंसा ।
 मद-होश—नशेमें चूर ।
 मदार—आधार, जैसे दारो-मदार ।
 मनज़र—दृश्य ।
 मनसब—ओहदा, अधिकार ।

मनहूस—अशुभ ।
 मफ़हूम—समझा हुआ ।
 मफ़तून—अनुरक्त (मफ़तूँ) ।
 मफ़तूह—विजित ।
 ममनून—कृतज्ञ ।
 मरकज़—केन्द्र ।
 मरक़द—क़ब्र ।
 मरदूद—त्यक्त, एक ग़ाली ।
 मरसिया—रोना-पीटना ।
 मरहबा—शाबाश ।
 मरहमत—दया, अनुग्रह ।
 मरहला—मंज़िल ।
 मरहून—जो बन्धक रखा गया ।
 मरहूम—मृतक ।
 मर्ग—मौत ।
 मलक—उल-मौत—यमराज ।
 मलज़ूम—जो ज़रूरी हो ।
 मलबूस—पोशाक ।
 मलामत—बुरा-भला कहना ।
 मलाल—रंज, अफ़सोस ।
 मलाहृत—लावण्य, सौन्दर्य ।
 मलूल—चिन्तित ।
 मशग़ला—दिलबहलाव ।
 मशरिफ़—पूरब ।
 मशक—सक्क़ी मशक ।
 मशक़—अभ्यास ।
 मशकूक—संदिग्ध ।
 मशकूर—कृतज्ञ ।
 मसनूई—बनावटी ।
 मसरूर—प्रसन्न ।
 मसाइब—विपत्तियाँ ।
 मस्कन—घर ।

मस्तूर—परदेमें छिपा हुआ, मरतू-
 रात=परदेमें रहनेवाली स्त्रियाँ ।
 मह—चन्द्रमा ।
 महज़र—घोषणापत्र ।
 महताब—चाँद ।
 महदूद—सीमित ।
 महफूज़—सुरक्षित ।
 महबूब—प्रेम-पात्र ।
 महमिल—ऊँटपर कसनेका कज़ावा
 जिसमें परदा डालकर स्त्रियाँ
 बैठती हैं ।
 महरम—हृदयकी बात जाननेवाला ।
 अन्तरंग मित्र ।
 महरूम—वंचित, बदनसीब ।
 महलसरा—जनाना महल ।
 महबियत—आकर्षण, अनुरक्त होनेका
 भाव ।
 महशर—वह दिन जिसमें खुदा सबका
 न्याय करेगा ।
 माज़ी—भूतपूर्व, गत-कालका ।
 माज़ूर—असमर्थ ।
 मात—पराजय ।
 मातबर—विश्वसनीय ।
 मातम—शोक ।
 मातम-कदा—शोक-गृह ।
 मातमज़दा—शोकग्रस्त ।
 मादूम—नष्ट, अस्तित्व रहित ।
 मानूस—हिला-मिला ।
 मान्दगी—रुग्णता ।
 मामूर—नियुक्त किया हुआ ।
 मायल—प्रवृत्त, रुजू ।
 मायूब—निन्दनीय ।

मायूस-निराश ।
 मारुह-प्रसिद्ध ।
 माशूक-प्रेम-पात्र ।
 मा-सैवा-इसके सिवा ।
 मामूम-निरपराध ।
 माह-चन्द्रमा ।
 माह-जर्बी-शुन्दमुखी ।
 माहताब-चाँदनी ।
 माहूरू-चाँदके समान ।
 माह-लक़ा-चाँदके समान ।
 माहवश-चाँदके समान ।
 माहिर-अच्छा जानकर ।
 मियार-कसौटी ।
 मिजगाँ-पलकोंके वाल ।
 मिजराब-सितार बजानेवाला छल्ला ।
 मिजाज-स्वभाव ।
 मिनकार-चोंच ।
 मिम्बर-मस्जिदका वह चबूतरा
 जिसपर भाषण दिया जाय ।
 मियाँ-स्वामी, महाशय ।
 मिललत-मेल-मिलाप ।
 मिसवाक-दाँतीन ।
 मिस्कीन-दीन-दुःखी ।
 मिस्मार-ढाया हुआ ।
 मिस्ल-तुल्य ।
 मोना-मद्य रखनेका पात्र ।
 मोआद-अवधि ।
 मोर-अमीरका संक्षिप्त रूप, सर-
 दार, नेता ।
 मोरजा-अमीरजादेका संक्षिप्त रूप ।
 मोरास-उत्तराधिकारमें प्राप्त होने-
 वाली सम्पत्ति ।

मुअज्जम-परम प्रतिष्ठित ।
 मुअज्जिन-मस्जिदमें अज्ञान देने-
 वाला ।
 मुअतर-इत्रमें बसा हुआ ।
 मुअद्बिब-विनम्र ।
 मुअन्निस-स्त्रीलिंग, मादा ।
 मुअम्बर-अम्बरकी सुगन्धवाला ।
 मुअम्मर-वृद्ध ।
 मुअम्मा-पहेली, विचारणीय विषय
 समस्या ।
 मुअर्री-नग्न, सरल ।
 मुअरिख-इतिहास-लेखक ।
 मुअल्ला-मान्य, प्रतिष्ठित ।
 मुअल्लिम-शिक्षक, उस्ताद ।
 मुअस्सिर-प्रभावशाली ।
 मुअल्लिजा-चिकित्सा ।
 मुआविन-सहायक ।
 मुअहिदा-करार, दृढ़ निश्चय ।
 मुअहिद-वायदा करनेवाला ।
 मुअय्यन-नियत, मुकर्रर किया हुआ ।
 मुकद्दर-गन्दा, क्षुब्ध ।
 मुकद्दर-भाग्य ।
 मुकद्दस-पवित्र ।
 मुकम्मल-पूर्ण ।
 मुकर्रब-घनिष्ठ-मित्र, मुसाहब ।
 मुकर्रम-प्रतिष्ठित ।
 मुकर्रर-दोबारा, फिरसे ।
 मुकर्रर-निश्चित, नियुक्त ।
 मुकल्लिद-अनुयायी ।
 मुकाफ़ात-पापोंका फल ।
 मुक्तिर-इकरार करनेवाला ।
 मुक्रीम-ठहरा हुआ ।

मुकैयद—कैद किया हुआ ।
 मुक्केश—जिसपर सोने चाँदीका तार
 चढ़ा हो ।
 मुक्तदा—धार्मिक-आचार्य ।
 मुखन्नस—नपुंसक ।
 मुखपक्क—संक्षिप्त ।
 मुखबिर—भेदिया, जासूस ।
 मुखम्मस—पाँच-पाँच चरणोंकी
 कविता ।
 मुखलिस—सच्चा, अविवाहित ।
 मुखलिक—विरोधी, विपरीत ।
 मुखिल—बाधक ।
 मुखलिक—भिन्न-भिन्न ।
 मुखत्तर—संक्षिप्त ।
 मुग़नी—गायक ।
 मुग़ीलाँ—बबूल, खारे-मुग़ीलाँ=
 कीकरके काँटे ।
 मुजक्कर—पुलंग, नर ।
 मुजतर—बेचैन, विकल ।
 मुजतरिब—बेचैन ।
 मुजदा—शुभ-समाचार ।
 मुज्जपक्कर—विजयी ।
 मुजमहिल—शिथिल-दुर्बल ।
 मुजरिम—अपराधी ।
 मुजरंद—अविवाहित, एकाकी ।
 मुजरंब—परीक्षित ।
 मुजस्सम—स-शरीर ।
 मुजाहिद—धार्मिक, योद्धा ।
 मुजिर—हानिकारक ।
 मुतअल्लिक—सम्बन्धित ।
 मुतअस्सिब—कट्टर, धर्मान्ध ।
 मुतआख़रीन—आधुनिक कालके ।

मुतनफ़्फ़िर—घृणित ।
 मुतफ़्फ़ी—धूर्त, चालाक ।
 मुतबरक—पवित्र, शुभ ।
 मुतमइन—सन्तुष्ट ।
 मुतरिब—गायक ।
 मुतलाशी—ढूँढ़नेवाला ।
 मुतशाबह—मिलता-जुलता ।
 मुतीअ—आज्ञाकारी ।
 मुदाम—सदा, लगातार ।
 मुद्आ—अभिप्राय ।
 मुनइम—दाता ।
 मुनकिर—नास्तिक ।
 मुनव्वर—प्रकाशमान ।
 मुनहसर—निर्भर, आश्रित ।
 मुनादी—ढिंढोरा, घोषणा ।
 मुन्तखब—निर्वाचित ।
 मुन्तज़िर—प्रतीक्षा करनेवाला ।
 मुन्तशिर—बिखरा हुआ ।
 मुकलिस—निर्धन ।
 मुफ़स्सल—ब्योरेवार ।
 मुबर्रा—निरपराध, साफ़, अशुद्ध
 वस्तुओंसे अलग ।
 मुबहम—अस्पष्ट, संदिग्ध ।
 मुबादा—कहीं ऐसा न हो ।
 मुबारक—मंगलप्रद, शुभ ।
 मुबालागा—अत्युक्ति, भ्रामक धारणा ।
 मुबाशरत—सम्भोग, मैथुन ।
 मुब्तला—फँसा हुआ, ग्रस्त ।
 मुमताज़—प्राननीय, प्रतिष्ठित ।
 मुमानअत—मनाही, वर्जन ।
 मुरत्तब—क्रमबद्ध ।
 मुरत्तिब—क्रमबद्ध करनेवाला ।

मुरदन-मरना, मौत ।
 मुरठवत-भलमनसी ।
 मुराद-मनोरथ ।
 मुलजिम-अभियुक्त ।
 मुलहिद-अधर्मी ।
 मुलूल-दुःखी, रंजीदा ।
 मुल्लतजो-प्रार्थी ।
 मुल्लतवी-स्थगित ।
 मुवरिख-इतिहास-लेखक ।
 मुबहिद-एक ईश्वरवादी ।
 मुशफिक-प्रिय मित्र ।
 मुशररु-प्रतिष्ठित ।
 मुशाबह-समान आकारवाला,
 तुल्य ।
 मुशायरा-कवि-सम्मेलन ।
 मुशाहरा-वेतन ।
 मुशाहिद-देखनेवाला ।
 मुशोर-परामर्श देनेवाला ।
 मुश्क-कस्तूरी ।
 मुश्क-भुजाएँ ।
 मुश्त-हाथकी मुट्ठी ।
 मुश्तइल-भड़कानेवाला ।
 मुश्तबह-जिसमें शक हो ।
 मुश्तमिल-मिला हुआ ।
 मुश्तरक-सम्मिलित ।
 मुश्तरिक-हिस्सेदार ।
 मुश्ताक-बहुत अधिक इच्छा या
 कामना रखनेवाला ।
 मुसद्दस-छः चरणकी कविता ।
 मुसन्नफा-रचित, ग्रन्थ ।
 मुसन्निक-ग्रन्थकार, लेखक ।
 मुसरंत-प्रसन्नता, खुशी ।

मुसलसल-क्रमसे लगा हुआ ।
 मुसल्लम-माना हुआ, पूरा ।
 मुसल्लह-हथियारबन्द ।
 मुसल्ला-नमाज पढ़नेकी चटाई या
 दरी ।
 मुसव्विर-चित्रकार ।
 मुसहफ-पृष्ठ, कुरान ।
 मुस्तकिल-स्थायी, दृढ़ ।
 मुस्तनद-जो सनद या प्रमाणके
 रूपमें माँगा जाय, प्रमाणित ।
 मुस्तहक-पात्र, अधिकारी ।
 मुहज्जब-सभ्य, शिष्ट ।
 मुहतरम-मान्य, पूज्य ।
 मुहत्तसिब-लोगोंके आचरणोंका
 परीक्षक ।
 मुहताज-दरिद्र, निराश्रित ।
 मुहाबा-मुरव्वत, मदद ।
 मुहाल-असम्भव ।
 मुहिब-मित्र, प्रेमी ।
 मुहिम-युद्ध ।
 मुहेया-मौजूद ।
 मू-वाल, रोम ।
 मू-ब-मू-वाल-वाल, ज्यों-का-त्यों ।
 मूजिद-आविष्कारक ।
 मूजिब-कारण ।
 मूजी-पीड़क, दुष्ट ।
 मूनिस-मित्र, सहायक ।
 मूसीक्री-संगीत-शास्त्र ।
 मेअराज-सीढ़ी, श्रेणी, ऊँचा स्थान ।
 मेजबान-आतिथ्य करनेवाला ।
 मेहमान-अतिथि ।
 मेह- (मेहर) दया, मेहरबानी ।

मै-मदिरा ।
 मै-कदा-मदिरालय ।
 मै-कशी-मैदिरा-पान ।
 मै-खाना-मधुशाला ।
 मै-खवार-मद्यप ।
 मै-खवारी-पद्य-पान ।
 मै-नोशी-मद्य-पान ।
 मै-परस्त-मद्यप ।
 मै-फ़रोश-मद्य बेचनेवाला ।
 मैयत-मृतशरीर, शव ।
 मोज़ा-करामात ।
 मोतकिद-विश्वासी, श्रद्धालु ।
 मोमिन-धर्मनिष्ठ मुसलमान ।
 मोहर्तमिम-प्रबन्धकर्ता ।
 मोहमिल-निरर्थक, बे-अर्थ ।
 मोहलिक-घातक ।
 मोहसिन-उपकारी ।
 मौक़ूफ़-बरखास्त, रोका हुआ ।
 मौज-पानीकी लहर, जोश ।
 मौज़ू-ठीक, उचित ।
 मौहूम-कल्पित ।

य

यक-एक ।
 यकता-अनुपम ।
 यक-न-शुद दो-शुद-एक न हो दो हो,
 एक तो था ही, एक और भी
 हो गया ।
 यक-ब-यक-एक बारगी, सहसा ।
 यक्का-बेजोड़-अनुपम ।
 यगाना-बेमिसाल ।
 यज्जदा-ईश्वरका नाम ।

यज्जीद-एक प्रसिद्ध व्यक्ति जो
 खलीफ़ा बनना चाहता था और
 जिसने करबलामें हज़रत इमाम
 हुसेनकी हत्या कराई थी ।
 यज्जद-ईरानका एक नगर, ईश्वर ।
 यतीम-अनाथ ।
 यम-दरिया ।
 याद-आवरी-याद-आना ।
 यारा-सामर्थ्य ।
 यावरी-सहायता ।
 यास-निराशा ।
 यूसुफ़-हज़रत याक़ूबके पुत्र, जो
 परम सुन्दर थे और जो भाइयोंकी
 बदौलत मिस्रके बाज़ारमें बेचे
 गये थे । इन्हींपर मिश्रकी मलका
 'जुलेखा' आसक्त हो गई थी ।
 यौम-दिवस ।

र

रंगा-रंग-रंग-विरंग ।
 रंज-दुःख, शोक ।
 रंजिश-मन-मुटाव ।
 रंजीदा-दुःखित ।
 रअना-दो रुखा, बनाव-शृंगार
 करके रहनेवाला ।
 रअनाई-सुन्दरता ।
 रऊनत-अभिमान ।
 रकअत-वक्रता ।
 रक्काबत-प्रतिद्वन्द्विता ।
 रकीक-तुच्छ-दुर्बल ।
 रक्कीक-कोमल-दयालु ।
 रक्कीब-प्रेमिकाका दूसरा प्रेमी ।

रक्कास—नर्तक ।
 रक्स—नृत्य ।
 रखना—सूराख, छिद्रान्वेषण ।
 रगबत—अनुराग, चाह ।
 रज—अंगूरका वृक्ष ।
 रजभूत पसन्द—उन्नतिका बाधक ।
 स्थिति-पालक ।
 रजा—इच्छा, स्वीकृति ।
 रजील—कमीना ।
 रज्जाक—रिज्ज देनेवाला, ईश्वर ।
 रज्ज—युद्ध ।
 रज्जिया—युद्ध सम्बन्धी ।
 रदीक—गजाल आदिमें वह शब्द, जो
 काफ़ियेके बाद बार-बार आता है ।
 रफ़भ्रंश—निवृत्त-शान्त ।
 रफ़ाक़त—मेल-जाल, निष्ठा ।
 रफ़ीक़—मददगार, साथी ।
 रफ़—फटे हुए कपड़ेके छेदमें तागे
 भरकर उसे बराबर करना ।
 रब—पालन-पोषण करनेवाला
 ईश्वर ।
 रबाब—सारंगीकी तरहका एक
 बाजा ।
 रब्त—अभ्यास, सम्बन्ध ।
 रवाँ—जारी ।
 रवा—वाजिव ।
 रबिश—चाल-ढाल ।
 रवैया—तौर-तरीका ।
 रशीद—शिक्षित, सम्य ।
 रशक—ईर्ष्या ।
 रशके-परी—जिसका रूप देखकर परी
 भी ईर्ष्या करे ।

रसा (रसाँ)—पहुँचानेवाला ।
 रस्म—रिवाज, लाग ।
 रह—राहका संक्षिप्त रूप ।
 रहनुमा—मार्ग-दर्शक ।
 रहबर—पथ-प्रदर्शक ।
 रहम—दया ।
 रहंइश—रहनेका स्थान ।
 रहीम—दयालू ।
 राकिम—लेखक ।
 रागिब—प्रवृत्ति रखनेवाला ।
 राज—रहस्य, भेद ।
 राजदार—भेदी, साथी ।
 रान—जाँघ ।
 राम—सेवक, आज्ञाकारी ।
 रायगाँ—व्यर्थ ।
 रायज—प्रचलित ।
 राशिद—धार्मिक, सच्चाई पाने-
 वाला ।
 रासिख—दूढ़ ।
 रास्त—उचित ।
 रास्त-गो—उचित बात कहनेवाला ।
 राह-गुज़र—मार्ग ।
 राह-जन—लुटेरा ।
 राहत—सुख-चैन ।
 रिजवाँ—स्वर्गका दरवान ।
 रिजाला—पाजी, तुच्छ ।
 रिन्द—शराबी, स्वच्छन्द, धार्मिक
 बन्धनोंको न माननेवाला ।
 रिया—धोखा-कपट ।
 रियाकार—धोखा देनेवाला ।
 रियाज—बाटिकाएँ, अभ्यास ।
 रिहलत—कूच, मीत ।

रीश-दाढ़ी ।
 रुख-मूँह, चेष्टा ।
 रुखसार-कपोल
 रुतबा-ओहदा ।
 रुबाई-चार चरणोंका पद्य
 रुसवा-वदनाम ।
 रुस्तम-फ़ारसका एक पहलवान ।
 रू-मुख, कारण ।
 रू-शद-वतान्त, दशा ।
 रू-पोश-छिपा हुआ ।
 रू-बरू-सम्मुख ।
 रू-बाह-लोमड़ी ।
 रू-बाह-बाजी-धूर्तता ।
 रू-सियाह-काले मुँहवाला, अप-
 राधी ।
 रू-शनास-परिचित ।
 रूह-आत्मा ।
 रूह-अफ़जा-आत्माको प्रसन्न करने-
 वाला ।
 रेख्ता-गिरा या टपका हुआ, उर्दू-
 भाषाका पहला नाम ।
 रेख्ती-जनानी कविता ।
 रेग-रेत ।
 रेज-सूक्ष्म, खंड ।
 रोज़-दिन ।
 रोज़-अफ़ज़-नित्य बढ़नेवाला ।
 रोज़े-जज़ा-कयामतका दिन ।
 रोज़े-रोशन-प्रातःकाल, दिन ।
 रोब-बड़प्पन ।
 रोशन-प्रकाशित ।
 रोशन-जमीर-समझदार ।
 रौ-चलनेवाला, जैसे पेश रौ=

आगे चलनेवाला, लहर ।
 रौजन-भरोखा, सूरख ।
 रौजा-वाटिका, बड़े लोगोंकी कब्र
 जिसके चारों ओर पक्की दीवार
 हो ।
 रौनक-अफ़रोज-रौनक या शोभा
 बढ़ानेवाला ।

ल

लंग-लंगड़ा ।
 लकब-उपनाम, उपाधि ।
 लकलका-सारसकी बोली, प्रभाव ।
 लका-चेहरा, आकृति, माहेलका=
 चन्द्रमाके समान मुखवाली ।
 लक्क-दक्क-बंजर भूमि, उजाड़ ।
 लख्त-टुकड़ा, जैसे—लख्ते-जिगर—
 जिगरका टुकड़ा ।
 लगज़िश-हाथ-पाँवका कांपना, भूल,
 लड़खड़ाहट ।
 लगायत-सहित, पर्यन्त, वहाँतक ।
 लगो-व्यर्थकी बात ।
 लजाजत-मिन्नत, खुशामद ।
 लजीज-स्वादिष्ट ।
 लज्जत-स्वाद, आनन्द ।
 लताफ़त-(लतीफ़का भाव) कोम-
 लता, बढ़ियापन ।
 लतीफ़-मजेदार, अच्छा, पाक ।
 लतीफ़ा-चुटकला ।
 लन्तरानी-शेखी, डींग ।
 लफ़ंगा-दुश्चरित्र, लुच्चा ।
 लफ़ज-शब्द ।

लफ़फ़ाज—बढ़-बढ़कर बातें करने-
वाला ।

लफ़फ़ाजी—डोंग हाँकना ।

लब—ओष्ठ, थूक, किनारा ।

लबरेज—लबालब ।

लब-ओ-लहजा—बोलनेका ढंग ।

लबादा—एक प्रकारका वस्त्र ।

लमहा—क्षण, पल ।

लरजना—काँपना ।

लवाजिम—साथमें रहनेवाली आव-
श्यक सामग्री ।

लवाहक—भाई-बन्द । रिश्तेदार,
नौकर ।

लशकर—सेना, फ़ौज ।

लस्सान—अच्छा वक्ता ।

लहजा—बोलनेमें स्वरोंका उतार-
चढ़ाव ।

लहजा—क्षण, पल ।

लहद—क्रत्र ।

ला—एक अव्यय जो शब्दोंके प्रारंभमें
लगकर निषेध या अभाव सूचित
करता है, जैसे—लाचार, ला-
जवाब, लाइलाज, लाइलम, ला-
जवाल ।

लाख—स्थान, जगह, जैसे संग-लाख ।

लाग्र—दुबला-पतला ।

लाजिम—आवश्यक ।

लानत—धिकार ।

लाफ़—शेखी बघारना ।

लाल—रत्न ।

लाल-फ़ाम—रक्तवर्णका ।

लाला-हल्ल—एक फूल, बहुत सुन्दर ।

ला-सानो—अनुपम ।

लाहक—निर्भर ।

ला-हौल—लाहौल वला कूवत इल्ला
बिल्लाहका संक्षिप्त रूप, जिसका
अर्थ है—ईश्वरके सिवा और कोई
शक्ति नहीं है । इसका प्रयोग घृणा-
सूचक बातोंमें किया जाता है ।

लिबास—वेष, वस्त्र ।

लुकनत—हकलापन ।

लुग़त—शब्द-कोश ।

लुत्फ़—मज़ा, आनन्द ।

लुर—मूर्ख, मक्कार ।

व

व-इल्ला—नहीं तो, वरना ।

वईद—बुराभला कहना, धमकी ।

वक्रअत—शक्ति, साख ।

वक्रार—वैभव, शान-शौकत ।

वक्राहत—निर्लज्जता, बेहयाई ।

वक्रअ—घटना स्थल, स्थिति ।

वक्रआ—घटित होना ।

वक्रफ़—अकल, शऊर, जैसे—बेव-
कूफ़-निबुद्धि, मूर्ख ।

वक्त—समय ।

वक्फ़ा—ठहराव, स्थिरता ।

वगर-ना—नहीं तो ।

वजअ—सज-धज, प्रणाली ।

वजअदार—तरहदार, सिद्धान्तोंका
पालन करनेवाला ।

वजाहत—स्पष्टता, सुन्दरता ।

वजद—तन्मयता, बेखुदी ।

वतीर—रंग-ढंग ।

वन्द—एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें
लगकर—‘वाला’ या ‘स्वामी’
आदिका अर्थ देता है ।

वक्रा—पूरा करना, भलाई, मुरीवत,
मुशीलता ।

वक्रात—मृत्यु ।

वक्रादार—वचन या कर्तव्यका पालन
करनेवाला ।

वक्रा-परस्त—वक्रादार ।

वक्रूर—अधिकता ।

वबा—फैलनेवाला रोग ।

वबाल—बोझ, भार ।

वर—एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें
लगकर वाला अर्थ देता है ।

जैसे—हुनरवर, ताजवर, ताकत-
वर, नाम वर ।

वरक्त—पत्र-पृष्ठ ।

वरगालाना—बहकाना, उकसाना ।

वरना—नहीं तो ।

वलवला—आवेश, उमंग ।

वली—संरक्षक, साधु ।

वले—लेकिन, मगर ।

वल्द—बेटा ।

वल्लाह—ईश्वरकी सौगन्ध ।

वल्लाह-आलम—ईश्वर जाने मैं नहीं
जानता ।

वश—एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें
लगकर समान या तुल्यका अर्थ
देता है । जैसे—परीवश-परीके

समान, माहेवश-चन्द्रमाके समान ।

वसीला—आश्रय, जरिया ।

वस्फ—विशेषता, खूबी ।

वस्ल—मिलन, संयोग ।

वहदत—एकत्त्व ।

वहशत—पागलपन, भीषणता ।

वा—खुला, या फैला हुआ ।

वाइज—धर्मोपदेशक ।

वाज—उपदेश, शिक्षा ।

वादा—इकरार, प्रतिज्ञा ।

वा-मांदगी—शिथिलता ।

वा-मांदा—वाकी वचा हुआ, शिथिल ।

वामिक—मित्र, आशिक ।

वाय—दुःख, चिन्ता और कष्ट आदि-
का सूचक, अव्यय जैसे—वाय
किस्मत—हायरे भाग्य ।

वार—समान, तुल्य, जैसे मजनूना-

वार—मजनूकी तरह, दीवाना-

वार—पागलोंके समान, रखने-

वाला, जैसे—उम्मेदवार, एक

प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर

‘के अनुसार’का अर्थ देता है,

जैसे माहवार ।

वा-रफ्तगी—तल्लीनता, भटकना,

आपसे बाहर होनेकी अवस्था ।

वारिद—मेहमान, आनेवाला ।

वाबेला—शोर-गुल, विलाप ।

वाहिद—एक, अकेला ।

विसाल—मिलाप संयोग ।

वीराना—उजाड़, जंगल ।

श

शआर—आदत, तौर-तरीका जैसे—

वक्रशआर—वक्राकी आदत

वाला ।

शक-शंका ।

शकर-एक प्रकारका प्रसिद्ध कंद ।

शकर-रंजी-मन-मुटाव ।

शकर-लब-मिष्टभाषो ।

शकील-अच्छी शकलवाला ।

शक्क-बीचमें फटा हुआ ।

शक्कर-कच्ची चीनी ।

शक्की-ग्रहमी ।

शगल-काम-धन्या, मनोविनोद ।

शगाल-गीदड़ ।

शगुप्तगी-प्रफुल्लता ।

शगुप्ता-प्रफुल्ल, विकसित ।

शगूफा-कली, विलक्षण घटना ।

शजर-वृक्ष ।

शदीद-दृढ़, कठिन ।

शनाखत-पहचान ।

शनास-पहचाननेवाला, जैसे मर्दुम-
शनास—मनुष्योंको पहचानने-
वाला ।

शफ़क़-प्रातःकाल और सन्ध्याके
समय आकाशकी लाली ।

शफ़क़त-कृपा, दया ।

शफ़ा-आरोग्य ।

शफ़ी-बीचमें पड़कर अपराध क्षमा
करानेवाला ।

शफ़ीक़-दयालु ।

शफ़फ़ा-स्वच्छ ।

शब-रात्रि ।

शब आहंग-रातको आवाज़ करने
वाला, बुलबुल ।

शब-ख़्वाबी-शयनवस्त्र ।

शबगीर-पिछली रातको इबादत

करनेवाला, प्रभात ।

शब-ग़-रातकी तरह काला ।

शबनम-ओस ।

शबनमी-मसहरी ।

शब-बेदार-रातभर जागनेवाला ।

शबाब-युवावस्था, आरम्भ ।

शबाहत-आकृति ।

शबिस्ता-शयन-कक्ष ।

शबीह-तसवीर ।

शबे-ज़फ़ाफ़-सुहागरात ।

शबेतारीक-अँधेरी रात ।

शबे-माह-चाँदनीरात ।

शबे-माहताब-चाँदनीरात ।

शब्बीर-भला, नेक ।

शमशाद-एक प्रकारका वृक्ष, जिससे
प्रेयसीके कदकी उपमा दी जाती
है ।

शमा-मोमवत्ती ।

शमअ-मोमवत्ती ।

शमादान-जिसपर मोमवत्ती रखी
हो ।

शमा-र-शमाकी तरह प्रकाशमान ।

शमीम-सुगन्ध ।

शम्मा-तनिक, हलकी सुगन्ध ।

शम्स-सूर्य ।

शर-शरारत ।

शरअ-कुरानमें दी हुई आज्ञा ।

शरफ़-बड़प्पन, महत्व ।

शरम-लज्जा ।

शरमगाह-योनि ।

शरमसार-लज्जित ।

शरमीला-लज्जालु ।

शरर-आगकी चिनगारी ।
 शरह-टीका, व्यवस्था, भाव ।
 शराफत-भलमनसाहत ।
 शराबे-तहर-बहिश्तकी शराब ।
 शराबोर-लथ-पथ ।
 शरार-अग्नि-कण ।
 शरीर-नटखट, पाजी ।
 शर्क-सूर्योदय, पूरव ।
 शश-दर-हक्का-वक्का ।
 शहबाज-बड़ा बाज पक्षी ।
 शहरे-खमोशों-कब्रिस्तान ।
 शहवत-काम-वासना ।
 शहवत-परस्त-कामुक ।
 शहादत-देश या धर्मपर प्राण
 न्योछावर करना, गवाही, प्रमाण ।
 शहीद-देश-धर्मपर प्राण देनेवाला ।
 शाइस्तगी-सम्भ्यता ।
 शाइस्ता-सम्भ्य ।
 शाकिर-उपकार माननेवाला ।
 शाकी-शिकायत करनेवाला ।
 शाख-डाल, टहनी ।
 शाखे-गजाल-हिरनका सींग, कमान,
 दूजका चाँद ।
 शाज-एकाकी, अनुपम, कभी-कभी ।
 शाज-ओ-नादिर-कभी-कभी ।
 शाद-प्रसन्न ।
 शाद-वाश-प्रसन्न रहो ।
 शादमाँ-प्रसन्न ।
 शादम्ब-हरा-भरा ।
 शादियाना-मंगल-वाद्य ।
 शान-तड़क-भड़क, ठसक ।
 शानदार-शानवाला ।

शान-ओ-शौकत-सजावट ।
 शाना-कंधी, कंधा, कंधा ।
 शायक-शौकीन, प्रेमी ।
 शायों-उपयुक्त ।
 शायी-प्रकाशित ।
 शाहबाज-बड़ा बाज पक्षी ।
 शाहिद-साक्षी ।
 शाहिदबाज-सौन्दर्यप्रेमी ।
 शिकन-सिलवट, तोड़नेवाला, जैसे
 —अहद-शिकन=प्रतिज्ञा तोड़ने-
 वाला, वृत्त-शिकन=मूर्ति तोड़ने-
 वाला ।
 शिकम-पेट ।
 शिकम-परवर-पेट ।
 शिकरा-एक पक्षी ।
 शिकवा-शिकायत ।
 शिकवा-गुजार-शिकायत करने-
 वाला ।
 शिकस्त-पराजय ।
 शिकस्तगी-टूटनेकी क्रियाका भाव ।
 शिकस्ता-दुर्दशा-ग्रस्त, घसीट लिखा-
 वट ।
 शिकेब-धैर्य ।
 शिकेबा-सहनशीलता ।
 शिकोह-महत्व, बड़प्पन ।
 शिगाफ-चीरा, दरार ।
 शिताब-जल्दी ।
 शिहत-तेजी-सख्ती, बल-प्रयोग ।
 शिनास-पहचाननेवाला जैसे—
 हक-शिनास ।
 शिनासाई-परिचय ।
 शिरकत-साभा, महयोग ।

शोर-दूध ।
 शोरी-मधुर, प्रिय ।
 शोशा-दर्पण, काँच ।
 शुआअ-सूर्यकी किरण ।
 शुक्र-कृतज्ञता ।
 शुक्रगुजार-कृतज्ञ ।
 शुजाअ-बहादुर ।
 शुजाअत-वीरता ।
 शुतुर-ऊँट ।
 शुदनी-होनहार ।
 शुक्रआ-पड़ोस, पड़ोसका हक ।
 शुबहा-धोखा ।
 शुस्ता-स्वच्छ, शुद्ध ।
 शुम-मनहूस ।
 शुख-इस्लाम-धर्मका आचार्य ।
 शेफ़ता-आसक्त ।
 शेवन-रोना, चिल्लाना ।
 शेवा-प्रथा, दस्तूर ।
 शै-वस्तु, भूत-प्रेत ।
 शैदा-आशिक्र ।
 शैदाई-प्रेमी, दीवाना ।
 शेख-चंचल, नटखट ।
 शेख-चश्म-निर्लज्ज ।
 शेखी-ढिठाई ।
 शेबदा-जादू, धोखा ।
 शेबदाबाज-जादूगर ।
 शेबदागर-जादूगर ।
 शोर-नमक, कोलाहल ।
 शोर-बख्त-अभागा ।
 शोरा-पुश्त-उदंड ।
 शोरिश-हुल्लड़, फ़साद ।
 शोला-आगकी लपट ।

शोला-खू-उग्रस्वभावी ।
 शोला-रू-बहुत ही सुन्दर ।
 शोहदा-गुंडा, लम्पट ।
 शौकत-ताक़त, रोव, शान ।
 शौहर-पति ।

स

संग-पत्थर, भार ।
 संग-जाँ-निर्दय, जिसकी जान कठिनतासे निकले ।
 संग-दिल-कठोर-हृदय ।
 संगलाख-कठोर ।
 संग-सार-पत्थर मारकर प्राण लेना ।
 संगे-असवद-काबेमें रखा हुआ वह काला पत्थर, जिसे हज़-यात्री चूमते हैं ।
 संगे-आस्ताँ-दहलीज़का पत्थर ।
 संगे-मज़ार-क़ब्रका वह पत्थर जिसपर मृतकका नाम आदि लिखा होता है ।
 संज-समझने या जाननेवाला, जैसे —नग़मा-संज=गवैया, मुखन-संज=समझदार या कवि ।
 संजीदा-गम्भीर ।
 सआदतमन्द-भाग्यवान, आज्ञाकारी ।
 सई-परिश्रम, दौड़-धूप ।
 सईद-मुबारक, शुभ ।
 सक़ील-भारी, गरीष्ठ ।
 सकून-मनकी शान्ति, ठहराव ।
 सख़ावत-दान-शीलता ।
 सख़ी-दानी ।

सख्तज्ञान-जिसके प्राण बहुत कठि-
 नतासे निकलें (संज्ञा-सख्तजानी) ।
 सग-कुत्ता ।
 सदका-निछावर, खैरात ।
 सदक-सीप ।
 सदमा-धक्का, चोट ।
 सदहा-सैकड़ों ।
 सदा-प्रतिध्वनि, आवाज़ ।
 सदाकृत-सचाई ।
 सदी-शताब्दी ।
 सनअत-कारीगरी ।
 सनद-बड़ा तकिया, प्रमाण-पत्र ।
 सनम-मूर्ति, माशूक ।
 सनमकदा-मन्दिर, प्रेमिकाका
 निवास-स्थान ।
 सनमखाना-मन्दिर, प्रेयसीका वास-
 स्थान ।
 सनोबर-चीड़का वृक्ष ।
 सन्दल-चन्दन ।
 सपेद-सफ़ेद ।
 सफ़-पंक्ति, कतार ।
 सफ़ा-साफ़, स्वच्छ ।
 सफ़ी-शुद्ध, पवित्र ।
 सफ़ीना-किश्ती, नाव ।
 सफ़े-मातम-बह फ़र्श, जिसपर
 मातम करनेवाले बैठें ।
 सफ़फ़ाक-खूनी, निर्दय ।
 सबक-पाठ, उपदेश ।
 सैबा-प्रातःकालीन पूर्वी हवा ।
 सबाहत-गोराई, सौन्दर्य ।
 सबील-प्याऊ ।
 सबीह-सुन्दर ।

सबू-घड़ा ।
 सबूही-सबेरेके समय शराब पीना ।
 सब्र-सन्तोष ।
 सम-विष ।
 समअ-कान ।
 समअ-खराशी-दिमाग़ चाटना ।
 समद-ईश्वर ।
 समर-फल, बदला ।
 समा-आकाश ।
 समअ-सुनना ।
 समाअत-सुनवाई ।
 समाजत-लज्जा, विनय, लल्लो-
 चप्पो ।
 सम्बुल-एक सुगन्धित वनस्पति,
 इसकी उपमा बालों या लटोंसे
 दी जाती है ।
 सर-सिर ।
 सर-अंजाम-कार्यकी समाप्ति,
 सामग्री, नतीजा ।
 सर-आमद-समाप्त करनेवाला,
 पूर्ण ।
 सर-कश-विद्रोही, उदंड ।
 सरका-चोरी ।
 सर-कोबी-सिर कुचलना ।
 सर-खुश-सुखी ।
 सर-ख़िल-प्रधान, नेता ।
 सर-गरदाँ-घबराया हुआ ।
 सर-गुज़श्त-सरपर बीती हुई बात,
 जीवन-चरित्र ।
 सर-गोशी-चुगली ।
 सर-ज़द-प्रकट, कृत ।
 सर-ता-पा-सिरसे पैरतक ।

सर-नविशत-भाग्य-लेख ।
 सर-निगूँ-सिर भुकाये हुए, लज्जित ।
 सर-ब-सर-सारासर ।
 सर-बस्ता-छिपा हुआ, बँधा हुआ ।
 सरमद-सदैव, हमेशा ।
 सर-मस्त-मतवाला ।
 सरमा-शीतकाल ।
 सरमाया-सम्पत्ति ।
 सरश्क-आंसू, बूँद ।
 सर-शार-सदमत्, लबालब ।
 सरापा-सिरसे पैर तक ।
 सराब-मृगतृष्णा, छल ।
 सरोहन्-स्पष्ट रूपसे ।
 सरेदस्त-इस समय, तुरन्त ।
 सरे-नौ-नये सिरसे ।
 सरेशाम-सन्ध्या होते ही ।
 सरो-एक सीधा पेड़ जो बागीचोंकी
 शोभाके लिए लगाया जाता है ।
 सरोकद-जिसका कद सरो वृक्षके
 समान हो (प्रेयसीके लिए प्रयुक्त) ।
 सरोक्रामत-जिसका कद सरो वृक्षके
 समान हो (प्रेयसीके लिए प्रयुक्त) ।
 सरोद-गीत, एक वाद्य ।
 सर्द-ठंडा, मुस्त ।
 सर्क-व्यय ।
 सलक-गुजरा हुआ ।
 सलासत-कोमलता, सुगमता ।
 सलासिल-बेड़ियाँ ।
 सलाहियत-समझदारी, अच्छापन ।
 सलीका-शऊर, तमीज़ ।
 सलीम-सहनशील, गम्भीर ।
 सलीस-सुगम, मुहावरेदार ।

सलूक-व्यवहार ।
 सवानह-उमरी-जीवनी ।
 सवाब-सत्यता, पुण्य ।
 सहबा-अंगूरी शराब ।
 सह्र-प्रातःकाल ।
 सह्र-खेज-तड़के उठनेवाला ।
 सह्रा-जंगल, वन ।
 सहल-सरल ।
 सहाब-बादल
 सहाबा-मित्र ।
 साईका-बिजली ।
 साइत-पल, मुहूर्त ।
 साकित-गति रहित, मौन ।
 साकित-गिरा हुआ, निरर्थक ।
 साकिन-निवासी ।
 साकिन-वह दुश्चरित्र स्त्री जो
 भंग, हुक्का आदि पिलाकर
 जीविका उपार्जन करे ।
 साकिब-प्रकाशमान ।
 साकी-शराब पिलानेवाला, प्रेयसीके
 लिए प्रयुक्त ।
 साखत-बनावट ।
 सागर-प्याला, मधु-पात्र ।
 साज-उपकरण सामग्री ।
 मेल-जोल ।
 साद-ठीक या स्वीकृत होनेका
 चिह्न ।
 सादा-लौह-सीधा-सादा ।
 सादिक-सत्यनिष्ठ ।
 सानी-मुकाबिलेका ।
 साबिक-पहलेका ।
 साबिर-धैर्यवाला ।

सायर-पूरा, बाक्री, सैर करने-
वाला ।
सायल-मौगनेवाला, आकांक्षी ।
साया-छाया ।
सार-ऊँट, एक प्रत्यय जो शब्दोंके
अन्तमें लगकर वाला, समान,
पूर्ण और स्थान आदिका अर्थ
• देता है जैसे—शर्म-सार, खाक-
सार, शाखसार, कोहसार ।
सालगिरह-वर्ष-गाँठ ।
सालिक-बटोही, नीतिपूर्वक आच-
रण करनेवाला ।
साहिर-जादूगर ।
साहिल-किनारा ।
सिजदा-दंडवत ।
सितम-अनर्थ, जुल्म ।
सितमजदा-अत्याचार-पीड़ित ।
सितम-जरीफ़-हँसी-हँसीमें अत्या-
चार करनेवाला ।
सितमगर-अत्याचारी ।
सितमगार-अन्यायी ।
सितम-शआर-बराबर सितम
करनेवाला ।
सितम-रसीदा-अत्याचार-पीड़ित ।
सितारा-तारा, भाग्य ।
सिद्क-सत्यता ।
सिद्दीक-परम सत्यनिष्ठ ।
सिन-अवस्था, वयस ।
सिन्-रसीदा-वृद्ध ।
सिपर-ढाल, आड़ ।
सिपह-सेना ।
सिपहर-आकाश, गोला ।

सिपास-धन्यवाद ।
सिफ़त-विशेषता ।
सिफ़ला-कमीना, पाजी ।
सियह-काला, अशुभ ।
सियाहकार-दुष्कर्म करनेवाला ।
सियाह-बरत-अभागा ।
सिराज-सूर्य, दीपक । • •
सिरात-एक पुल जिसे पार करनेपर
बहिश्तमें पहुँचना होता है ।
सिला-इनाम, असर ।
सीख-तीली, पतली छड़ ।
सीना-कावी-बहुत कठोर परिश्रम ।
सीना-कोवी-छाती पीटकर मातम
करना ।
सीनाजोर-अत्याचारी ।
सीना-सिपर-मुकाबलेमें ।
सीम-चाँदी, दीलत ।
सीम-तन-गौरवर्ण ।
प्रेयसीके लिए प्रयुक्त ।
सीमाब-पारा ।
मुकून-मनकी शान्ति ।
मुखन-कथन, कविता, बात-चीत ।
सुरमगीं-जिसमें सुरमा लगा हो ।
सुराग-तलाश, पता ।
सुराही-जल रखनेका पात्र, भञ्जर ।
सुरूर-हलका नशा, आनन्द ।
सू-फ़ायदा दिशा, तरह ।
सूफ़ियाना-सूफ़ियोंका-सा ।
सूफ़ी-उदार विचारोंके मुसल-
मानोंका सम्प्रदाय ।
सूर-नरसिंहा बाजा ।
सेहर-जादू ।

सेहर-बयाँ—जिसके बयानमें जादूका-
सा असर हो ।

सैद—धिकार, आखेट ।

सैयद—नेता, सरदार ।

सैयाद—अहेरी ।

सैल—प्रवाह ।

सैलाब—जलकी बाढ़ ।

सोखत—जलन, टपकन ।

सोखतगी—कष्ट, जलन ।

सोखता—जला हुआ, बहुत दुःखी ।

सोग—शोक, रंज ।

सोज—जलन, तपिश ।

सोराब—हरा-भरा ।

सौदा—उन्माद, स्थाह, लेन-देन ।

सौदाई—पागल, वावला ।

ह

हंगामा—भीड़-भाड़ ।

हक—खुरचना, दूर करना ।

हक—स्वत्त्व, कर्तव्य, न्याय ।

हकारत—अप्रतिष्ठा ।

हकीकत—सचाई ।

हकीर—हीन, धृणित ।

हज—काबेकी यात्रा ।

हज—सौभाग्य, मज्जा ।

हजर—पत्थर ।

हजर—परहेज ।

हजल—भट्टा परिहास ।

हजी—दुःखी, चिन्तित ।

हजो—निन्दा, बुराई ।

हज्म—मोटाई ।

हज्म—गचा हुआ ।

हतक—अपमान ।

हत्ता—यहाँ तक कि ।

हतुल-इमकान—जहाँ तक हो सके ।

हदफ़—निशाना, चोट ।

हनोज़—अभी तक ।

हबीब—मित्र, माशक ।

हम—भी, आपसमें । एक प्रत्यय जो
शब्दोंके साथ लगकर साथी

या शरीकका अर्थ देता है ।

जैसे—हम-दर्द=दर्द या विपत्तिमें
साथ देनेवाला ।

हम-असर—प्रमकालीन ।

हम-आगोश—गलेसे लगा हुआ ।

हम-आवुर्द—प्रतिपक्षी ।

हम-उम्र—समवयस्क ।

हम-कनार—हम-आगोश, मिलना ।

हम-कदम—साथी ।

हम-कलाम—साथमें बातें करनेवाला ।

हम-कासा—हम-प्याला, साथी ।

हम-जुलफ़—सालीका पति ।

हम-दम—प्राण रहते तक साथ देने-
वाला ।

हम-दर्द—सहानुभूति रखनेवाला ।

हम-दस्त—साथी ।

हम-दिगर—परस्पर ।

हम-दीवार—पड़ौसी ।

हम-दोश—कन्धे-से-कन्धा मिलाकर
काम करनेवाला, सहयोगी ।

हम-नफ़स—साथी ।

हम-नस्ल—एक ही कुटुम्बका ।

हम-नाम—समान नामवाला ।

हम-पेशा—सहव्यवसायी ।

हम-बिस्तर-एक ही बिस्तरपर
साथमें सोनेवाला, सम्भोग करने-
वाला ।
हम-मकतब-सहपाठी ।
हम-राज-घनिष्ट मित्र ।
हम-राह-सह-यात्री ।
हमला-आक्रमण ।
हमशीरा-बहन ।
हम-साया-पड़ोसी ।
हम-सिन-समवयस्क ।
हमा-तन-सिरसे पैर तक ।
हमा-शुभा-हमारे तुम्हारे जैसे
सामान्य लोग ।
हमीदा-प्रशंसनीय ।
हमीयत-प्रतिष्ठा लज्जा ।
हम्माम-स्नानागार ।
हया-लज्जा ।
हयात-जीवन ।
हया-दार-शर्मिला ।
हर-प्रत्येक ।
हरकारा-डाकिया ।
हर-गाह-जब कि, चूँकि ।
हर-गिज़-कदापि ।
हरचन्द-यद्यपि ।
हरजा-निरर्थक, वाहियात ।
हरजाई-दुश्चरित्र (जो कभी किसीके
पास और कभी किसीके यहाँ रहे) ।
हर-दिल-अजीज़-सर्वप्रिय ।
हैरफ़ (हर्फ़)-दोष, कलंक, अक्षर ।
हरम-काबेकी चारदीवारी, अन्तः-
पुर, रेखेली स्त्री ।
हरम-ज़दगी-पाजीपन, शरारत ।

हरम-सरा-अन्तःपुर ।
हराम-निषिद्ध, अनुचित ।
हरीफ़-समव्यवसायी, प्रतिद्वन्द्वी ।
हरीस-शत्रु, लालची, ईर्ष्यालु ।
हर्ज-बखेड़ा, उपद्रव ।
हर्फ़-गीर-दोष-दर्शी ।
हर्फ़-ब-हर्फ़-अक्षरशः ।
हरफ़ि-धूर्त, चालाक ।
हल-निराकरण ।
हलक़-कंठ ।
हलका-परिधि, दल ।
हलकान-थका हुआ, हैरान ।
हलका-ब-गोश-दास ।
हलफ़-शपथ ।
हलाक-मृत, शिथिल ।
हलाल-जो मुसलमानी धर्मपुस्तकके
अनुकूल हो, पवित्र ।
हलावत-मधुरता, चैन ।
हलाहल-विष ।
हलीम-सहनशील ।
हवस-कामवासना ।
हवस-नाक-लालची, कामुक ।
हवाला-उदाहरण ।
हवास-होश, ज्ञान ।
हवास-बास्त-हक्का-बक्का ।
हव्वा-हज़रत आदमकी पत्नीका
नाम, जो मनुष्य जातिकी माता
मानी जाती हैं । हौआ ।
हशमत-शान-शौकत, नौकर-चाकर ।
हश्त-आठ ।
हृश्च-क्रियामत, जब कि सब मुर्दे
उठकर खड़े होंगे और उनके

शुभ तथा अशुभ कामोंका हिसाब
होगा, परिणाम ।
हृश्च वरपा करना—क्यामत ढाना ।
हृश्चास—बहुत ही प्रसन्न और हँसता
हुआ ।
हृश्चास-बृश्चास—परम प्रसन्न ।
हृसब—ईर्ष्या, डाह ।
हृसन—भला, उत्तम ।
हृसब—कुटुम्ब, नस्ल ।
हृसब-नसब—नाना-दादाका वंश ।
हृसरत—किसी वस्तुके न मिलनेपर
होनेवाला दुःख, कामना ।
हृसीन—सुन्दर ।
हृस्ती—जीवन, अस्तित्व ।
हृस्ब—अनुसार, जैसे ।
हृस्बस्वाह—इच्छानुसार ।
हृस्वे-इत्तिफ़ाक़—संयोगसे ।
हृस्वे-तौफ़ीक़—सामर्थ्यके अनुसार ।
हृस्वे-हाल—समयके अनुसार ।
हृजत—इच्छा । हाजत रफ़ा
करना=इच्छा पूरी करना । मल
त्याग करना ।
हाजतमन्द—स्वाहिशमन्द ।
हाजी—निन्दक, नक्काल, भाँड़ ।
हाजी—हज करके लौटा हुआ ।
हज करनेवाला ।
हातिम—एक प्रसिद्ध दानी ।
हादसा—दुर्घटना ।
हादी—मार्ग-दर्शक ।
हाफ़िज़—जिसे कुरान कंठस्थ हो,
रक्षक ।
हालते-नज़ा—मरनेके समय दम

तोड़नेकी अवस्था ।
हाला—कुंडल ।
हासिद—ईर्ष्यालु ।
हिकायत—कहानी ।
हिंकारत—घृणा ।
हिंजराँ—वियोग, जुदाई ।
हिजराँ-नसीब—जिसके भाग्यमें
वियोग हो ।
हिजाब—परदा, लज्जा ।
हिंज्र—विछोह, जुदाई ।
हिदायत—मार्ग-दर्शन ।
हिना—मेंहदी ।
हिंफ़ाजत—रक्षा ।
हिरास—निराशा ।
हिरासत—क़ैद ।
हिरासाँ—निराश, भयभीत ।
हिर्स—तृष्णा, लोभ ।
हिलाल—दूजका चन्द्रमा, इसकी
उपमा माशूक़की भवों और
नाख़नोंसे दी जाती है ।
हिस—गति ।
हीला—बहाना ।
हीलागर—बहाना करनेवाला ।
हीलाबाज़—बहाना करनेवाला ।
हीलासाज़—बहाना करनेवाला ।
हुबाब—पानीका बुलबुला ।
हुब्ब—प्रेम ।
हुब्ब-उल-वतन—देश-प्रेम ।
हुमा—एक कल्पित पक्षी, जिसके
सरपर बैठ जाय, वह बादशाह बन
जाता है, ऐसी धारणा है ।
हुरमत—प्रतिष्ठित, आबरू ।

हुवैश-स्पष्ट ।
 हुस्न-सौन्दर्य ।
 हर-सुन्दरी, देवांगना ।
 हेच-तुच्छ, हीन ।
 हैजान-आवेश ।
 हेफ-अफ़सोस ।
 हैबत-आतंक ।
 हैषतजदा-आतंकित ।
 हैबत-नाक-डरावना ।
 हैरत-आश्चर्य ।
 हैवान-पशु, मूर्ख ।

हैवान-नातिक-बोलनेवाला पशु ।
 अर्थात् मनुष्य ।
 हैवान-मृतलक-निरामूर्ख ।
 हैवानियत-जानवरपन ।
 हैवानी-पशुओं जैसा ।
 होआ-देखो 'हव्वा' ।
 होल-घवराहट ।
 होलजदा-डरा हुआ ।
 होल-दिल-कलेजकी धड़कन ।
 होलदिला-कायर ।
 होल-नाक-भीषण डरावना ।



पारिभाषिक शब्द

आदम—मुसलमानी धर्मके प्रथम पैगम्बर, जो मनुष्य-मात्रके आदि पुरुष माने जाते हैं। खुदाने आदमको माता-पिताके संयोग-बिना मिट्टी, पानी और आगके सम्मिश्रणसे एक पुतला बनाकर उसमें आत्मा डालकर पैदा किया था।

हव्व—आदमकी पत्नी जो मनुष्यमात्रकी माता मानी जाती हैं। मुसलमानी धर्मके अनुसार खुदाने इनको आदमकी वाई पसलीसे पैदा किया था। निर्विकार होनेके कारण ये दोनों जन्नतमें नग्न रहते थे और फल-फूल खाते थे। खुदाने गेहूँ खानेका इन्हें निषेध किया था, परन्तु ये शैतानके वहकावेमें आकर भूल कर बैठे। गेहूँ खाते ही इन्हें वासना सम्बन्धी ज्ञान हो गया, तब इन्होंने तत्काल अपने गुप्त अंग पत्तोंसे ढक लिये। इन हरकतोंके कारण खुदाने इन्हें जन्नतसे निकालकर पृथ्वीपर डाल दिया। फिर इन दोनोंके संयोगसे मनुष्यकी सृष्टि हुई।

शैतान—मनुष्योंको वहकाकर कुमार्ग-रत और ईश्वर-विमुख करता रहता है। यह पहले खुदाका बहुत बड़ा उपासक था, इसे खुदाने आगसे बनाया था। इसका नाम अज़ाज़ील था। सारे फ़रिश्तोंको पढ़ाया करता था, इसलिए इसे मुअल्लिमुल-मलकूतकी उपाधि प्राप्त थी। जब खुदाने आदमको बनाया तो, सब फ़रिश्तोंको सजदा करनेका हुक्म दिया। अन्य फ़रिश्तोंने तो हुक्मकी तामील की, मगर इसने यह कहकर इन्कार कर दिया कि—“जब मैं लाखों वरससे खुदाको सजदा करता आ रहा हूँ, तो एक मिट्टीसे बने मामूली पुतलेको मैं सजदा नहीं कर सकता।” खुदाने अपने आदेशकी अवहेलना करनेके कारण इसे शैतान कहकर जन्नतसे बाहर कर दिया। तबसे यह हज़रत प्रतिहिंसाकी भावनाको लिये सारे

संसारमें घूम-घूमकर मनुष्योंको कुमार्ग-रत और ईश्वर-विमुख करते फिरते हैं ।

खिज़्र—एक प्रसिद्ध पैगम्बर, जो जल और स्थल-मार्गमें भूले-भटकोंको राह बतलाते रहते हैं ।

ईसा—ईसाई धर्मके प्रवर्तक माने जाते हैं । ये बड़े दयालु और दीन-बन्धु थे । लोगोंका विश्वास है कि यह रोगियोंको स्वास्थ्य और मृतकोंको जीवनदान करते थे । इनका उपनाम मसीह है । इनकी माताका नाम मरियम है ।

मूसा—एक मशहूर पैगम्बर । जिनकी साधना और अभिलाषाके परिणामस्वरूप खुदाने 'तूर' पर्वतपर अपना दिव्य रूप दिखाया, किन्तु वे उसे निहारनेकी सामर्थ्य न रख सके और बेहोश हो गये । साथ ही तूर पर्वत जलकर खाक हो गया ।

मन्सूर—ईरानमें एक मशहूर वली हुए हैं । उनका विश्वास था कि आत्मासे परमात्मा भिन्न नहीं है । साधनाओं एवं तपश्चर्याओंके परिणामस्वरूप यह आत्मा ही परमात्मा हो जाता है । उन्हें स्वयं में यह अनुभूति होने लगी थी । अतः उन्होंने 'अनलहक' (सोहं—मैं ही परमात्मा हूँ) की सदा बुलन्द की । लेकिन मुसलमानोंको उनका यह कार्य अधार्मिक मालूम दिया और उन्हें सूलीपर चढ़ा दिया ।

लैला-मजनून—मजनूनका वास्तविक नाम क़ैस था । यह अरबके नज्द नामक प्रान्तका रहनेवाला और लैला नामक एक अरब युवतीपर आसक्त था । इसकी आसक्तिका यह हाल था, कि एक रोज़ क़ैसके पिता इसे लैलाके पिताके पास इस खयालसे ले गये कि इसकी हालतपर तरस खाकर शायद वह इससे लैलाका विवाह कर दे । क़ैस सजीला और रूपवान युवक था । लैलाका पिता स्वीकृति देना ही चाहता था कि भाग्यकी बात लैलाका कुत्ता वहाँ आ निकला । क़ैसको जब यह मालूम हुआ कि वह लैलाका कुत्ता है तो वह बेअस्थितयार उससे लिपटकर प्यार करने लगा ।

क़ैसके उस भावावेशको उन्माद समझकर लैलाके पिताने उसे घरसे निकाल दिया। लैलाके मिलनका जब कोई उपाय नहीं रहा, तब प्रेमोन्मत्त क़ैस जंगलोंमें निकल गया और वहाँ जीवन-पर्यन्त भटकता फिरा। उसने इतने कष्ट उठाये कि उसके प्रेमकी चर्चा समूचे अरबमें फैल गई। उसके प्रेमाकर्षणसे खिचकर लैला भी इसे खोजनेपर मजबूर हो गई। वह अपनी ऊँटनीपर सवार होकर क़ैसको जंगल-जंगल खोजती फिरी, परन्तु मिलन न हो सका। क़ैसका फूल-सा शरीर विरह-तापसे सूखकर काँटा हो गया, लेकिन वह अविराम गतिसे प्रेम-मार्गमें चलता ही रहा।

जुलेखा और यूसुफ़—यूसुफ़ हज़रत याक़ूब पैग़म्बरके पुत्र और मुसलमानोंके एक पैग़म्बर थे। मुसलमानी धर्मके अनुसार संसारका तीन चौथाई सौन्दर्य खुदाने इनको दिया था। इनके भाइयोंने ईर्ष्या-वश इन्हें मिस्रके सौदागरके हाथ बेच डाला था। मिस्रके राज्यपालकी रूपवती मलका जुलेखा इनपर आसक्त हो गई थी। इन दोनोंको अपने जीवनमें काफ़ी कष्ट भेलने पड़े थे। अन्तमें बहुत दिनोंके बाद मिलन हुआ था।

शीरी-फ़रहाद—फ़रहाद एक चीनी शिल्पकार था, जो ईरानकी रूप-लावण्यवती शीरीपर आसक्त था। शीरी भी फ़रहादको हृदयसे चाहती थी। ईरानका बादशाह खुसरो भी शीरीको चाहता था। अतः वह शीरीको बलात् अपने महलमें ले गया। खुसरो शीरीके तनपर तो कब्ज़ा कर सका, पर मनपर अधिकार न जमा सका। शीरीके मनमें तो फ़रहाद समाया हुआ था, वह कैसे औरको उसमें आने देती? अन्तमें खीझकर बादशाहने शीरीसे कहा कि—“यदि प्रेम-परीक्षामें फ़रहाद उत्तीर्ण निकले तो मैं तुझे उसके सुपुर्द कर सकता हूँ।” बादशाहकी अभिलाषानुसार परीक्षास्वरूप फ़रहादने पहाड़ोंको काटकर महल तक नहर निकाल दी, परन्तु छली बादशाहने शीरी लौटानेके बजाय शीरीकी मृत्युकी झूठी खबर फ़रहादके पास पहुँचवा दी। खबर सुनते ही खेचारे फ़रहादने अपने हाथका तेशा पत्थरमें मारनेके बजाय अपने स्तरमें मार

लिया और खुदकी निकाली हुई नहरमें गिरकर दम दे दिया । शीरीकी फ़रहादकी मृत्युकी खबर मिली तो उसने भी जान दे दी ।

आसमान—शायरीकी परम्परानुसार प्रेमियोंको सतानेवाला । नित नये जुल्मो-सितम ढानेवाला ।

‘ उर्दू-शायरीमें बार-बार प्रयुक्त होनेवाले—इश्क़, आशिक, माशूक, हबीब, महबूब, रक़ीब, उद्दू, कासिद, दरवान, मैखाना, पीरे-मुगाँ, रिन्द, साकी, जाहिद, नासेह, शेख़, बरहमन, गुलो-बुलबुल, सैयौद, गुलची, वासबाँ, क़फ़स, आशियाना, आदि पारिभाषिक शब्दोंकी व्याख्या विस्तारके साथ शैरो-शायरी पृ० ७७-१४१में दी जा चुकी है । यहाँ पुनः उसके देनेकी आवश्यकता नहीं समझी गई ।



शेर-ओ-सुखन

चौथा भाग

[वर्तमान युगीन १५१ शायर-शायराओंका चुना हुआ कलाम]

१९५४ ई० तककी ग़ज़लका इतिहास

प्राचीन और नवीन ग़ज़लगोई पर तुलनात्मक अध्ययन
हरजाई, बेवफ़ा, ज़ालिम माशूकके एवज़
नेक और पाक हबीबका तसव्वुर, रोने-बिसूरनेकी
प्रथा वन्द, रंजोगमका मुसकानभरा स्वागत
निराशावादका अन्त



भाग्यसे अधिक पुरुषार्थपर विश्वास

भारत-विभाजन, स्वराज्य-प्राप्ति,

राष्ट्रपिताकी शहादत आदि

प्रेरणात्मक, लोकोपयोगी

सामयिक भावोंका समावेश

मुशायरोंका रोचक वर्णन

मूल्य तीन रुपया



भारतीय ज्ञानपीठ काशी

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध और अप्रकाशित सामग्रीका
अनुसन्धान और प्रकाशन तथा लोक-हितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण



संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्ष
श्रीमती रमा जैन

